बम्बई दिनांक ...

बम्बई दिनांक

अरुण साधु

अनुवादक डॉ० विजय बापट

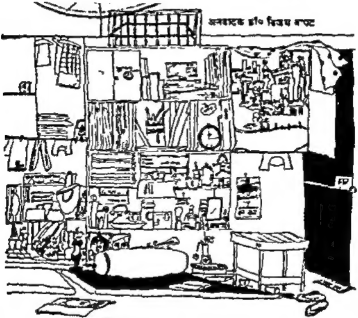

Akshay Chandra Sharma
HOME LIBRARY
Book No 1645
Sadul Colony, Bikaner

राधाकृष्ण

१९७७
©
अरुण साधू
बम्बई

मूल्य १८ रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण
२ अंसारी रोड दरियागंज
नई दिल्ली ११०००२

मुद्रक
प्रगति प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा
दिल्ली ११००३२

रात ढल रही है। तीन का वक्त। चमकीली बत्तियों की निगरानी में महीन कोहरे की शाल ओढ़कर बम्बई समंदर की गोद में लेटी हुई है। गाढ़ी नींद में अस्त-व्यस्त प्रौढ़ा-सी। कोलाबा, मालाबार हिल, फारस रोड, पेडर रोड भायखला दादर वाडा, घटकोपर चेंबूर, झुग्गियाँ हाउसिंग बोर्ड की बस्तियाँ—पूरी बम्बई सोयी हुई है। फोर्ट में मेरीन ड्राइव के अमीर बस्तियों के रास्ते सरकारी बत्तियों के चमकीले उजाले में अधिक चिकने ज्यादा साफ-सुथरे और खुशनुमा नज़र आ रहे हैं, इतने साफ़ कि घुटने टेककर उन्हें चूम लिया जाय! उन पर फौरन लेट जायें। एकाध टैक्सी तीखी आवाज़ के साथ उन रास्तों का शील भंग कर रही है। बाकी बम्बई सो रही है ऊँची-ऊँची नयी इमारतों की सख्त निगरानी में समंदर की ठंडी हवा बदन पर ओढ़े हुए बत्तियों के उजाले में कहीं-कहीं माल से लदे, भारी पैरों की औरत की तरह धीमे धीमे बंदर की ओर आने-जाने वाले भारी ट्रक, हवाई अड्डे कारखाने में मजदूर अखबार के दफ्तर—पूरी बम्बई पर तेज़ निगाह रखने वाली पुलिस का कंट्रोल रूम—जैसे जाग रहे हैं—पर और बाकी सब जगह खामोशी है।

तीन का वक्त। बम्बई सो रही है चर्चगेट सो रहा है। समंदर की ओर पीठ किये गेटवे सो रहा है, माथे पर प्रगति देवता का सफेद पुतला उठाये बोरीबंदर—आधी आँखें बंद किये किसी ध्यानमग्न महागंभीर योगी की तरह खामोश बैठा है। सामने महापालिका की विशाल इमारत के सामने बोरीबंदर स्टेशन का दरवाजा निढाल पड़ा हुआ है—पर आधे घंटे के भीतर ही पहली लोकल शुरू हो जायेगी। पहिये धड़ धड़ की आवाज़ के साथ बेरहमी से खामोशी को चीरते हुए सरकने लगेंगे। बम्बई के हर नये दिन को जगाने-वाली लोकल! तीन चार घंटे बाद जब यह-वासस

लौटेंगी तब उनका हर एक डिब्बा लोगों से ठसाठस भरा हुआ होगा। नयी ताज़गी नये जोश के साथ रंगीन कपड़े पहन औरतें और मर्द बांध टूटी नदी की तरह बोरीबंदर से बाहर निकलेंगे। टैक्सियाँ, ट्रक, डबल डेकर बसें—तब रास्ते को चीरते हुए पागलों की तरह आवाज करती हुई दौड़ेंगी। सारे फुटपाथ लोगों से भरे हुए होंगे। चर्चगेट आदमी उगल रहा होगा आदमी ही आदमी !

पर अभी तो जैसे बम्बई महानगरी सो रही है। रास्ते इतने खाली-खाली, साफ और चमकीले हैं कि किसी को एतबार ही न हो सके। गरज कि आदमी कहीं न कहीं सोया हुआ है। पानिटकर सोया है। उसकी बीवी सो रही है। किशोर वर्मा, नाना सावंत, डी कोस्टा, मुख्यमंत्री शिंदे सलीम हमीद विनीता देशमुख—सबके सब सो रहे हैं। अय्यर भी सो रहा है ।

क्रम

अय्यर	९
किशोर वझे	४३
पानिटकर	७५
डी कोस्टा	१०५
जीवाजीराव शिंदे	१४५
डी कोस्टा	१९१
किशोर वझे	२१५
अय्यर	२३३
जीवाजीराव शिंदे	२४७
पानिटकर	२६९

अरयर

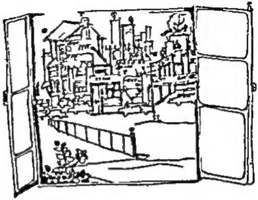

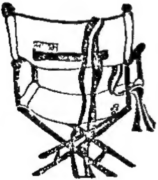

अय्यर ठीक साढ़े छह बजे उठा। साढ़े तीन चार घंटे की नींद उसके लिए काफी होती है इससे ज्यादा नींद उसे आती ही नहीं। रात को देर से सोने के बावजूद भी वह सुबह साढ़े छह पर जाग जाता है—जैसे अलार्म लगाया हो। उठते ही मुँह धोने के पहले वह अखबार देखता है—पहले दूसरे अखबार और फिर खुद का 'वेस्टर्न स्टार'। खुद का पेपर तो यूँ ही देखता है—क्योंकि क्या छपने वाला है वह यह पहले से ही जानता है—सिर्फ तसल्ली के लिए जरूर देख लेता है। बाकी तीनों अंग्रेजी अखबार वह खास तौर पर पढ़ता है और तसल्ली का एहसास कर लेता है। इतना सब होने में करीबन डेढ़ घंटा बीत जाता है। इस दौरान दूसरे और काम उससे नहीं हो पाते। रोजाना का यही रूटीन है उसका। उन तीन बड़े अंग्रेजी अखबारों के चीफ रिपोर्टरों की उसे कोई खास परवाह नहीं है—उनकी योग्यता वह खूब अच्छी तरह जानता है और खुद के हौसले और पत्रकारिता पर उसे नाज है। उसका मालिक उसे चीफ रिपोर्टर के नाम पर अठारह सौ रुपया हर माह यूँ ही नहीं दे देता—पर वे अखबार बड़े हैं। उसका पेपर नया—सिर्फ चार साल पुराना है। बम्बई की कोई भी खबर गोल हो जाना ठीक नहीं और रोजाना एक-न-एक सुर्खी का 'वेस्टर्न स्टार' में होना लाजिमी है। अय्यर की इसी खासियत की वजह से दूसरे अखबारों के चीफ रिपोर्टर उससे खार खाये रहते हैं और मौका मिलते ही अय्यर पर ताना कसने से बाज नहीं आते हैं।

अय्यर ने सारे अखबार पढ़े और लम्बी साँस ली।

उसकी दी हुई स्मगलिंग की स्टोरी आज अच्छा खासा हंगामा खड़ा कर देगी—इस बात का उसे पूरा-पूरा विश्वास है। 'वेस्टर्न स्टार' के फ्रंट पेज पर बड़े और काले टाइप में वह स्टोरी छपी थी। दूसरे अखबारों के चीफ रिपोर्टरों की बात छोड़िये, पर खुद उसके 'न्यूज एडीटर' को भी यह सुर्खी अचरज में डाल देगी। रिपोर्ट दे या न दे—बहुत दिनों तक इसी असमंजस में पड़ा वह रिपोर्ट जेब में डाले रहा था—कल रात आखिर उसने वह दे ही दी। वैसे उसकी खुद की नजर में रिपोर्ट बड़ी थी—क्योंकि किसी का नाम उसमें न था—पर उससे कई संकेत जरूर उभर सकते थे। कई नामों और जगहों का पता चल सकता था। कई मंत्री भी चपेट में आ सकते थे। कुछ कंपनियाँ भी। स्मगलिंग कैसे होता है, कौन किस तरह

उसम उलझा रहता है, किसकी शह पर काम चलता है सोसिज किस तरह के हाते हैं—इन तमाम बातो का उसम जिक्र था। पर सब कुछ बिलकुल ही अथहीन न था—गरज कि कोस्टा की दी हुई जानकारी के बल पर उसन बडी कुशलता से रिपोट तैयार की थी। इसी वजह से वह स्टोरी खास रग ला सकती थी। वह जानता था कि उसके दफ्तर म भी इस कहानी स हलचल मच जायेगी। न्यूज एडीटर और मालिक का चेहरा उसकी नजरा म आ गया और उसे हसी आ गयी।

इस कहानी के अलावा पपर म और कुछ खास न था। बम्बई मे और कोई घटना हुई ही नही थी। मुख्यमत्री की घोपणा आस्ट्रेलियन व्यापारियो का शिष्टमडल वल्ड बैंक की टीम का आगमन मजदूरा की हडतालें और मोर्चे पाच छह समारोह इश्तहार वालो को मक्का लगाने वाले गत एक अभिनेत्री का फिसाद दो खून एक थगडा कुछ छाटे मोटे अपराध और एक्सीडेंट—एकदम डल!

आज कौन-सी खबर दी जा सकती है इस बार म भी उसन खबरें पढन क दौरान साच लिया। रेलवे बोड का एक मेम्बर प्राइवेट काम से बम्बई आया हुआ है—इसकी खबर उसे मिल चुकी थी। चुपचाप उससे इन्टरव्यू लेकर बम्बइ की अडरग्राउड रेल के बारे मे कल सुर्खी लगायी जा सकती है—बस उसने यही तय कर लिया।

पढते पढते ही अय्यर ने ब्रश किया और मुह धाकर उसने टेलीफोन का डायल घुमाया। काफी देर तक घटी बजने के बाद दूसरी ओर स रिसीवर उठाया गया।

हलो गुड मानिंग! मिसेज खान देयर ?

नही साब मेम साब सोया है—अबी उठा नही ' उधर से किसी औरत की आवाज आयी।

अच्छा ? आई सी !

' आप अय्यार साब ना ? मैं जुलस्वा। मेम साब को कोई मैसेज देना है ?

नो नथिंग। जस्ट टेल हमारा फोन आया था !

जी साब।

कल शाम उसने डिनर पर बुलाया था और जा नही सका—इसीलिए कही मिसेज खान नाराज-वाराज तो नही है ? आज उसे समयाना-बुझाना होगा और इसम ऐसी कोई मुश्किल भी नही। ईजी।

अय्यर ने फ्रिज से दूध निकालकर बिजली की अँगीठी पर रखा। उबलने से पहले उसने दाढी बना ली और वह नहा लिया। कपडे पहन

लिये। फिर दो अंडे फ्राई कर लिये—फिर ब्रेड बटर और दूध का नाश्ता। पांच मिनट में खत्म। खाने के दौरान एक कागज पर वह कुछ लिखता जा रहा था। दिन भर में क्या-क्या करना है—इसी का हिसाब कागज पर था।

नहाने के दौरान फोन की घंटी बजी थी। अय्यर को याद आया और उसने डायल घुमाया। काफ़ी देर तक घंटी बजती रही। तब परेशान होकर उसने रिसीवर रख दिया और टाइ बाँधकर वह नीचे उतर आया। रास्ते के परली तरफ पार्क की अपनी पुरानी ओपल निकालकर वह अपने आफिस के रास्ते पर हो लिया।

गाड़ी पुरानी थी लेकिन उसके हाथ पर चढ़ी हुई थी। रास्ता भी जाना पहचाना था। बम्बई के रास्ते और गलियाँ अय्यर से परिचित थे। अपने हाथों की लकीरों की मानिन्द। पिछले बीस साल से वह बम्बई को देख रहा है—एक रिपोर्टर की हैसियत से। बम्बई के विकास में उसका भी हिस्सा था। कहीं उसने विरोध किया था, कहीं सुधार के तरीके बताये थे। कुछ इमारतें उसने अपनी पत्रकारिता के बल पर बनने ही न दी थीं। अय्यर को अपनी ताकत का एहसास था और उस पर नाज़ भी। बम्बई के लिए उसके मन में खास अपनापा था। मद्रास और बंगलौर के लिए उसके दिल में खास आकर्षण न था। पर अभी जैसे उसके मन में बेचैनी उभर रही थी—लग रहा था बम्बई अपने हाथ से निकल जायेगी। एहसास हो रहा था, जैसे ताकत खत्म होती जा रही है।

अय्यर आफिस पहुँचा। वेस्टर्न स्टार के सभी केबिनों में अभी सन्नाटा था। बीच के हाल में अजीब खामोशी थी। अलग-अलग जगहों पर चार-पाँच टेलिप्रिंटर खट-खट कर रहे थे। अभी-अभी आया हुआ एक सब-एडीटर टेलिप्रिंटर के करीब बैठकर नोटबुक को यूँ ही सहला रहा था और एक चपरासी अखबारों की फाइलें करीने से लगा रहा था। अय्यर पहुँचा तब नौ बजने वाले थे। शाम का स्टाफ अभी तक आया न था। अय्यर ने मन ही मन गालियाँ दे डालीं। पर उन पर उसका अधिकार न था नहीं तो इवनिंग एडिशन के सभी सब को उसने आड़े हाथों लिया होता। फिर अभी तक खुद न्यूज एडीटर का भी पता नहीं था तो दूसरे लोगों को वह क्या खाक कहे!

अय्यर के केबिन का फोन खनखना रहा था। अलमारी खोलने के पहले उसने रिसीवर उठाया—

"हलो... वेस्टर्न स्टार' हीअर!"

'साब ?

'हलो टली ? क्या बात है बेटा ? इतने सबेरे दिमाग़ खराब करता है।"

'साब आपके रूम पर मैंने रिंग दी थी।

हाँ मैं बाथरूम म था। क्या बात है ?

उधर से टली की भारी भारी साँस सुनायी दे रही थी। वह मोटी आवाज म बोला—

मली की बीमारी कल से ज्यादा हो गयी साब।'

अय्यर हड़बड़ाया। कुछ पल रुककर बोला—

अच्छा—क्या हुआ ?

आज मोन बीमार है साब—दवा तक पीती नहीं।'

'ओक ओके ! पिछले हफ्ते पैसे दिये थ व खतम हो गये ?

वो बात नहीं साब। सभी लगातार आपका नाम पुकार रही है। नींद और बेहोशी की हालत म भी साब !"

हाँ। आज दोपहर को आऊँगा कह दना।

जरूर आना साब वो आपके लिए तड़फ रही है।

टली की आवाज काफी भर्रायी हुई थी। आज सुबह उसने शराब नहीं पी होगी अय्यर इस बात को भाँप चुका था।

हाँ हाँ जरूर आऊगा। बट लिसन। डाट टलीफोन मी इन द आफिस टु डे। ओके !'

अय्यर ने रिसीवर नीचे रख दिया और कोहनियाँ टेबल पर टिकाकर हाथों म सिर लिये आधे मिनट तक यूँ ही बैठा रहा। फिर उसने ब्लाटिंग से अपनी हथेलियों से मुँह पोंछा पास रखी ट्रे से कोरा कागज उठाया और मुँह पोंछ कर कागज पीछे की ओर फेंक दिया। दाइँ ओर के ड्राअर से कपड़ा निकाला और आहिस्ते से टेबल पोंछा। चपरासी टेबल भले ही पोंछ दे पर अय्यर दोबारा टेबल जरूर पोंछता है। मस्टर पर दस्तखत मारे। पुलिस और फायर ब्रिगेड को फोन करके सब ठीकठाक होने की जानकारी ली और आज की फाइल सामने रखी।

पहला रिपोर्टर अभी नहीं आया था। उसे आने म अभी करीबन एक घंटा लग जायेगा। शिपिंग बंदरगाह मजदूर की खबरें लानेवाला रिपोटर ग्यारह तक आयेगा। डेथ-वाल्स वाला अब तक कारोनर के कोर्ट म पहुँच चुका होगा। और एक एस्प्लेनेड कोर्ट म। आज तीनों रिपोटर छुट्टी पर है मतलब साथ म सिर्फ आठ। उनम से एक एअरपोर्ट एक सचिवालय एक कारपोरेशन एक क्राइम और एक नाइट के लिए। मतलब, बचे तीन। लो अब ढेर सारा काम ! सब बूम मारेंगे। मालिक से कहा, चार बढ़ा

दीजिये तो वह झिझकता है। न्यूज़-एडीटर सिर्फ मालिक को मस्का लगाना जानता है। खबर गलत हो जाये तो कुमसुमाता रहता है। पर उसके मस्के के खातिर एकाध रिपोर्टर फालतू के फंक्शन मे अटक जाता है। स्साला यह भी कोई तरीका है ? टाइम्स एक्सप्रेस की प्रेस के पास बीस-बीस लोग हैं पर इधर कोई देखता ही नहीं।

"चपरासी !" अय्यर ने ज़ोर से पुकारा और तेज़ी से फाइल टटोलना शुरू कर दिया। दो थर्ड क्लास कार्फ्रेंस चीफ मिनिस्टर की दो मीटिंग उसमे से एक किसी फैक्टरी का उद्घाटन कैबिनेट मीटिंग, दो मोर्चे, आम्ड्रे नियन व्यापारियों का शिष्टमंडल वर्ल्ड बैंक की टीम की मुख्यमंत्री से मुलाकात मुरारबाई हाल म सवदलीय सभा और इसी तरह मटर-पटर।

अय्यर ने एक बार अपना सिर दबाया। काम करने वाले हाज़िर रिपोर्टरों के नाम देखे और डायरी लिखना शुरू कर दिया। सचिवालय कैबिनेट मीटिंग मुख्यमंत्री की शिष्टमंडल से मुलाकात—पाँडे के नाम मे डाल दी। पांडे हमेशा ही सचिवालय देखता है। क्राइम न्यूज़ देने वाले के लिए डिनर की एक फालतू प्रेस कार्फ्रेंस लगा दी जाये तो वह भी खुश होगा और काम भी होगा। बाकी बचे तीन को दूसरे काम बाँट दिये।

फिर खुद की पर्सनल डायरी खोली। सिर एकदम भन्ना गया। कल सुबह तक पर्सनल कालम तैयार होना था। खैर कोई बात नहीं। आज रात जाग कर टाइप कर लेंगे। दोपहर तो काफी अपाइंटमेंट्स हैं।

चपरासी !" फिर एक आफिस गुंजा देने वाली पुकार।

हाँ हाँ आया साब !' एक छोकरा-सा चपरासी केबिन का दरवाजा ठेलकर हाथ म कागज लिये अंदर दाखिल हुआ।

"सुनता नहीं क्या बे ?"

कागज ला रहा था साब।" हाथ के कागज़ उसने टेबल पर रखी ट्रे म रख दिये और और अदब के साथ खड़ा हो गया। अय्यर ने डायरी मार्क करते हुए बायें हाथ से उसे जाने का इशारा किया फिर भी वह उसी अन्दाज़ म खड़ा रहा। फिर अय्यर ने सिर ऊपर कर हँसकर उसकी ओर देखा।

'क्या है रे, बेटा ?

'साब जरा पाँच रुपये चाहिए थे।

एँ ! क्या सवेरे-सवेरे दिमाग खराब करता है रे !"

साब, भाई के जेरा

'हलो टली ? क्या बात है बेटा ? इतने सबेरे दिमाग खराब करता है !"

'साब आपके रूम पर मैंने रिंग दी थी।'

हां मैं बाथरूम म था। क्या बात है ?'

उधर से टली की भारी भारी साँस सुनायी दे रही थी। वह मोटी आवाज म बोला—

सली की बीमारी कल से ज्यादा हो गयी साब।'

अय्यर हड़बड़ाया। कुछ पल रुककर बोला—

अच्छा—क्या हुआ ?

'आज भोत बीमार है साब—दवा तक पीती नहीं।

ओके ओके ! पिछले हफ्ते पैसे दिये थ व खत्म हो गय ?

वो बात नहीं साब। सली लगातार आपका नाम पुकार रही है। नीद और बेहोशी की हालत म भी साब !"

हाँ। आज दोपहर को आऊँगा कह देना।

ज़रूर आना साब वो आपके लिए तड़फ रही है।

टली की आवाज़ काफी भर्रायी हुई थी। आज सुबह उसन शराब नहीं पी होगी अय्यर इस बात को भाप चुका था।

हा, हा ज़रूर आऊंगा। बट लिसन। डाट टेलीफोन मी इन द आफिस टु डे। ओके !'

अय्यर न रिसीवर नीचे रख दिया और कोहनिया टेबल पर टिकाकर हाथों म सिर लिये आधे मिनट तक यू ही बैठा रहा। फिर उसन रूमेपन से अपनी हथेलियों से मुह पोंछा पास रखी ट्रे से कोरा कागज़ उठाया और मुह पोछ कर कागज़ पीछे की ओर फेंक दिया। दाइ ओर क ड्राअर से कपड़ा निकाला और आदतन टेबल पोछा। चपरासी टेबल भल ही पोछ दे पर अय्यर दोबारा टबल ज़रूर पोछता है। मस्टर पर दस्तखत मारे। पुलिस और फायर ब्रिगेड को फोन करके सब ठीकठाक होने की जानकारी ली और आज की फाइल सामने रखी।

पहला रिपोर्टर अभी नहीं आया था। उसे आन म अभी करीबन एक घंटा लग जायेगा। शिपिंग बंदरगाह मजदूर की खबरें लानेवाला रिपोर्टर ग्यारह तक आयेगा। डेथ-कास्स वाला अब तक कारोनर के कोट म पहुँच चुका होगा। और एक एस्प्लेनेड कोर्ट म। आज तीनों रिपोर्टर छुट्टी पर हैं मतलब साथ म सिर्फ आठ। उनम से एक एयरपोर्ट एक सचिवालय एक कारपोरेशन एक क्राइम और एक नाइट के लिए। मतलब बचे तीन। तो अब ढर सारा काम ! सब घूम मारेंगे। मालिक स कहा, चार बढा

दीजिये तो वह झिझकता है। न्यूज-एडीटर सिर्फ मालिक को मस्का लगाना जानता है। खबर गलत हो जाये तो मुसमुसाता रहता है। पर उसके मस्के के खातिर एकाध रिपोटर फालतू के फक्शन मे अटक जाता है। स्साला यह भी कोई तरीका है? टाइम्स एक्सप्रेस, फ्री प्रेस के पास बीस-बीस लोग हैं पर इधर कोई देखता ही नहीं।

"चपरासी!" अय्यर ने जोर से पुकारा और तेजी से फाइल टटोलना शुरू कर दिया। दो थर्ड क्लास कार्फेंस चीफ मिनिस्टर की दो मीटिंग, उसमे से एक किसी फैक्टरी का उद्घाटन कॅबिनेट मीटिंग दो मोर्चे ऑस्ट्रेलियन व्यापारियो का शिष्टमडल वल्ड बैंक की टीम की मुख्यमत्री से मुलाकात, मुरदबाई हाल म सवदलीय सभा और इसी तरह सटर पटर।

अय्यर ने एक बार अपना सिर दबाया। काम करने वाले हाजिर रिपोटरो के नाम देखे और डायरी लिखना शुरू कर दिया। सचिवालय कबिनेट मीटिंग मुख्यमत्री की शिष्टमडल से मुलाकात—पाँखे के नाम म डाल दी। पाखे हमेशा ही सचिवालय देखता है। टाइम्स न्यूज देने वाले के लिए डिनर की एक फालतू प्रेस कार्फेंस लगा दी जाये तो वह भी खुश होगा और काम भी होगा। बाकी बचे तीन को दूसरे काम बाँट दिये।

फिर खुद की पसनल डायरी खाली। सिर एकदम भन्ना गया। कल सुबह तक पसनल कालम तयार होना था। खैर कोई बात नहीं। आज रात जाग कर टाइप कर लेंगे। दोपहर तो काफी अपाइटमटस हैं।

'चपरासी!' फिर एक आफिस गुँजा देने वाली पुकार।

हाँ हाँ, आया साब! एक छोकरा-सा चपरासी केबिन का दरवाजा ढकेलकर हाथ म कागज लिये अन्दर दाखिल हुआ।

सुनता नहीं क्या रे?

'कागज ला रहा था साब। हाथ के कागज उसने टबल पर रखी ट्रे म रख दिये और अदब के साथ खड़ा हो गया। अय्यर ने डायरी साफ करते हुए बायें हाथ से उसे जाने का इशारा किया फिर भी वह उसी अदाज म खड़ा रहा। फिर अय्यर ने सिर ऊपर कर हँसकर उसकी ओर देखा।

'क्या है रे, बटा?

'साब जरा पाँच रुपय चाहिए थे।

ऐं! क्या सवेरे-सवेरे दिमाग खराब करता है रे!"

साब भाई के जरा

ओक आर ! अय्यर ने उस बीच म ही रोक दिया।

फालतू दिमाग खराब करता है। शर्ट की ऊपर की जेब टटोली फिर पेंट की जेब टटोली। रुपय रुपय के चार मल-कुचैले नोट उसके हाथ म थमा दिये।

'जा भाग।

चपरासी सलाम ठोककर जाने लगा तो अचानक उसे उस याद हो आया। अय्यर चीखा —

ए फालतू आदमी !

जी साब !

अरे पिछले महीने तेरे को ही पाँच रुपया दिया था न ?

जी साब एक तारीख का चुकता करूँगा साब।

पकड़ा चोर को ! स्साला फालतू आदमी क्षमा माँगता है क्या जा भाग।'

साला हम भी किसके लिए कमायगा पैसा ? माँ तो दो साल पहले ही चल बसी। बहन पूछती नहीं। और अब कौन करेगा शादी ? पैसा साला सब छेद म घुस जाता है। शली बीमार है। दोपहर वक्त निकालकर जाना होगा। बिलकुल जाना ही होगा। टालना ठीक नहीं। बीमार है। पहले उसके यहाँ रात बिरात जाते ही थे न ! जाना ही होगा। मिसेज खान का फोन अभी तक आ जाना चाहिए। कल बेकार ही उसे परेशान किया। डिनर पर जाना ही चाहिए था और फिर कल रात बाहर जाकर पैसा ही बर्बाद किया। छोकरी एकदम पतली थी। अपन का माल एकदम मोटा माँगता है। एनिफ्टाइन बिहाइंड। मिसेज खान जैसा। शली पहले क्या लाजवाब थी। माई गाड ! आज भी याद आती है तो साँस तेज हो जाती है। एकदम सोना। अनबीटेबल। तो शली बीमार है ? दोपहर को वक्त निकालकर जाना ही होगा। टालना ठीक नहीं। फोन घनघना रहा था।

वस्टर्न स्टार।

'अरे अय्यर ? चीफ हीअर।'

हलो ! क्या है बेटा ?

यू डोंट नो ? साला चीफ रिपोर्टर है या भंगी ?'

क्या बात है ?'

माई गाड ! उधर वेस्टर्न रलवे पर इतना बड़ा हादसा हुआ एंड यूअर चीफ रिपोर्टर डज्ट नो एनीथिंग !'

फालतू आदमी। बकवास बंद। इट इज यूअर ड्यूटी टु लट मी नो। क्या बात है ?

अर कुछ नहीं। एक लोकल डिरेल हुआ है अँधेरी के पास। इट इज पीक ऑवर नाऊ।'

माई गाड ! एनी कैजुअल्टीज ? कुछ पिक्चर पासिबिलीटीज ?

'सुनो सुनो, पहले सुनो ना कैजुअल्टीज। कार थ्रेडेस खाली लाकल आ रही थी। बट यू रश ए फोटोग्राफर दअर। आल सर्विसेज आर रिमाग नाइज्ड।"

अच्छा ? देन यू आल्सो रश देअर। इवनिंग के लिए कापी द देना।"

मैं ? अपना वो काल वाला किधर मर गया ? साला कल रात वापस लौटते-लौटते एक बज गया था। एंड यू आस्क मी टु रश देअर अगेन इन द मार्निंग ?

बस-बस। फालतू आदमी। आई वाट ए कापी फार द इवनिंग। सावत वस्टन से ही आता है न ? वह दस तक आयेगा आई विश ही विल यूज हिज ब्रेन एंड शूट ए पिक्चर। यू रश दअर फस्ट।

'स्साला इससे तो भंगी का काम बेहतर। साला काम धंधा है या क्या ? बीवी अभी से डायवोर्स की बात करती है।

साला तुमको जाना है या नहीं ? खाली नक्शर नहीं माँगना।'

"ओके, ओके। मैं फोन करूँगा साढ़े ग्यारह पर। स्टेनो म कापी करने के लिए कह देना। आफिस म नहीं आऊँगा। साली यह भी कोई नौकरी है ? आज तो घर पर रह लेने दो।'

ठीक है।'

अय्यर ने फोन रख दिया। चलो इवनिंग स्टार' के लिए अच्छी लीड-स्टोरी मिल गयी। धीरू कहता है कोई मरा नहीं। नहीं तो दूसरा ड्रामा दिया जा सकता था। ठीक है पीक आवर का जम है न। काफी है। धीरू ने फोन किया, अच्छा ही हुआ। साला मेस का आदमी है अच्छा आदमी। कल उसे माफ देना चाहिए। उसकी फेमिली भी है। गुड मन ! मिसेज खान का फोन अभी तक नहीं आया ? काफी गुस्सा हो गयी शायद। या अभी तक लेटी हुई है। इसी की संभावना ज्यादा है। कल डिनर म काफी खा गयी होगी। मैं पहुँचा नहीं इसीलिए ज्यादा पी भी गयी होगी। एक पग म ही वह किस तरह डोलने लगती है। तो सेली बीमार है ! दोपहर को वक्त निकालकर किसी भी सूरत म उसके यहाँ जाना होगा। पिछले डेढ़ महीने से उसके यहाँ गया ही नहीं। डेढ़ क्या दो महीने हो गये होंगे। टली ने कितने फोन किये ! खुद चली आयी। पर जाना हो ही न सका। हाँ नहीं सका या मैं ही नहीं गया ? मैंने क्या टली को पैसे नहीं दिये ? पिछले हफ्ते ही तो दिये थे। पर अब वह बीमार है। उसकी ओर देखने की हिम्मत नहीं

हानी। पर जाना तो होगा ही। इसलिए जाना होगा। वक्त निकालकर जाना ही होगा।

अय्यर ने फिर कोरे कागज से मुँह पोंछा और वह कागज पीछे की ओर फेंक दिया। डायरी एक बार फिर देखी। आज के सारे एंगेजमेंटस देखे। कल के एंगेजमेंटस देख लिये। उसी हिसाब से सुबह के काम भाग कर लिये। फिर ट्रे में रखे कागजों को देखना शुरू किया। खत पढ़े और तारीख नोट की और खत फाइल कर दिये। कुछ खास बात नजर आने पर डायरी में नोट कर लिया। टेबिल के कागज खतम होने पर वह केबिन से बाहर आ गया। न्यूज एडीटर की टेबिल के सामने खड़े होकर एक नया अश्लील लतीफा सुनाया और सबको हँसा दिया। इवनिंग के लिए कौन-सी कहानियाँ आ रही हैं इसका भी खुलासा कर दिया।

सुबह की स्टोरी पढ़कर न्यूज एडीटर का चेहरा फक पड़ गया था। इस बात को अय्यर अच्छी तरह ताड़ चुका था। पर बातों में उसने भूलकर भी उसका जिक्र नहीं किया। कल स्टोरी देते वक्त उसने जानबूझकर न्यूज एडीटर को नहीं बतायी थी। रात न्यूज आफ्टर चीफ-सब को दे दी थी। रात का चीफ-सब भी स्पोर्ट था। उसने बिना किसी दिक्कत के फ्रंट पेज पर ठोक दी।

गुड स्टोरी दैट! मसूल चेहरे से न्यूज एडीटर ने कहा।

ओ दैट?' अय्यर बेफिक्री से बोला 'नथिंग मैन, सब कुछ बदल। एक नाम तक का जिक्र नहीं है। नाट ए न्यूज स्टोरी।"

पर काफी एक्स्प्लोसिव है। अभी तक मेरे पास तेरह फोन आ चुके हैं। जानते हो पहला फोन किसका था।

आई नो। सुप्रीम बास का होगा। वह खुद मुझे तो फोन करेगा नहीं। अय्यर जोर से हँस पड़ा। न्यूज एडीटर चुप रहा। उसका चेहरा और भी लटक गया था। ही वाज एंग्री।'

लेट हिम बी। कहते हुए अय्यर ने जानबूझकर उस बात को नजर अन्दाज करते हुए टेलिप्रिंटर की रील को देखना शुरू कर दिया। तभी केबिन के फोन की घंटी बजने की वजह से वह तेजी से अपने केबिन में दाखिल हो गया।

तो स्साला सुप्रीम बास गर्मा गया? आल्ड क्रुक! स्साला खुद हिस्सेदार तो नहीं है?

हलो— वेस्टर्न स्टार हीअर।

इज चीफ रिपोर्टर अय्यर देअर।'

दिस इज अय्यर। चीफ रिपोर्टर आफ द वेस्टर्न स्टार। कैन आई

हैल्प यू मैडम ?"

वन मोमेंट, अय्यर साहब। कोस्टा साहब आपसे बात करेंगे।"

"गुड मार्निंग अय्यर।'

हलो हलो, कोस्टा बेटा! क्या हुआ सुबह-सुबह? आर यू आउट आफ पालिटिक्स?"

कांग्रेच्युलेशंस अय्यर। आखिर तुमने दे ही दी।"

'ओ दैट! नथिंग मन।"

'मेरा खयाल था तुम डर जाओगे।"

'अरे मुझे क्या गांडू समझते हो? नानसेंस।"

ग्लैड वे। गुड स्टोरी। और सब ठीक है न?"

'बकवास! मुझे जरा भी फुर्सत नहीं है। इवनिंग स्टार' जाना है। काम क्या है बोलो?'

गप्पें लगानी हैं यार।'

सारी डेन। आइ हेव नो टाइम।'

अरे जरा सुनो तो सही। कुछ खास काम है तुमसे।"

'अच्छा तो काम की बात करो।"

सबाशियन डीकोस्टा हँस पड़ा और बोला 'अय्यर इज एवर आलवेज इपेशेंट।'

अर सारी!" अय्यर जरा नरमाई से बोला। कोस्टा को नाराज करके काम नहीं चलेगा। आय वाज जस्ट फूलिंग यू। तुम तो मेरी हबिट जानते हो, कहकर वह जोर से हँस पड़ा।

लुक अय्यर आई हेव समथिंग रियली वेरी एक्सप्लोसिव। आज जो कुछ तुमने दिया है न वह कुछ भी नहीं है। फोन पर मैं ज्यादा बता नहीं सकता। हर मटिरियल ऐसा है कि तुम खुद परेशान हो जाओगे और फिर सब्स्टांशियली बैक्ड विद फैक्ट्स एंड फिगर्स।"

आई सी।'

सिर्फ तुम्हारे लिए, एक्सक्लूसिव एंड सेंसेशनल।

इट्स ओके। कब आऊँ फिर? आज?

ना। इतनी जल्दी नहीं है। कल दोपहर मेरे घर पर आना, तीन बजे के करीब।

'भाय डसा? ठहरना जरा, डायरी देख लेता हूँ। तीन बजे न? ओके, ठीक है।'

तो तय रहा। सो लॉग '

इतनी बड़ी बात और ऐसी स्टोरी में अय्यर खुद अपने को उलझाना

नहीं चाहता था। आज जो स्टोरी दी वह काफी है। लेकिन दर्ज तो सही, बुढ़ऊ क्या कहना है? हम सैक कर सकेंगे या नहीं इस पर उसकी और न्यूज़-एडीटर की बातें हो ही चुकी होंगी।

अय्यर ने जेब की छोटी-सी डायरी में नोट कर लिया। आज का पन्ना भी उसने देखा। आज के पन्ने पर सिर्फ तीन नाम थे। मिसेज़ खान—लंच, निचिरो मकामुरा जैपनेंटर—ताज ३ ३० और सली। सली के आगे वक्त नहीं लिखा था। जापानी पेंटर से मुलाकात पौने घंटे में निबट जायेगी। बाद में बाद्रा जा सकते हैं। सली के पास। अय्यर ने तय कर डाला। वह बीमार है। आज उसके यहां जाना ही होगा। काफी दिन हो चुके हैं। मिसेज खान का फोन अभी तक क्यों नहीं आया? बहुत नाराज़ है शायद। लंच के लिए उससे फोन करके होटल का तय कर लेना चाहिए।

दस बज रहे थे और आफिस अपनी रफ्तार में आ रहा था। सब एडीटरों की टेबिलों पर आवाज़ उभरने लगी थी। सब टेलिप्रिंटर्स धड़धड़ कर रहे थे। निचली मंजिल पर मशीन रूम में भी हलचल शुरू हो चुकी थी। अपनी टेबिल से परे रखे टाइपराइटर पर वह बैठ गया। बांहें ऊपर कर उसने दनादन टाइप करना शुरू कर दिया। फिर फोन खनखनाया।

हलो मिस्टर अय्यर। आई एम हीअर। यू नो फ्राम सी० एम्स० आफिस—वी हैव मेट बिफोर।

हलो हलो हाउ आर यू शहाणे साहब? आज सुबह सुबह हमारी याद?

'अरे भाई आज ही नहीं रोजाना ब्रेकफास्ट के वक्त होती है बात जैसे गले में ही अटक गयी हो।

अच्छा? थैंक्यू। हाउ कैन आई हेल्प फार यू?

आह! नथिंग मिस्टर। जस्ट ए कर्टसी काल। कभी कभार हम लोग आप लोगों को काल्स करते हैं। आइये न कभी आफिस में वक्त निकालकर यूं ही मिलने के लिए।

कोई खास स्टोरी है क्या? अवर सचिवालय रिपोर्टर मिस्टर पाण्डे सुक्स आफ्टर।"

ओह नो। नथिंग आफ द साट। कभी-कभी हम लोग चीफ रिपोर्टर्स और एडीटर्स को बुलाते हैं। हम लोगों को भी काफी जानकारी मिल जाती है। आप लोगों भी अच्छा खासा बैकग्राउंड हम दे सकते हैं।

' आई सी।

सो कम एलांग एनी टाइम फार टी। सी० एम० विल आल्सो बी

हपी टु मीट यू।'

आ यस, परन्तु इसी वक्त नहीं न ?"

अभी ? मतलब कल या परसों कभी भी।'

व्हेन आइ विल काल यू।

ओ थक्यू। जस्ट गिव मी ए रिंग एंड आइ विल अरेंज विद द सी० एम०। बाई द वे आपकी आज की स्टोरी इन्टरेस्टिंग है।'

कौन-सी स्टोरी ?

'वही फ्रंट पेज वाली स्टोरी।"

अच्छा थक्यू। हाऊ डिड द सी० एम० फाइंड इट?

वेल आइ डोंट नो। उन्हें पढ़ने का वक्त ही कहाँ मिल पाता है। पर उन्हें भी इंटरेस्टिंग ही लगेगी। आप आइये तो सही। हम लोग काफी बातें करेंगे।

इस पर अय्यर हँस पड़ा।

थक्यू फार द कम्लीमेंटस मिस्टर शहाणे। मैं कभी रिंग करूंगा आपको, कल या परसों।'

'ओके।'

फोन रखकर अय्यर जोर से हँस पड़ा। मतलब स्टोरी ने यहां तक गुल खिलाया है। काफी हो गया। शहाणे को दुबारा रिंग करने का उसका इरादा न था। गरज कि और बड़े लफड़े में वह अपने आप को उलझाना न चाहता था। हाँ कोम्टा के पास क्या है यह जरूर देख लेना चाहिए। अभी तक एडीटर और वुल्फ के पास फोन पहुँच चुके होंगे। अय्यर को कुछ गुस्सा आ गया। वह फिर टाइप शुरू करने वाला था तभी फोन खनखनाया।

रामा हीअर।'

कहो बेटा ? क्या बात है ? कोई बड़ी स्टोरी है ?"

नथिंग मिस्टर अय्यर। मडरम आर आन ए हालिडे। पटी पेपर्स एंड क्लनेज।"

अरे तो क्या सारा पेपर बचना पड़ेगा ? वैसे डिरेलमेंट की बात है अपनी जगह पर। और तो कुछ है नहीं।'

'कुछ छोटी मोटी स्टोरीज है।'

"ओके, देन रश एंड गिव। देरी नहीं करना।'

अय्यर फिर टाइप करने लगा। उसकी स्पीड काफी अच्छी थी। की-बोर्ड पर उँगलियाँ ठहरती ही न थी और बीच में उसे ऊँघ भी आ रही थी। वह पहले टाइपिस्ट ही था। मद्रास में टाइपिंग का कोर्स पूरा कर

वह बम्बई आ गया। मटिक पार न कर सका। सरकारी दफ्तर म टाइपिस्ट की जगह पर चिपक गया। वहाँ से टेलीग्राफ ऑफिस म प्रिंटर पर आ गया। वहाँ से टाइम्स के टेलीप्रिंटर आपरेटर की जगह पर आया। मटिक पास कर लने के बाद बाम्बे क्रानिकल' मे रिपोटर बना और आगे बढता ही गया अपने हौसले के बल पर। दूसरा महायुद्ध बयालीस का आदोलन स्वतन्त्रता विभाजन गोवा मुक्तिसग्राम भारत-पाक युद्ध की घटनाओ के साथ साथ पत्रकार की हैसियत से उसका अच्छा खासा नाम हो गया। जिन्दगी की दूसरी बातें भूल भालकर। बम्बई का डेवलपमट उसने देखा था। बम्बई का समदर हटते हुए पेड टूटते हुए, बस्ती कारखाने बढ़ते हुए उसने देखे और जमकर विरोध किया। बम्बई की ट्राम खत्म हुई तो अपनी खबरो म दिल भरकर रोया और फिर पत्रकार की हैसियत से उसका इतना नाम हो गया कि 'वस्टन स्टार' चौथा अग्रेजी पेपर निकला तो चीफ रिपोटर की जगह पर अय्यर क अलावा दूसरा नाम ही न था।

पौन घटे म अय्यर की ट्र खाली थी। तयार की हुई रिपोटस चपरासी के हाथो डेस्क पर भिजवा दी। इवनिंग के लिए कौन-सी रिपोट स आयेंगी इसका हवाला न्यूज एडीटर को दे ही चुका था। उसका एक फाम भरकर भिजवा दिया। उसका अपना काम जब खत्म हुआ तब ऑफिस अपनी रफ्तार पर था। डे काल का शर्मा टाइपराइटर खटखटाने लगा। शिपिंग का कृष्णन फोन से सटकर बठा था। स्टेनो अभी तक आया ही न था। आज जवाबतलबी करना होगी। साला एडीटर का चमचा बना फिरता है। उसकी वजह से सातवें आसमान पर रहता है साला। जूनियर मोस्ट रिपोटर लाग हैंड म उससे फास्ट डिक्टेशन ले सकता है। यू ही वह स्टेनो कहलाता है। पता नहीं एडीटर के साथ उसका क्या नाता है? फोन फिर खनखनाया—

वस्टन स्टार।

'अय्यर साहब? पालकर हीअर। गोपालन कहा है? स्टोरी देनी है। अंधेरी के कैमिकल काम्प्लेक्स के इनाग्युरेशन की। इवनिंग के लिए।'

'कुछ खास है। राइटअप तो कल ही द चुके हैं।'

'फस्ट क्लास कापी। सी० एम० ने ऐसा झाडा उन लोगो को!"

'वडरफुल! जस्ट ए मिनट।'

गोपालन!" अय्यर ने पुकारा। आवाज नहीं आयी तो अय्यर ने कबिन के बाहर मुह निकालकर फिर पुकारा गोपालन।'

'कमिंग सर' कहते हुए गोपालन दौडता हुआ आया।

'पागल आदमी कहाँ मर गये थे ?" 'यस सर नोसर एडीटर के रूम में था।' गोपाल अपनी बेरली अंग्रेजी में, हँसते हुए बोलने की कोशिश कर रहा था।

'डमिट ! फिर मत मरना कहीं। पालकर फोन पर स्टोरी दे रहा है। अटेंड द फोन। अगर न बन सके तो लांग हैंड में ले लेना। एकदम बेकार आदमी !'

'यस सर !' कहकर गोपालन हँस दिया। यह उसकी खास आदत थी।

फिर अय्यर कुछ देर यूँ ही बैठा रहा। जाने वाली रिपोर्टों को एक बार फिर देखने लगा। व्याकरण सम्बन्धी भूलें नजर आते ही जूनियर रिपोर्टर को मन ही-मन गालियाँ देता रहा। अब दफ्तर पूरी सरगर्मी में था। बाहर के कमरे में टेलिप्रिंटर लगातार टाइप किये जा रहे थे। नीचे की मंजिल से रोटरी मशीन की आवाज आ रही थी। डाक एडिशन छप रहा था।

अय्यर ने झट से टेलीफोन का धागा उठाया और डायल घुमाया। उधर से मर्दाना आवाज उभरी मिसेज खान।'

'गुडमार्निंग मिसेज खान !'

अय्यर आवाज में मिश्री घोलकर बोल रहा था।

'क्या हो गया था सुबह ? तबियत ठीक नहीं थी ?"

'ओ ! यू अय्यर ! यू फूल ! किसलिए फोन किया ? मैंने तो तय कर लिया था कि तुमसे बात ही नहीं करूँगी।"

'अय्यय्यो ! आई एम सारी। काफी नाराज नजर आ रही हो ?"

'डोंट टाक टू मी। मैं एक न सुनूँगी।'

'ओ माई गाड ! यू आर फ्यूरियस।"

'और क्या ? तुम जैसा आदमी तो मैंने देखा नहीं ! कल डिनर में क्यों नहीं आये ?"

'लिसन लिसन। अरे कितनी बार तो कहा कि मेरे काम का वक्त कभी तय नहीं रहता।'

'ओ डोंट बलफ। मैंने रात तीन बार फोन किया।'

'माफ अच्छा ! परगेट इट। आज लंच को आइये। न्यू बानर में। हलो सुन रही हो न ? नाऊ डोंट बी सिली। मैं वहीं पर शार्प डेढ़ पहुँच जाऊँगा—शार्प।'

'आई एम नाट कमिंग।' मिसेज खान एक-एक शब्द चबा-चबाकर बोल रही थीं। अय्यर को हँसी आ गयी। लेकिन वह फ़ोन पर हँसा नहीं। जोर से बोला 'डोंट बी ए फूल। शार्प डेढ़।

आई एम नाट कमिंग।' दूसरी ओर से रिसीवर पटकने की आवाज आयी तो अय्यर ने फोन रख दिया और वह हँस पड़ा। मिसेज खान ब्ल्यू कार्नर में एक बजे ही जाकर बैठ जायेगी इस बात को अय्यर अच्छी तरह जानता था। कल के डिनर में साला आना ही था। बाहर जाकर भी खास मजा आया नहीं। कल यूँ ही गिल के हट्टलान चले गये और पैसे बर्बाद हुए। बस मिसेज खान बुरी नहीं हैं। बिलकुल नहीं। एकदम एनिफेंशइन बिहाइंड एंड आलसो जायंट बूब्स। माई गाड! कल जाना ही था। बेकार ही उधर चले गये। पर साली है ईजी। साली गले गल पड़ती है, इसलिए मजा नहीं आता। सली की तुलना ही नहीं—नहीं थी। एकदम टुकड़ा। माई गाड! भूल हो गयी। सली के यहाँ आज तो जाना ही होगा। बीमार है। आज तक काफी बेवकूफी कर ली। मड है। नींद में और बेहोशी में नाम लेकर पुकारती है। मतलब क्या है? या साला टनी यूँ ही बंडल मारता है? बास्टर्ड! पर बहन के बारे में वह कभी भी बंडलबाजी नहीं करता। जाना ही होगा। दोपहर जापानी पेंटर का काम खत्म होते ही जाऊँगा।

पाक्षे सामने की कुर्सी पर आ बैठा। उसे देखते ही अय्यर हँसा।

क्या है बेटा! इतने सबेर? आज सचिवालय नहीं है।"

है न।'

फिर क्या चीफ मिनिस्टर को कुर्सी से हटाओगे।"

नाट मी? हटाने वाले मौजूद हैं ही।

कौन फाइनेंस मिनिस्टर। स्साला स्मार्ट गाई। आई लाइक हिम मोस्ट आफ आल द मिनिस्टर्स।'

बट शिंदे इजंट।"

नेचुरली। पर वह जरूर शिंदे को हटायेगा।

नो। टेक इट फ्राम मी। शिंदे वैसे पक्का है।

अरे छोड़ो भी। शिंदे इज बिकमिंग टू ओल्ड टु फाइट।"

तुम खुद बूढ़े हो न इसलिए तुम्हें हर आदमी बूढ़ा ही नजर आता है।'

बट!'

बट।'

अय्यर ने पाक्षे से हाथ मिलाया। दिन भर इस तरह दोनों के बीच शर्तें लगती रहती हैं। फिर अय्यर ने कहा पाक्षे तू साला चमचा है सी० एम० का इसलिए तुम नहीं जान पाते। देखो मैं शर्त जीतने वाला हूँ।

पाक्षे का चेहरा लटक गया। अय्यर हँसा तो वह भी हँस दिया। गंभीर

होवर बाला 'कव स्टोरी देने के पहले मुझे नहीं बताया ?"

'आई एम द चीफ रिपोर्टर होअर।'

मुझसे पूछत तो शायद मैं मना कर देता।'

"इसलिए मैंन किसी से पूछा ही नहीं।"

कुछ देर बाद खुद अय्यर ने पूछा, 'कसी लगी ? एक्स्ट्रीम सेंसेशनल ?"

'जानमैन इसमें सेंसेशनल था ही क्या ? नयी बात तो कुछ भी नहीं थी।'

'फिर तुम ऐसी शोहगिरी क्या करते हो ?'

उसमें इम्प्लिकेशन्स हैं और अच्छी भी नहीं।"

अय्यर हँसा पड़ा। बोला 'मैंने काफी सोच समझकर दी है। नो वन्स नेम कैंच भी।'

पाण्डे बोला 'कामन मन तो कुछ नहीं जान पायेगा। पर जानकार जरूर नाम जान सकता है।'

'ओ आई डोंट बोदर। आज सुबह किसका फ़ोन आया था, जानते हो ? शहाणे का यू ही बातचीत के लिए बुला रहा था।'

'सो। और भी फोन आ सकते हैं।"

'आई डोंट केयर।'

'वसी बात नहीं। मेरे पास तो और भी जानकारी है पर मैं देता नहीं। वजह यह कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उससे कोई खास लाभ होगा नहीं। एक्चुअल ऑपरेटर से मेरी इतनी जिगरी दोस्ती है कि मैं उसके साथ मिशन पर भी जा सकता हूँ।'

'तुम जानते नहीं और देते भी नहीं। यू आर ए कावर्ड।'

इसके कुछ होना हवाना नहीं है। और द दी आये तो सुप्रीम बात हम दोनों को पकड़ेगा।'

'पोंने डोंट बी स्टूपिड" अय्यर ने जरा चिढ़कर कहा तुम गधे की तरह बकवास कर रहे हो। इज द सुप्रीम वॉस एनी ये ।'

पोंने हँसा और बोला, 'सोच लो। टीवास्ता को धमकिया भरे पत्र आते हैं। हमने खबर भी दी थी याद है न ?"

"टीवास्ता साला ब्लफ-मास्टर है। सिर्फ बकवास करता रहता है। करता कुछ भी नहीं।

"पर उसके पास इन्फर्मेशन काफी होना चाहिए।"

आई सी आज सुबह ही उसका फोन आया था।

'किसलिए ?'

"कहता था, स्टोरी फनी है स्वागत। साला पब्लिसिटी मोंगर है।'

आई एम नाट बमिंग।' दूसरी ओर स रिसीवर पटकने की आवाज आयी तो अय्यर ने फोन रख दिया और वह हँस पडा। मिसेज मान ब्ल्यू नानर म एक बजे ही जाकर बैठ जायगी इस बात को अय्यर अच्छी तरह जानता था। कल वे डिनर म साला जाना ही था। बाहर जाकर भी साम मजा आया नहीं। बस यू ही दिल बहलाने चले गये और पैसे बर्बाद हुए। वैसे मिसेज खान बुरी नहीं है। बिलकुल नहीं। एकदम एलिफैंटाइन बिहाइंड एंड आलसो जायंट बूब्स। माई गाड! मन जाना ही था। बेकार ही उधर चल गये। पर साली है ईजी। साली खुद गले पड़ती है इसलिए मजा नहीं आता। सलो की तुलना हो नहीं—नहीं थी। एकदम टुकडा। बाई गाड! भूल हो गयी। सली क यहाँ आज तो जाना ही होगा। बीमार है। आज तक काफी बेवकूफी कर ली। मड है। नींद म और बेहोशी म नाम लेकर पुकारती है। मतलब क्या है? या साला टलो यू ही बकबक मारता है? बास्टर्ड! पर बहन के बारे म वह कभी भी बकबाजी नहीं करता। जाना ही होगा। दोपहर जापानी सेंटर का काम खत्म होते ही जाऊँगा।

पाध्ये सामने की कुर्सी पर आ बैठा। उस देखत ही अय्यर हँसा।

क्या है बेटा! इतने सवेरे? आज सचिवालय नहीं है।'

है न।'

फिर क्या चीफ मिनिस्टर को कुर्सी से हटाओगे।

नाट मी? हटाने वाले मौजूद है ही।'

कौन फाइनेंस मिनिस्टर। स्साला स्माट गाई। आई लाइक हिम मास्ट आफ आल द मिनिस्टस।

बट शिंदे इज्जट।'

नेचुरली। पर वह जरूर शिंदे को हटायगा।

नो। टेक इट फ्राम मी। शिंदे बस पक्का है।

अरे छोडो भी। शिंदे इज बिकमिंग टू ओल्ड टु फाइट।"

तुम खुद बूढे हो न इसलिए तुम्हे हर आदमी बूढा ही नजर आता है।"

बेट!

बेट।'

अय्यर ने पोध्ये से हाथ मिलाया। दिन भर इस तरह दोनो के बीच शर्तें लगती रहती हैं। फिर अय्यर ने कहा पोध्ये तू साला चमचा है सी० एम० का इसलिए तुम नहीं जान पाते। देखो मैं शर्त जीतने वाला हूँ।'

पाध्ये का चेहरा लटक गया। अय्यर हसा तो वह भी हँस दिया। गंभीर

होकर बोला, 'कल स्टोरी देने के पहले मुझे नहीं बताया ?'

आई एम द चीफ रिपोर्टर हीअर।

'मुझसे पूछते तो शायद मैं मना कर देता।'

'इसलिए मैंने किसी से पूछा ही नहीं।"

कुछ देर बाद खुद अय्यर ने पूछा, कसी लगी ? एक्स्ट्रीम सेंसेशनल ?"

नानसेंस, उसमें सेंसेशनल था ही क्या ? नयी बात तो कुछ भी नही थी।'

'फिर तुम ऐसी गाँडुगिरी क्यों करते हो ?"

'उसमें इम्प्लिकेशंस है और अच्छी भी नहीं।'

अय्यर हँस पड़ा। बोला 'मैंने काफी सोच-समझकर दी है। नो बडी मेन्शन्ड मी।'

पान्डे बोला कामन मन तो कुछ नहीं जान पायेगा। पर जानकार ज़रूर नाम जान सकता है।"

'ओ, आई डोंट बोदर। आज सुबह किसका फोन आया था, जानते हो ? शहाणे का यू ही बातचीत के लिए बुला रहा था।'

'सो। और भी फोन आ सकते है।"

'आई डोंट केयर।"

वसी बात नही। मेरे पास तो और भी जानकारी है पर मैं देता नही। वजह यह कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि उससे कोई खास लाभ होगा नहीं। एक्चुअल आपरेटर से मेरी इतनी जिगरी दोस्ती है कि मैं उसके साथ मिशन पर भी जा सकता हूँ।"

तुम जानते नहीं और ऐसे भी नही। यू आर ए कावर्ड।"

"देकर कुछ होना, हवाना नहीं है। और द दी जाये तो सुप्रीम बास हम दोनों को पकड़ेगा।

'पान्डे डोंट बी स्टुपिड" अय्यर ने जरा चिढकर कहा 'तुम गधे की तरह बकवास कर रहे हो। इज द सुप्रीम बॉस एनी व ।'

पान्डे हँसा और बोला, सोच लो। डीकोस्टा को धमकियों भरे पत्र आते हैं। हमने खबर भी दी थी, याद है न ?'

'डीकोस्टा साला ब्लफ-मास्टर है। सिर्फ बकवास करता रहता है। करता कुछ भी नही।'

"पर उसके पास इन्फर्मेशन काफी होना चाहिए।'

आई सी आज सुबह ही उसका फोन आया था।"

'किसलिए ?

'कहता था, स्टोरी देनी है सग्घल। साला पब्लिसिटी मोंगर है।"

'कैसी स्टोरी ?'

यही फक्टस एड फिगस है उसके पास। तुम भी आ जाओ। कल बुलाया है उसन। लट अस कफट हिम। कहो—साल प्रमाण दो।"

'तुम अपनी बात देखो। मैं नही आ सकता। और डीकोस्टा जरा वैसा है। आई काशन यू।'

'लडी कावड, पाक्षे !

तभी इटरकाम की घटी बजी। दूसरी ओर न्यूज-एडीटर था।

अरे अय्यर चलो ऊपर। सुप्रीम बास का समन है।

'मर गया। वह साला अब आ गया ?

'अरे धीमे बोलो। अभी अभी आया है। चलो जल्दी। इटस ए स्टाफ काफ्रेंस।

'अरे आखिर किसलिए ? भाई हम लागा को यहा काम है या नही ? ईवनिंग अभी जा रहा है।

अरे भाई म क्या जानू ? एडीटर को अभी-अभी केबिन से बाहर निकलते हुए मने देखा है। वट आई गस। इट इज समथिंग इपार्टेंट।

'ओके ! टल हिम आई एम बिजी।

अरे भाई यू मस्ट कम। मनेजर कहता है यू मस्ट वी देअर।

आफ। ठीक है। म आधा घटे स ज्यादा नही बठ सकता।

अय्यर ने फान नीचे रख दिया और पाक्षे की ओर देखकर माथे पर हाथ रखा।

बुड्ढा आ गया है ऊपर।

कहत हुए उसन दाहिनी ओर रखा रजिस्टर यो ही जोर से टेबिल पर पटका। मुह बनाया। कुर्सी पर गदन टेक दी और ऊपर चल रहे पख को देखन लगा।

पाँक्षे को हँसी आ गयी। पोक्ष सीनियर रिपोटर था। कई सालो से वह अय्यर के साथ काम कर रहा था। इसीलिए अय्यर का हर नाज नखरा वह जानता था। वह बाला अय्यर रिअली तुम इतने डरपोक होगे, मैं नही जानता था। उस बुढऊ से इतने डरते हो ? '

अय्यर बिजली के झटके के मानिंद कुर्सी पर सीधा हो गया।

माई गाड ! पाक्षे पागल आदमी ! यू आर इसल्टिंग मी। मैं उस बुड्ढे से डरूँगा ? बदनामी का दावा दायर कर दूँगा तुम पर। टेबिल पर हाथ मारकर अय्यर तपाक से बोला।

हू। एक्टिंग मत करो। तुम खूब जानत हो, पट के अन्दर तुम्हारे पाँव बुरी तरह काप रहे हैं। पर इतने डरते क्या हो ? '

ओ पोक्ले खराब आदमी ! स्साल तुम क्या जानो ? आई हेट देट ओल्ड क्रूक। बड़ा घिनौना आदमी है। देखते ही मितली-सी आने लगती है यार। लगता है सारी दुनिया की क्रूकेडनेस उसमें समा गयी है। सच कहता हूँ ही इज फिजिकली रिपल्सिव। मैं तो कभी उससे हाथ तक नहीं मिलाता। एंड यू इसल्ट मी हीअर नान्सेंस !'

पाल की हँसी नहीं रुकी तो अय्यर भी हँस पड़ा। 'साला अपना धंधा ही ऐसा है। इससे तो तवायफ बेहतर होती है। बस मालिक के सामने सोना भर। एडवरटाइजर्स के आगे सोना और मलिया के आगे भी सोना। रीडर मर गया और काम करने वाले भी मर गये। बाकी सब पैसा खींचते हैं।'

अय्यर ने टाई की नाट ठीक की। कंधे पर कोट चढ़ाया और चश्मा लगाते हुए पाल से बोला : 'सच कहता हूँ मुझे जिन्दगी की वल्यूज पर विश्वास नहीं होता। साली सब हरामखोरी है। दुनिया में तो बस दो ही बातें सच्ची हैं। जानते हो ?' अय्यर ने पहले अपनी एक उँगली मुँह पर रखी और दूसरी बार पट के बटनों पर।

मीटिंग रूम में मोटी लाल रंग की कारपेट बिछी थी। बीच में एक आलीशान गोल टेबिल। चारों तरफ गद्देदार कुर्सियाँ। बीच की कुर्सी पर मयालाल भंडारी बैठा हुआ था। काला स्याह। सिर के बाल नदारद। पथरीली आँखें। नाक और निचला होंठ मोटा। उसने सफेद कुर्ता और धोती पहन रखी थी। इसी वजह से उसका काला रंग और भी चमकीला नजर आ रहा था। टेबिल के बायीं तरफ एक प्लेट थी जिसमें काजू रखे हुए थे बीच-बीच में वह काजू उठाकर सीधे मुँह में डाल लेता था। उसके दाहिनी तरफ जनरल मनेजर बैठा था। वह झुककर धीमी आवाज में उससे बतिया रहा था। भंडारी उसकी बातें सुन रहा था या नहीं पता ही न चलता था।

भंडारी को उस सारी बिल्डिंग में भंडारी के नाम से ही नहीं पुकारा जाता था। उसके सभी नौकर उसे बुड्ढा ओल्ड क्रूक टुच्चा या इसी तरह कुछ कहा करते थे। उसके सामने पड़ते ही यस सर। नो सर। गरज कि वेस्टर्न स्टार उसके परिवार की सम्पत्ति था। अधिकतर शेयर्स उसके खुद के बीवी के, लड़की के दमाई के थे। मतलब, भंडारी ही मालिक था। वह आता और सीधे मीटिंग रूम में आ बैठता था। वजह यह कि पूरे वेस्टर्न स्टार में वही एक कमरा एयरकंडीशन्ड था।

मनेजर की फुसफुसाहट बंद हुई और उसने दो कागज भंडारी के आगे

रख दिये। भडारी ने भौंह सिकोडकर उन कागजो पर निगाह डाली। उलट पलट कर देखे। फिर जेब से चश्मा निकाला और आंखो पर चढ़ाया। दोनो कागज पढने म उसने पद्रह मिनट गुजार दिय। आई विल साइन दम टुमारो ' कह कर व कागज इस तरह मैनेजर के आग सरका दिय जम उसने हाथ झटक दिये हो। एक काजू मुह मे डाल लिया। अय्यर को आया देखकर उसन कहा, आओ, आओ, अय्यर ! तुमस बात करने आया था।"

अय्यर कभी का आकर जम्हाइयाँ ल रहा था। वह सिफ हँस दिया। वह कुछ ताड गया था। आज की फ्रट पेज स्टोरी। नही तो किसी इश्तहार वाले का मस्का लगाना होगा। ऐसा कुछ करना हो तो बुढऊ अय्यर का जरूर बुलवाता है। मतलब, अय्यर मस्का लगाने म तज था यह बात नही बल्कि अय्यर से उस इश्तहार वाले का प्रोफाइल लिखवा लेना या कोई खबर ठीक तरह से छाप देना इसी से काम चल जाता था।

मिस्टर अय्यर आई डाट वाट एनी ट्रबल इन माई पेपर।"

अय्यर कुछ समझ न पाया। वह सिफ भडारी की ओर देखता भर रहा।

आजकल आप महाराष्ट्र और शिवसेना के खिलाफ काफी खबरें द रहे हैं। ' कुछ रुककर बोला ' यह ठीक नही।"

सच पूछा जाये तो अय्यर का चेहरा तमतमा गया था, लेकिन उसन अपने आप को सम्हालने की कोशिश की।

'आफ कोस मिस्टर भडारी आप मालिक हैं। आप चाह जो कह सकत है। पसनली मैंने आपकी बातों पर जनलिस्ट की हैसियत से आब जेक्शन किया होता।

इस तरह क तेवर अय्यर ही दिखा सकता था। बूढे के आगे और किसी की हिम्मत ही नही पडती।

भडारी हँस दिया और उसने एक काजू मुह म डाल लिया।

देखिये मिस्टर अय्यर आप साउथ इडियन हैं और इसी वजह से आपको शिवसेना पर नाराजगी है। आइ सिपथाइज विद यू। हम भी शिवसना से ऐसी खास मुहब्बत नही रखते। बट यू नो हम लोग बम्बई म रहते हैं। हमारा पेपर बम्बई और महाराष्ट्र म ज्यादा खपता है। दिस इज बिजनेस।'

'सर ! यू नो। हमारे कमचारी भी कुछ बडबडा रहे हैं " मनेजर बोल पडा।

सी मुझे दीवाला ता निकालना नहा है।

'आप गलतफहमी में हैं मिस्टर भंडारी। आई एम मोर ए महाराष्ट्रियन दन यू आर। पर मैं जर्नलिस्ट हूँ। सरकार के स्कैंडल सामने लाये, इसलिए पेपर की बिक्री बढ़ी। एक भी स्कैंडल्स झूठा नहीं था।"

'दैट्स आल राइट। बट आई डाट वाट देट काइंड ऑफ जर्नलिज्म हम लोगों के इश्तहारों पर असर पड़ता है। आई वाट समथिंग कंस्ट्रक्टिव।"

"ओ के ओ के।"

'एक बात और' भंडारी हँसते हुए बोला। कौन-सी बात, इसे अय्यर अच्छी तरह जानता था। वजह यह कि शिवसेना की हल्लेबाजी हमेशा से थी।

'आज की आपकी स्टोरी मुझे कतई पसंद नहीं आयी।'

'आई एम श्योर, अवर रीडर्स हैव लाइक्ड इट। कल आपके पेपर की बिक्री बढ़ेगी देख लीजियेगा।'

आई डोंट मीन देट' भंडारी अपने खास अंदाज में हँसते हुए बोला, 'वह स्टोरी ठीक है पर कुछ क्वार्टर्स में वह पचेगी नहीं। हम लोगों का पेपर ब्लैकलिस्ट में चला जायेगा।"

'सो व्हॉट ? आप पेपर की बिक्री भी बढ़ाना चाहते हैं और ब्लैकलिस्ट में भी आना नहीं चाहते। ऐसा कैसे हो सकता है ? एक बात तो माननी ही होगी" अय्यर कुछ समझाने के स्वर में बोला।

'नो। ऐसा नहीं है। दोनों बातें हो सकती हैं। पेपर भी खप सकता है और व्हाइट लिस्ट में भी रह सकते हैं। आई वांट टू डू दैट।"

"आई सी ! '

"यस मस्ट सी," भंडारी अब खुश होकर बोल रहा था। 'यू सी, आई डोंट वांट टु रन इनटु ट्रबल। मुझे पेपर चलाना है दीवाला नहीं निकालना।

अय्यर झटके से कुर्सी से उठा। उसने कोट कंधे पर चढ़ाया।

बस यही इंस्ट्रक्शन्स हैं न आपके ? ओ के दन। मुझे और कुछ काम है यहाँ ? '

बस अभी तो इतना ही। पर मिस्टर अय्यर आप बेहद सेंसेटिव हैं। इट्ज बिजनस, यू सी।"

'ओ, आल राइट। मुझे कोई एतराज नहीं है। आपकी इन्स्ट्रक्शन्स पर ध्यान दूँगा।'

'चाय के लिए रुकिये न बस दस मिनट और।' अय्यर को खुश करने के इरादे से मैनेजर ने कहा।

रख दिए। भडारी ने भौंह सिकोडकर उन कागजों पर निगाह डाली। उलट पलट कर देखे। फिर जेब से चश्मा निकाला और आंखों पर चढ़ाया। दोनों कागज़ पढ़ने म उसने पंद्रह मिनट गुज़ार दिये। आई विल साइन दम टुमारो ' कह कर वे कागज इस तरह मनेजर के आगे सरका दिये जसे उसके हाथ झटक दिये हों। एक काजू मुह म डाल लिया। अय्यर को आया देखकर उसने कहा, आओ, आओ, अय्यर ! तुमसे बात करने आया था।"

अय्यर कभी का आकर जम्हाइयाँ ले रहा था। वह सिर्फ हँस दिया। वह कुछ ताड गया था। आज की फ्रंट पेज स्टोरी। नहीं तो किसी इश्तहार वाले को मस्का लगाना होगा। ऐसा कुछ करना हो तो बुढ्ढा अय्यर को जरूर बुलवाता है। मतलब अय्यर मस्का लगाने म तेज था यह बात नहीं बल्कि अय्यर से उस इश्तहार वाले का प्रोफाइल लिखवा लेना या कोई खबर ठीक तरह से छाप देना इसी से काम चल जाता था।

मिस्टर अय्यर, आई डोंट वांट एनी ट्रबल इन माई पेपर।'

अय्यर कुछ समझ न पाया। वह सिर्फ भडारी की ओर देखता भर रहा।

आजकल आप महाराष्ट्र और शिवसेना के खिलाफ काफी खबरें दे रहे हैं।" कुछ रुककर बोला, यह ठीक नहीं।'

सच पूछा जाये तो अय्यर का चेहरा तमतमा गया था, लकिन उसने अपने आप को सम्हालने की कोशिश की।

'आफ कोर्स मिस्टर भडारी आप मालिक हैं। आप चाहें जो कह सकते हैं। पर्सनली मैंने आपकी बातों पर जनलिस्ट की हैसियत से आब्जेक्शन किया होता।'

इस तरह के तेवर अय्यर ही दिखा सकता था। बूढे के आगे और किसी की हिम्मत ही नहीं पड़ती।

भडारी हस दिया और उसने एक काजू मुह म डाल लिया।

देखिये मिस्टर अय्यर आप साउथ इंडियन हैं और इसी वजह से आपकी शिवसेना पर नाराजगी है। आई सिंपथाइज विद यू। हम भी शिवसेना से ऐसी खास मुहब्बत नहीं रखते। बट यू नो, हम लोग बम्बई म रहते हैं। हमारा पेपर बम्बई और महाराष्ट्र म ज्यादा खपता है। दिस इज़ बिजनेस।

सर ! यू नो। हमारे कमचारी भी कुछ बडबडा रहे हैं ' मनेजर बोल पडा।

सी मुझे दीवाला तो निकालना नहीं है।

'आप गलतफहमी में हैं, मिस्टर भंडारी। आई एम मोर ए महाराष्ट्रियन दैन यू आर। पर मैं जर्नलिस्ट हूँ। सरकार के स्कैंडल सामने लाये, इसलिए पेपर की बिक्री बढ़ी। एक भी स्कैंडल झूठा नहीं था।"

"देटस ऑल राइट। बट आई डार्ट वांट देट काइंड ऑफ जर्नलिज्म हम लोगों के इश्तहारों पर असर पड़ता है। आई वांट समथिंग कंस्ट्रक्टिव।"

"ओ के ओ के।"

'एक बात और' भंडारी हँसते हुए बोला। कौन-सी बात, इसे अय्यर अच्छी तरह जानता था। वजह यह कि शिवसेना की हल्लेबाजी हमेशा से थी।

आज की आपकी स्टोरी मुझे बतई पसंद नहीं आयी।"

'आई एम श्योर अवर रीडर्स हैव लाइक्ड इट। कल आपके पेपर की बिक्री बढ़ेगी देख लीजियेगा।"

आई डोंट मीन देट' भंडारी अपने खास अदाज में हँसते हुए बोला, 'वैसे स्टोरी ठीक है पर कुछ क्वार्टर्स में वह खपेगी नहीं। हम लोगों का पेपर ब्लैकलिस्ट में चला जायेगा।'

'सो व्हाट? आप पेपर की बिक्री भी बढ़ाना चाहते हैं और ब्लैकलिस्ट में भी आना नहीं चाहते। ऐसा कैसे हो सकता है? एक बात तो माननी ही होगी" अय्यर कुछ समझाने के स्वर में बोला।

'नो। ऐसा नहीं है। दोनों बातें हो सकती हैं। पेपर भी खप सकता है और व्हाइट लिस्ट में भी रह सकते हैं। आई वांट टू डू दैट।"

'आई सी।'

'यस मस्ट सी,' भंडारी अब खुश होकर बोल रहा था। 'यू सी, आई डोंट वांट टु रन इनटु ट्रबल। मुझे पेपर चलाना है दीवाला नहीं निकालना।'

अय्यर झटके से कुर्सी से उठा। उसने कोट कंधे पर चढ़ाया।

बस यही इंस्ट्रक्शन्स हैं न आपके? ओ के दैन। मुझे और कुछ काम है यहाँ?'

बस अभी तो इतना ही। पर मिस्टर अय्यर आप वेहद सेंसेटिव हैं। इट्ज बिजनेस यू सी।"

'ओ आल राइट। मुझे कोई एतराज नहीं है। आपकी इंस्ट्रक्शन्स पर ध्यान दूँगा।"

'चाय के लिए रुकिये न बस दस मिनट और।" अय्यर को खुश करने के इरादे से मैनेजर ने कहा।

"नो थैंक्यू। मेरा लंच पर अपाइंटमेंट है। वैसे ही देर हो चुकी है" कलाई की घड़ी की ओर देखते हुए अय्यर ने कहा। उसे जाते देखकर भंडारी ने कहा ओके अय्यर। थैंक्यू फॉर यूअर अंडरस्टैंडिंग।"

अय्यर हँस पड़ा और हाथ ऊपर कर बोला 'इट्स आल राइट।' और तेजी से वहाँ से चलता बना।

वह अपने केबिन में बौखलाया हुआ घुसा। बुढ्ढे की वजह से दो घंटे बेकार हो चुके थे। सुबह के काम खतम करके रिपोर्टर लंच के लिए चले गये थे। अंदर पाक्षे फोन पर किसी से धीमे धीमे बात कर रहा था। अय्यर अंग्रेजी में बड़बड़ा रहा था— इससे तो तवायफें अच्छी होती हैं — कम से-कम खुला धंधा तो करती हैं वे। स्साला जर्नलिज्म है या हज्जामगीरी? बूढ़ा न जाने अपने आपको क्या समझे बैठा है! —सबसे पेपर की बिक्री तो मैंने बढ़ाई है और वो है कि मुझे पढ़ाने चला है। इससे तो ढाबा खोल लेना ज्यादा अच्छा है।"

'क्या हुआ, अय्यर साब?' फोन का रिसीवर नीचे रखते हुए पाक्षे ने पूछा।

स्साला वो ओल्ड क्रूक अपने आप को तीसमार खाँ समझता है। जर्नलिज्म नहीं जानता। मुझे बताता है कि सरकार और शिवसेना के खिलाफ खबरें न दी जायें। अरे असलियत क्या हम जानते नहीं है? खबर का मतलब खबर होती है।

लेकिन अय्यरसाब हमने इशारा किया था न आपको।

नाऊ टेल मी पाक्षे। बी फ्रैंक। मैं क्या एंटी महाराष्ट्र हूँ? मैं अब तक कम से कम पाँच सौ महाराष्ट्रियन लड़कियों के साथ सोया होऊंगा। उनमें से दस पन्द्रह से तो मेरी मोहब्बत थी और तीन चार से तो शादी ही करना चाहता था। अब तुम खुद बताओ—ऐसा आदमी कभी एंटी महाराष्ट्र हो सकता है?

पाक्षे ने गर्दन हिला दी और बोला पर फारस रोड और महाराष्ट्र एक बात तो नहीं है न?

और तुम जानते हो? दुनिया की किसी भी जगह से मुझे बम्बई ज्यादा पसंद है। आई लव बाम्बे, आई लव महाराष्ट्र। आइ हेट तमिलनाडु एंड आई हेट कर्नाटक।'

'हां हां वो तो ठीक है। पर हमेशा ही कहता रहा हूं, हर खबर छापने की जरूरत तो है नहीं। जनाब, आप खुद तो कहा ही करते थे कि स्कैंडल और स्कूप लाओ। अब लो। बुढ्ढा स्साला बड़ा बदतमीज है। हम तो उसे मान गये।

पोंक्षे स्साले गौड़ूगिरी न करो। कुछ प्रिसपल्स होते हैं। विज्ञापन के चक्कर में क्या खबरें ही न दी जायें? पेपर जला डालेंगे इसीलिए खबरें गोल कर दी जायें। स्साले, तुम भी तो पहले शिवसैनिक थे।'

मैं तो बुड्ढे की बात कह रहा था। शिवसेना की खबरें तो मैं खुद लाके देता था आप तो जानते ही हैं।"

'ठीक है तो अब न देना। आई विल सक यू समझे?"

पोंक्षे हँस पड़ा और बोला, बुड्ढे ने शायद उस खबर पर सक नोटिस दे दी न?'

एक दम स्टाफ वार्निंग। स्साले ने उसी के लिए ही बुलवाया तो था।"

हमने तो पहले ही कहा था।"

बदमाश स्साला! मैं क्या उससे डरता हूँ?

आफ कोर्स। कोस्टा की एपाइंटमेंट के बिल कर दोगे।"

नान्सेंस। पोंक्षे तुम मुझे समझते क्या हो? स्साला! मैं तो कास्टा के यहाँ जाने ही वाला हूँ। और एक रात स्टोरी दे ही दूंगा। कम आन। लेटस सी व्हाट हैपन्स।'

डोंट ब्लफ।"

आनेस्टली। मैं तो जाब तक छोड़ सकता हूँ। स्साले काम क्या मिलते नहीं?

अभी इस वक्त क्या चल रहा होगा जानते हो? जनरल मैनेजर भंडारी के आगे पीछे होगा। मद्रास में उसका भतीजा ही कैन बी ए गुड चीफ रिपोर्टर हीअर। और भंडारी इस कान से सुनता होगा और दूसरे कान से निकाल देता होगा। वो कौन तुम्हें छोड़ने वाला है?"

आइ एडमायर दैट प्रेक्टिकल बास्टर्ड।

अय्यर ने कलाई की घड़ी की ओर देखा और माथे पर हाथ रख लिया।

माई गाड मर गया। पोंक्षे घटा डेढ़ घंटा रुकोगे न? मुझे अब भागना ही होगा। बस हो काफी लेट हो चुका हूँ।'

उसने कोट फिर कंधे पर रख लिया। केबिन के दरवाजे पर पहुँचा। तभी पोंक्षे कुर्सी से उठकर उसके करीब आया और बोला, 'अय्यर साब, सली का फोन आया था। सली सीरियस है।

अय्यर रुका। वापस अंदर आकर उसने ट्रे से कागज उठाया और मुँह पोंछ लिया। फुसफुसाया बास्टर्ड! दुबारा फोन न करने के लिए कहा था। अच्छा फिर फोन करे तो कहना शाम को आऊँगा। ओके! मैं चलता हूँ।'

नीचे उतरकर अय्यर ने अपनी पतीस साल पुरानी ओपल ढूढ निकाली। चाबियों का गुच्छा निकाल कर दरवाजा खोला और व्हील पर बैठ गया। चाबी घुमाकर स्टाटर दबाया। आवाज निकलते ही एक्सीलेटर पर पाव रखा। फट फट, गू-गू-गू आवाज निकली और इंजिन यू बंद हो गया जैसे मर गया हो। अय्यर ने फिर चाबी घमायी। एक्सीलेटर फिर से दबाया। फिर गू गू आवाज निकली। दो-तीन बार यूँ ही होता रहा और अय्यर परेशान हो गया। चाबी निकालकर उसने दरवाजा खोला और पाव से धक्का देकर बंद कर दिया। एक तीखी गाली दी और बाहर आकर टक्सी को इशारा किया। ड्राईवर से ब्ल्यू कानर कहते हुए उसने कलाई की ओर निगाह डाली। पौने दो बज चुके थे। मिसेज खान काफी गर्मा गयी होगी। शी मस्ट बी फ्यूमिंग पर बैठी रहेगी। जायेगी कहाँ? कांफिडेंशियल एडवाइजर पढ़ते हुए बैठी रहेगी। सच पूछा जाये तो अय्यर को मिसेज खान पर प्यार आ ही रही थी। उसे गंदी किताबों से सख्त नफरत थी और मिसेज खान ऐसी किताबें बेहद पसंद करती थी। सली को वैसी किताबें पसन्द नहीं। सली बीमार है न? आज शाम कुछ भी हो उसके यहाँ जाना ही होगा। वह बीमार है। जाना ही होगा। कम से-कम शाम के वक्त तो जरूर ही जाना होगा। इधर सली काफी कमजोर हो गयी है। दुनिया की सबसे खूबसूरत दीखने वाली औरत। क्या बदन था! पर दो महीने पहले गया तो कैसी कमज़ोर कमज़ोर सी लगी। अब और भी बदसूरत हो चुकी होगी। मम्मी ज़रा देरी से मरी। चार पाँच साल पहले मरी होती तो सली से शादी कर ली होती। पर टाइम टेबिल गड़बड़ा गया। टाटा हास्पिटल में आखिरी दम मम्मी बोली भी थी — चाहो तो सली से शादी कर लेना। मेरे मरने से पहले ही कर लेना। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। अब सली सीरियस है। तब मम्मी थी। कैंसर की वजह से उसका सारा गला खराब हो चुका था। घुलघुल कर आखिर दम तोड़ ही दिया। सली भी घुल रही है। पर आज वह काफी सीरियस है शाम को जाना ही होगा। मैं इतना गिल्टी क्यों फील कर रहा हूँ? मैंने उसे छोड़ा तो नहीं था। हर महीने उसके लिए टली को पैसे भी काफी दिया करता था। टली शराब बेहद पीता है। पर बहन की दवा-दारू पर क्या वह खर्चा नहीं करेगा? पर सली के यहाँ जाना जरूरी है। कैसे जाय? गिल्टी फील होता है। यों ही। वैसे देखा जाये तो उससे कोई बंधा हुआ तो हूँ नहीं। जाने की इच्छा नहीं रही थी। उसकी ओर देखा न जाता था। मेरे लिए उसने अपना धंधा छोड़ दिया। पर कुछ जम ही न पाया। आई एम ए ब्रूट सेल्फिश रोग! लेकिन आज शाम को जाना ही होगा। जापानी पेंटर को साढ़े पाँच तक छोड़ देना

चाहिए। एक चक्कर ऑफिस का लगाना, काम देखना और साढ़े सात तक उसके यहाँ चल देना होगा। स्साला खुद का पेपर शुरू करना चाहिए। फिर भंडारी क्या और चीफ मिनिस्टर क्या ? किसी की न चल सकेगी। कल कोस्टा के यहाँ जाना ही चाहिए। हाँ। और आज सली के यहाँ।

आशा के अनुरूप मिसेज़ खान 'ब्ल्यू वानर म कान्फिडेंशियल एडवाइज़र' पढ़ते हुए बैठी थी। उसने आज कमीज़ और सलवार पहन रखी थी। हल्के नीले रंग की और उस पर सफेद फूल कढ़े हुए थे। बदन पर उसी रंग का दुपट्टा। बाँध किये बाल जो गदन पर झूल रहे थे। लाल लिपस्टिक और कलाई पर बड़ी-सी घड़ी। इसके अलावा उसके बदन पर गहने न थे। सच पूछा जाय तो इस वेश में वह अजीब लग रही थी। जब वह साड़ी में होती है तो उसके बदन का मुटापा कुछ छिप-सा जाता है। कमीज़ और सलवार में उसके बदन के हिस्से जैसे बाहर निकले पड़ रहे थे। इसी मुटापे की वजह से अय्यर को वह पसंद थी और इस बात को वह खूब अच्छी तरह जानती थी। अय्यर अंदर आया तब उसका आधा ध्यान मगज़ीन में था और आधा दरवाज़े की ओर। कुर्सी में बैठी वह कुसमुसा रही थी।

सॉरी मिसेज़ खान !

' मेरा खयाल था कि तुम आओगे ही नहीं।

'ओ नो मिसेज़ खान। मुझे परेशान न करो। कल म आ सका उसकी कुछ खास वजह थी।'

'आई नो। आई नो। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम कितने बातूनी हो !'

क्या बहुत गुस्सा हो गयी हो शायद ? अय्यर ने उसका हाथ अपने हाथ म लेते हुए पूछा। मिसेज़ खान इस हरकत पर पिघल गयी लेकिन जानबूझकर उसने अय्यर का हाथ परे हटा दिया।

चलो हटो मैं तुमसे बात तक नहीं करना चाहती' वह हँसते हुए बोली।

अय्यर भी खुश होकर हँस पड़ा। फिर उसने वेटर को बुलाकर लंच का आर्डर दे दिया।

मिस्टर खान की कोई चिट्ठी विट्ठी ?'

मिसेज़ खान ने नकारात्मक लहजे में कंधे हिलाए और नीचे का होंठ तिरस्कार और नफरत से बाहर निकाल लिया।

''कहाँ हैं आजकल ?

' बैंकाक।'

सूप आने तक दोनों चुप रहे। होटल में चहल-पहल नहीं थी। वैसे

नीचे उतरकर अय्यर ने अपनी पतीस साल पुरानी ओपल ढूट निकाली। चाबियों का गुच्छा निकाल कर दरवाजा खोला और व्हील पर बैठ गया। चाबी घुमाकर स्टार्टर दबाया। आवाज निकलते ही एक्सीलेटर पर पांव रखा। फट फट यू-यू-यू आवाज निकली और इंजिन यू बंद हो गया जैसे मर गया हो। अय्यर ने फिर चाबी घुमायी। एक्सीलेटर फिर से दबाया। फिर गू-गू आवाज निकली। दो-तीन बार यूँ ही होता रहा और अय्यर परेशान हो गया। चाबी निकालकर उसने दरवाजा खोला और पांव में धक्का देकर बंद कर दिया। एक तीखी गाली दी और बाहर आकर टैक्सी को इशारा किया। ड्राईवर से ब्ल्यू कानर कहते हुए उसने कलाई की ओर निगाह डाली। पौने दो बज चुके थे। मिसेज खान काफी गर्मा गयी होगी। शी मस्ट बी फ्यूमिंग पर बैठी रहेगी। जायेगी कहाँ ?' कांफिडेंशियल एडवाइजर पढ़ते हुए बैठी रहेगी। सच पूछा जाये तो अय्यर को मिसेज खान पर दया आ ही रही थी। उसे गंदी किताबों से सख्त नफरत थी और मिसेज खान ऐसी किताबें बेहद पसंद करती थी। सली को वैसी किताबें पसंद नहीं। सली बीमार है न ? आज शाम कुछ भी हो उसके यहाँ जाना ही होगा। वह बीमार है। जाना ही होगा। कम से-कम शाम के वक्त तो जरूर ही जाना होगा। इधर सली काफी कमजोर हो गयी है। दुनिया की सबसे खूबसूरत दीखने वाली औरत। क्या बदन था ! पर दो महीने पहले गया तो कैसी कमजोर कमज़ोर सी लगी। अब और भी बदसूरत हो चुकी होगी। मम्मी जरा देरी से मरी। चार पाँच साल पहले मरी होती तो सली से शादी कर ली होती। पर टाइम-टेबिल गड़बड़ा गया। टाटा हास्पिटल में आखिरी दम मम्मी बोली भी थी — चाहो तो सली से शादी कर लेना। मेरे मरने से पहले ही कर लेना। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। अब सली सीरियस है। तब मम्मी थी। कैंसर की वजह से उसका सारा गला खराब हो चुका था। घुलघुल कर आखिर दम तोड़ ही दिया। सली भी घुल रही है। पर आज वह काफी सीरियस है शाम को जाना ही होगा। मैं इतना गिल्टी क्या फील कर रहा हूँ ? मैंने उसे छोड़ा तो नहीं था। हर महीने उसके लिए टली को पैसे भी काफी दिया करता था। टली शराब बेहद पीता है। पर बहन की दवा-दारू पर क्या वह खर्चा नहीं करेगा ? पर सली के यहाँ जाना जरूरी है। कैसे जाय ? गिल्टी फील होता है। यों ही। वैसे देखा जाये तो उससे कोई बँधा हुआ तो हूँ नहीं। जान की इच्छा नहीं रही थी। उसकी ओर देखा न जाता था। मेरे लिए उसने अपना धंधा छोड़ दिया। पर कुछ जम ही न पाया। आई एम ए ब्रूट सल्फिश रोग' लेकिन आज शाम को जाना ही होगा। जापानी पेंटर को साढ़े पाँच तक छोड़ देना

चाहिए। एक चक्कर ऑफिस का लगाना, काम देखना और साढ़े पाँच तक उसके यहाँ चाय देना होगा। स्वाला मुद का पेपर शुरू करना चाहिए। फिर मज़ारी क्या और चीफ मिनिस्टर क्या? किसी की न चल सकेगी। चन कोल्टा के यहाँ जाना ही चाहिए। हाँ। और आज सती के यहाँ।

आशा के अनुरूप मिसेज खान 'ब्लू कालर' में कांफिडेन्शियल एटमास्फियर पकड़े हुए बैठी थी। उसने आज कमीज और सलवार पहन रखी थी। हल्के नीले रंग की, और उस पर सफेद फूल कढ़े हुए थे। कन्धे पर उसी रंग का दुपट्टा। बॉब किये बाल उसकी गर्दन पर झूल रहे थे। लाल लिपस्टिक और कलाई पर छोटी-सी घड़ी। इसके अलावा उसके बदन पर गहने न थे। सच पूछा जाये तो इस वेश में वह अजीब लग रही थी। जब वह साड़ी में होती है तो उसके बदन का मुटापा कुछ छिपा-सा जाता है। कमीज और सलवार में उसके बदन के हिस्से जैसे बाहर निकल पड़ रहे थे। इसी मुटापे की वजह से अय्यर को वह पसन्द थी और इस बात को वह खूब अच्छी तरह जानती थी। अय्यर अन्दर आया तब उसका आधा ध्यान मैगज़ीन में था और आधा दरवाज़े की ओर। कुर्सी में बैठी वह कुनमुना रही थी।

सॉरी मिसेज खान !''

मेरा खयाल था कि तुम आओगे ही नहीं।'

'ओ नो मिसेज खान। मुझे परेशान न करो। काम में आ गया, उसकी कुछ खास वजह थी।

'आई नो। आई नो। मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम कितने बातूनी हो!''

''क्या बहुत गुस्सा हो गयी हो शायद?'' अय्यर ने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए पूछा। मिसेज खान इस हरकत पर पिघल गयी लेकिन जानबूझकर उसने अय्यर का हाथ परे हटा लिया।

'चलो हटो मैं तुमसे बात तक नहीं करना चाहती,'' वह हँसते हुए बोली।

अय्यर भी खुश होकर हँस पड़ा। फिर उसने वेटर को बुलाकर लंच का आर्डर दे दिया।

मिस्टर खान की कोई चिट्ठी विट्ठी?'

मिसेज खान ने नकारात्मक लहजे में कन्धे हिलाए और नीचे का होंठ तिरस्कार और नफरत से बाहर निकाल लिया।

'कहाँ हैं आजकल?''

'बैरूत।''

सूप आने तक दोनों चुप रहे। होटल में चहल पहल नहीं थी। वैसे

सारी टेबिल भर चुकी पर आवाज नही आ रही थी। एयरकंडीशनर की वजह से बाहर का हो-हल्ला अन्दर तक न आ पा रहा था। अंदर बैठे हुए लोग फुसफुसाहट जरूर कर रहे थे। नीचे मोटा-सा कारपेट और ऊपर हल्का नीला प्रकाश। दीवारों पर गहरा नीला रंग और बेटरा के कपडे भी नीले रंग के थे। सारा माहौल ही धूमिल और नीचे की ओर झुका-सा था। दीवार पर लगी बत्तियाँ पानी की फिसलती बूंद जसी लग रही थीं। यह होटल मिसेज खान को सबसे ज्यादा पसन्द था और अय्यर को नापसंद। अय्यर तेज रोशनी और खुली हवा पसंद करता था। उसे खुली हँसी बहुत पसंद थी। लेकिन वह जानता था कि मिसेज खान से मिलना हो तो इसी होटल में मिला जा सकता है।

अभी कम-से-कम दो महीने तक तो मिस्टर खान साउथ ईस्ट एशिया में घूमेंगे। उनकी कंपनी वहां अच्छी तरह जम चुकी है। मतलब मिस्टर खान का ही सारा क्रेडिट जाता है।

आई नो। मैंने परसों ही पढ़ा था।'

कल तुम क्यो नही आये ? मिसेज खान ने तीखी नजरों से उसकी ओर देखते हुए और विषय बदलते हुए कहा।

ओ मिसेज खान आई टोल्ड यू। मैं बहुत बिज़ी था।

झूठ तो न बोलो। मैंने तुम्हारे आफिस में और घर पर तीन चार फोन किये थे।

अय्यर सिर्फ हँस दिया।

मिसेज खान ने अचानक उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। उसे धीमे से दबाते हुए वह जख्मी आवाज में बोली—

अय्यर ! अय्यर ! डोंट लाफ एट मी। तुम नहीं जानते मुझे तुम्हारी कितनी जरूरत है। प्लीज डोंट लाफ प्लीज।

वह कुछ ऐसे अन्दाज में बोली कि अय्यर परेशान हो गया। बस उसकी आंखों से आँसू आने बाकी रह गये थे। अय्यर को बुरा लगा।

मैं तुम पर नहीं हँसा था सच कह रहा हूं। मैं तो अपने ही पागलपन पर हंस रहा था। सच मुझे कल डिनर के लिए आना था। कल एक एपाइंटमेंट पर चला गया था। किसी को भी मालूम न था।

मिसेज खान अय्यर का हाथ वैसे ही अपने हाथ में थामे रही और उसकी ओर देखती रही।

तुम मुझ पर एतबार नही करती मिसेज खान ? डार्लिंग डोंट यू बिलीव मी ? अय्यर ने अपराध भाव से पूछा।

मिसेज खान एकदम खुश हो गयी। उसने तेजी से अय्यर का हाथ छोड

दिया और हँसने लगी।

"ओ यू नाटी फूल। तुमने पहली बार मुझे डार्लिंग कहा। ओ हाऊ स्वीट।

अय्यर ने मन-ही-मन माथे पर हाथ मारा। इतनी लड़कियों के साथ वह घूमा था पर सली के अलावा किसी को उसने डार्लिंग न कहा था। उस शब्द का जादू वह जानता था और वह उस शब्द का उपयोग जानबूझकर नहीं करता। लेकिन मिसेज खान जरा ज्यादा ही नाराज हो रही थी इसी वजह से उसके मुंह से भूल से वह शब्द निकल गया था। उसे लगा कि वह यह क्या कर बैठा। वह मिसेज खान के फ्लैट पर दो तीन बार गया था। लेकिन वह सब तो शौक था। सनी और दूसरी दो या तीन लड़कियों के अलावा दूसरी लड़कियों के साथ इस शौक के अलावा उसने कुछ न किया था। शौक मतलब शौक। सनी से भी उसका प्रेम था क्या? या कि उसका आब्लिगेशन ही प्रेम सा लगता रहा? वह जरूर इमान पर थी। मेरे लिए उसने अपना धन्धा तक छोड़ दिया था। इसीलिए मुझे शायद उससे शादी करने की इच्छा हो रही थी। पर सली जरा अलहदा ही थी। उसके बगैर मुझे एक दिन भी चैन न आता था। वह सबसे अलग थी। वह खूबसूरत थी या नहीं, पता नहीं। पर उसका बदन जरूर गदराया हुआ था। सबसे ज्यादा पैसे मैंने सली पर खर्च किये। पैसे ही क्या? टाइम भी। पर सनी से प्रेम था? मोहब्बत क्या होती है खुदा ही जाने। शायद मैंने किसी से मोहब्बत की ही नहीं। नहीं तो इस तरह का सवाल उभरता ही क्यों? मेरा मम्मी से प्रेम था? टाटा हास्पिटल में जब वह तड़प रही थी तो मैं सोच रहा था कि यह दुनिया कब खत्म होगी? उसकी तरफ देखा न जाता था। जरूरत पड़ती तो उसे जहर तक दिया जा सकता था। यह क्या स्वार्थ मोहब्बत की निशानी है? प्यार अपने लिए नहीं है या प्रेम की भावना ही ग़बन है? शारीरिक वासना का भावात्मक धरातल पर प्रोजेक्शन का मतलब है प्रेम। जाने दो। जिस विषय में हमारी जानकारी नहीं उस पर सोचना ही किसलिए? मिसेज खान का मिस्टर खान से प्रेम क्या नहीं है? मुझसे है? मुझे सली से है। सली बीमार है। सेनेटोरियम है। उसके पास वक्त निकालकर जाना ही होगा।

लंच के दौरान मिसेज खान मीठी मीठी आवाज में बतिया रही थी। लंच के दौरान, मतलब हर डिश के दौरान। गरज यह कि वह ज्यादा खाती न थी। अय्यर जरूर बोर हो चुका था। उसे मिसेज खान जरूर पसन्द थी, पर उसकी बातें नहीं। वह पूरी तौर पर खुल चुकी है इस बात को भी वह जान चुका था। अब उसके फ्लैट पर जाना होगा। उसकी साँस

तज हो गयी। पर वह ईजी है। इसलिए ऐन वक्त पर मजा नहीं आता। वह कितनी आसानी से करीब आ जाती है। जरा भी हिचकिचाहट नहीं। इसीलिए जरा यू ही लगती है। खुद करीब आती है इसलिए ऐसा लगता होगा। सली क्यों पसन्द आती थी? वह हमेशा विरोध करती थी, खुद तो कभी भी करीब न आती थी। अय्यर को पूरा-पूरा दिन उसके लिए बरबाद करना पड़ता था। तब कहीं वह राजी हो पाती थी।

'य मस्ट प्रामिज मी। रोजाना मुझसे मिलना होगा," मिसेज खान ने कहा।

'रोजाना? कसे हो सकता है? तुम तो मेरे काम के बारे म अच्छी तरह जानती हो।'

'ओ यू नाटी! तुम फिर मेरे साथ दगा कर रहे हो।"

नहीं मिसेज खान। पर वाकई रोजाना मिलना कमे हो सकता है? तुम मिल सकती हो?

हाँ रोजाना तो मुश्किल है। लेकिन सप्ताह म तीन चार बार तो सही।'

देटस गुड। बी कन मनेज।

प्रामिज?'

'प्रामिज।

आज ही हम लोग चलते हैं।'

'ओ, मिसेज खान!"

ओह येस डार्लिंग!

'अभी?'

अभी।

आके।

'यू आर सिंपली वडरफुल अय्यर!'

'वाकई?'

ऑफ कोस! तुम जसा आदमी तो मैंने जिन्दगी म देखा नहीं।"

माई गाड!"

मिस्टर खान तुम्हारे आगे कुछ नहीं।"

'और किसे देखा है?'

देखे हैं तीन चार और भी। लेकिन आई लव यू। दूसरे किसी से भी मैंने मोहब्बत नहीं की है।

'नानसेंस! चलो चलते हैं।'

'नो। आई एम टाकिंग सेंस। मिसेज खान ने उसका हाथ फिर अपने

हाथ में ले लिया था। 'तुम्हें यह सब नानसेंस लगता है, अय्यर ?'

'क्या कहती हो मिसेज़ खान ? डोंट वी टू सेंटिमेंटल हीअर। चलो चलते हैं।'

'ओह ! अय्यर तुम मुझे दगा नहीं दोगे न ?'

'चलो। मैं ज़रा जल्दी हूँ।'

'ओ यू नाटी ! इतनी जल्दी है ?'

मिसेज़ खान ने उसकी ओर तिरछी नज़रों से देखा। जल्दबाज़ी का मिसेज़ खान ने खास अर्थ लगाया था, इस बात पर अय्यर को मज़ा आ गया। उसने मिसेज़ खान को हाथ पकड़ कर कुर्सी से उठाया और बाहर ले आया। मिसेज़ खान तो इतनी खुश थी कि बिल के बचे नौ रुपये तक वापस लेना भूल गयी। वह अपने पति की 'जेफर' लायी थी। व्हील पर बैठी और अय्यर को उसने अपने बिलकुल करीब बिठा लिया, सटा कर। उसका बदन गरम था। अय्यर को कार की गद्दियाँ अच्छी लग रही थीं।

'आई एम प्लीज्ड। आई एम प्लीज्ड टू डे' कहते हुए मिसेज़ खान ने एक्सीलेटर पर पाँव रखा और अपने कोलाबा के फ्लैट की ओर गाड़ी तेज़ी से बढ़ा दी। मिसेज़ खान व्हील पर बैठी हों, ऐसे किसी अवसर पर अय्यर कभी गाड़ी में न बैठा था। इसी वजह से उसकी ड्राइविंग से वह खुश था। मिस्टर खान के साथ वह काफी बार गाड़ी में बैठा था। पर मिस्टर खान की जगह मिसेज़ खान ही उस व्हील पर ज़्यादा अच्छी लगती हैं। अपने मुटापे की वजह से वह वहाँ बेहद अच्छी लगती हैं। अय्यर को लगा कि उसकी च्वाइस बुरी नहीं। और तभी अय्यर ने उसके घुटनों पर अपना हाथ रख दिया। मिसेज़ खान खुश हो गयी। वह किस तरह खुश होती है, यह बात अय्यर अच्छी तरह जानता था। एक खास मौके पर मिस्टर खान ने खुद मिसेज़ खान के वीक पाइंट अय्यर को बताये थे। मिस्टर खान अय्यर से बेहद खुश थे। उनके एक्सपोर्ट प्रमोशन पर अय्यर ने 'वेस्टर्न स्टार' में एक कालम लिखा था। तबसे मिस्टर खान अय्यर पर फिदा थे और तभी मिसेज़ खान से भी गहरी दोस्ती हो गयी।

गैराज में गाड़ी रखकर मिसेज़ खान अय्यर को लेकर सीधी फ्लैट में जा पहुँची। उससे अब रहा न जा रहा था।

अय्यर मिसेज़ खान के बैड रूम से बाहर आया तब पौने चार बज चुके थे। मिसेज़ खान सो चुकी थी। वह पसीने से तर था। गले में टाई सुहा नहीं रही थी। दिन का मज़ा कुछ और ही होता है। लेकिन पसीने की वजह से अब

वह परेशान हो रहा था। आज का दिन जाया नहा गया था। मिसज खान आज वहन् गश थी। वह जापानी पेंटर जरूर राह देखते-देखत परेशान हो उठा होगा।

वहा स निकलन स पहन अय्यर एक और वजह म परेशान हो उठा। इन दो-तीन घटा क दौरान उसन आफिस फोन नहीं किया था। अगर कुछ हो-हुआ गया तो नाहक परेशानी। आज रिपोटर कम हैं। आफत न आ जाये? मिसज खान क बैंड रूम का दरवाजा बद कर उसन डायल घुमाया।

वस्टन स्टार रिपोटम।

'क्या रे शर्मा, अभी तक घर नहीं गया?'

यू ही बैठा था। बस निकल ही रहा हू।'

'कोई गड़बड़?

कुछ नहीं बिलकुल ठडा।

इवनिंग का लीड कौन-सा है डिरेलमट।

ना। चीफ मिनिस्टर का अधेरी वाला फक्शन।

वास्टड, स्साला! साली इवनिंग स्टार' क चीफ सब एडीटर क लिए थी। 'लोगा को डिरेलमेट म इटरेस्ट होगा कि मविया के हगने मूतने म? कुछ एनाउसमट या पालिसी मटर दिया है क्या सी० एम० ने?

कुछ नहीं अय्यर साब। सी० एम० रैप्स इडस्ट्रियलिस्टस दटस आल।

'ओके। फारगट इट। अच्छा बाई। मैं आ रहा हूँ। घटे दो घटे म। नोट कर रखो। ताज जाकर आता हूँ।

ओके—बाई!"

हलो हलो मेरे लिए फोन था क्या किसी का?'

हाँ। स्मगलिंग क स्टोरी पर काफी फोन आये थे। एकदम सेंसेशनल स्टोरी बास। हाँ हाँ एक फोन और आया था, किसी टली आदमी का था अभी पद्रह मिनट पहले।

'स्साला खराब आदमी। क्या वह रहा था?'

'टली का था। पता लगत ही पाक्ष ने ल लिया।

ह्वेअर इज पोक्षे?

अभी यहाँ नहीं है।

ठीक है। मैं आ ही रहा हूँ।

रिसीवर रखकर अय्यर न टाई ठीक कर ली। जूत क फीत कस लिये और फ्लट का दरवाजा बद करक नीचे चला आया। टली को शायद पैसे की जरूरत होगी। इसीलिए सता रहा है स्साला। शायद सली के

दवाई के पैसे खुद ही डकार गया होगा बदमाश। फिजीकली स्साले को पीटना होगा। या हो सकता है सन्नो बीमार है। इसलिए घबरा गया हो। यस आज उसके यहाँ जाना ही होगा। येस येस। आई मस्ट मस्ट गो। इन एनी केस। बीमार जो है। अय्यर तभी भावुक हो गया। उसे बच्चे दिन याद हो आये और उसके सीने की धड़कन तेज हो गयी और उसने तय कर लिया कि आज उसके यहाँ जायगा ही। आज शाम को जाना ही होगा। फूलों का गुच्छा लेकर। सन्नो को खुश हो जाना चाहिए।

अय्यर ने टक्सी ली और ताज की ओर बढ़ लिया। आज उसे भंडारी का मामला बहुत परेशान किए जा रहा था। वह पूरी तौर पर जानता था कि भंडारी उसे छोड़ेगा नहीं। मेरे बल पर उसका पेपर चलता है। मेरे समान कालम जैसा दूसरा कैसे लिख सकता है? आज मुकामुरा के कालम में भी हो-हल्ला मचा देंगे। एकदम सुन्न विषय। लेकिन कल कोस्टा से मिलना ही होगा। पीठ दिखाने से कुछ होना-हवाना नहीं। हम पोंक्स को गालियाँ देते रहते हैं। लेकिन शहाणे का फोन आने के बाद और भंडारी की बातों के बाद से मेरा ही मन मुझे खाये जा रहा है। शहाणे के यहाँ न गया तो क्या होगा? पर कास्टा के यहाँ जाने से भी क्या होगा? देखेंगे। देखेंगे। कोस्टा से मिलेंगे तो सही। उसके पास है क्या देखेंगे जरा और आज मुझे जाना ही होगा। कुछ भी क्यों न हो—आज बहानेबाजी न चल पाएगी। टली ने दुबारा फोन किया था। तो उसके यहाँ जाना ही होगा।

वह पेंटर बोर हो गया होगा। शायद मुझे गालियाँ निकाल रहा होगा। अब उसे देरी के लिए क्या वजह बतायेंगे? कुछ भी बताया जा सकता है। आई एम ए चीफ रिपोर्टर—ए बिजी मन।

मुकामुरा जापानी पेंटर?"

मुकामुरा जापानी पेंटर।'

'रूम ३११—आउट।'

ओह आई एम लेट। कब चला गया?

काफी वक्त हो गया। लंच के बाद ही।'

अब लाउंज में राह देखनी चाहिए। वहाँ की स्प्रिंगादार कुर्सी पर अय्यर बैठा। रंगीन रईसी कपड़ों में लोग आ-जा रहे थे। पोर्च में बड़ी बड़ी कारें। टक्सियाँ आतीं रुकतीं और चली जातीं। पोर्टर तेजी से लपकते। आने-जाने वालों में कई लोग अय्यर के पहचान के थे। हर बार हंसों और शेक हैंड के लिए अय्यर का खड़ा होना पड़ता था। दो बातें करनी पड़ती थीं। अय्यर बोर हो गया। मुकामुरा का पता ही न चलता

था। दूसरा वक्त होता तो अय्यर वहाँ से चल भी देता। अपाइंटमेंट मतलब अपाइंटमेंट। तय किये वक्त पर मिलना चाहिए। एक बार मध्य एशिया के एक नेता ने वक्त पर न आकर अय्यर को परेशान कर दिया था और गुस्से में अय्यर वहाँ से चलता बना था। उस नेता ने बाद में काफी हाय तोबा मचायी थी। पर आज खुद ही देर से पहुँचने का अपराध बोध अय्यर को परेशान किये जा रहा था। वह इसी वजह से वहाँ रुका हुआ था। उसे सिगरेट कतई पसंद न थी। बस इस तरह किसी की राह देखना हो तो सिगरेट जरूरी होती है। लेकिन पसंद ही न हो तो क्या किया जा सकता। अब यह जापानी बूढ़ा कहाँ चला गया है पता नहीं। बारह मिनट से ज्यादा वक्त हो गया यहाँ इंतजार करते हुए। अब अगर पाँच मिनट में नहीं आया तो आफिस को फोन कर देना पड़ेगा। वैसे दोपहर ठीक कट गयी। मिसेज खान ने आज काफी मजा दिया था। पिछली बार के मुकाबले आज वह कुछ और ही महसूस हुई थी। ओह यस सली ! सली बीमार है। सीरियस है। शाम को कोई काम नहीं है उसके यहाँ जाना ही होगा। उसकी ओर देखने तक की हिम्मत न होगी। उसकी सूरत बिगड़ चुकी है। पर कुछ भी हो जाना होगा। आज बहानेबाजी नहीं चल पायेगी। कई दिनों से बात टल रही है। आज नहीं। टली कहती है वह सीरियस है। कुछ भी कहो उसके पास जाना ही होगा।

यू अय्यर आफ वेस्टन स्टार ?

एंड यू आर मिस्टर मुकामुरा ?

करेक्ट। माफ कीजिये मुझे देर हो गयी।

ओह ऑल राइट।"

मुकामुरा अय्यर को अपने कमरे में ले गया। अय्यर के मना करने के बावजूद भी उसने बीयर के दो मग मँगवाये। बाद में बूढ़े ने अपने ब्रीफकेस में से कुछ स्केच निकाले। अय्यर एकदम ठंडा पड़ गया। वे सारे ही चित्र संभोग के थे।

"हाट ? यू दिद नाट नो आय स्पेसलाइज इन दिस सब्जेक्ट ?" अय्यर की हालत देखकर बूढ़े ने हँसते हुए पूछा।

ना। आई मीन यस। पर आपका यह विषय होगा मुझे मालूम था। इंटरेस्टिंग। गुड स्टोरी।

फिर बूढ़े ने देश विदेश में बनाये हुए चित्र दिखाये। देश विदेश के लोगों के प्रेम करने के तरीके कैसे अलग-अलग हुआ करते हैं यह सब उसने अय्यर को समझाया। अय्यर ने खुद अपने अनुभवों के आधार पर कुछ बातें बतायीं। कोणार्क और खजुराहो जाने की सलाह भी दी और

बम्बई म इस विषय पर माडल कहा मिल सकते हैं, यह भी बताया।

मो यू सी दिस इज मास्ट चलेंजिंग सब्जेक्ट। यह मजाक का विषय हो ही नहीं सकता। जिन्दगी का मूल तत्व इसी विषय म है। आज के मशीनी युग म एक यही बात मौलिक रूप म बची हुई है जिन्दगी के अन्य पहलुओं पर मशीनीकरण का प्रभाव है। पर यह शारीरिक क्रिया अमर है। यू नो मैंने मारी जिन्दगी इसी खोज पर लगा दी है। आज तक तीन हजार चित्र बनाये हैं। पर अभी तक मन के लायक एक भी नहीं बना सका हूँ। काफी अध्ययन करना पडता है। सेक्सुअल की सायकालोजी उनके गुण दोष उनके हालात उनकी एनाटोमी—यू नो दिस इज द मोस्ट चलेंजिंग टास्क यू सी।

सर्टेनली एंड मोस्ट इंटरेस्टिंग टू, गदन हिलाते हुए और साफे स उठते हुए अय्यर ने कहा मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। आपके मन का चित्र तो हिन्दुस्तान म ही बन सकता है। यहां के लोग दिल खोलकर प्रेम करते हैं। गुड बाइ।

थक्यू। एंड गुड बाई। बूढा दिल खोलकर हंसा।

अय्यर का काफी वक्त वह ले चुका था। लेकिन वक्त बेकार नहीं गया था। उस इसी बात की तसल्ली थी कि एक अलग तरह का चित्रकार उसे मिला था। बूढा काफी होशियार चित्रकार मालूम देता था। उसने काफी अध्ययन किया होगा। उसे वह पसंद भी आया था। मतलब आज का दिन अच्छा गुजरा था। बस एक ही बात कि ऑफिस में उस बूढ़े का चेहरा देखना पड़ा था। मिसेज खान के फायनर पाइंट्स समझ म आ गये थे और मुकादमा से पहचान हो गयी थी। अय्यर ऑफिस म पहुँचा तब पौने छ बज चुके थे।

पाशे अभी टेबल पर ही बैठा हुआ था। अय्यर को देखते ही वह झट से उठ खड़ा हुआ।

क्यों बे यहाँ क्या कर रहा है? सचिवालय नहीं गया।

सर दद कर रहा था। पालकर को वहाँ भेज दिया।'

पालकर को? तुम चीफ रिपोटर कब से हो गये?'

अय्यर की नाराजगी देखकर पोशे कुछ न बोला। केबिन म और भी दो-तीन रिपोटर बैठे हुए थे। पोशे न अय्यर का कोट उतार दिया। फिर उसे धीरे से केबिन के बाहर बुला लिया।

क्या है रे खराब आदमी? सिर दद का बहाना कर कामचोरी करते हो?'

"वसा नहा अय्यर साब।

फिर ऐसी कौन-सी आफ्त है कि इतनी सीक्रेसी ?'

नही वसी बात नही है। मुझे और कुछ कहना था।" पोषे अय्यर के चेहरे को पढ़ते हुए बोल रहा था।

बोला बेटा क्या है ? कौन सी छोकरी ढूढ ली है ?"

पोक्ष न अजीब नज़रो से अय्यर को देखा और फिर अय्यर की नज़रों से नज़रें बचाते हुए बोला—

'टली का आधे घंटे पहले फ़ोन आया था। सली इज डेड ।

किशोर वझे

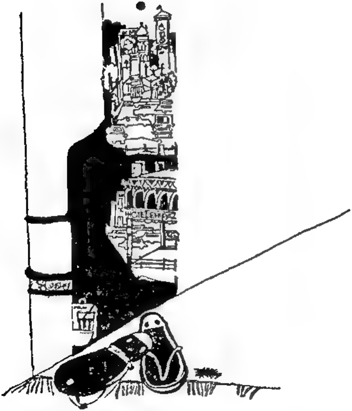

"वसा नही, अय्यर साब।
फिर एसी कौन-सी आफत है कि इतनी सीत्रंसी ?"
नही वसी बात नही है। मुझे और कुछ कहना था।" पोश अय्य
क चेहरे का पढत हुए बोल रहा था।

'बोला वेटा क्या है? कौन सी छोकरी ढूढ ली है?'

पोक्षे न अजीब नजरा से अय्यर को देखा और फिर अय्यर की नजरे से नजरें बचाते हुए बोला—

'टली का आधे घटे पहले फोन आया था। सली इज डड।'

किशोर वझे

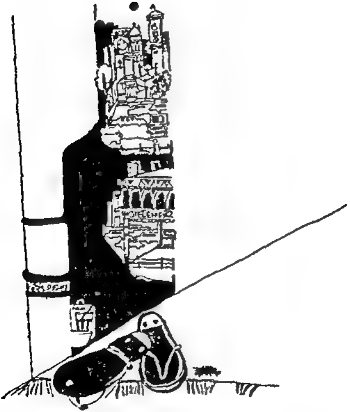

किशोर वझ जब उठा तब सारी बम्बई बदन झटककर काम में जुट गयी थी। साढ़े आठ बज चुके थे और दादर पुल पर वाहनों की कतारें सरकती जा रही थीं। ब्रोगानाद सकल अम्बेडकर रोड वाहनों से खचाखच भरा हुआ था। फोर्ट के सभी दफ्तर खुलने लगे थे। बढ़िया कपड़े पहने पुरुष और स्मार्ट दीखती लड़कियाँ तेज़ी से कदम बढ़ाती हुई आफिस की ओर जा रही थीं। बिलकुल सुबह खुलने वाले आफिस बड़ी कम्पनियों के थे। चर्चगेट और बोरीबन्दर की ओर से रंगीन कपड़े पहने लोगों की भीड़ बाहर निकल रही थी। सारी बम्बई अपने काम में जुट रही थी। अय्यर बाहर निकलने की तैयारी कर रहा था। नीला कभी की बाहर निकल चुकी थी। दयानन्द पानिटकर ने अपनी गाड़ी चालू कर दी थी। डीकोस्टा का दिन कभी का शुरू हो चुका था। मुख्यमंत्री शिवाजीराव शिंदे काम के चक्कर में कभी के डूब चुके थे। किशोर ज़रूर अभी उठकर बैठा था।

रोज़ के बाकी लोग सुबह के काम से निपटकर कभी के अपने अपने काम पर निकल गये थे। चार खाट के उस कमरे में किशोर औंधा लेटा हुआ था। अकेला। बदन पर नेकर और सैंडो बनियान। उसकी आँखें खुली तभी से नज़रों के आगे छत से टंगा जंग लगा पंखा घूम रहा था। पंखे के बीच वाले गोल हिस्से में उसका मुँह प्रतिबिम्बित हो रहा था। रोज़ाना उसकी खुद से यों ही अजीब मुलाकात हो जाया करती थी।

आँख खुलने के बाद किशोर पहला काम यह करता कि अपने हाथ पाँव फैलाकर सुस्ती दूर करता और फिर लम्बा हाथ करके करीब के टेबिल पर रखा चारमीनार का पैकिट उठाता और तीली जलाकर सिगरेट फूँकने लगता। हमेशा की तरह पंखे में अजीब शक्ल देखकर उसने सिगरेट सुलगा ली। एक लम्बा कश खींचा। धुआँ उसके सीने में अन्दर तक चला गया। उसकी इच्छा उस लम्बे धुएँ को बाहर निकालने की नहीं होती। अपने सीने में और पेट में वह उसे छिपाये रखना चाहता है। अपने खून में शामिल कर लेना चाहता है। इसके लिए वह जी तोड़कर कोशिश करता है। खाट पर वह अपना बदन एकदम ढीला छोड़ देता है। इसी वजह से वह वाकई क्या कर रहा है इस बात का अन्दाज़ देखने वाले को नहीं हो सकता। पर वह धुएँ को अपने में पूरी तौर पर समेट लेने की कोशिश में लगा रहता है लेकिन वह उससे नहीं हो पाता। आखिर हारे हुए योद्धा की

तरह वह निढाल होकर पने म अपनी शक्ल देखत हुए साँस बाहर को आर छाड देता है।

दिन की पहली हार। दिन भर म इस तरह कई बार हारना पडता है। और कितने दिनो तक हार स्वीकार करनी होगी? तीस साल ता किसी तरह गुजार दिये। काफी साल हो चुके हैं।

रोजाना इसी तरह की हार की सुबह क्योकर आती है? और कल मैंने कौन-कौनसे बोझ सपने देखे थे? वाकई रात की बातें सुबह याद आन ही अजीब शम महसूस होती है। ऐसे खयालात मन म कस आ जाते हैं? मन की विकृति हो सकती है। नही तो सुबह उठकर उन बाता के लिए इतनी शम क्यो महसूस होती है? हार की एसी आत्मनिदक आत्मघाती सुबह विश्वास लिये आती दोपहर आशा की किरण चमकाती साँझ और सपना की हलकी सी माला गूथने वाली रात फिर सुबह हाते ही हार का एहसास। यही हमेशा हाता है। यह घरा मुझस कभी न टूट पायेगा। कारण मैं अजीब दब्बू हू। नही ता पिछले पन्द्रह सालो म एक भी हँसती सुबह का मुझे एहसास हुआ है? जिस रात हमेशा के लिए सो जायेंगे उस रात के बाद सुबह कभी होगी? वह सुबह कैसी हागी? माई गाड, वह सुबह भी इसी तरह की नही होगी न?

खत्म होने वाले सिगरेट के टोटे से किशोर ने दूसरी सिगरेट सुलगा ली और बिस्तर को एक आर लात जमाते हुए वह फुसफुसाया— डम इट। आई एम मनइपार्टेन्ट।

और सुबह उठकर सिगरेट पीने के बावजूद भी सीने के अन्दर स चूहा की तरह हरकत करने वाली बातें निकल क्यो नही जाती? वे सारे एह सास जसे मेरे जागने की राह ताकते रहत हैं। बदन स ऐस चिपटते हैं कि सिर भन्ना जाता है। सच एकबार बाबूजी को खत लिख ही देना होगा इसके बगर अपराधी भाव कम न हो पायगा। और दीगर एहसास तो ऐसे हैं कि जिन्दगी भर दिल म सजाये रखन होंगे। सिगरेट के धुए म वे खत्म हो जायें तो चन हो जाये।

बाबूजी के खयाल मे किशार हमेशा की तरह बचन हो उठा। नीला का खयाल भी उस बचन कर डालता है। पर वह बेचनी इतनी परेशान नहीं करती। वह हार तो मन अब पूरी तौर पर स्वीकार कर चुका है। पर बाबूजी? सच—एक बार दिल खोलकर खत लिखने म हर्ज ही क्या है? बाबूजी बूढे भले ही हो गये हा पर मेरी भावनाएँ तो समझ ही सकते हैं। लेकिन क्या मुझे खुद अपनी भावनाएँ समझ म आती हैं?

पूज्य बाबूजी, सादर चरण   सिगरेट के कश के साथ किशोर

मन का मजमून सोचने लगा—'खत लिखने की वजह यह कि आपके सारे ही खत मुझे मिल चुके हैं।' फिर एक बार। 'पूज्य बाबूजी' ... 'पूज्य बाबूजी '—यही एक वाक्य बार-बार दिमाग में चक्कर काटता है। किशोर ने मन को समझा लिया और उसने कोशिश छोड़ दी। खाट के करीब रखे टेबिल के नीचे पड़े कागज के टुकड़ों की ओर उसका ध्यान चला गया। कल रात सिगरेट का अंतिम सेवन शुरू करने के पहले किशोर ने पहले खत लिखने की कोशिश की थी।

'पूज्य बाबूजी सादर चरण स्पर्श।' कितने दिनों से यह वाक्य मन में घुलता रहा है? सात-आठ महीने तो हो ही चुके होंगे। बाबूजी को खत लिख ही देना चाहिए। मन में जो कुछ है वह सब न लिख सके तो कम-से-कम एक कार्ड तो लिख ही देना होगा। अगर आयेगा तो पहला सवाल यही करेगा—बाबूजी को खत लिखा? कम-से-कम कार्ड आज ही चला जाना चाहिए। पूज्य बाबूजी सादर चरण स्पर्श!'

उस खत में मुझे क्या लिखना है? अपनी सब हारें, अपनी सारी वेदनाएँ, अपनी विकृतियाँ? नीला? अपना दब्बूपन? बाबूजी शायद हँसेंगे या शायद समझेंगे भी या गुस्सा भी हो सकते हैं, लेकिन गुस्सा होने की ताकत उनमें नहीं है। हार, वेदना, विकृति, दब्बूपन! इस तरह के सारे शब्द मैं क्या इस्तेमाल कर रहा हूँ? ये शब्द अजीब हैं। अपनी कमजोरी छिपाने के इरादे से हम इन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन अपनी भावनाएँ दूसरों के आगे जाहिर करने के लिए ऐसे शब्दों की जरूरत होती है। नीला इन शब्दों को समझ सकती है? उसे सब-कुछ समझ लेना चाहिए।

उसी तरह लेटे-लेटे किशोर ने टेबिल पर रखा 'वेस्टन स्टार' उठाया। पहले पन्ने से लेकर आखिरी पन्ने तक वह उसे चाट गया। कहीं उस आत्महत्या की खबर नजर नहीं आयी। तब उसे बेहद निराशा हुई। 'यह बकवास पेपर', फुसफुसाते हुए उसने फिर एक बार पहला पन्ना टटोलना शुरू कर दिया। उसमें छपी स्मगलिंग-कहानी उसने पढ़ डाली। स्मगलिंग की बात आते ही कोस्टा का चेहरा उसके आगे आ गया।

नीला कोस्टा के बारे में इतना कैसे बोलती रहती है। कोस्टा द्वारा एंटी-स्मगलिंग आन्दोलन शुरू करते ही नीला ने कितने उत्साह के साथ बातें शुरू की थीं। उसके ऑफिस में काम करती है तो इतना उत्साह किसलिए? बेचैनी की एक ज्वाला उसके सीने में उभर आयी और तभी उसने तेजी से तीसरी सिगरेट सुलगा ली। वेस्टन स्टार की वजह से कोस्टा की बात उठना और उससे नीला की बात दिमाग में आना इस पर उसे गुस्सा आ गया। उसने गुस्से से उस पेपर को फेंक दिया। कोशिश करने के

बावजूद भी नीला का खयाल उसके दिमाग से हटता नहीं है। उसकी हर बात मन को घेरे रहती है। इस बारे में वह हताश था, पर कास्टा के साथ साथ उसकी बात कैसे दिमाग में आती है? ऐसा बार बार क्यों होता है? किशोर ने लम्बे लम्बे कश खींचकर नीला के बारे में उठे खयालों को जलाना शुरू कर दिया। यह एहसास कहीं-न-कहीं छिपा बैठा ही रहता है। किसी खयाल के पीछे काम के लिए गदन पर सवार भूत की तरह जाने के लिए कहने पर भी वह जायेगा नहीं। उसे इस तरह जला ही देना होगा हर कश के साथ।

तीसरी चारमीनार खत्म होते ही किशोर उठ बठा। पौने नौ बज चुके थे। आज उसे उठने में पद्रह मिनट की देर हो चुकी थी। सब कुछ कर लेने के बाद नौ बजकर ग्यारह मिनट पर चल दिया जाये तभी नौ-तईस की लोकल हाथ आ सकती है। वह नौ बावन तिरेपन तक चचगेट पहुचती है। तभी तो आराम से चलते हुए चारमीनार का पैकिट खरीदते हुए सचिवालय में आकर लिफ्ट की राह देखते हुए अपने ऊपरी मंजिल के डिपाटमेंट में साढ़े दस तक पहुँचा जा सकता है। दो चार मिनट इधर उधर हो जाये तो गडबड हो जाती है। अब पच्चीस मिनट में दाढी स्नान और खाना कैसे हो सकता है? कैजुअल सिर्फ एक ही बची थी। इसलिए दाढी को छुट्टी देने की बात उसने तय की।

आफिस में गोता लगाने की बात दिमाग में आते ही किशोर और भी सुस्त पड गया। उसे लगने लगा कि उससे बिस्तर से हिला तक न जायेगा। बदन वाकई भरी रहा है। बुखार तो नहीं है? किशोर ने लम्बी सांस ली। उसे लगा कि उसे वाकई चक्कर आ रहे हैं। वैसे भी आफिस न जाने से फाइलें तो रुकी नहीं रहेंगी। लगाते हैं स्साला गोता। साब चीखेगा और फिर चुप हो जायेगा। कल ठोक देंगे कि बीमार था। वैसे भी सारा बदन जैसे टूट रहा है।

किशोर कुछ तय करने की हालत में आ गया। बदन को एक झटका देकर वह उठा। जयंत इंटरव्यू के लिए बम्बई आने वाला है और कैजुअल तो एक ही बची है। उसके साथ एक दिन तो बिताना ही होगा। छुट्टी बेकार करने से कोई फायदा नहीं है।

भारी बदन के साथ वह उठा। जयंत के खयाल से वह उठा। उठते ही ज्यादा खिन्न हो गया। अपने छोटे भाई के सामने हार की बातें नहीं खुलनी चाहिए। उसके लिए कोशिश जरूरी है। उत्साह दिखाना होगा। सच पूछा जाये तो जयंत को भी टाला जा सकता था। पर यह ठीक न लगेगा। एक दिन तो उसके साथ बिताना होगा। जयंत अपनी जिन्दगी में

जरूर कामयाब होने वाला है। उसके चेहरे से कोई भी जान सकता है। मुनास
बिलकुल अलहदा। पाँच साल मुझसे छोटा जरूर है पर हर तरह से मुनास
बड़ा है। महीने के आखिर में वितन मेरे हाथ में आते हैं—तून दो सौ
सत्ताईस रुपये। इस इंटरव्यू के बाद जयंत को कम-से-कम तरह-चौदह सौ
रुपये तो मिलेंगे ही। तब दिन उसके साथ बिताना ही होगा। उसके आगे
उससे क्या वास्ता पड़ने वाला है?

किशोर उठा। चारमीनार सुलगाकर गुसलखाने गया। गुसलखाना-बाथरूम
खाली ही था। दूसरे लोगों की गंध से बाथरूम भरा हुआ था। कइयों के
बदन की गंध, मूत की गंध मिलकर कैसी अजीब गंध तैयार हो जाती है!
उसी गंध को मारने के लिए किशोर हमेशा अपने मुँह में चारमीनार रखता
है।

और बाथरूम में ही नीना की याद तेजी से क्यों आती है? उस याद
को ज्यादा-से-ज्यादा काबू में रखने का काम भी चारमीनार ही करती है।
सुबह की पाँचवीं सिगरेट के बाद जीभ पर जलन होती है। तब तक सब-
कुछ यूँ ही निजलिजा लगता। लेकिन सच पूछा जाय तो इस जीभ की
जलन से नीला की याद कम नहीं हो पाती। दिन भर इस जलन के बाद
याद और गहरी होने लगती है। फिर तो जलन और याद एक हो उठते हैं।
हर वक्त बदन जलाने लगता है। या कि उस याद को ताजा रखने के लिए
किशोर सिगरेट पीता है? नीला से पहचान तो सिर्फ छह साल की है। पर
सिगरेट का इतना शौक नीला की पहचान के बाद में ही बढ़ा। पहले वह
मजाक के लिए सिगरेट पीता था यूँ ही मौज के लिए। नीना से पहचान
होने पर उसे चारमीनार की आदत लगी और नीला से शादी करने की
हिम्मत उसमें नहीं इस एहसास के साथ वह हमेशा के लिए उँगलियों से
चिपक गयी।

नीना ही क्यों, हम किसी भी लड़की के काबिल, मतलब—जीने के ही
काबिल नहीं हैं इस बात का तीखा और झुलसा देने वाला एहसास किशोर
को था। यह एहसास उसे कभी भी खत्म कर सकता था। लेकिन जान
लेवा एहसास और उदासीनता। सिर्फ सिगरेट के धुएँ से ही वह इस दुनिया
से बँध सकता है। कमजोरी के हर एहसास के बावजूद अस्तित्व और
बड़प्पन के एहसास को वह भूल न सकता था। इसी वजह से वह दुनिया
को सिगरेट के टोटे की तरह निरर्थक समझा करता था। मन में आ जाये
तो सारी दुनिया जीत सकता है उसे खुद इस बात का यकीन था। लेकिन
उसके मन में यह आता क्यों नहीं, इस बात को भी वह जानता था। दुनिया
जीतकर कोई फायदा नहीं। एक बार जी में आ जाये तो सिर्फ नीला के

पिता के आगे मुह खोलन की देर है कि नीला मेरी बाहों म लौट सकती है। लेकिन विवेक की वजह से वह ऐसा नही करता इस बात को वह गव के साथ कह सकता है। और तिस पर भी वह उसके ख्वाब देखा करता था। उन ख्वाबो से वह उसे अलहदा नही कर सकता था। बम्बई के दायरे म वह अपनी कमजोरी भूलने की कोशिश किये जा रहा था।

कश खीचते हुए किशोर ने कपडे निकाल और सिगरट खत्म होन तक वह यू ही खडा रहा। फिर टोटा बाहर फेंककर वह ठडे पानी स नहाने लगा। अपन बदन और अपन चेहरे पर उसे गव न था। अपने व्यक्तित्व के बारे म वह उदासीन था। लकिन नहाने के दौरान उसे खुद ही शम महसूस होने लगती थी। पीला पडा कमजोर बदन अदर धसा चेहरा। अपने मा बाप की हर कमजोरी उसने पायी है इस बात का उस तीखा अहसास था। उसी का सगा भाई लबा चौडा रोबीला है। जयत के सामने खडे होने म भी उस इसी वजह म तकलीफ हुआ करती थी। नहाने का यह वक्त सुबह म चढने वाली उदासीनता पर एक और परत बिछा देता था। और नीला ? इस तरह के बदन को नीला को अपना समझने का कोई अधिकार नही। वह सांवली भले ही हो, पर देखन म सुदर है। नल से बाल्टी म गिरने वाल पानी की आवाज के साथ किशोर के अजीब स्वर उभरने लगत। जब बाहर निकलता है तो हार के एहसास के साथ।

'कहिय हो गया नहाना वहाना ?' लाज म गल्ले पर बठे चाचा यो ही पूछन। किशोर सिफ हँस देता। चाचा को यो ही सवाल करने की आदत है। नहान के बाद बाथरूम से निकलत ही चाचा पूछ लेते है कि 'कहिये हो गया नहाना वहाना ?' खाना हो जाने के बाद गल्ले पर स सौंफ खात हो पूछत हैं 'हो गया खाना ?' और आफिस से अधमरी हालत म लौटने पर खत्म हो गया आफिस ?'

शुरू शुरू म किशोर को चाचा पर बेहद गुस्सा आता था। पर बाद म आदत पड गयी। बातें करने के लिए चाचा इसी तरह के सवाल करके भूमिका बनाया करत हैं। जवाब के लिए कोई मुँह भर खोले तो चाचा की गप्पें चालू हो जाती हैं। इसीलिए किशोर सिफ हस देता है।

चाचा के लिए कोई भी विषय चलता है। प्रेसिडेंट निक्सन की ग्लोबल पालिसी स लकर बबई के राशनिंग तक और आजकल की लडकियो के फशन तक। चाचा अब सत्तर के हो चुके होगे। सिर पर चाँद मोटा चश्मा, कमजोर बदन और हजार झुर्रियाँ पडा चेहरा। ठड हो गर्मी हो तेज हवा हो या बारिश हर वक्त गल्ले पर चाचा धोती कुर्ता और बडी पहने बठे रहते हैं। चाचा की प्राइवेट लाइफ के बार म जानकारी किसी को भी नहीं

थी। लाज के मालिक का जरूर थी, ऐसा लोग कहते हैं पर मालिक लाज पर अक्सर आता ही न था। चाचा ही सब देखभाल करते थे और हिसाब भी रखते थे। जब से लाज शुरू हुआ है तब से वे यहाँ चिपके हुए हैं। उनके बच्चे वगैरह हैं या नहीं, यह भी कोई नहीं जानता। इस बात पर चर्चा वे अक्सर टाल देते थे। दूसरे विषयों पर वे जरूर बड़े हौसले के साथ चर्चा किया करते थे। हमेशा हँसता चेहरा और चौकस वृत्ति इसी वजह से लाज में रहने वाले युवा लोगों में चाचा बेहद प्रिय थे। चाचा के नाते की वजह से बहुत-से लोग अपनी परेशानियाँ लेकर उनके पास आया करते थे। चाचा में इतना उत्साह कहाँ से है इसी बात पर किशोर को अचरज था। चाचा किसके लिए जिंदा रहते हैं? किस प्रेरणा से जिंदा रहते हैं इस उम्र में? चाचा का खाना-सोना सब कुछ लॉज में हुआ करता था। लाज के अलावा उनकी दूसरी जिंदगी नहीं थी। वैसे किसी सप्ताह वे सिनेमा चले जाते थे। बस यही। फिर वे किसके लिए जिंदा रहते हैं? उन्होंने क्या जिंदगी में हार निराशा देखी ही नहीं है? ऐसे कैसे हो सकता है? सच पूछा जाय तो इस उम्र में जिंदा रहना ही कितना दुखपूर्ण है। पर चाचा के चेहरे पर कभी शिकन तक नहीं आती। किसी भी विषय पर वे चर्चा करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। या यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत मसलों पर सलाह देना उनके लाज की जिंदगी का एक खास हिस्सा था। उनके इसी स्वभाव की वजह से लाज के कई लोग अपने अपने रहस्य चाचा के आगे खोल दिया करते थे। किसी की मुहब्बत का मसला तो किसी का रुपये-पैसों का मसला, किसी का पारिवारिक झगड़ा, किसी की नौकरी का सवाल। सभी को चाचा अपनी सलाह दिया करते थे। गल्ले के एक ओर रखी कुर्सी पर हमेशा कोई न कोई उनसे सलाह मशविरा लेते हुए बैठा रहता था। और उसी के साथ चाचा की बातें धीमे धीमे चलती रहती थीं। अगर यह न होता तो टेबिल खाली होने की राह देखने वालों के साथ वे राजनैतिक मसलों पर बातें किया करते थे। चर्चा मतलब, चाचा का भाषण। आज 'वेस्टर्न स्टार' ने चाचा के लिए अच्छी सामग्री पेश कर दी थी और उनका स्मगलिंग पर भाषण अपने रंग पर था।

"अरे स्साले सब नम्बरी चोर हैं। क्या मंत्री और क्या आफिसर! वह शाह वाला केस याद है आपको? दो करोड़ रुपये वाला? कुछ हुआ उस केस के बारे में? कुछ भी तो नहीं। कुछ होना-हवाना नहीं है। सब स्साला नाटकबाजी। सभी जो चोर हैं। अजी आप नहीं समझ पायेंगे। बड़े बड़े लोग इस चक्कर में फँसे रहते हैं। पिछली बार तो एक मंत्री ने साफ-साफ — दिया था कि वे उनको नहीं पकड़ सकते, इतने बड़े हैं वे। वह दुनिया

पिता के आगे मुह खोलन की देर है कि नीला मेरी बाँहों म लौट सकती है। लेकिन विवेक की वजह से वह ऐसा नही करता इस बात को वह गव के साथ कह सकता है। और तिस पर भी वह उसक ख्वाब देखा करता था। उन ख्वाबो से वह उसे अलहदा नही कर सकता था। बम्बई क दायरे म वह अपनी कमजोरी भूलने की कोशिश किये जा रहा था।

कश खीचत हुए किशोर ने कपडे निकाले और सिगरेट खत्म होन तक वह यू ही खडा रहा। फिर टोटा बाहर फेंककर वह ठडे पानी से नहाने लगा। अपने बदन और अपने चेहरे पर उसे गव न था। अपने व्यक्तित्व के बारे म वह उदासीन था। लेकिन नहान के दौरान उसे खु ही शम महसूस होने लगती थी। पीला पडा कमजोर बदन अदर धँसा चेहरा। अपने मा बाप की हर कमजोरी उसने पायी है इस बात का उसे तीखा अहसास था। उसी का सगा भाई लबा चौडा रोबीला है। जयत क सामन खडे होन म भी उसे इसी वजह से तकलीफ हुआ करती थी। नहाने का यह वक्त सुबह स चढने वाली उदासीनता पर एक और परत बिछा देता था। और नीला ? इस तरह क बदन को नीला को अपना समझने का कोई अधिकार नही। वह सावली भले ही हो पर देखन म सुदर है। नल से बाल्टी म गिरने वाल पानी की आवाज़ के साथ किशोर के अजीब स्वर उभरने लगते। जब बाहर निकलता है तो हार के एहसास के साथ।

'कहिये हो गया नहाना वहाना ?' लाउज मे गल्ले पर बठे चाचा या ही पूछत। किशोर सिफ हँस देता। चाचा को यो ही सवाल करने की आदत है। नहान के बाद बाथरूम से निकलत ही चाचा पूछ लेते हैं कि 'कहिये हो गया नहाना वहाना ?' खाना हो जाने के बाद गल्ले पर स सौंफ खाते ही पूछते हैं 'हा गया खाना ?' और आफिस से अधमरी हालत म लौटने पर खत्म हो गया आफिस ?'

शुरु शुरु म किशोर को चाचा पर बेहद गुस्सा आता था। पर बाद म आदत पड गयी। बातें करने के लिए चाचा इसी तरह के सवाल करके भूमिका बनाया करते हैं। जवाब के लिए कोई मुह भर खोले तो चाचा की गप्पें चालू हो जाती हैं। इसीलिए किशोर सिफ हस देता है।

चाचा के लिए कोई भी विषय चलता है। प्रेसिडेंट निक्सन की ग्लोबल पालिसी स लेकर बबई के राशनिंग तक और आजकल की लडकियो के फशन तक। चाचा अब सत्तर के हो चुके होंगे। सिर पर चाँद मोटा चश्मा कमज़ोर बदन और हज़ार झुर्रियाँ पड़ा चेहरा। ठड हो गर्मी हो, तेज हवा हो या बारिश, हर वक्त गल्ले पर चाचा धोती, कुर्ता और बडी पहने बठ रहते हैं। चाचा की प्राइवेट लाइफ के बारे म जानकारी किसी को भी नही

थी। लाज के मालिक को जरूर थी ऐसा लोग कहते हैं पर मालिक लाज पर अक्सर आता हो न था। चाचा ही सब देखभाल करते थे और हिसाब भी रखते थे। जब से लाज शुरू हुआ है तब से वे यहाँ चिपके हुए हैं। उनके बच्चे वगैरह हैं या नहीं, यह भी कोई नहीं जानता। इस बात पर चर्चा वे अक्सर टाल देते थे। दूसरे विषयों पर वे जरूर बड़े होसले के साथ चर्चा किया करते थे। हमेशा हँसता चेहरा और चौकन्ना वृत्ति इसी वजह से लाज में रहने वाले युवा लोगों में चाचा बेहद प्रिय थे। चाचा के नाम की वजह से बहुत-से लोग अपनी परेशानियाँ लेकर, उनके पास आया करते थे। चाचा में इतना उत्साह कहाँ से है इसी बात पर किशोर को अचरज था। चाचा किसके लिए जिंदा रहते हैं? किस प्रेरणा से जिंदा रहते हैं इस उम्र में? चाचा का खाना-सोना सब कुछ लाज में हुआ करता था। लाज के अलावा उनकी दूसरी जिंदगी नहीं थी। वैसे किसी सप्ताह वे सिनेमा चले जाते थे। बस यहीं। फिर वे किसके लिए जिंदा रहते हैं? उन्होंने क्या जिंदगी में हार निराशा देखी ही नहीं है? ऐसे कैसे हो सकता है? सच पूछा जाये तो इस उम्र में जिंदा रहना ही कितना दुखपूर्ण है! पर चाचा के चेहरे पर कभी शिकन तक नहीं आती। किसी भी विषय पर वे चर्चा करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। या यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत मसलों पर सलाह देना उनके लाज की जिंदगी का एक खास हिस्सा था। उनके इसी स्वभाव की वजह से लाज के कई लोग अपने अपने रहस्य चाचा के आगे खोल दिया करते थे। किसी की मुहब्बत का मसला तो किसी का रुपये-पैसों का मसला किसी का पारिवारिक झगड़ा, किसी की नौकरी का सवाल। सभी को चाचा अपनी सलाह दिया करते थे। गल्ले के एक ओर रखी कुर्सी पर हमेशा कोई न-कोई उनसे सलाह-मशविरा लेते हुए बैठा रहता था। और उसी के साथ चाचा की बातें धीमे धीमे चलती रहती थीं। अगर यह न होता तो टेबिल खाली होने की राह देखने वालों के साथ वे राजनैतिक मसलों पर बातें किया करते थे। चर्चा मतलब, चाचा का भाषण। आज 'वेस्टर्न स्टार' ने चाचा के लिए अच्छी सामग्री पेश कर दी थी और उनका स्मगलिंग पर भाषण अपने रंग पर था।

"अरे स्साले सब नम्बरी चोर हैं। क्या मंत्री और क्या आफिसर! वह शाह वाला केस याद है आपको? दो करोड़ रुपये वाला? कुछ हुआ उस केस के बारे में? कुछ भी तो नहीं। कुछ होना हवाना नहीं है। सब स्साला नाटकबाजी। सभी जो चोर हैं। अजी आप नहीं समझ पायेंगे। बड़े बड़े लोग इस चक्कर में फँसे रहते हैं। पिछली बार तो एक मंत्री ने साफ-साफ कह दिया था कि वे उनको नहीं पकड़ सकते, इतने बड़े हैं वे। वह दुनिया

ही और है साहब ! आपकी बम्बई अलग है और उनकी बम्बई कुछ दूसरी ही है जनाब ! वहाँ का सारा हिसाब लाखो म हुआ करता है। और पेपर वाल भी क्या लिखेंगे खाक ? इसी वेस्टन स्टार के मालिक क बया क्या लफड़ें हैं जानत हैं आप ? अजी यहाँ के किसी भी आदमी पर भरोसा नहीं करना चाहिए। जरा फाट के होटल म घुम के तो दखिए कैसा पैसा बहता रहता है ! और वह कोस्टा ? गप्पें लगाता है यह करेंगे,वह करेंगे। किसी दिन आप लाग देखेंगे कि वह कैसे चुप बैठा हुआ होगा। अजी पैसा किस नही चाहिए ? और यह लोग तो किसी को भी खरीद सकते हैं। कोस्टा क्या है उनक आग ? अपनी कीमत जरूर बढ़ाए हुए है बस। कोस्टा इतनी हाय तोबा मचाये हुए है पर आज तक किसी ने मुकदमा किया है उनकी गरज ही नही किसी को। वजह यह कि व जानते हैं कि उनका कुछ नही बिगाड़ सकते। एक ही क्या हजार कोस्टा भूकते रहें पर उनकी मूछा का एक बाल भी कोई तोड़ नहीं सकता। चाचा का भाषण चल रहा था। सामने काई न हो तो जरूर रुकावट आ जाती थी।

तजी स कपडे जूते पहनकर किशोर कमरे से बाहर आ गया। नौ ग्यारह हो चुके थ। मतलब नौ उन्नीस की गाडी मिलना नामुमकिन ही था। खाना वाना छोड़ना जरूरी था। किशोर काउंटर के सामने से जाने लगा तो चाचा ने पूछा 'कहिये बये साहब आज खाने की छुट्टी ?'

"हाँ। जरा देर हो गयी है।'

यह तो ठीक नही। लाज का फायदा किये जा रहे हो।'

किशोर सिर्फ हँस दिया और उसका ध्यान चाचा की बगल म बैठे अनिल पवार की ओर गया। पवार ने कहा बस एक सेकिंड मैं भी आ रहा हूँ स्टेशन पर।

चाचा फिर मैं आप पर छोड़ू न ?

'बिलकुल। आज दोपहर ही फोन किये देता हूँ।"

थैंक्स।

पवार किशोर का रूम मेट है। महिंद्रा म असिस्टेंट इंजीनियर है। एकदम स्मार्ट और बड़ा ही उत्साही।

बाहर आते ही उसने किशोर के कंधे पर जोर से हाथ रखा और कहा वस यार, काम हो गया। चलो आज, कहाँ खाना खाते हो ?'

क्यो क्या हुआ ?'

अरे हर शाम क्या कहता रहता हूँ मैं ?'

'अच्छा अच्छा—वह ?'

अजी यह पूछो कि वाकई हुआ क्या ? वसती को अपने पिताजी की

बड़ी फिक्र है। मेरा नाम पता चल जाय तो चीखेंगे चिल्लायेंगे।"

'फिर ?"

'मुझे खुद डर लगता है। पर चाचा मान गये हैं। वे खुद बात करने वाले हैं। उनकी पुरानी पहचान है। उनका कहना है कि बस काम हुआ ही समझो।"

'गुड लक!"

ओह हेल।" अनिल जरा जोर से बोला "हम तो इतना बता रहे हैं और तुम हो कि बस गुड लक कह रहे हो। वाकई बड़े ठंडे मिजाज के आदमी हो यार। इसी बात पर तो गुस्सा आता है।'

कुछ देर तक तो कोई न बोला। गाड़ी पकड़ने के लिए दोनों तेजी से कदम बढ़ाए जा रहे थे। वे अब तक तिलक ब्रिज पर चढ़ रहे थे। पुल पर काफी रेल-पेल थी।

यार मैं तुमसे यों ही बक झक करता रहता हूँ। तुम ठंडे-के ठंडे। तुमने कभी प्यार किया है?'

किशोर ने चेहरा ऐसा बनाया जैसे हँस रहा हो। पवार की ओर न देखते हुए उसने कहा, 'मेरे चेहरे से तुमको लगता है कि मैं किसी से मोहब्बत कर सकता हूँ।"

दोनों दादर के पुल पर आ गये और उल्टी तरफ की गाड़ी पकड़ने के इरादे से पवार निकल गया।

चर्चगेट की ओर जाने वाले प्लेटफाम पर बेहद भीड़ थी। गाड़ियों में कुछ गड़बड़ हो गयी थी। क्या हुआ था, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। लेकिन प्लेटफाम पर पाँव रखने के लिए भी जगह न थी। तभी एक भरी हुई गाड़ी प्लेटफाम पर आयी। गाड़ी के चारों ओर लोग चिपके हुए थे। दरवाजों पर खिड़कियों पर आदमी लटके हुए थे। चीटियाँ जिस तरह किसी दाने को ढकेलते हुए ले जाती हैं उसी तरह जैसे लोग भी गाड़ी को ले जा रहे हों। गाड़ी रुकी तो उतरने-चढ़ने वालों में काफी धींगामुश्ती हुई।

किशोर के बदन में काँटे उभर आये। प्लेटफाम की भीड़ देखकर उसे लगा था कि आज वह आफिस न पहुँच सकेगा। वजह यह कि इस भीड़ में घुसने की उसकी हिम्मत न थी। फिर घंटे डेढ़ घंटे तक भीड़ कम होने के आसार नजर न आ रहे थे। भीड़ तो और भी बढ़ने वाली थी। रोजाना की भीड़ में ही किशोर को चढ़ने में तकलीफ होती थी और आज तो बात ही और थी। एक ही छुट्टी बची है। जरूरत के लिए उसे बचाए रखना जरूरी है। पर अब कोई फायदा नहीं। वैसे देखा जाये तो कुछ कोशिश करने पर

गाड़ी मिल भी सकती है और आज देर भी हो जाये तो चल सकता है। गरज यह कि गाड़ी की गड़बड़ की बात आफिस तक पहुँच चुकी होगी। कोशिश करने में कोई हर्ज भी नहीं है। लेकिन आज मन नहीं हो रहा है। आज सुबह से ही उस उदासीनता ने बुरी तरह घेर रखा है। आज सुबह जल्दी नहीं उठना चाहिए था तिस पर अनिल पवार। मैं उस जैसा क्यों नहीं कर पाता? मैं अपनी प्रॉब्लम चाचा को बता दूँ तो? इपॉसिबल! पवार ने पूछा था तो मैंने ऐसा सलूक क्यों किया था? वैसे मेरे सीने में भी कितनी आग है। पवार की समस्या मेरी समस्या के आगे कुछ भी नहीं है। बसंती का बाप ब्राह्मण है। वह इस मराठा को अपनी बेटी देने में हिचकिचायगा ही। पर अनिल की कोई प्राब्लम नहीं। वह स्मार्ट है होशियार है। हर महीने की तनखाह खासी अच्छी है। घर की सेती बाड़ी है। और खास बात यह कि बसंती उस पर मरती है। हो सका तो वह उसके साथ भाग भी सकती है। वह बेकार ही डरता है। रोज़ाना लंबी साँसें भरता रहता है। स्साले को मालूम ही नहीं मोहब्बत सिगरेट के टोटे जैसी जलने वाली मोहब्बत क्या होती है मालूम हो भी नहीं सकता। मेरी बात और है। इतनी सरल नहीं। किसी को बताने से प्राब्लम हल न हो सकेगी। कहने से क्या फायदा?

भीड़ की वजह से किशोर को पसीना आ गया। काफी देर से उसने सिगरेट न पी थी। जेब से चारमीनार निकालकर उसने सुलगा ली। दो तीन सिगरेट वह पी गया। गाड़ी पकड़ने की हिम्मत अपने में पैदा करना चाहता था। इसी वजह से वह बैठ गया। प्लेटफार्म पर खड़े लोगों के पाँवों की ओर वह देखने लगा। हर तरह के पाँव। कुछ ऊँचे जूतों में बँधे हुए कीमती पैंटों में छिपे हुए फटी चप्पल में उलझे हुए। कुछ मोटे कुछ नंगे। कुछ हिलती साड़ियों में तो कुछ घुटनों तक खुले हुए गोरे हसीन पाँव!

वह जिस बेंच पर बैठा था उसके नीचे दो काले काले पाँव उसे नज़र आये। उसने मुड़कर देखा तो एक आदमी आधी खाकी नेकर और काला कुर्ता पहने लेटा नज़र आया। अभी तक किस चीज़ की बू आ रही थी इस बात को किशोर समझ गया। उसके सारे बदन पर धूल बुरी तरह चिपकी हुई थी। औंधा पड़ा होने की वजह से उसका मुँह नज़र न आ रहा था। पर उसके मुँह से निकली हुई गंदी चीज़ ज़रूर नज़र आ रही थी। उस पर मक्खियाँ बैठी हुई थीं।

पल भर किशोर को लगा कि वह आदमी मर चुका है। और उसके सारे बदन पर काँटे उभर आये। लेकिन तभी उसे उसकी ऊपर नीचे होने

वाली पीठ दिखायी दी और उसे कुछ राहत मिली। आफिस न जाने वाली बात कुछ देर के लिए उसके मन में हट गयी।

मन इस तरह हलका हो जाता है इस बात का अचरज किशोर को न हुआ। बम्बई की यही खासियत है। आदमी कितना भी उदास क्यों न हो, असफलता के आखिरी छोर तक पहुँच जाये—फिर भी उसमें दुबारा उत्साह आ जाता है। इधर-उधर देखें तो अपने से भी बदतर जिन्दगी नजर आ जाती है। फिर उसे अपने दुख-दर्द महसूस नहीं हो पाते। अपनी गरीबी का एहसास जाता रहता है। उस दुख-दर्द या गरीबी के बारे में किसी से बातें करना भी अजीब हास्यास्पद लगने लगता है। इसीलिए बम्बई हमें ग्रेट लगती है। बम्बई छोड़ने का दिल नहीं होता। बम्बई में बिसगनिया भी कम नहीं हैं। बम्बई में आदमी आ जाय तो परेशान हो जाता है। लेकिन साथ-साथ वह उसे चाहने भी लगता है। बम्बई की भीड़ बदन पर काँटे खड़े कर देती है। लेकिन उसे भूलने में मदद की पूरी गुंजाइश भी रखती है। एक पल बम्बई अच्छी लगती है तो दूसरे पल उससे नफरत भी होने लगती है। कई चीजें इर्द गिर्द होती हैं। किसी में भी मन रमाया जा सकता है। क्या करें यह सवाल क्यों उभरता ही नहीं। जिन्दगी तेजी से भागने लगती है। सोचने के लिए वक्त ही नहीं मिलता। इसी वजह से हरेक को बम्बई अपनी ही लगती है। एक अजीब अपनापा महसूस होता रहता है। गरीब की बम्बई राजे महाराजाओं की बम्बई, चोरों की बम्बई स्मगलर्स की बम्बई, क्लर्कों की बम्बई फिल्मी एक्टर एक्ट्रेस की बम्बई बेकारों की बम्बई—और इन सब के लिए बम्बई काफी है।

सिगरेट के लंबे और गहरे कश खींचता हुआ किशोर स्टाल के करीब खड़ा हो गया। प्लेटफार्म पर लहरों की तरह भीड़ आ रही थी। और एक के पीछे दूसरी आती हुई गाड़ियाँ उस भीड़ को अपने पेट में समाकर चल देती थीं। पल-दो पल खामोशी आसमान से उतर कर धरती को छू लेती है और फिर उसे कहीं खो जाती है। एक अजीब तरह से वह क्षण आता है और किसी भयाक्रान्त स्थिति का आक्रमण हो जाता है। आदमी उस समय एक-दूसरे की ओर देखा भर हैं। लेकिन उन नजरों में भी अदृश्य भय छिपा रहता है। लेकिन केवल पल भर ही। लगता है वह जड़ता सारी दुनिया को अपने में समेट लेती है और दूसरे ही पल फिर हो हल्ला गुम हो जाता है और यह क्षण आदमी भूल जाता है।

लाल-नीली हरी पीली, गुलाबी स्कर्ट और साड़ियाँ पहने औरतें, तरह-तरह के कपड़े पहने आदमी एक ही दिशा में नदी की लहरों की तरह बहे चले जा रहे हैं। और मैं जैसे किसी चट्टान से टिका उसी तरह सिगरेट

का कश खींचता हुआ खड़ा हूँ। वे लोग क्यों भाग रहे हैं ? बास गुस्सा होगा इस वजह से ? पैसा के लिए ? महीने की तनख्वाह के लिए ? बस इतनी ही उनकी जिन्दगी है ? इन गाड़ियों से बँधी इस प्लेटफार्म के इर्द गिर्द बम्बई जैसे अजीब तरह से बँधी हुई है। क्या इस बात का एहसास उन लोगों को नहीं है ? दूसरी तरफ के रास्तों पर होने वाली रेल-पेल का एहसास क्या उन्हें नहीं है ? और उधर आधे मील की दूरी तक फैले समदर की जानकारी उन्हें नहीं है ? समदर पहाड़ ज़मीन पेड़ पशु पक्षी आसमान-तारे आदमी—कितनी बड़ी दुनिया इर्द-गिर्द है। फिर भी इन लोगों की दुनिया जैसे प्लेटफार्म तक सीमित हो गयी है।

और मैं भी यहाँ सिगरेट फूँकता हुआ क्यों खड़ा हुआ हूँ ? किस की राह देख रहा हूँ ? मेरी दुनिया भी इन की तरह ही छोटी सी है। मैं किसके लिए रुका हुआ हूँ ? मेरा महाकाव्य किसके लिए रुका हुआ है ? नीला के लिए—मेरी मौत के लिए ? महायुद्ध के लिए या महा प्रलय के लिए ? अपनी कमज़ोरी का एहसास कराने के लिए इतनी भीड़, यह प्लेटफार्म और स्टेशन ही काफ़ी है उसके लिए समदर और आसमान की ज़रूरत नहीं है। और आज ही ऐसा एहसास किस लिए ? मैं पैदा हुआ तभी से इस एहसास को चिपटाये हुए हूँ। सभी की दुनिया के लिए इस देश की मर्यादा है। अपनी दृष्टि के आगे जो दिखायी दे वह अपनी दुनिया है। इससे परे की दुनिया की फ़िक्र किसलिए ? उसका शायद अस्तित्व ही न हो। नीला का इस समय अस्तित्व है यह मैं किस तरह जान सकता हूँ ? अपनी याद के सहारे ही न ? इस पल वह मरी हुई भी हो सकती है। लेकिन नज़रों से देखे और उसकी मौत कानों से सुने बगैर वह मेरी दुनिया में होगी और मरने के बाद भी होगी ही—ऑफिस लाज चाचा, बाबूजी जयंत, घर—सभी कुछ इस दुनिया में है।

सिगरेट का टोटा फेंककर किशोर खुद पर ही हँस पड़ा। मैं किसी भी खयाल का आख़िरी सिरे तक नहीं पहुँचा सकता। उलझकर उल्टी बात ही सोचता रहता हूँ। इस बात का एहसास उसे हुए जा रहा था। सिगरेट का टोटा पाँव के तले कुचलकर वह हँस पड़ा। सामने खड़ी एक गुजराती गोरी लड़की उसकी ओर ही देखे जा रही है उसे ऐसा लगा। वह जामुनी साड़ी पहने हुए थी। मैचिंग ब्लाउज था और एक बच्चे की उँगली वह पकड़े हुए थी। उसके जैसा ही वह छोटा लड़का भी खूबसूरत था। वह भी किशोर की ओर देखे जा रहा था। किशोर की नज़रें उस तरफ़ हुई और उस औरत ने अपनी आँखें दूसरी ओर फेर ली। वह अब इंडीकेटर की ओर देख रही थी। हम काफ़ी देर से खुद पर ही हँसे जा

रहे थे—इस बात को वह समझ गया। उसने धीरे से उस औरत स नजर हटायी और फिर वह धीमे धीमे सीढियो की ओर बढन लगा।

पुल पर आते ही किशोर के कंधे पर किसी का हाथ आया और अनिल पवार हँसते हुए बोला, ' वाह खूब ! मुझे लगा था कि तुम आज आफिस से गोता लगा दोगे। दूसरी ओर के प्लेटफार्म से मैं तुम्हारी ओर ही देख रहा था।"

' और तुम ? तुम नही जा रहे आफिस ?" किशोर ने पूछा।

"हा भीड देखी और मूड बदल गया। ऊपर का ट्रंक शायद खराब हो गया है। आज आफिस मे बस भी जी न लगता यार।'

किशोर को कुछ अच्छा लगा। आफिस जाना अखरता है लेकिन बस दिन भर क्या करेंगे इस सवाल से भी बदन पर काँटे उभर आते हैं। अब अनिल की कम्पनी म समय अच्छा गुजर जायगा।

' यार आज दिल बहुत खुश है। अच्छी-सी सिगरेट पीयेंगे " अनिल ने कहा। पुल उतरकर उसने एक पान वाले की दुकान से कीमती सिगरेट का पकेट खरीदा। अनिल कभी-कभार ही सिगरेट पीता है। लेकिन अमीर घराने का होने की वजह से उसकी आदतें शाही हैं। जब सिगरेट पीता है तो काफी कीमती पीता है। किशोर चारमीनार के अलावा दूसरी नही पीता, इस बात को वह अच्छी तरह जानता था। इसी वजह से उसने खुद सिगरेट सुलगा ली और बोला आज तुम्हारा और कोई प्रोग्राम नही है न ? फिर चलो हमारे साथ। कुछ घूमते घामते हैं। फिर बढिया खाना खायेंगे। तीन चार बजे तक लाज की ओर मुझे नही जाना है।

किशोर को कोई काम न था। बिना कुछ कहे ही वह अनिल के साथ हो लिया।

' आज फस्ट क्लास मुर्गा खायेंगे। शाम को खाना खा सकेंगे या नही, पता नहीं। पेट म तो अभी से न जाने कैसा-कैसा हो रहा है यार। ' अनिल कह रहा था आज किस्मत का फैसला होने वाला है। क्या होगा, खुदा ही जाने। फैसला हो जाने तक बसती म मिलने का भी दिल नहीं करता। शाम को मिलने वाली है वह। लग रहा था जैसे अनिल आज काफी बात करना चाहता है।

अनिल बोले जा रहा था। किशोर को सुनी हा न्ही थी। वह खुद चुप ही था। लेकिन अनिल को बातों म बहक न जाये, इस बात का भी खयाल रख रहा था। अनिल की बातें उसे अच्छी लगती हैं कुछ भी अर्थ न हो तो भी। उसकी बकवास से एक ऊब सी आ जाती है। काफी कुछ भूल जाते हैं। बाबूजी को लिखा जाने वाला खत, जयंत नीला, सीन म

का कश खींचता हुआ खड़ा हूँ। वे लोग क्या भाग रहे हैं? काम गुस्सा होगा इस वजह से? पैसों के लिए? मकान की तनखाह के लिए? बस इतनी ही उनकी ज़िन्दगी है? इन गाड़ियों से बँधी इस प्लेटफ़ार्म के इर्द गिर्द बम्बई जैसे अजीब तरह से बँधी हुई है। क्या इस बात का एहसास उन लोगों को नहीं है? दूसरी तरफ के रास्तों पर होने वाली हलचल का एहसास क्या उन्हें नहीं है? और उधर आधे मील की दूरी तक फैले समंदर की जानकारी उन्हें नहीं है? समंदर पहाड़ ज़मीन पेड़ पशु पक्षी आसमान-तारे आदमी—कितनी बड़ी दुनिया इर्द-गिर्द है। फिर भी इन लोगों की दुनिया जैसे प्लेटफ़ार्म तक सीमित हो गयी है।

और मैं भी यहाँ सिगरेट फूंकता हुआ क्यों खड़ा हुआ हूँ? किस की राह देख रहा हूँ? मेरी दुनिया भी इन की तरह ही छोटी सी है। मैं किसके लिए रुका हुआ हूँ? मेरा महावाक्य किसके लिए रुका हुआ है? नीला के लिए—मेरी मौत के लिए? महायुद्ध के लिए या महा प्रलय के लिए? अपनी कमज़ोरी का एहसास कराने के लिए इतनी भीड़ यह प्लेटफ़ार्म और स्टेशन ही काफ़ी हैं, उसके लिए समंदर और आसमान की ज़रूरत नहीं है। और आज ही ऐसा एहसास किस लिए? मैं पैदा हुआ तभी से इस एहसास को चिपटाये हुए हूँ। सभी की दुनिया के लिए इस देश की मर्यादा है। अपनी दृष्टि के आगे जो दिखायी दे वह अपनी दुनिया है। इससे परे की दुनिया की फ़िक्र किसलिए? उसका शायद अस्तित्व ही न हो। नीला का इस समय अस्तित्व है यह मैं किस तरह जान सकता हूँ? अपनी याद के सहारे ही न? इस पल वह मरी हुई भी हो सकती है। लेकिन नज़रों से देखे और उसकी मौत कानों से सुने बगैर वह मेरी दुनिया में होगी और मरने के बाद भी होगी ही—ऑफ़िस, लाज चाचा बाबूजी जयंत वगैरह—सभी कुछ इस दुनिया में है।

सिगरेट का टोटा फेंककर किशोर खुद पर ही हँस पड़ा। मैं किसी भी ख़याल का आख़िरी सिरे तक नहीं पहुँचा सकता। उलझकर उल्टी बातें ही सोचता रहता हूँ। इस बात का एहसास उसे हुए जा रहा था। सिगरेट का टोटा पाँव के तले कुचलकर वह हँस पड़ा। सामने खड़ी एक गुजराती गोरी लड़की उसकी ओर ही देखे जा रही है उसे ऐसा लगा। वह जामुनी साड़ी पहन हुए थी। मैचिंग ब्लाउज़ था और एक बच्चे की उँगली वह पकड़ हुए थी। उसके जैसा ही वह छोटा लड़का भी ख़ूबसूरत था। वह भी किशोर की ओर देखे जा रहा था। किशोर की नज़रें उस तरफ़ हुई और उस औरत ने अपनी आँखें दूसरी ओर फेर लीं। वह अब इंडीकेटर की ओर देख रही थी। हम काफ़ी देर से खुद पर ही हँसे जा

रहे थे—इस बात को वह समझ गया। उसने धीरे से उस औरत से नज़र हटायी और फिर वह धीमे धीमे सीढ़ियों की ओर बढ़ने लगा।

पुल पर आते ही किशोर के कंधे पर किसी का हाथ आया और अनिल पवार हंसते हुए बोला, "वाह खूब ! मुझे लगा था कि तुम आज आफिस से गोता लगा दोगे। दूसरी ओर के प्लेटफार्म से मैं तुम्हारी ओर ही देख रहा था।'

ओर तुम ? तुम नहीं जा रहे आफिस ?" किशोर ने पूछा।

'हाँ भीड़ देखी और मूड बदल गया। ऊपर का ट्रैक शायद खराब हो गया है। आज आफिस में बस भी जी न लगता यार।'

किशोर को कुछ अच्छा लगा। आफिस जाना अखरता है लेकिन बस दिन भर क्या करेंगे इस सवाल से भी बदन पर काँटे उभर आते हैं। अब अनिल की कम्पनी में समय अच्छा गुजर जायेगा।

'यार आज दिल बहुत खुश है। अच्छी-सी सिगरेट पीयेंगे" अनिल ने कहा। पुल उतरकर उसने एक पान वाले की दुकान से कीमती सिगरेट का पैकेट खरीदा। अनिल कभी-कभार ही सिगरेट पीता है। लेकिन अमीर घराने का होने की वजह से उसके शौक शाही हैं। जब सिगरेट पीता है तो काफी कीमती पीता है। किशोर चारमीनार के अलावा दूसरी नहीं पीता, इस बात को वह अच्छी तरह जानता था। इसी वजह से उसने खुद सिगरेट सुलगा ली और बोला आज तुम्हारा और कोई प्रोग्राम नहीं है न ? फिर चलो हमारे साथ। कुछ घूमते घामते हैं। फिर बढ़िया खाना खायेंगे। तीन चार बजे तक आज की ओर मुझे नहीं जाना है।'

किशोर का कोई काम न था। बिना कुछ कहे ही वह अनिल के साथ हो लिया।

'आज फर्स्ट क्लास मुर्गा खायेंगे। शाम को खाना खा सकेंगे या नहीं, पता नहीं। पेट में तो अभी से न जाने कैसा-कैसा हो रहा है, यार।" अनिल कह रहा था 'आज किस्मत का फैसला होने वाला है। क्या होगा खुदा ही जाने। फैसला हो जाने तक बसती में मिलने का भी दिल नहीं करता। शाम को मिलने वाली है वह।' लग रहा था जैसे अनिल आज काफी बात करना चाहता है।

अनिल बोले जा रहा था। किशोर को खुशी हो रही थी। वह खुद चुप ही था। लेकिन अनिल की बातों में बहक न जाये इस बात का भी खयाल रख रहा था। अनिल की बातें उसे अच्छी लगती हैं कुछ भी अर्थ न हो तो भी। उसकी बकवास से एक ऊब-सी आ जाती है। काफी कुछ भूल जाते हैं। बाबूजी को लिखा जाने वाला खत, जयंत नीला, सीन में

उठता हुआ तूफान। पर बाबूजी को आज खत लिख ही देना होगा। आज वक्त भी है। वैसे भी आफिस से गोता लगा ही चुके हैं। लिख ही देंगे, मन की मुराद निकाल ही देंगे। नीला के बारे में भी लिख दूं ? हुंह ही क्या है ? गधा कहेंगे, कहते रहें। वह खत कैसा ज़हर-सा बदन में फैला रहा है। एकबारगी दिल कड़ा कर लिख ही देना चाहिए—पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श।'

'आज बसंती से मिलने आओगे ?' अनिल पूछ रहा था।

'ना। तुम लोगों के बीच अजीब-सा लगता है।'

'स्टुपिड ! मेरे साथ तो दूसरा कोई लगा ही रहना है यार। तुम जानते ही हो। मुझमें कंट्रोल करने की ताकत ज़रा कम ही है।'

'नहीं, आज बचे हुए काम कर डालने हैं।'

'दोपहर नहीं शाम के लिए कह रहा हूं। दोपहर को चाचा उसके पिताजी को फोन करने वाले हैं। मेरे दिल की धड़कन तो अभी से तेज़ होने लगी है यार।'

'तुम तो पागल हो। तुम्हें किस बात का डर है ?''

'तुम्हें पता नहीं है यार, बसंती का बाप बड़ा मस्त आदमी है और वह बाप की सुनने वाली लड़की है।''

'नानसेंस ! वह तो तुम्हारे साथ भाग भी सकती है।'

अनिल ज़रा चुप हो गया। बसंती को बुरा भला कहा जाये यह उसे पसंद न था। कई बार उसने किशोर के साथ बसंती के बारे में बातें की थीं, लेकिन एक बार भी वह उसके बारे में बुरा नहीं बोला था।

'तुमने अभी उसे पहचाना नहीं है', वह बोला।

'मैं तो चेहरे से लड़कियों को भांप लेता हूं।'

'तुम—?'' कहकर अनिल हँस दिया। फिर उसे लगा कि हँसने से किशोर को बुरा लग सकता है इसलिए रुक गया।

किशोर के कंधे पर हाथ रखकर उसने उसे एक एयरकंडीशंड होटल के दरवाज़े की ओर मोड़ दिया। अन्दर के धीमे प्रकाश और ठंडक में उसे अच्छा लग रहा था। अनिल ने आर्डर दिया। फिर कीमती सिगरेट सुलगा ली। अब वह ज़रा गंभीर हो गया था।

'मैं कहता हूं किशोर, मैंने अपने कई एडवेंचर्स तुम्हें बताये हैं। यह उनमें से नहीं है।'

उसकी आवाज़ की टोन से किशोर का मन चकृत हो गया। उसे लगा, उसने बेकार ही उसे परेशान किया। अपनी सिगरेट बुझाकर उसने पर इस तरह कहा जिसने ? तुम शादी की बात कर रहे हो, उसी से

मतलब है कि ?"

अनिल चुप रहा। उसे वाकई सिगरेट पीना नहीं आता। लेकिन इस वक्त जरूर उसने जोर से कश खींचा था। धुएँ की ओर ताकती उसकी नज़रों को देखकर किशोर को भी अचरज हुआ। उन आँखों में कभी भी आँसू आ सकते थे। उस वक्त वह एकदम भावुक हो गया था।

कुछ पल बाद अनिल ने उसकी ओर देखते हुए कहा, 'तुम खुद देख चुके हो कि मैं कितने गलीज़ से उससे पेश आता हूँ। सच कह रहा हूँ, मैं जब अकेला होता हूँ न तो बहुत सभ्यता से पेश आता हूँ।'

कुछ पल रुककर अनिल ने फिर कहा, 'यार, सच इस छोकरी ने मुझे पक्की तौर पर गुलाम कर लिया है। तुम नहीं जानते किशोर, वह सामने न हो तो मैं किस तरह जलता रहता हूँ। पहले काफी लड़कियों को हाटलों में ले गया हूँ, पर मैंने प्रथम इसका हाथ छुआ तक नहीं। रास्ता चलते वक्त छू जाय तो बदन में आग सी निकलती है। एक बार होटल में बिल देने के दौरान नहीं नहीं कहते हुए इसने हाथ पकड़ लिया था। तो माई गॉड! सननननन! एकदम जैसे बिजली का करंट छू गया हो। मैं इस तरफ ओर देखता रहा कि वह रुकती सी रह गयी एकदम घबरा गयी। उस दिन कालाबा पहुँचने पर भी वह हालत खत्म न हो पायी।'

अनिल फिर रुक गया। दो-तीन कश खींचने तक चुप रहा। फिर कुछ हँसा।

'तुम्हें शायद हँसी आ रही होगी। पर मेरा तो बस यों ही है यार। मोरेलिटी मेरी समझ में नहीं आती। किसी भी बकशाप या डिपार्टमेंट मुझे दिखाओ, मैं खुश हो जाऊँगा। इस मामले में पूरी फैक्टरी में मुझ जैसा कोई न होगा। लेकिन इश्किया का यह लफड़ा मेरी समझ से बाहर है। इतना जान जरूर है कालाबा में चाहे जितने पैसे खर्च हो जायँ, बगनी को हाथ नहीं लगाऊँगा। इसमें भी क्या कोई मोरेलिटी है?'

'कमाल है! मुझे नहीं मालूम था कि तुम इतना सोचते हो।' किशोर ने कहा।

'छोड़ो यार, सोचता कौन है? पर सिर्फ दमती की वजह से ऐसा होता है। टम इट! किशोर सच तुम्हें कैसे समझाऊँ, इसी को प्यार कहते हैं यार।'

किशोर हँस दिया। उसे खुद अपनी हँसी में कड़वाहट नजर आयी। अनिल अभी भी उसे मेलोड्रमेटिक लगता था। मेरी समस्या उससे अधिक गहरी है। क्या इसी बात का एहसास उस कड़वाहट में था? अनिल की मोहब्बत अभी भी उतनी गहरी नहीं है। वह छिछली है। शीला! उसने

बदन पर काँटे उभर आये। सिर भन्ना गया। उसे लगा जैसे इसी पल वह नीला के बारे में अनिल को बताने जा रहा है। उसकी सांस तेज हो गयी। पेट में अजीब खालीपन महसूस हुआ। किशोर ने हाथ की मुट्ठियाँ कसकर बंद कर लीं। आँखें मूंदकर सिर को एक झटका सा दिया और बड़ी कोशिश के साथ अपने आपको सम्हाला। अनिल का ध्यान मेरी इस हालत की ओर नहीं है यह देखकर उसे कुछ तसल्ली हुई। अनिल अभी कहीं दूर पर ही देख रहा था।

तुम कुछ भी कहो किशोर पर सच कहता हूँ मोहब्बत इतनी परेशान करने वाली होती है यह न जानता था। एकदम खराब। तुम नहीं समझ पाओगे। मोहब्बत की जाती है बतायी नहीं जा सकती। तुम तो पागल हो। तुम कुछ बताते नहीं इसलिए तुम्हारी बात मैं नहीं जानता। कोलाबा चलने के लिए कहता हूँ तो चलते नहीं हो। सच पूछा जाये तो बसंती के बारे में इस तरह सोचना ही पाप है। लेकिन मेरे दिमाग में हमेशा आता है कि कोलाबा की बात एकदम थर्डरेट है। माई गाड! बसंती के साथ तो स्वर्ग मिल जायेगा स्वर्ग!'

अनिल की हालत देखकर किशोर को कोई अजूबा महसूस नहीं हुआ। यह तो अनिल की खास आदत है। लेकिन बसंती के बारे में उस उसकी फिलासफी जानकर अचरज हुआ। बसंती देखने में खूबसूरत है। वह अपने पिताजी के कहे में भी हो सकती है। लेकिन उसकी आँखें कुछ अलग ही हैं। अनिल कुछ भी महसूस करे पर मेरा जजमेंट गलत हो ही नहीं सकता। अनिल अपने-आप को अनुभवी समझता है लेकिन बसंती के बारे में वह एकदम पगला है जैसे मैं नीला के बारे में हो जाता हूँ। यह बात ऐसी ही है कि मोहब्बत आदमी को पागल बना देती है। मैं अपनी सारी जिन्दगी तबाह किये जा रहा हूँ यह पागलपन नहीं तो और क्या है? देश के लिए समाज के लिए ज़िन्दगी होम करना अलग बात है पर नीला के लिए? ठीक है। अनिल जरूर पागल है। बसंती को उसने कस कर पकड़ रखा है।

अनिल ने ज़ेब से लिफाफा निकाला। उसमें से एक चमकीला कागज निकाला। किशोर को लगा कैडबरीज चाकलेट है लेकिन उस पर छपा लाल त्रिकोण देखकर वह सकपकाया। अनिल हँस दिया।

देखा? वह कागज उसने वापस ज़ेब में रख लिया। 'बसंती से पहचान हुई तभी से खरीदकर रखा है। हमेशा की आदत। हमने किसी भी छोकरी को दगा नहीं दी लेकिन तभी से यह अपने पास है।

किशोर ज़ोर से हँस दिया। लेकिन अनिल अभी भी गंभीर ही था।

'और अगर उसका बाप मना कर दगा तो जानते हो मैं क्या करूंगा

वाला हूँ ? सीधे समदर पर चला जाऊँगा। मैं तरना नही जानता हूँ।'

'तुम तो एकदम बेवकूफ हो। तुम समदर जाओगे और वसती ? तुम कभी उसके बाप से मिले हो।'

'मैं खुद उसके घर गया हूँ। वह ऐसी नजरों से देखता है जैसे खा जायेगा।'

'अरे, तुम बेकार ही ऐसा सोचते हो। तुम जसा इजीनियर, पसेवाला तुम्हें कौन मना करेगा ?

तुम नहीं जानते वसती का बाप बड़ा सरल है।"

'कोई बात नहीं। सिविल मैरिज कर लो। वसती माइनर तो है नहीं ?

अनिल न लबी और गहरी सास ली। किशोर को फिर हँसी आ गयी। कहता है समदर पर जायेगा। अनिल क्या समदर पर जायेगा ? लेकिन उसे बात पसद आयी। अनिल क बोलने का भी स्टाइल पसन्द आया। समन्दर की ओर दोनों हाथ पसारे हुए जाना। किनारे से लहरें टकरा रही है उसकी परवाह किये बगैर उन लहरों का सामना हाथ फलाकर करना सीने म आक्रोश—नीला—और इस दुनिया की परवाह किय बगर समदर म दाखिल हो जाना। अनिल मुझे इतना क्या पसन्द आने लगा ? मतलब उसकी स्मार्टनस की वजह स वह पसन्द है लेकिन अब उसके बारे म अपनापा महसूस होन लगा। वसती के बारे म वह हमेशा ही बोलता रहता है। लेकिन अब उसकी भावनाएँ इतनी गहरी हैं, यह अब जान पाया था।

खाना हो जाने पर अनिल ने बिल चुकाया। सिगरेट सुलगाई और बोला 'अब क्या प्रोग्राम है ?'

लाज पर जाऊगा।"

'ना मैं तो चार पाँच बजे तक उधर नहीं जाऊँगा। अपनी तकदीर का फसला है। पिक्चर चलते हो ?'

'हुँह—तुम भी खूब हो।"

'ओ क, आई सो। हम तो चले अकेले।'

किशोर कभी पिक्चर नहीं चलेगा इस बात को अनिल जानता था।

अनिल जब ओ के' कह कर चला गया तो किशोर को अजीब-सा महसूस होने लगा। पूरा-का पूरा दिन अभी बचा हुआ था। बाबूजी का खत और नीला—इन दो बातों से कैसे मुकाबला किया जाय ? 'पूज्य बाबू जी सादर चरण स्पर्श।'

किशोर लाज पर वापिस आया तब डेढ़ बज चुका था। चारों ओर सन्नाटा...

था। काउण्टर पर चाचा नहीं थे। तकरीबन सभी कमरे बंद थे। ताला खोलकर उसने पंखा चलाया तो कुछ राहत मिली। अब बाबूजी को खत लिख देना चाहिए। या कुछ देर सो लें। सिगरेट पीयें कपड़े निकालकर बिस्तर पर लेट और खत का मजमून सोचकर खत लिख दें।

किशोर ने कपड़े निकाल दिये। उसे अच्छा लगा। जलती सिगरेट मुंह में लिए ही वह बिस्तर पर पसर गया। पंखे की गोलाई में उसका बदन फिर दीखने लगा। धुआँ छोड़कर वह हँस पड़ा।

पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि काफी दिनों से आपका खत नहीं आया। आपकी तबियत कैसी है? माँ की तबियत बीच में खराब हो गयी थी जयंत के खत से मालूम हुआ था। अब वह कैसी है? मेरी चिंता न करें। अगले डिपार्टमेंटल टेस्ट में जरूर बैठने वाला हूँ।

नहीं। यह तो कार्ड पर लिखा जा सकता है। मुझे तो एक दूसरा ही खत लिखना है। बाबूजी को पता चलना चाहिए कि मैं कौन हूँ! मैं जयंत की तरह हाशियार भले ही न होऊं पर दोगला जरूर नहीं हूँ। पैसा तो कोई भी कमा लेता है। लेकिन आदर्शों के लिए कौन अपनी जिन्दगी तबाह करता है?

किशोर फिर कड़वाहट से हँस दिया। कैसा आदर्श? उसे फिर एहसास हुआ कि वह कितना दंभी है। लेकिन एहसास हुआ यही क्या कम है! हम अपने आप को धोखा नहीं दे सकते। लेकिन धोखा देते रहते हैं और एहसास भी रहता है। हरेक को इसी तरह का एहसास रहता है पता नहीं? पर मुझे मालूम है कि यह मेरी कमजोरी है। मेरी कमजोरी और विकृति इसी एहसास में बनी होगी।

बस नीला के बारे में ऐसा मैंने क्यों किया? केस तो एकदम क्लीयर है। मैं नीला से जी जान से मोहब्बत करता हूँ। नीला खूबसूरत है होशियार है। नौकरी में आगे जरूर बढ़ेगी। मैं उसका हाथ माँग लूँ तो मना नहीं करेगी। उसका बाप तो मुझे देवता समझता है अगर तय कर लूँ तो नीला मुझे मिल सकती है। पर उसके दिल में मेरे लिए मोहब्बत है या नहीं इसकी शंका मैं क्यों करता हूँ? वह वस्तुतः अच्छी तरह पेश आती है। मैंने उसके पिताजी की बीमारी में अपनी शायद छह सात की कमाई लगा दी होगी। पर उस बात का इससे क्या वास्ता? मुझे उससे प्रेम है—सीधी बात है। इसमें कौन सी उलझन है?

यही धोखा है। नीला मेरी खोज में नहीं है। आँखें मूंद कर वह अपना हाथ मेरे हाथ में दे देगी लेकिन सिर्फ अपने बाप के लिए। अपनी ज़िद के

लिए लेकिन उसकी आँखें कुछ और तलाशती रहती। नीला अलग ही है। महत्वाकांक्षी है। कभी अपना कर्जा चुकाने की ज़िद उसने न की होती। सच नीला ! जिन्दगी भर तुम्हारी तलाश में रहा। तुम किसकी तलाश में हो ? उसने पहली ही मुलाकात में जो तूफान मेरे कलेजे में उठाया है वह अभी भी क़ायम है। तुम्हारे स्पर्श के बगैर वह शान्त न होगा। और तुम कहाँ हो ? मैं यहाँ अपना बदन जला रहा हूँ। तुम सिर्फ आ भर जाओ। यहाँ सिर्फ जलन है जलन। रोम रोम से चिनगारी उठ रही है। मैं हवा में टँगी मशाल की तरह तड़प रहा हूँ। धरती कहाँ है? आसमान कहाँ है? नीचे सिर्फ आग की लपटें है। हाय नीला तुम बड़ी कठोर हो। मेरी ज़िन्दगी में अभी ही क्यों ? नीला ! कान के करीब सैकड़ों वाद्य बजकर सुर में बज रहे हैं।

किशोर को तड़पन जब रुकती है तो वह पसीने से तर होता है। हार की घनी छाया उसके चेहरे पर उभरी रहती है। आँखों में अजीब घृणा का भाव उभरा रहता है। वही तिरस्कार !

वह सारी बदन में यों ही पड़ा रहता है। ऊपर पंखा चलता रहता है, उसके बदन का पसीना सुखाते हुए।

कुछ देर बाद किशोर उठता है जैसे ऊँघ से उठा हो। पाँव में अजीब भारीपन था। बदन थका। कमरे में कोई नहीं है। वह टॉवेल लपेट लेता है। बाथरूम में जाकर ठंडा पानी बदन पर डालता है। तब उसे कुछ चैन आता है।

बाथरूम से लौटकर बाबूजी को खत लिखने का इरादा वह कुछ देर के लिए टाल देता है। कुछ चैन आ रहा था। नींद आ जाय तो ठीक रहे। इसी वजह से किशोर ने बदन फिर बिस्तर पर पसार दिया। एक सिगरेट सुलगा ली। वह कब बुझा उसे पता ही न चला। ऊँघ ज़रूर आयी पर नींद न आ सकी। बेचैनी थी सपना था या क्या पता नहीं। शायद वह सपने में खत लिख रहा था।

पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह है कि ।

एक के बाद एक कागज लेकर वह यहा मज़मून लिख जा रहा था। कागज फाड़े जा रहा था। जब काफी फटे हुए कागज इकट्ठे हो गये तब नीला पीछे से आयी और उसने उसके हाथ से पेन ले लिया। फिर वे दोनों सिर्फ एक-दूसरे की ओर देखते हुए बैठे रहे। कितनी देर बैठे रहे पता न ।। तभी सीढ़ियों की आवाज़ आयी। फिर उसके ध्यान में आया कि वह नीला की ओर एकटक ज़रूर रहा है पर नीला का ध्यान उसकी ओर नहीं है। वह कहीं और देख रही है। उसकी नजरें किस तरफ है, उसने देखा।

तभी कोस्टा ज़ोर से जाप चलाता नजर आया। इतनी ज़ोर से कि नीला ने अपने कानों पर हाथ रख लिये। सीटियो की आवाज तेज़ हो गयी। अरे यह तो अनिल पवार सीटियाँ बजा रहा है। उसने बसती के कधे पर हाथ रख दिया है। और वे दोनों नाचते गाते आ रहे हैं।

सीटियो की आवाज़ खत्म हुई तो सामने की कुर्सी पर जयत बठा हुआ था। जयत एक पेपर पढते हुए बठा था। सच पूछा जाये तो इस सपने म जयत के आने की कोई वजह ही नहीं थी। कोई सगत नही थी। जयत की जगह कुछ और दीखेगा, इस इरादे से किशोर ने कुछ राह देखी। लेकिन जयत अपनी जगह पर ही था। कुछ पल बाद किशोर को ध्यान आया कि वह ऊँघ नहीं रहा है। उसकी आँखें पूरी तरह खुली हुई हैं। जयत वाकई सामने वाली कुर्सी पर बठा हुआ है।

किशोर ने आँखो पर हाथ फिराया और वह उठ बठा।

अरे तुम तो अगले सप्ताह आने वाले थे न ?"

ना। आज ही।'

अरे मैं तो भूल ही गया था। मतलब दिल ध्यान म नही रहा। आज छुट्टी ली अच्छा ही हुआ।'

दस बजे यहाँ आया था। फिर तुम्हारे आफिस म फोन किया तो पता चला आफिस गये ही नहीं हो।

हाँ। छुट्टी ले ली है।

किशोर जानता था कि जयत के साथ इससे ज्यादा बातें नही हो पायेंगी। वाकई देखा जाये तो जयत को मेरा आदर रखने की कोई ज़रूरत ही नही है। लेकिन वह बातें करते वक्त खास खयाल रखता है शायद मेरी उम्र का लिहाज़ करता होगा। मन म आदर भाव रखता है यह सच है। क्या वजह है पता नही। लेकिन उसके इस तरह के सलूक की वजह से मुझ अजीब शर्म-सी महसूस होती है। मेरे पास कितने रुपये हैं ? पच्चीस तीस होंगे। चाचा हो तो उनके पास से चालीस पचास उधार लने चाहिए। जयत के सामने अपनी गरीबी का प्रदर्शन नहीं होना चाहिए।

तुम बैठो। मैं चाय मँगाता हूँ और हाथ-पाँव धो आता हू।'

मुह पर पानी मार कर किशोर ने हाथ-पाँव धोये। ठीक ठाक कपडे पहन और किचन मे जाकर चाय के लिए बोल आया। काउटर पर चाचा बठे हुए थ। किशोर के माँगते ही चाचा ने तीस रुपये बिना झिझक के द दिये।

गाँव हो आये ?' कमरे मे आते ही उसने जयत से पूछा।

'पिछले सप्ताह ही गया था। बाबूजी ने आपको खत लिखने के लिए

रहा है।

'हूँ।'

आज कार्ड तो भेज ही देना चाहिए। पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। काफ़ी दिनों ...।'

मॉं की तबियत तो ठीक है न ?"

'हाँ। ठीक है।"

खामोशी। सिर्फ़ पंखे की आवाज़। चाय आने में अभी कितनी देर है? जयन्त और भी स्मार्ट और रोबीला नज़र आने लगा है।

"इंटरव्यू कब—कल ही है न ?"

फाइनल इंटरव्यू तो कभी का हो चुका। यहाँ तो बस मेडिकल टेस्ट है। सिलेक्शन हो ही चुका है।'

'गुड। पोस्टिंग कहाँ होने वाली है ?'

चार ही जगह हैं—बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास। कुछ दिनों के लिए बम्बई रहना पड़ेगा।'

'अरे वाह!'

माई गॉड! किशोर के पेट में कुछ अजीब सा महसूस हुआ। जयन्त बम्बई में रहेगा मतलब आफ़त! उसे कार एलाउंस भी मिलेगा। सर्विस क्वार्टर भी मिलेगा—और सुविधाएँ भी होंगी। यंग इंडियन एग्ज़िक्यू टिव! और उसका बड़ा भाई? सचिवालय में फाइनेंस डिपार्टमेंट में क्लर्क! किशोर के सीने में अजीब-सा दर्द उठा। वैसी बात नहीं। जयन्त पर तो उसे अभिमान है। सीने में दर्द तो इसलिए कि वह अब बार-बार मिलता रहेगा।

किशोर को लगा कि एकदम सिर पर बिजली गिर गयी। जयन्त अब शादी का विचार कर रहा होगा और मैं उसके रास्ते में आड़े आ रहा हूँ। अभी तक यह बात मेरे दिमाग़ में क्यों नहीं आयी? जयन्त छब्बीस साल का है। इस महीने से सत्ताईसवाँ साल लगेगा।

आज मैं बाबूजी को ख़त लिखने वाला हूँ,' किशोर जल्दबाज़ी में बोल पड़ा।

जयन्त चुप रहा। कुछ पल यों ही चुप्पी में निकल गये। पंखे की आवाज़ कुछ तीखी और तेज़ हो गयी है। पहले इतनी कर्कश कभी आ नहीं आती थी। चाय अभी तक नहीं आयी।

अरे अभी तक चाय नहीं आयी ?

'कोई जल्दी नहीं। आज पूरा दिन मैं खाली ही हूँ।"

'कहाँ रुके हुए हो ?'

तभी कोस्टा जोर स जाप चलाता नजर आया। इतनी जोर से कि नीला ने अपने कानों पर हाथ रख लिये। सीटियो की आवाज तेज हो गयी। अरे यह तो अनिल पवार सीटियाँ बजा रहा है। उसने बसती के कंधे पर हाथ रख दिया है। और वे दोनो नाचत गाते आ रहे हैं।

सीटियो की आवाज खत्म हुई तो सामने की कुर्सी पर जयत बठा हुआ था। जयत एक पेपर पढत हुए बठा था। मच पूछा जाये तो इस सपने म जयत के आने की कोई वजह ही नही थी। कोई सगत नही थी। जयत की जगह कुछ और दीखेगा, इस इरादे से किशोर ने कुछ राह देखी। लेकिन जयत अपनी जगह पर ही था। कुछ पल बाद किशोर को ध्यान आया कि वह ऊँघ नही रहा है। उसकी आँखें पूरी तरह खुली हुई है। जयत वाकई सामने वाली कुर्सी पर बठा हुआ है।

किशोर ने आँखों पर हाथ फिराया और वह उठ बठा।

अरे तुम तो अगले सप्ताह आने वाले थे न ?'

'ना। आज ही।

अरे, मैं तो भूल ही गया था। मतलब दिन ध्यान म नही रहा। आज छुट्टी ली अच्छा ही हुआ।

दस बजे यहाँ आया था। फिर तुम्हारे आफिस म फोन किया तो पता चला आफिस गये ही नही हो।

हाँ। छुट्टी ले ली है।

किशोर जानता था कि जयत के साथ इससे ज्यादा बातें नही हो पायेंगी। वाकई देखा जाये तो जयत को मेरा आदर रखने की कोई जरूरत ही नही है। लेकिन वह बातें करत वक्त खास खयाल रखता है शायद मेरी उम्र का लिहाज करता होगा। मन म आदर भाव रखता है यह सच है। क्या वजह है पता नही। लेकिन उसके इस तरह के सलूक की वजह से मुझे अजीब शर्म-सी महसूस होती है। मेरे पास कितने रुपये हैं ? पच्चीस तीस होंगे। चाचा हो तो उनके पास से चालीस पचास उधार लने चाहिए। जयत के सामने अपनी गरीबी का प्रदशन नही होना चाहिए।

'तुम बठो। मैं चाय मँगाता हूँ और हाथ-पाँव धो आता हूँ।'

मुँह पर पानी मार कर किशोर ने हाथ-पाँव धोये। ठीक ठाक कपड़े पहन और किचन मे जाकर चाय के लिए बोल आया। काउन्टर पर चाचा बठे हुए थ। किशोर के माँगते ही चाचा ने तीस रुपये बिना झिझक के दे दिये।

गाँव हो आये ?' कमरे म आते ही उसने जयत से पूछा।

पिछले सप्ताह ही गया था। बाबूजी ने आपको खत लिखने के लिए

कहा है।"

'हूं।'

आज कार्ड तो भेज ही देना चाहिए। 'पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। काफ़ी दिनों ।

माँ की तबियत तो ठीक है न ?'

'हाँ। ठीक है।'

खामोशी। सिर्फ पंखे की आवाज़। चाय आने में अभी कितनी देर है ? जयंत और भी स्मार्ट और रौबीला नज़र आने लगा है।

"इंटरव्यू कब—कल ही है न ?"

'फ़ाइनल इंटरव्यू तो कभी का हो चुका। यहाँ तो बस नामिनल टेस्ट है। सिलेक्शन हो ही चुका है।"

गुड। पोस्टिंग कहाँ होने वाली है ?'

चार ही जगह हैं—बम्बई दिल्ली कलकत्ता और मद्रास। कुछ दिनों के लिए बम्बई रहना पड़ेगा।"

'अरे वाह !"

माई गाड ! किशोर के पेट में कुछ अजीब सा महसूस हुआ। जयंत बम्बई में रहेगा मतलब आफ़त ! उसे क्वार्टर एलाउंस भी मिलेगा। सर्विस डाइरेक्ट पक्की मिलेगी—और सुविधाएं भी होंगी। यस डॉलिंग एक्विज़्यू ज़िव ! और उसका बड़ा भाई ? सचिवालय में फाइनेंस डिपार्टमेंट में क्लर्क ! किशोर के मन में अजीब-सा दर्द उठा। वैसी बात नहीं। जयंत पर तो उसे अभिमान है। सीने में दर्द तो इसलिए कि वह अब बार बार मिलता रहेगा।

किशोर को लगा कि एकदम सिर पर बिजली गिर गयी। जयंत अब शादी का विचार कर रहा होगा और मैं उसके रास्ते में आड़े आ रहा हूं। अभी तक यह बात मेरे दिमाग़ में क्यों नहीं आयी ? जयंत छब्बीस साल का है। इस महीने से तेरह चौदह सौ कमाने लगेगा।

आज मैं बाबूजी को ख़त लिखने वाला हूँ,' किशोर जल्दबाज़ी में बोल पड़ा।

जयंत चुप रहा। कुछ पल यों ही चुप्पी में निकल गये। पंखे की आवाज़ कुछ तीखी और तेज़ हो गयी है। पहले इतनी खर-खर की आवाज़ नहीं आती थी। चाय अभी तक नहीं आयी।

अरे अभी तक चाय नहीं आयी ?

कोई जल्दी नहीं। आज पूरा दिन मैं खाली ही हूँ।"

कहाँ ठहरे हुए हो ?

कपनी के गस्ट हाउस म। घाटकोपर। शाम को हम लोगों की मीटिंग है।

अर ज़रा घूमते घामते।

घूमेंगे कल या परसों।

चाय आ गयी। किशोर न लंबी साँस ली। चाय पीने के दौरान बोलना जरूरी नहीं है।

जयत न अपने ब्रीफ कैस म से एक कागज निकाला और फिर एक डिब्बा। इलक्ट्रिक शेवर आपके लिए लाया हूँ। स्मगल्ड है अच्छी क्वालिटी का है।

अर मेरे लिए क्या ? ब्लेड स दाढ़ी बनाने का मन नहीं होता अपने लिए ही रहने दो।

मेरे पास एक और है। यही रहने दीजिये।

जयत न डिब्बा खोला। अदर म चमकती हुई मशीन निकल आयी। एक प्लग म वायर लगाकर कैसे चलाया जाय और कैसे साफ किया जाय यह सब जयत न बताया। फिर डिब्बे म रख दिया। किशोर को वह मशीन नहीं चाहिए थी। पर उससे मना भी न किया जा रहा था। जयत बुरा मान जायेगा।

सिगरेट पीते हो या नहीं ? चारमीनार सुलगाते हुए किशोर ने पूछा।

हम तो इसके स्वाद का ही पता नहीं अभी तक। बस कभी-कभार पी लेता हूँ। एक बार तो चुरुट पीकर देखा लेकिन एकदम उल्टी हो गयी।

जयत हँस दिया। ऐसी स्नेहिल बात ! चलो यहाँ तक तो पहुँचे। आत्मविश्वास बढ गया। या सिगरेट की वजह से आत्मविश्वास बढ़ा होगा।

आराम करोगे ? सफर मे थक गये होगे।'

ना। बिलकुल सोता हुआ आया हूँ।'

जयत फर्स्ट क्लास से आया होगा। हम तो उस दर्जे की आदत ही नहीं। हर बार पढ़ाई म डिफ़ीकल्टीज पूछने वाला जयत। मेरी निगाह म यही जयत है अभी तक। उससे बातें करते वक्त उसका आइना कभी ध्यान म नहीं आता। यही तो कमजोरी है। किशोर न सिगरेट खत्म की।

चलें बाहर ?"

'चलते हैं। आपको कोई काम तो नहीं है न ?"

ना-ना। तुम्हारे लिए ही तो छुट्टी ली है।'

किशोर न अटैची स अच्छे कपड़े निकालकर पहन लिए। जूते पहने। सच पूछा जाय तो बाहर जाकर करेंगे क्या, यह सवाल सामने था। जयत

क्या सोच रहा है पता नही। शाम को उसकी मीटिंग है। मतलब अभी दो-तीन घटे वह साथ रहेगा।

दोनो बाहर आ गये और धीमे धीमे चलते रहे। कुछ बोलने की जरूरत ही नही थी। करीब के एक अच्छे से टूपी होटल म चल गये। दो प्लेट मायी और काफी पी। किशोर ने ही बिल चुकाया। जयत ने अपने मनी बग की ओर हाथ तक नही बढाया। किशोर को अच्छा लगा। अपने भाई म काफी समय है इस पर गर्व भी हुआ। लेकिन तभी लगा कि कहा जयत मुझ पर दया तो नही कर रहा ? शायद मुझे बुरा लगे, इस वजह से वह इस तरह कर रहा हो।

किशोर बेचैन हो गया। उसके कान गर्म हो गय। झटके के साथ सिगरेट निकालकर उसने सुलगा ली और वे दोनों होटल से बाहर आ गय।

'बीच म आप बीमार हो गये थे ?' जयत ने पूछा।

हां। अब ठीक हूँ।"

तब सिगरेट कम कर दी थी न ?"

सिगरेट से कुछ नही होता।' किशोर यो ही बोल गया, लेकिन बाद म उसे खुद ही अजीब लगा।

फिर कुछ देर तक चुप्पी। दोनो अपने निर्धारित दूकानों म निगाह डालते हुए चल रहे थे। एक दुकान से जयत ने बाबूजी के लिए दो धोतियाँ खरीदी। किशोर के दिमाग मे जैसे एकदम चिनगारी उभरी। चलते चलते उसने कुछ सोचा और एक दुकान म जयत को ले गया। कई चीजें देखी और अत म उसने कफ लिक्स पसद किये। उन्ह एक अच्छे पकिट म रखवाकर चालीस रुपये गिन दिये। जयत भी सकते मे आ गया। वे कफ लिक्स वाकई खूबसूरत थे।

कुछ देर यों ही भटकने के बाद जयत बेचैन हो उठा है किशोर ने ताड़ लिया।

"तुम्हें जाना है न ? वक्त हो गया होगा।

नही वसो कोई बात नही। जाऊँगा कुछ देर बाद।

अरे अभी चले जाओ तो भी कोई हर्ज नही। वैसे भी हम भटक ही तो रहे हैं।'

फिर कल या परसों मिलेंगे फुर्सत मिलते ही। ज्वाइन करने स पहले गाँव जरूर जाऊँगा।

अच्छा।'

कुछ देर तक दोनो रास्ते पर खड़े रहते हैं। गाँव जायेगा यह कहने म जयत का क्या उद्देश्य था ? देखो, मैं किस तरह बाबूजी और अम्मा की तरफ

लेन बीच-बीच में जाता रहता हूं। यह वह नहीं कहता, लेकिन इस तरह की बातें जयंत के मन में कभी नहीं आयेंगी। मैं जयंत को समझ सकता हूँ और बात दरअसल यह है कि जयंत भी मुझे समझ सकता है। मुझसे बातें करने के दौरान यह समझ उसकी आँखों में बसी रहती है। मेरी सारी कमजोरियाँ, अच्छाइयाँ और बुराइयाँ वह जानता है। इसी वजह से वह इतनी अच्छी तरह से पेश आता है। लेकिन क्या वह नीला के बारे में जानता होगा? होगी जानकारी। मैं उसके यहां रोजाना ही तो जाता रहता था। उसके बाप को पैसे देने की बात भी उसे मालूम होगी। लेकिन उसने मेरी जिन्दगी को इस तरह बर्बाद कर दिया है, यह क्या वह जानता होगा? फिर भी वह मुझे समझने की कोशिश करता है। किशोर का मन भर आया। उसने कफ लिंक्स का पैकिट निकाला और जयंत से बोला 'रखो इसे अपने पास।

'अरे, मेरे लिए लिया?

'मतलब? तुम सोचते होगे कि मैं अपने लिए ले रहा था?'

जयंत हँस दिया। पैकिट अपने हाथ में लेते हुए बोला, 'तुम्हारी पसंद बेहतरीन है।

किशोर फिर कुछ कड़वाहट से हँस दिया। हँसी की कड़वाहट इस बार भी न छिपा पाया यह उस बुरा भी लगा।'

ठीक है। जाने से पहले मिल लेना।'

कफ लिंक्स बगल में रखते हुए जयंत चला गया। किशोर ने राहत की सांस ली। उसने झट से एक चारमीनार सुलगा ली। भाई के साथ भी हम दो-ढाई घंटे नहीं बिता पाते। अजीब धुरंधर हैं हम! जयंत मुझे पसंद है। उसके लिए मन में स्नेह है। गर्व है उस पर। लेकिन उसका साथ मुझे क्यों अच्छा नहीं लगता? उसके मन में मेरे लिए आदर है। लेकिन वह मेरी ओर बड़ी बारीकी से देखता है। अपनी तबाही अपने ही हाथों कर रहा हूँ यह वह जानता है। इसी वजह से उसकी नजरें वैसी दीखती हैं। मुझे ही हर पल इस बात का एहसास होता रहता है। जयंत दो-ढाई साल बाद मिल रहा है। पहले भी यही एहसास था पर अब तीव्रता से होता है। खतों में भी वह ऐसी-वैसी बातें न लिखता था, लेकिन मुझे ही पता नहीं क्यों वैसा लगा करता था। इसी वजह से उसका साथ मुझे अच्छा नहीं लगता। उसकी मूक निंदा बड़ी बेशर्मी से मैं पचा जाता हूँ और ऊपर से कड़वी हँसी हँसता रहता हूँ। मुझमें जरा भी इंसानियत नहीं है।

किशोर ने कश तेजी के साथ खींचना शुरू कर दिये। खुद के कड़वेपन से वह बेचैन हो उठा। लेकिन तभी दूसरी शंका ने उसे घेर लिया। यह सब

मन ही मन सो— राएँ तो नहीं है? जयंत मुझे जैसा समझता है, वैसा केवल ... पाता है। लेकिन जैसा मैं सोचता हूँ वैसा जयंत है क्या? पिछले आठ साल सालों में जयंत से ऐसा वास्ता भी कौन सा पड़ा है! मेरी गैरहाज़िरी में ही वह कुछ बन पाया है। हो सकता है, वह मेरा तिरस्कार भी करता हो। मुझे मूर्ख भी समझता होगा। इन बातों से किशोर और भी परेशान हो गया। उसके सिर में एकदम गर्माहट भर गयी लेकिन दूसरे पल ही खुद शर्मा गया। जयंत के लिए मैं मन में ऐसे खयालात कैसे ला सकता हूँ, इसी बात की शर्म! अपने छोटे भाई के लिए उसके मन में फिर स्नेह उभर आया। और तभी उसके साथ किये बर्ताव का उसे पछतावा हुआ। कल या परसों जब वह मिलेगा तो उसे कुछ और करना चाहिए। जयंत अच्छा है। उसे शादी जरूर करनी चाहिए। हो सकता है उसने कोई लड़की पसंद भी कर रखी हो। बाबूजी को खत लिख ही देना चाहिए।

किशोर के पेट में फिर कुछ अजीब-सा हुआ। कार्ड खरीदना रह गया था। कार्ड नहीं इनलैंड ही चाहिए। लेकिन अब कहाँ से लाये? चचा से ले लेंगे, उनके पास रहते हैं। लेकिन आज किसी भी हालत में बाबूजी को खत लिख देना होगा। उसके बगैर बात बन न पायेगी। सीधे मुद्दे पर ही लिख देना चाहिए। पूज्य बाबूजी को सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह है कि आ... सभी खत मिल गये थे। आपकी और अम्मा की तबियत अब ठीक है' यह जानकर प्रसन्नता हुई। आज ही जयंत मिला। मेरी तबियत ठीक है। ठीक है ठीक है। हूँ अब असल मुद्दे पर कैसे लिखा जाये? 'पूज्य बाबूजी सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि अभी शादी का कोई विचार नहीं है। इसलिए मेरी वजह से आप परेशान न हों। मैं सही जयंत के रास्ते में मैं आड़े नहीं आना चाहता। मेरी राह देखना छोड़कर जयंत की शादी कर दीजिए।' अरे यह तो काफी सख्त हो गया। पहले लिखा था, वही ठीक था।

पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि आपके सारे खत मिले। आपकी और अम्मा की तबियत ठीक है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। आज ही जयंत मिला।'

लेकिन जिस मकसद से इस सिर में घूम रहा हूँ जिसकी वजह से रातें खराब कर रहा हूँ वह मन कैसे लिखूँगा? वह भी इसी में लिख देना चाहिए। बाबूजी गलत न समझें। अम्मा को भी बुरा लगेगा। सलीके से लिखना चाहिए। पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। खत लिखने।'

चलते हुए सोचते-सोचते किशोर शिवाजी पार्क तक आ गया। शाम होने लगी थी। अब उसके आगे नया संकट खड़ा हो गया था। जयंत चला

गया। अब इस बम्बई म शाम अकेल बितानी होगी। बिलकुल अकल ! इस खयाल से वह हडबडा गया। अकलपन की कभी आन्त हो नहीं पाती। अकलपन की पीडा बडी गहरी होती है। उसम भी शाम तो बडी भयङ्कर होती है। नाम पर अब अनिल पवार क होन की सभावना कम ही है। दूसरे किसी और क साथ वार होंगे। नीला नीला इस वक्त तुम क्या कर रही होगी ? तुम्हें अकलपन की पीडा नही होती ? तुम किसक साथ के लिए परेशान हो ?

और इसी वक्त पर कोस्टा की याद क्या उभरती है ? कोस्टा मेरे सपना म कस आया ? वह और भी परेशान हो गया।

वह चौपाटी पर कब पहुचा वह खद ही न जान पाया। तट पर भीड थी ही नहीं। हवा बदन को छू रही थी। भीड न हो तो समदर पर आन का जी नहीं करता। तब समदर भी हमस इतना अपनापन नहीं दिखाता। और भीड न हो तो वह अपना हमदम लगता है।

अभी सूरज डूबा नही था। सूरज बस डेढ हाथ ऊपर था। लकिन आसमान पश्चिम का ओर पीला लाल हो चुका था। चौपाटी पर भल पूरी वाल लाख रह थे। कुछ अगल भी थे। पर इस भीड नहीं कहा जा सकता। आज शायद ज्यादा भीड होगा भी नहीं। वजह यह कि आज इतवार नहीं है।

शाम होत ही मन इतना अजीब सा हुआ जाता है। खास तौर पर जब अकेल हो ? लगता है जस एक कबी अन्दर ही अदर कतरे जा रही है। लगता है एक बोझ मन पर सवार है। इसका स्पष्टीकरण हो हो नहीं सकता। यह बोझ जिन्दगी भर ढोना पडेगा शायद।

चौपाटी पर एक कोन म हाथ पीछे किये समदर की ओर देखत हुए किशोर बठ गया। दिन भर की थकान से वह परेशान हो चुका था। जयत क मिलन स बचन हो गया था। अब उस अकेलपन म शाम बिताना थी। उसी लडाई की वह तयारी कर रहा था। दिन भर की परशान हालत से उसकी थकान और भी बढ गयी थी। जयत न जो बचनी दी थी उसकी वजह से वह अजीब तरह से परेशान हो गया था। दिमाग म बाबूजी को लिखे जान वाले खत की बातें घूम रही थी। आज की गरहाजिरी का वजह से कल आफिस म जूम होगी। अब चारो ओर से शाम उस पर हमला करन के लिए आ चुकी थी।

यह शाम खुद मैंन अपन ऊपर लाद ली है। जस मारी जिन्दगी आनी है। उस वक्त ही अनिल क साथ पिक्चर चल देता तो दोपहर का थकान तो न होती और यह शाम भी करीब से धीरे म निकल गया होती। कम

से कम जवन के साथ भी कुछ देर रहा जा सकता था। मौज में आता तो कोई-न-कोई तो मिल ही जाता। चाचा ही मिल जाते। पेपर ही पढ़ लिया होता।

लेकिन मैं जानबूझकर इधर आया। समंदर के ख्याल से शाम अपने ढंग पर लेने के लिए। यह मेरी अजीब ख्वाहिश है। निराशा अपने ऊपर ले लेना। जिन्दगी बर्बाद कर डालना। बचपन में भी मुझमें महत्वाकांक्षा कहाँ थी? जो कुछ है वह सब हवाई पुल। मेरे दिवा-स्वप्न! पहले इस तरह के सपने भविष्य के लिए हुआ करते थे। अब भूत में जो नहीं हुआ वे सपने उसके लिए होते हैं। क्या यह बूढ़े होने का सबूत है? मेरी सारी इच्छाएँ मर जाने की वजह से तो ऐसा महसूस नहीं हो रहा!

मैं कैसे इतना कमजोर हो गया हूँ?

मुझे किसी बात में रस ही महसूस नहीं होता। किसी में भी रस नहीं। उदासीनता का एहसास इतना जबरदस्त है कि नीना के बारे में उठने वाली भावनाएँ भी कभी-कभी झूठी और बनावटी लगने लगती हैं। नीला—यह विषय मैंने खुद अपने आपसे चिपटा रखा है। इसलिए कि इस रसहीन जिन्दगी में कुछ तो रस आयेगा। उसके मिलने में वास्तविक जिंदगी का रस नहीं है। अगर होता तो मैंने कुछ तो हाथ-पाँव हिलाये होते। मुझे पढ़ने लिखने में कहाँ रस आ पाता है? सारे तथाकथित द्वन्द दिखावटी हैं खुद के बनाये हुए। सोचा जाय तो यह दुख-द्वन्द दुख-द्वन्द ही नहीं रह पायें। वे तो सिर्फ कल्पनाएँ हैं। हम दिखाते हैं यही बात कितनी सही है। अब इस तरह जिन्दा रहने को ही कोई दुख समझ ले तो अलग बात है। हर आदमी की दुख की व्याख्या भिन्न हुआ करती है। मुझे अपनी ही व्याख्याएँ अभी तक समझ में नहीं आ पायी हैं यह भी सही है।

दसों दिशाओं को सुनहरी गुलाबी छाया से भरते हुए सूरज मखमली समंदर पर टिक गया था। चौपाटी पर भीड़ कम न थी। कुछ प्रेमी युगल जरूर एक-दूसरे की कमर में हाथ डाले टहल रहे थे। एक युगल ने तो किशोर के करीब का ही एक कोना पकड़ लिया था। लेकिन किशोर का ध्यान उस तरफ न था। उसकी नजर डूबते सूरज की ओर थी। उसे लगने लगा कि आज की शाम अकेली जरूर है पर हमेशा के अकेलेपन से अलग है। शायद समंदर की नजदीकी की वजह से ऐसा महसूस हो रहा होगा। हो सकता है डूबते सूरज को देखने की वजह से हो, लेकिन उसे कुछ हलका-पन महसूस हुआ। कुछ ताजगी महसूस हुई। हवा के बदन छूते ही दिमाग की परेशानी कुछ कम होती नजर आयी। समंदर पर आकर ठीक किया। लॉज पर तो और भी परेशान हो जाते। और यहाँ कौन अकेलापन है?

साथ म समदर है—लहराता समदर ! इस तरह लहराता ममदर देख लिया जाये तो बेहोशी छाने लगती है। सारे सपने खिलते नज़र आने लगते हैं। मन होता है दोनो बाहें फैलाये समदर के करीब हो लें जैसे अनिल पवार कहता है। लेकिन वह उसके जैसा नहीं। समदर से मिलने—उसका आलिंगन करने के लिए लगता है अब तक यूँ ही जिंदगी बर्बाद कर दी। बचपन से यों ही उफनते रहना चाहिए था। ये लहरें सीने म तूफान ले आती हैं। ऐसे वक्त दूर बिछी गुलाबी शाम तन म रोमाच भर देती है। इस वक्त कोई भी बात असम्भव नहीं लगती। इसी तरह उठ और नीला का समदर पर ले आये—उसे वह रहस्यमय क्षितिज दिखाया जाय मखमल-सा समदर। लहराती बलखाती लहरें दिखायी जायें। उसका हाथ हाथ म लेकर रेत म टहला जाये और कहा जाय नीला ! छोड दो और बातें। मेरा हाथ हाथ म ले लो। मैं तुम्हें भुला दूगा। तुम्हारी क्या दिक्कतें हैं बताओ। हमारे प्रेम के सामने हर दिक्कत छोटी है। इस समदर को साक्षी रखकर कहता हू कि तुम मेरे लिए ही बनी हो, और मैं तुम्हारे लिए। फिर हम दोनो इस तरह का पागलपन क्यो किये जा रहे हैं ? हमारा यह मूक समय निरथक है। इसका कोई भी आधार नही है। यह तो हम दोनो की कमजोरी है। हमारी जिंदगी की असलियत यही है कि हम दोनो का मिलन हो। उसी के लिए हम दुनिया म आये हैं। इतना ही नहीं यह दुनिया युगो से ही इस बात की राह देख रही है। इसका हेतु यही है। इसी बात के लिए यह दुनिया बनी है। सिफ हमारे लिए हम दोनों इस दुनिया के केंद्र बिंदु हैं। इस दुनिया को निराश न करो नीला हो जाने दो सफल। आओ मैं तुम्हें सुख दूगा। फिर नीला भी तो ना नहीं कहेगी। हम दोनो हाथ थामे समदर म चले जायेंगे। लहरें कदमो को चूम लेगी। परो पर गुदगुदी करने वाली वे लहरें क्यो न इस गुलाबी रग म हम एक-दूसरे को देखें—यही सहज संभावना है। बस इस वक्त नीला के पास जाने की देर है।

लेकिन किशोर ने कुछ भी नहीं किया। वह उसी तरह बैठा हुआ समदर की ओर देख रहा था। अब तो समदर काला पडने लगा था। किशोर का हलकापन अब जाता रहा। जैसे जैसे समदर पर काला रंग छाने लगा था वैसे-वैसे किशोर के सीने मे दद बढता जा रहा था। निराशा उदासीनता अकेलेपन तिरस्कार तुच्छता और अपने पर आया गुस्सा—इन मनोभावो ने उस पर इतनी गहरी छाया डाल दी थी कि अब सिफ रोना ही बचा था। उसकी आखो म पानी आ गया। लेकिन किशोर ने अपने को रोका। अगर वह अपने को जरा ढीला छोड देता तो उसकी आँखो से

आँसू बहने लगते। उसने लंबी साँस ली। सीधे खड़े होकर हाथ फैला देना चाहिए और धीमे धीमे चलकर सीधा समदर के करीब पहुँच जाना चाहिए। जुबान पर नीला का नाम तक न होना चाहिए। किसी के लिए आक्रोश न हो। सीधे और सरल समदर की ओर जाते समय वह भी न हो सकेगा। समदर के लिए लगनेवाला आकर्षण भी बनावटी ही है। अनिल पवार आर्कई समदर में चला जायेगा? वह ऐसा कर भी सकता है। पर मुझसे न हो सकेगा। मुझसे तो कुछ भी न हो सकेगा। कारण, मुझमें अपना कुछ है ही नहीं। मेरा कुछ हो जायेगा लेकिन हम खुद कुछ न कर पायेंगे। अनिल कर सकता है। नीला करती है। जयंत भी। काफी लोग करते हैं क्योंकि उन लोगों में अपना कुछ होता है।

शाम ढल चुकी थी। आसमान में धुँधला गुलाबीपन बचा था। समदर की लहरें जैसे शांत हो चली थीं। उनका रंग स्याह हो गया था। भेल-पूरी वालों ने गैस की बत्तियाँ जला दी थीं और उन बत्तियों की ओर देखकर किशोर के मन में एक अनजान चुभती याद सिर उठा रही थी।

काफी देर बाद किशोर को ध्यान आया कि वह सिर्फ समदर की ओर देखता हुआ रेत में बैठा हुआ है। हवा अब बदन को चुभ रही थी। किशोर उठ बैठा। हवा की ओर पीठ कर उसने सिगरेट सुलगा ली। दीवार के सहारे अब कई युगल आ बैठे थे। उसकी तरफ देखकर किशोर चल पड़ा। लहरों ने रेत पर जहाँ निशान बना दिये थे, उन्हीं के साथ-साथ वह आगे बढ़ने लगा। एक शाम बिताने की तसल्ली उसे चाहिए थी। दिमाग़ ज़रूर खाली-खाली महसूस हो रहा था। कुछ एहसास ज़रूर मन में थे। बाबूजी को लिखे जाने वाले ख़त के शब्द भी नाग की तरह ऊपर आ रहे थे। पूज्य बाबूजी—सादर चरण स्पर्श। ख़त लिखने की वजह यह कि । लेकिन अब उसे काफी अच्छा महसूस हो रहा था। वह सोच रहा था कि दिन में कुछ पल के लिए ही सही, ऐसा ही महसूस होता रहे तो क्या ही अच्छा हो। उसके जूतों में गीली रेत घुस रही थी। लेकिन उस ओर उसका ध्यान न था। चौपाटी पर लगी गैस बत्तियों की ओर भी उसका ध्यान नहीं था। वह सीधे लहरों के किनारे किनारे चला जा रहा था। जैसे उसके निर्विकार मन ने कोई निर्णय ले लिया हो, इस अंदाज़ में वह क़दम बढ़ाये जा रहा था।

वह कहाँ जा रहा है यह उसके दिमाग़ में आ चुका था। लेकिन इलाज न था। जाने की उसकी इच्छा भी न थी। मगर वह खुद को रोक भी न सकता था। कई बार उसने कोशिश की थी। पर जम न पाया था। उसके अन्तर्मन ने एक निर्णय ले लिया है। उसकी इच्छा के विरुद्ध। वह

उसे तबदील नहीं कर सकता। उसके पाँव उसकी बात मानते ही नहीं। वे उसे आगे की ओर खींचते रहते हैं। इस अवस्था में भी किशोर को लगता रहता है कि यह सब भ्रम है। हम अभी भी तय कर लें तो वापस जा सकते हैं। लेकिन हम खुद को भले ही धोखा देने की कोशिश करते रहें पर यह सही है। वह अंदर-ही-अंदर सोयी हुई इच्छा है। इसी वजह से पाँव उस ओर खिंच रहे हैं। इस इच्छा को जब तक नेस्तनाबूद न कर दें तब तक यही होता रहेगा।

और किशोर चलता ही रहता है। हताश, अधीर होकर ! वह सब कुछ समझता है। उसमें सारी समझ है। और इस तरह आगे बढ़ना निरर्थक है इस बात को भी वह जानता है। खुद की निराशा और भी गहरायेगी यह भी यह जानता है। इस वक्त का निर्णय तर्कपूर्ण नहीं है लेकिन फिर भी वह बढ़ता ही रहता है। जैसे खुद के बदन पर कोई लगाता जा रहा हो। उसे पता नहीं कौन-सा करुण आनन्द आ रहा है ? कैसा समाधान है ! जाने से परेशानी और भी बढ़ने वाली है। जलन बढ़ने वाली है। फिर किसलिए जा रहे हैं ? चलो, वापस लौट चलें।

और किसी अदृश्य शक्ति से खिंचा किशोर चलता ही रहा। चौपाटी छोड़कर उसने शिवाजी पार्क पार किया और जैसे पहले से ही निर्धारित रास्ते पर वह चलता रहा। आस-पास की भीड़भाड़ की ओर उसका ध्यान ही न था। फिर भी वह बिना किसी रुकावट के तेज़ कदम बढ़ाते हुए चलता ही रहा। जब उसका ठिकाना पास आने लगा तो कदम अपने-आप धीमे पड़ गये। तेज़ी से चलते हुए जाना ठीक न होगा।

पानिटकर

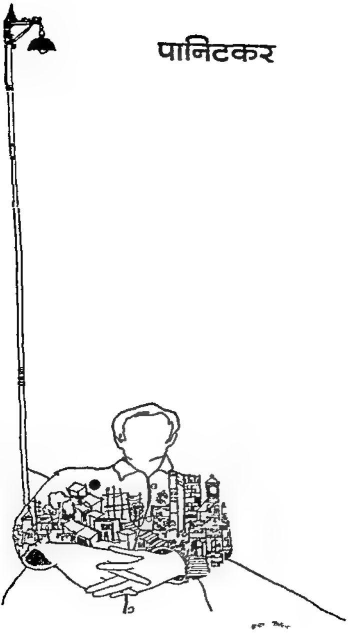

सुबह के पाँच। बम्बई अलसाये अंदाज मे नीद से जाग रही है। लोकल्स दौडने लगी हैं। डबल डेकस भी रास्ते पर अपनी अजीब तीखी आवाज के साथ घूमने लगी है। पूरी बम्बई अभी जागी नही है। लेकिन धीरे धीरे जाग रही है। लोकल्स के स्टेशन जरूर पूरी तौर पर जाग चुके हैं। वहाँ अब लोगो की भीड भी नजर आने लगी है। अखबारो के गटठे लिये छोकरे, दूधवाले, सब्जीवाले और रात की पाली के मजदूर और रात के वक्त फस्ट क्लास मे बठने से डरने वाले अफसर सभी लोकल म जमे हुए है। शहर भले ही न जाग पाया हो, पर छोटे छोटे शहरो के घर कभी के जाग चुके हैं। नौकरी करने वाली औरतों का नहाना धोना, रसोई चल रही है। पुरुष दाढी बनाने मे लगे हैं और जिसे दो-ढाई घटे मे काम पर पहुचना है वह जल्दबाजी से काम कर रहा है। दूध की गाडियों की आवाज आ रही है। लोग दूध की बोतलें लिये आ रहे है। बम्बई जाग रही है। अँधेरे की शाल धीरे धीरे खिसक रही है। लेकिन कारखाने, बस की चिमनियों से निकलते धुएँ म बम्बई अभी भी लिपटी हुई है। कफ रोड, मेरीनड्राइव, बीच कडी, शिवाजी पाक, बड स्टड जूहू म समदर के करीब की ठडक का अब एहसास होने लगा है। समदर से मीठी हवा का झोंका आ रहा है, बदन का बेहोश कँपकँपी मे तबदील कर देने वाला, सीने म तूफान पैदा कर देने वाला, सुनहरे सपनो के गान गानेवाला। मुलायम हवा पख के-से स्पश वाली हवा। लेकिन गिरगाव कुभारवाडा नागपाडा भायखला परेल लालबाग दादर कुर्ला विक्रोली अंधेरी और ऐसी ही घनी बस्तियो म बम्बई की वही मुरझाई-सी सुबह निकल रही है। झुग्गी बस्ती की औरतें और मर्द अलग-अलग जगहा पर हाथ म डिब्बे लिये बठे हुए हैं। रेलवे लाइन की तरफ खुले मदान मे दो इमारतो के बीच मे हाउसिंग बोड की कालोनी की खुली जगह म वे अपना सुबह का काम निपटा रहे हैं। लोग जाग जाग उठें उससे पहले ही उन्हे यह काम खत्म कर लेना है। और अब तो हर जगह जाग हो रही है। बम्बई जाग रही है।

दयानद पानिटकर अपने घाटकोपर वाले कमरे म जाग गया है। मतलब, अभी वह आधी ऊँघ मे ही है। कल रात वह काफी देर से वापस आया था। इसी वजह से अभी उसकी नीद पूरी नहीं हो पायी है। पर उससे सटकर सोने वाली उसकी बीवी के बदन के गम स्पश का उसे

एहसास हो रहा है। उसकी साँस की आवाज भी वह सुन रहा है। दूसरी तरफ के छोटे-से बरामदे मे उसकी इकलौती लडकी बारह साल की, जया सो रही है। उसे खुर्राटें लेने की बुरी आदत है। इसी वजह से यह सहज ही जाना जा सकता है वह सो रही है। अधेरी के फ्लैट मे उसके लिए अलहदा कमरा रखा गया है। कल का सारा दिन उसने उस फ्लैट म लगा दिया था। उसके लिए कल ही सत्ताईस हजार रुपये भरे है। कल ही वह फ्लैट देख आया है। इतना बहतरीन कि उसकी बीबी सुनदा एकदम खुश हो जायेगी। सच पूछा जाये तो अभी भी उसके सपने म वही फ्लैट है।

दयानद न लबी जमुहाई ली तो सुनदा उठ बैठी। उसे देखकर उसने उसे करीब सटा लिया।

अरे अरे—धीरे ।'

'कल मैं जब वापस आया तो तुम आधी नीद म ही थी।'

'फिर ?'

'फिर क्या ?'

अरे धीरे से, वह रही हूँ न कितनी आवाज करत हो ?'

डर किसका है ?"

'[illegible]। बाहर जया सो रही है न ? वह उठ ही रही होगी।"

वह क्या उठेगी इतनी जल्दी ?'

ऊँहूँ। वह अब सब कुछ समझने लगी है। वह अब छोटी नही है। एक दो साल म वह ।"

दयानद उठ बैठा।

तुम सो लो। मैं काम मे लग जाती हू।'

नही। आज जरा जल्दी जाना है।'

'कल बहुत देर से आये थे।"

'आज सेठ का एक खास काम है। इसी वजह से जल्दी जाना है आज।'

सुनदा का बदन डर के मारे काप गया। क्या कापा वह खुद भी नही समझ पायी। लेकिन अपने पति के काम के बार म उसे डर ही ज्यादा लगा करता था। अधेरी-कुर्ला रोड पर भैया सेठ के पेट्रोल-पप पर वह काम करता है इतना ही उसे मालूम था। दयानद भी अपने काम के बारे म उससे कभी कोई बात नही किया करता था। वह अगर कभी काफी सारे पैसे या कोई कीमती चीज ले आता है तो उसके मन म एकदम डर समा जाता था। सुनदा ज्यादा पढी लिखी भल ही न हो पर होशियार जरूर थी। वह जानती थी, दयानद जिस नौकरी पर है उसमे इतना पसा नही

मिल सकता। उसके सवालो के जवाब वह अक्सर नही दिया करता था। लेकिन उसका डर ज्यादा देर तक न टिक पाता था। उन पैसा से साड़ियाँ, गहने रेडियो फ्रिज इस तरह की चीजें आने लगती तो वह अपना डर भूल जाया करती थी।

कल फ्लैट के पैसे चुका दिये हैं।

"हाय राम वही न जिसके बारे म बता रहे थे। दो कमरे और किचन ?"

ना—पाँच कमरे और किचन।

सच ? कितने पैसे भरे हैं ?

'पन्द्रह हजार। इतनी कम रकम नही बतानी थी पहले दयानद को यही लगा। मतलब बाद म उसे पता तो लग ही जायेगा। लेकिन तभी उसने तेज साँस लेकर आँखें बड़ी-बड़ी की तो उसे लगा रकम कुछ और कम बतानी थी।

सुनदा का खिला चेहरा एकदम मुरझा सा गया। वह समझ ही न पायी कि क्या कहे। उसने बनावटी हसी हसने की कोशिश की लेकिन जमी नहा। वह रुआँसी-सी हो गयी। फिर बडी हिम्मत करके उसन पूछा, "कहाँ स लाये इतन रुपये ?

'ऐं ?'

बताओ न तुम तो कभी बताते ही नही।'

सेठ ने दिये हैं।'

'इतने— ?"

"हाँ कर्जे के तौर पर।'

' पर इतने ? और अभी तक यह जो कुछ सामान आया वह सब ?"

तुम क्या मुझ डाकू या लुटेरा समझती हो ? मेरी पसीने की कमाई है। समझी ? और बाकी कुछ तो सेठ ने खुश होकर इनाम के तौर पर दिये हैं। जो मिले सो ले लेना चाहिए। बेकार जिरह करने से क्या होता है ? पहले कुछ नही मिलता था तो तुम्हारी किटकिट थी। अब मिल रहा है तो भी किटकिट। अजीब बात है।

मुझे तो डर लगता है सुनदा की आँखो म एकदम आँसू आ गये।

उसके आँसू देखकर दयानद कुछ नरम पड गया। चौदह साल की जिन्दगी म हर दुख दर्द म उसने साथ दिया था। झुग्गी बस्ती का रहना डबल रोटी और चाय पर दिन भर गुजार देना—इन सबको उसने बिना शिकवा शिकायत के सहा था। किटकिट करना अलग बात है। मुझे ऐसा नही कहना था।

डर किस बात का? उसने नरम आवाज म पूछा "मुझे मेरे काम के पसे मिलते है। और सुनो, दो-तीन महीने बाद मे यह काम छोड देने वाला हूँ। हम लोग अपनी छोटी-सी दुकान चलायेंगे।"

सुनदा कुछ देर के लिए शात हो गयी और आँसू पोछकर काम म लग गयी। दयानद एकदम नवस हो गया था। सच, क्या यह काम छोडा जा सकता है? इस तरह या ही छोडा जा सकता है? उस पहले ही इसमे फँसना ही न था।

बेचन-सा वह बाहर की ओर आ गया। पलग पर उसकी बारह साल की लडकी सो रही थी। उसकी ओर देखते ही उसके बदन पर काटे उभर आये। इसके लिए काम छोडना ही पड़ेगा। छोटे की जरूरत नही। बडी होने पर यह क्या कहेगी! उसने उसके सिर पर हाथ फेरा। उसके बाल ठीक किय और बेचन होकर चहलकदमी करने लगा। काम छोडना ही होगा। पर कसे? इस झमेले मे उलझना ही न था। पर कब उलझ गये यह भी कहाँ पता चल सका? धीमे धीमे उलझते रहे और जब गले तक फँस गये तब समझ म आया कि पूरे ही उलझ चुके हैं। इससे छूट पाना मुश्किल ही है।

उम्र के सोलहवें साल म दयानद गाव छोडकर बम्बई आया था। मटिक तक पहुचने से पहले ही उसके पिता गुजर चुके थे और उसकी मा ने उस बम्बई मे एक रिश्तेदार के यहाँ काम के लिए भेज दिया था। पहले तीन साल तक उसन रामा के यहा बतन माजने और कपडे धोने का काम दादर मे किया था। उम्र के साथ उसके बदन म ताकत भी बढती जा रही थी। जवानी के शुरू दौर में उसे वह काम रास न आ रहा था। लेकिन दयानद मिठबोला था। इसी वजह से सभी घरों म वह पसद किया जाता था। दिन भर काम करके रात म वह पढने के लिए एक स्कूल म जाया करता था। पढ़ाई लिखाई तो खास न हो पाती थी लेकिन दयानद होशियार था। कोई भी काम उसे ज्यादा कठिन न लगता था। सहज ही वह कई काम एक साथ कर लिया करता था।

उसकी होशियारी पर दादर के एक समझदार आदमी की निगाह पडी। बतन माँजने मे ही इसकी जिन्दगी बर्बाद न हो जाये इस इरादे स उसने दयानद को पहचान की एक मिल मे चिपकवा दिया। उसकी पढाई लिखाई ठीक-ठाक हो जायेगी यह भी उसका मशा था। दयानद खुश हो गया। नौकरी मिल गयी थी और अब पढाई ठीक होने लगी थी।

तभी से दयानद लालबाग म रहने वाले एक रिश्तेदार के यहाँ टिक

...ना था। यह दयानद की माँ क दूर रिश्ते म था। एक कमरा और छोटा सा दालान। सोने और खाने-पीने के बदले वह दयानद से बीस रुपये लिया करता था। और घर के दूसरे काम भी उससे करवा लिया करता था। घर का सामान लाना बतन माँजना बच्चो को सम्भालना—इस तरह क काम काज। कारखाने म काम करके लौटने के बाद उसे इस तरह के काम करने का जरा भी दिल न करता था। पढाई तो हुई अलहदा बात। रात क स्कूल म जाना मकान वाले को खलता था। वह ऐन आते वक्त ही उस काम बताया करता था और न करने पर ताने मारना शुरू कर देता था। इस वजह स दयानद परेशान था। दिन भर खटने के बाद रात को सोते वक्त लगता कि वह कहीं भाग जाये। बारिश म कमरे म पानी आ जाता था। काम के चक्कर म उसका स्कूल डूबने लगा। वह परेशान हो गया।

इसी वजह स दयानद अपना ज्यादा-से-ज्यादा वक्त कारखाने क दोस्तो के साथ बाहर ही बिताया करता। इसी बीच उसकी पहचान यूनियन लीडर डीकोस्टा स हो गयी। डीकोस्टा हट्टा-कट्टा जवान था। एक बार पहचान हो जाये तो उसे कोई भूल न पाता था। इसी वजह से दयानद से उसकी गहरी पहचान हो गयी।

फिर दयानद यूनियन क चक्कर म उलझ गया। घर के ताने सुनकर यूनियन के काम करने लगा। बीच के खाली वक्त मे कोस्टा साब जिन्दाबाद' कहकर लाल झडा उठाये मजदूरो के साथ नारा लगाने लगा। कोस्टा का भाषण हो तो काम छोडकर वह तालियाँ बजाने के लिए हाजिर रहता था। पेपर म छपा कोस्टा का फोटो काटकर उसने एक तख्ते पर अच्छी तरह चिपकाया था और घर म उसे इस तरह लटका दिया था कि सदूक के ऊपर से सबको दिखायी दे।

यूनियन क आफिस म दयानद लिखने-पढ़ने का काम करता था। एक बार लिखत समय कोस्टा की नजर उस पर पड गयी।

कितना पढा है रे ? ' कोस्टा ने पूछा।

मट्रिक नही कर पाया कोस्टा साब। '

फिर तो पहले मट्रिक कर लो और तब तक यूनियन म पाँव भी न रखना। कहाँ रहत हो ? '

दयानद ने बता दिया।

ठीक है। कल शाम को आना। एक प्राईवेट कालिज क प्रिंसिपल से पहचान करवाये देता हूँ। तुम जसा लडका बर्बाद हो यह मुझ कतइ पसद नही। पहले पढ लिख लो, फिर यूनियन का काम अच्छी तरह कर सकते हो।'

खुद डीकोस्टा मट्रिक पास नही है यह दयानद ने सुन रखा था।

लेकिन दयानद मान गया। वह जवान था। काम करने की धुन उस म थी। सिफ उसे मौका मिलने की देर थी। एक बार मट्रिक कर लूँ तो फिर कुछ भी कर सकता हूँ, उसे यह उम्मीद थी। सिफ घर की परेशानी की वजह स उसने रात का स्कूल छोड दिया था।

दूसरे दिन जब वह आया तब डीकोस्टा आफिस म न था। वह किसी मीटिंग में गया हुआ था।

दो चार दिन के दौरान ही बोनस के मामल को लेकर आन्दोलन हुआ। डीकोस्टा और दूसरे नेताओ को पुलिस पकड ल गयी। लाल झडा लिये कारखाने के आगे प्रदशन म दयानद भी शामिल था। उसे भी पुलिस ने पकडा। रात म खूब मार लगायी और सुबह छोड दिया। दयानद की नौकरी स्थायी न थी। आन्दोलन मे भाग लने के कारण उसे नौकरी से निकाल दिया गया।

उसके रिश्तेदार को जब यह पता चला तो उसने उसे घर से भी निकाल दिया। सदूक और बिस्तर लिये दयानद बाहर निकल आया। एक फूल वाले के पास अपना सामान रखकर वह सीधे यूनियन के आफिस म दाखिल हो गया। लकिन वहाँ पुलिस का पहरा था और आफिस म ताला। कोस्टा अभी जल म ही था। कोस्टा की वजह स उस नौकरी मिल जायगी यह आशा उस थी।

वह दिन उसने यो ही गुजार दिया। दूसरे दिन भी यूनियन के आफिस म ताला देखकर उसने नौकरी तलाशना शुरू कर दिया। पहल उसने कारखान के दोस्तो क घर जाना शुरू किया लेकिन उनकी हालत भी वसी ही थी। किसी ने उसे अपने घर पर रहन बुलाया, किसी ने खाने पर। लेकिन दयानद को नौकरी चाहिए थी।

पहल-पहल वह लगन से नौकरी तलाश कर रहा था। कारखानो म जाकर तलाश करता था। लेकिन चार दिन घूमने पर उसके पास बच दस-पन्द्रह रुपये भी खच हो गये। आखिर उसने अपने सदूक और बिस्तर का सामान बेचना शुरू कर दिया। बम्बई म घूमा पर नौकरी कही नही मिली।

तीन दिन तो सामान बेचकर उसने किसी तरह गुजारा किया लेकिन चौथे दिन घबरा गया। बदन पर मली-कुचली शट और नकर बची थी। गाव वापस जाने के लिए किराये के पसे पास न थे। इस हालत म दादर के पहल वाले मालिक के पास जाने मे उस शम लग रही थी। क्या खाये अब ? चोरी करना उसक बस की बात न थी। खुदकुशी करने का उसका

इरादा न था।

दो दिन तक वह पेट भरने के लिए खूब पानी पीता रहा। एक बार भीख मांगने का भी खयाल आया। लेकिन उस खयाल का उसने छोड़ दिया। उसम हिम्मत न थी। नंगे पाँव घूमने की वजह से पाँवो म छाले पड़ गये थे। अब बिस्तर भी न था और सोने के लिए जगह भी न थी। रात जहाँ भी होती वहीं वह फुटपाथ पर पसर जाता था। तीसरे दिन के बाद से जो सामने पड़ता वह उसी से काम मांगने लगता। चिलचिलाती धूप से वह बेहद परेशान था। एक आदमी से काम मांगने पर उस आदमी ने चार आने उसके हाथ पर रख दिये। सच पूछा जाये ता दयानद भीख न चाहता था। लेकिन नकारने का होश ही न था। वह एक ही दिशा म बढ़ रहा था। रास्ते पर और हर दुकान म वह पूछता "कुछ काम मिलेगा ?"

चार-पाँच दिन पहले दयानद की हालत इतनी बुरी नहीं थी। वह काम माँगता तो लोग पूछते—कितने पढ़े हो ? टाईपिंग आती है ? कहाँ से आये हो ? किसी की पहचान ले आओ।

वह चलते चलते कहाँ जा रहा है, इस का भी होश दयानद को नहीं था। उसने हर दुकान म जाकर काम मांगना शुरू कर दिया। कुर्ला मथुरी के रास्ते पर जब वह आया तो धूप तेज हो चुकी थी। सूरज सिर पर था और तारकोल की सड़क पाँवों को जला रही थी। नजर कहीं टिकती न थी और पाँव थक चुके थ। उसे छाँह चाहिए थी। इस वजह से वह रास्ते के किनारे बने पेट्रोल-पम्प की ओर बढ़ गया। वह रास्ते से पच्चीस कदम के फासले पर था, लेकिन दयानद को लगा न जाने कितनी दूरी पर है।

पम्प के करीब पहुंचा तो चौकीदार ने टोका—"है है किधर जाता है ?"

दयानद उसके करीब जाकर खड़ा हो गया। उसके मुह से शब्द ही न निकल पा रहे थे। आँखें लाल थी। चेहरा अजीब परेशान-सा था। साँस तेज।

"क्या है ? क्या माँगता ?"

पूछने पर भी दयानद चुप रहा। चौकीदार ने उसकी तरफ शका की नजरों से देखा और उसपर हाथ चलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाया ही था कि दयानद उसके कदमो पर गिर पड़ा।

तभी से दयानद उस पप पर है। पप पर जो भी काम हो वह उसे कर देता। जितने पैसे मिलें उतने ले लेना और गराज में सोता। जल्दी ही

पैट्रोल भरने का काम करने लगा। उसकी लगन और तेज़ी देखकर पप का मनजर नूर अब्राहिम उसे और भी काम सौंपने लगा। पप पर कभी कभार आने वाला मालिक भी दयानद के काम से खुश था।

मेथा पप पर हफ्ते मे एकाध बार आता था। शाम को वह आता और रात बारह बजे तक रहता था। उस दौरान पैट्रोल लेने के लिए मोटरो की कतारें लग जाती थी। दयानद को बडा अजीब लगता था।

इसी दौरान उसका काम देखकर मालिक ने उसकी तनख्वाह सौ रुपया बाँध दी। दयानद हर काम करने के लिए तयार रहता था। मोटर साफ करने से लेकर बिल तयार करने तक के सभी काम कर लिया करता था। पप पर काम न हो तो वह पास के गराज मे पडा रहता था। मोटर के हर हिस्से को वह देखते ही पहचानने लगा था। वहाँ के मकेनिक की मदद करते-करते वह खुद भी गाडियाँ ठीक करने लगा। दो साल म वह इतना तेज़ हो गया कि वह सिर्फ इजन की आवाज सुनकर खराबी जान जाता था। अब तो वह मालिक का चहेता बन बठा था। नूर अब्राहिम से भी ज्यादा उसकी चलती थी।

इधर उसकी बुढिया माँ ने उसके पीछे शादी का लफडा लगा दिया। हर सप्ताह वह खत डाल देती। लडकियो के नाम लिख कर भेज देती। आखिर तग आकर वह गाव पहुँच गया और बुढिया ने जो लडकी देख रखी थी उससे शादी कर ली। तीसरे ही दिन बुढिया ने आँखें मूद ली और वह अपनी बीवी के साथ वापस बम्बई आ गया।

और पहली बार उसे पता चला कि उसके पास अपने कपडो क अलावा कुछ भी नही है। अभी तक उसने कुछ भी सामान इकट्ठा नही किया था। बीवी को साथ लेकर रहेगे कहाँ यह बात सोची भी न थी। अभी तक तो वह गैराज म ही सोया करता था। पहले दो दिन बीवी क साथ एक होटल म रहा। पसे खत्म होने पर एक रात उसने गराज म खडे एक ट्रक म ही काट दी। दूसरे दिन मालिक से चार सौ रुपये लेकर उसने अधेरी मे ही एक झोपडी ले ली।

मेथा पप पर आता और मोटरो की कतारें हमेशा की तरह लग जाती। तजी स मोटरें रुकती और पट्रोल लेकर चल देती। एक बार दयानद गराज म कार्ब्युरेटर साफ करने म लगा हुआ था तभी हडबडाते हुए नूर वहा आया।

'मेथा साहब बुला रहे हैं।'

हाथ धोकर दयानद कशियर क अदर वाले कमरे म दाखिल हुआ तो देखा कि मेथा के सामने वाली टेबिल पर एक रोबीला आदमी बठा हुआ

है।

'काम करोगे?'

'क्या नहीं साब!'

मेयो ने सामने बैठे आदमी को इशारा किया। तभी उस आदमी ने अपने ब्रीफ़केस से एक कोट निकाला। दयानंद की ओर देखकर बोला, 'इसे फिट होगा?'

मेयो ने कहा, 'पैसे ज़रूर मिलेंगे, पर मुँह से एक शब्द भी बाहर नहीं निकलना चाहिए।'

दयानंद कोट की ओर देखता रहा। उसके बदन पर काँटे उभर आये। उसने भाँप लिया था कि काम किस तरह का है। आज तक वह पैर पर आँखें बंद रखे न बैठा था। उसने भी कुछ योजनाएँ बनायी थीं।

'क्या—?' मेयो ने उसकी ओर देखा। मेयो की नज़र ज़रा कड़ी थी। दयानंद को लगा कि अगर इस वक्त उसने मना किया तो वह उसका गला दबा देगा।

उसने हँसकर कहा, 'देखिये तो साब, मुँह से आवाज़ तक न निकलेगी।'

मेयो हँस दिया। फिर वह आदमी चला गया। मेयो ने कहा, 'देखो, मैं तुम्हें एक पता देता हूँ। कोट पहनकर वहाँ टैक्सी से जाना और वापस आ जाना। यह लो तुम्हारे खर्चे के लिए दो सौ रुपये।'

'और बीच में कोई पूछे तो?'

'इसीलिए तो तुझे भेज रहा हूँ। तुम कुछ भी नहीं कहोगे, इस बात को जानता हूँ मैं।'

दयानंद ने रुपये कोट की जेब में ठूँस लिये। पैंट मैली थी। उसने कोट बदन पर चढ़ा लिया। कोट बगल से ढीला-ढाला था, लेकिन काफी भारी महसूस हो रहा था।

'साब पैंट ज़रा ज़्यादा मैली है। किसी को शक हो सकता है। घर जाकर पैंट बदल आऊँ?'

'नहीं वक्त ज़रा भी नहीं है।' मेयो की आवाज़ कुछ हड़बड़ाहट वाली थी।

'ठीक है।'

'और सुनो, टैक्सी घर से पहले ही रोक देना। लौटते वक्त दूसरी टैक्सी कर लेना।'

काम बहुत ही आसान था। पप से पाँच मिनट आगे चलते ही टैक्सी मिल गयी। बीस मिनट बांद्रा पहुँचने में लग गये। दयानंद ने उस फ्लैट

की बैल बजायी तो एक बूढ़े ने हसते हुए दरवाजा खोला। दयानन्द के अदर आते ही दरवाजा बद कर लिया। उसके बदन पर से कोट निकालकर उसने उसे सोफे पर बिठाया और अदर चला गया। दस मिनट मे वापस लौटा। दयानद ने कोट फिर से पहना तो काफी हल्का महसूस हो रहा था।

दयानद पप पर वापस लौटा तो मेथा पसीने से तर था। दयानद को देखते ही उसका चेहरा खिल गया।

हो गया ?

एकदम।'

'बहुत अच्छे ! मैं याद रखूगा। इसी तरह काम करते रहे तो तुम खुद ऐसे दस पप खरीद सकते हो।

दयानद हँस दिया और फिर कोट उतारने लगा।

'नही।' फिर हसकर बोला कोट तुम्हारा ही है। अब घर जाओ। आज छुट्टी।'

तभी से दयानद के दिन पलट गये। पप पर अब भी वह चाहे जो काम करता हो लेकिन यह आदमी मुझसे तेज है इस बात को नूर जानता था। दयानद की कमाई भी बढ गयी। काम भी बढ गये—कोट पहनकर जाना मेथा के कुछ कागजात इधर उधर ले जाना कार ले जाकर हवाई अड्डे पर किसी का स्वागत करना इधर की चीजें उधर पहुँचाना। चार पाच बार मेथा ने उसे बम्बई से बाहर भी भेजा था। मेथा का विश्वास बढा तो उसे और भी काम सौंपे जाने लगे। बम्बई के बाहर के काम जोखिम वाले हुआ करते थे।

मेथा के पास कोड सदेश आया करते थे। अमुक पडाव अमुक जगह लगने वाला है। बस उसके अनुसार आगे के काम किये जाते थे। मेथा का जाल काफी दूर तक बिछा हुआ था। किनारे के मछुआरो से सपर्क करना बैल गाडी या ट्रक की व्यवस्था करना, उनके रास्ते तय करना इसका ध्यान रखना कि ट्रक ठीक तरह से आ रहा है या नही पुलिस की निगाह पडने पर क्या करना—इन तमाम बातो मे दयानद होशियार हो चुका था। वह एक अलग ही दुनिया थी। बाहर की दुनिया को इस दुनिया का खास पता न था। दयानद खुद भी कहाँ जानता था ! कभी कभी तो ऐसी बात हो जाती कि दयानद भी उलझ जाता था। उसे लगता जैसे उसे न का जरा भी अता पता नही है।

जया जब पाच साल की थी, मैं

म दयानद माल सहित पकड़ा गया था। उसे लगा था कि बस अब हो गया सब कुछ खत्म। लेकिन बम्बई पहुँचते पहुँचते कुछ ऐसा हुआ कि दयानद छोड़ दिया गया।

मेथा का सारा ही काम रहस्यमय था। सफेद पाजामा सफेद शर्ट और सिर पर सफेद फर की टोपी। इस हालत मे मेथा कुर्सी पर बैठता तो किसी को शक भी नहीं हो सकता था कि उसकी जेब म पचास हजार का माल है। उसकी जेब की छोटी सी डायरी मे पाँच छह करोड़ का हिसाब लिखा रहता था। अपनी उँगलियो की हीरे की अँगूठी वह घुमाने लगता तो एकदम बेवकूफ नजर आता था। लेकिन निगाह पैनी रहती थी। उसके पाजामे की जेब म पिस्तौल रहती है यह बात दयानद जानता था। लेकिन इन सभी बातो को वह धीरे धीरे जान सका था।

मेथा के फोर्ट वाले आफिस की जानकारी तो उसे काफी बाद म मिल सकी। उसे कहाँ से सदेश आते है और उसका बॉस कौन है यह उसे आज तक पता नही चल सका है। मेथा के कांटेक्टो की जानकारी उसे धीरे धीरे होने लगी थी।

लेकिन दयानद महत्वाकाक्षी था। इन सभी बातो की जानकारी उसे हो रही थी कि सारा जाल कहा तक बिछा हुआ है सिलसिले कहाँ कहाँ फैले हुए हैं। वह यह तो जान गया था कि मेथा ही सबसे बड़ा आदमी नही है। कभी कभी फोन पर बातें करते हुए मेथा सनक हो जाता था और बेहद अदब से बातें करने लगता था। उसकी अँग्रेजी बेहद अच्छी थी। लेकिन मेथा फोन पर 'यस सर यस सर मर्टेनली सर आई विल डू माई बेस्ट सर आई अडरस्टेड सर' से आगे कुछ बोलता ही न था।

मेथा का घर कहाँ है दयानद नही जानता था। दो तीन जगह आलीशान फ्लैट म मालिक के से रौब म बैठे दयानद ने उसे देखा था। बाद्रा वरली और जुहू पर। हर जगह एयरकडीशड फ्लैट आधुनिक फर्नीचर उम्दा गलीचा और चार पाँच फोन। हर जगह मेथा का रौब मालिक जैसा था।

मेथा की उत्सुकता बिलकुल पसद न थी। बताया काम करना और पैसे लेना बस वह इतना ही चाहता था। दयानद बहुत कम बोलता है यही उसकी सबसे बड़ी योग्यता थी। शुरू शुरू म दयानद ने कुछ सवाल पूछने की कोशिश की थी। लेकिन मेथा का चेहरा देखकर उसने फिर सवाल करने की गलती नहीं की। नूर अब्राहिम का तो दयानद को बराबर भी जानकारी नहीं थी। लेकिन नूर के काम दयानद से बिलकुल अलग तरह के थे। नूर आस पास लोग इकट्ठा किये रहता था। मेथा के इशारे पर

की बेल बजायी तो एक बूढ़े ने हँसते हुए दरवाजा खोला। दयानंद के अंदर आते ही दरवाजा बन्द कर लिया। उसके बदन पर से कोट निकालकर उसने उसे सोफे पर बिठाया और अंदर चला गया। दस मिनट में वापस लौटा। दयानंद ने कोट फिर से पहना तो काफी हल्का महसूस हो रहा था।

दयानंद पब पर वापस लौटा तो मेथा पसीने से तर था। दयानंद को देखते ही उसका चेहरा खिल गया।

'हो गया ?'

'एकदम।'

'बहुत अच्छे ! मैं याद रखूंगा। इसी तरह काम करते रहे तो तुम खुद ऐसे दस पब खरीद सकते हो।'

दयानंद हँस दिया और फिर कोट उतारने लगा।

'नहीं।' फिर हँसकर बोला, 'कोट तुम्हारा ही है। अब घर जाओ। आज छुट्टी।'

तभी से दयानंद के दिन पलट गये। पब पर अब भी वह चाहे जो काम करता हो लेकिन यह आदमी मुझसे तेज है इस बात को नूर जानता था। दयानंद की कमाई भी बढ़ गयी। काम भी बढ़ गये—कोट पहनकर जाना, मेथा के कुछ कागजात इधर उधर ले जाना, कार ले जाकर हवाई अड्डे पर किसी का स्वागत करना, इधर की चीजें उधर पहुँचाना। चार पांच बार मेथा ने उसे बम्बई से बाहर भी भेजा था। मेथा का विश्वास बढ़ा तो उसे और भी काम सौंपे जाने लगे। बम्बई के बाहर के काम जोखिम वाले हुआ करते थे।

मेथा के पास कोड संदेश आया करते थे। अमुक पड़ाव अमुक जगह लगने वाला है। बस उसके अनुसार आगे के काम किये जाते थे। मेथा का जाल काफी दूर तक बिछा हुआ था। किनारे के मछुआरों से संपर्क करना, बैल गाड़ी या ट्रक की व्यवस्था करना, उनके रास्ते तय करना, इसका ध्यान रखना कि ट्रक ठीक तरह से आ रहा है या नहीं, पुलिस की निगाह पड़ने पर क्या करना—इन तमाम बातों में दयानंद होशियार हो चुका था। वह एक अलग ही दुनिया थी। बाहर की दुनिया को इस दुनिया का खास पता न था। दयानंद खुद भी कहाँ जानता था ! कभी कभी तो ऐसी बात हो जाती कि दयानंद भी उलझ जाता था। उसे लगता जैसे उसे इस काम का ज़रा भी अता पता नहीं है।

जया जब पांच साल की थी, तब मुरबाड के करीब ऐसे ही एक काम

में दयानंद माल सहित पकड़ा गया था। उसे लगा था कि बस अब हो गया सब-कुछ खत्म। लेकिन बम्बई पहुँचते-पहुँचते कुछ ऐसा हुआ कि दयानंद छोड़ दिया गया।

मेथा का सारा ही काम रहस्यमय था। सफेद पाजामा सफेद शर्ट और सिर पर सफेद फर की टोपी। इस हालत में मेथा कुर्सी पर बैठता तो किसी को शक भी नहीं हो सकता था कि उसकी जेब में पचास हज़ार का माल है। उसकी जेब की छोटी-सी डायरी में पाँच छह करोड़ का हिसाब लिखा रहता था। अपनी उँगलियों की हीरे की अँगूठी वह घुमाने लगता तो एकदम बेवकूफ नज़र आता था। लेकिन निगाह पैनी रहती थी। उसके पाजामे की जेब में पिस्तौल रखी है यह बात दयानंद जानता था। लेकिन इन सभी बातों को वह धीरे धीरे जान सका था।

मेथा के फोर्ट वाले आफिस की जानकारी तो उसे काफ़ी बाद में मिल सकी। उसे कहाँ से संदेश आते हैं और उसका बॉस कौन है यह उसे आज तक पता नहीं चल सका है। मेथा के कारोबार की जानकारी उसे धीरे धीरे होने लगी थी।

लेकिन दयानंद महत्त्वाकांक्षी था। इन सभी बातों की जानकारी उसे हो रही थी कि सारा जाल कहाँ तक बिछा हुआ है, सिलसिले कहाँ-कहाँ फैले हुए हैं। वह यह तो जान गया था कि मेथा ही सबसे बड़ा आदमी नहीं है। कभी कभी फोन पर बातें करते हुए मेथा सनक-सा जाता था और बेहद अदब से बातें करने लगता था। उसकी अँग्रेज़ी बहुत अच्छी थी। लेकिन मेथा फ़ोन पर यस सर, सर्टेनली सर, आइ विल डू माई बेस्ट सर, आई अंडरस्टैंड सर के आगे कुछ बोलता ही न था।

मेथा का घर कहाँ है दयानंद नहीं जानता था। दो-तीन जगह आलीशान फ्लैट में मालिक के से रौब में बैठे दयानंद ने उसे देखा था। बान्द्रा, वरली और जुहू पर। हर जगह एयरकंडीशंड फ्लैट, आधुनिक फर्नीचर, ऊँचे गलीचे और चार पाँच फोन। हर जगह मेथा का रौब मालिक जैसा था।

मेथा को उत्सुकता बिलकुल पसंद न थी। बताया काम करना और पैसे लेना बस वह इतना ही चाहता था। दयानंद बहुत कम बोलता है, यही उसकी सबसे बड़ी योग्यता थी। शुरू शुरू में दयानंद ने कुछ सवाल पूछने की कोशिश की थी। लेकिन मेथा का चेहरा देखकर उसने फिर सवाल करने की गलती नहीं की। नूर इब्राहिम को तो दयानंद के बराबर भी जानकारी नहीं थी। लेकिन नूर के काम दयानंद से बिलकुल अलग तरह के थे। नूर आस-पास लोग इकट्ठा किये रहता था। मेथा के इशारे पर

किसी को भी पाठ पढ़ाने का काम जरूर किया करता था। दयानंद के डिपार्टमेंट से उसके डिपार्टमेंट का कोई वास्ता ही न था।

दयानंद ने चार साल सुनंदा के साथ अंधेरी की झुग्गी-बस्ती में बिताये थे। पैसे मिलते ही उसने अंधेरी वेस्ट में ही दो कमरों का मकान किराये पर ले लिया। वह मकान छोटा लगने लगा तो उसने घाटकोपर की जगह ले ली। पैसे आने लगे तो सुनंदा भी खुश हो गयी। वह गरीब बाप की बेटी थी, इस वजह से अंधेरी की झुग्गी-बस्ती में उसे कुछ बुरा न लगा। हां गंदगी से तकलीफ जरूर होती थी। जिन्दगी में उसकी खास तमन्नाएं न थीं। उसे बम्बई ही कौतुक लगा करती थी। लेकिन जब पैसा मिलने लगा तो उसकी तमन्नाएं भी उभरने लगीं। दयानंद पर विश्वास बढ़ गया। बीच में उसे भय भी लगता था। किसी अदृश्य डर से वह घबरा जाती थी। डर किस वजह से है यह वह न बता पाती थी। अपना पति इतना पैसा कमा रहा है इस बात से तो उसे खुशी होनी चाहिए। लेकिन घर में पैसों और दूसरी चीजों की आमद जैसे जैसे बढ़ने लगी वैसे वैसे उसकी हालत अजीब-सी होने लगी। उसे पैसा और चीजें चाहिए थीं लेकिन उसे स्वीकारने में हम कोई बड़ी गलती कर रहे हैं इस बात का एहसास भी उसे हुआ करता था। समाधान उन पैसों में न था। सुख न था। इतना पैसा आता कहां से उसे इसी बात पर आश्चर्य था। लेकिन पूछने के बावजूद भी दयानंद कुछ बताता न था। उल्टे उस पर नाराज हो जाया करता था। इसी वजह से धर्म भक्ति की ओर सुनंदा का झुकाव हो चला था।

दयानंद सुनंदा की हालत अच्छी तरह जानता था। लेकिन कोई इलाज न था। वह अनजाने में ही उलझ चुका था। उसमें से निकलना अब मुश्किल हो था। पैसे मिलते ही उसके मन में बाहर जाने की इच्छा जागने लगती थी। हाथ में पैसा आ जाये तो गांव में एक दुकान डाली जा सकती है। यह बात नहीं थी कि उसे पैसा नहीं चाहिए था। लेकिन वह इस झंझट से बाहर निकलना चाहता था। उसका विश्वास था कि दुकान डाल दी जाय तो किस्मत से काफी कुछ कमा सकते हैं। गांव में दुकान डालने की बात कई बार वह भी चला था।

एक बार मैया ने उसे पंप के अंदर वाले कमरे में बुलवाया। वह काफी अच्छे मूड में था। ऐसे वक्त पर मैया इतनी मीठी आवाज में बोलता था कि कोई भी किसी काम के लिए राजी हो जाय। नूर इसी बात पर उसके काबू में था।

मैया इम्पोर्टेड सिगरेट पी रहा था। एक सिगरेट उसने दयानंद की ओर उसकी ओर देखते हुए वह हंस दिया।

तुम्हारे काम पर हम बेहद खुश हैं।" गुजराती के बजाय मेथा मराठी अच्छी बोल लेता था। उसकी एक बीवी मराठी है इसकी जानकारी नूर को थी।

पैसा की तो कोई दिक्कत नहीं है न? जरूरत हो, ले लेना। अब एकाध फ्लैट भी खरीद लो।" सिगरेट के कश खींचता हुआ मेथा दयानंद की ओर लगातार देखे जा रहा था।

'अभी तो खास जरूरत नहीं है,' दयानंद ने कहा।

वह सोच रहा था कि मेथा ने किसी और ही काम के लिए उसे बुलवाया होगा।

सुना है कि काम छोड़कर गाँव में दुकान डालने का इरादा है, तुम्हारा? सुना था, इसी वजह से पूछ रहा हूँ।

दयानंद के चेहरे पर रौनक आ गयी। मालिक को मेरे काम में इतनी दिलचस्पी है इसे अचरज हुआ।

'हाँ, सोच तो यही रहा हूँ।"

"अच्छा!" मेथा ने सिगरेट का लम्बा कश खींचा। वह फिर हँस ा। चार पाँच कश खींचने तक वह कुछ न बोला। फिर लगातार दया की ओर देखते हुए बोला तुम्हारी लड़की कितने साल की है?"

"आठ।'

'अभी तो उसका सभी-कुछ होना बाकी है। तुम्हारी बीवी अकेले उसे ा कर सकती है?"

एँ?'

मेथा ने पथरीली निगाह से दयानंद की ओर देखा और दयानंद के ाथ पर पसीना आ गया। उसका गला एकदम सूख हो गया और उसे गा जैसे उसके दाँत एक-दूसरे से चिपक गये हैं।

लेकिन मेथा की वह पथरीली नज़र कुछ ही पल बाद दयानंद पर टकी और फिर दूसरी ओर फिर गयी। अगले क्षण वह फिर हँस दिया। दूसरी सिगरेट सुलगाते हुए हँसते-हँसते ही बोला 'दुकान से क्या आमदनी होने वाली है? एँ? यहाँ तो न जाने कितना कमा लोगे।"

फिर मेथा एकदम गंभीर हो गया। अब उसकी आँखों में न तो हँसी ही थी और न गुस्सापन। कुछ सहानुभूति जरूर थी। टेबिल पर कुछ आगे की ओर झुकते हुए उसने कहा, सुनो, इस इरादे को छोड़ दो। इसमें तुम्हारी भलाई नहीं है।'

दयानंद का गला अभी भी सूखा हुआ था।

'मैंने खुद शुरू में ऐसा ही सोचा था—बिलकुल तुम्हारी तरह। लेकिन

वह नामुमक्नि है।'

मेथा फिर कुर्सी पर अक्डकर बैठ गया। एक कश खीचकर उसने गदन हिलायी।

'एक बार उलझ गये तो बाहर निकलने की कोई गुजाइश नही रहती। दुनिया बडी धोखेबाज है। यहाँ हरेक को अपनी जान का डर लगा रहता है। फिर तुम कितना कुछ जान चुके हो। तुम्हे जाने देना न तो तुम्हारे हित म है और न हा धधे के हित मे।"

दयानद चुप रहा। सिगरेट पीता हुआ धुएँ की तरफ देखता रहा। कुछ देर तक दानो चुप रहे। फिर दयानद हँस दिया।

मैं तो यो ही सोच रहा था। अभी तय तो किया नही ।

इस खयाल को दिमाग स निकाल दो मेथा हाथ की अगूठी को घुमाते हुए बोला। यहाँ बम्बई म तुम जो चाहो सो कर सकते हो।

मतलब ?'

अरे पसा आदमी को क्या नही दे सकता ? अब तक तुम्हारे पास पद्रह हजार तो हो ही चुके होगे।'

दयानद चुप था।

सुनो। मेरी बात मानो। मानोग तो तुम्हारा ही भला होगा। पसा तुमने बक मे न रखा होगा। दो अलग अलग बका म एकाउट खोल लो। सारा पसा एक जगह न रखना। सच देखा जाये तो एकाध गाडी भी तुम्हारे पास होनी चाहिए। लेकिन एकदम मत खरीद लेना। किसी को शक हो जायेगा। पहले तुम अच्छा खासा तीन चार कमरो का फ्लैट ल लो। वहा तीन चार साल रहने के बाद तुम मलाबार हिल पर बँगला खरीद लेना। तब किसी के भी नजर म भी नही आयेगा।

कुछ पल रुककर मेथा ने बात आगे बढायी। 'एक बात और कहनी है। नूर से मत कहना। आग से मैं तुम्हे कमीशन दूगा। किस पर और कितना यह मत पूछना।

दयानद की आँखो म सवाल था।

तुम होशियार हो' उसकी ओर देखता हुआ मेथा बोला मेहनत से काम करोगे और मेरी सुनोगे तो कहीं के-कहीं जा पहुँचोगे।

मेथा ने लबी साँस ली। उसकी आँखें ऊपर धुएँ म उलझी हुई थी। कमीशन के कितने पसे मिलेंगे ? क्या सोचते हो ? बाहर का एक काम करोगे तो मैं तुम्हे दस हजार कश दिया करूगा।'

दयानद की आँखो म चमक आ गयी। मेथा हँस दिया। फिर बोला, 'देखा ? पसो स सभी कुछ हो जाता है।

कुछ देर और सिगरेट पीने के बाद मेथा ने धंधे की बात शुरू की। उसने अचानक दयानंद से पूछा—

'सुनते हैं तुम्हारी कोस्टा से पहचान है?'

'कोस्टा?'

दयानंद उलझन में था। फिर एकदम चमक उठा।

'हाँ, यूनियन-लीडर कोस्टा?'

मेथा लगातार उसकी ओर देखे जा रहा था।

'जान-पहचान मतलब, कारखाने में था तब यूनियन का मैं काम किया करता था। उस बात को काफ़ी साल गुजर चुके हैं। अब पता नहीं, वह मुझे पहचान पायगा या नहीं।'

मेथा की नज़रें कुछ ढीली पड़ गयीं। वह हँसा।

'मैंने सुना था पर पक्का कर लेना चाहता था।'

'क्या उससे कुछ काम है?'

'वह ज़रा डेंजरस आदमी है। हम लोगों के धंधे पर उसकी नज़र है। उससे कोई संबंध न रखना अब।'

'ओ के।'

'मैं जानता हूँ तुम एक अच्छे आदमी हो। मेरे कहे पर चलोगे तो काफ़ी आगे बढ़ जाओगे।'

मेथा हँसते हुए कुर्सी से उठ गया। आगे बढ़कर उसने दयानंद की पीठ थपथपायी। एक बार फिर उसकी निगाह में सख्ती पैदा हुई और झटके के साथ दरवाज़े से बाहर जाने से पहले बोला 'धंधे से बाहर जाने का इरादा छोड़ दो।'

कोस्टा का ज़िक्र मेथा ने क्यों किया यह बात दयानंद की समझ में न आ सकी। पेट्रोल पम्प पर काम करने के बाद से तो वह यूनियन की बात भूल ही चुका था। कोस्टा उसे पहचान भी नहीं पायेगा। असलियत यही थी। लेकिन मेथा को कहीं से पता चला कि मेरी कोस्टा से पहचान है? मेरा संबंध उससे जोड़ना ज़रूर गड़बड़ की बात है दयानंद समझ गया। लेकिन इसका कोई इलाज न था। उसे लगा कि अब मेथा के दिमाग़ से यह बात निकालनी चाहिए। उसने गर्दन को एक झटका देकर इस ख़याल को परे कर दिया।

दयानंद की हालत अजीब हो गयी। पैसे की क़ीमत अब वह जानने लगा था। लेकिन पैसा कैसे खर्च किया जाय इस बात को वह अभी तक न समझ पाया था। उसके दिमाग़ में बस एक ही ख़याल बसा हुआ था, गाँव में एक दुकान डाल देना और खुशी से ज़िन्दगी बसर करना।

"इस बार का माल बड़ा है।' मेथा ने फहरिस्त उसके आगे कर दी। दयानंद ने लिस्ट पढ़ी। उसकी आँखें चमकने लगीं।

चार लांच आने वाली हैं। उन लोगों के पास एक मशीनगन भी है। तुम अपने साथ कुछ न ले जा सकोगे।"

फिर दोनों ने मिलकर किनारे का नक्शा बारीकी से देखा। निशान बनाये, जगह तय की इशारे तय किये और यह भी तय किया कि ट्रक में पहले क्या-क्या और कितना कितना माल रखना है।

मेथा ने कहा 'आपरेशन जरा खतरनाक है। हम लोगों ने पहले कभी यहाँ माल नहीं उतारा है कस्टम वाले इधर कभी नहीं फटकते। लेकिन मुझे जरा शक है कि पता नहीं कहीं खबर तो नहीं लग गयी।"

फिर तो जगह बदल देनी चाहिए।"

पर अब सन्देश जा न सकेगा। माल बड़ी होशियारी से वहीं उतारना होगा। दो-तीन दिन तक वहीं पड़े रहो तो भी चलेगा। ट्रक वहीं चाहिए। इससे किसी को शक नहीं होगा। और ऐन वक्त पर कोई आ ही जाये तो क्या करना होगा यह तो तुम जानते ही हो' उसकी पीठ को थपथपाते हुए मेथा ने कहा।

दयानंद हँस दिया। एहसास उसे कई बार हुआ है कि पैसा क्या नहीं कर सकता है। इस बार माल जरा ज्यादा था—बस।

'पर उन लोगों के पास हथियार हैं? वे यदि हमला कर दें तो बड़ी गड़बड़ हो जायगी।'

'सुनो हम लोगों की तीन लाख अभी अफीका गयी हुई हैं। उन्हें लौटने में दस पन्द्रह दिन और लगेंगे। यह जो आ रही हैं वे अपनी नहीं हैं। उन लोगों की नौटानी है। ज्यादा से ज्यादा यही हो सकता है कि पुलिस को डराने के लिए वे गोली चला दें।

"काम जरा जोखिम वाला ही है।"

हाँ। मेहनताना दुगुना मिलेगा।'

"तन में तो काम नहीं चलेगा। खतरे वाला काम है।"

ठीक है तो बीस हजार—बस?'

'ठीक है। अब निकलता हूँ।

सारा दिन इसकी व्यवस्था करने में ही बीत गया। फ्लैट बुक करने का काम सिर्फ फ़ोन पर ही हो गया। नये फ्लैट में फ़ोन लगाने की बात भी उसने तय कर ली। रात सोने वक्त भी उसे मेथा की बताई लिस्ट नजर आ रही थी। लगभग सभी माल पीला था। पूरी क़ीमत लगभग डेढ़ करोड़

होगी। उस हिसाब से मेरे लिए बीस हज़ार रुपये बहुत कम हैं लेकिन कोई हर्ज नहीं। नींद में एक हाथ सुनदा के बदन पर रखे होने के बावजूद उसके सामने वही लिस्ट नाच रही थी।

कल आप मोटर से आये ?' सुनदा ने पूछा।

'हाँ मेथा ने दी है।'

मतलब वह जो सामने खड़ी है ? मुझे तो लगा था कोई आपको छोड़ने आया हुआ है।'

'नहीं। मैं खुद ही चलाते हुए लाया हूँ।"

'हाय राम !'

सुनदा की आँखें गर्व से चमकने लगीं। घर का काम करते हुए वह गाना गुनगुनाने लगी। उसने जया को उठाया।

देख तो, बाबूजी तेरे लिए मोटर लाये हैं।

तो अब मुझे रोज़ाना स्कूल में मोटर से ही पहुँचाना बाबूजी।'

'अरी पगली अपनी नहीं है वह।" सुनदा ने कहा।

तो कौन बड़ी बात है ? नये फ्लैट में जाने पर हम भी मोटर खरीद लेंगे।'

सुनन्दा अचरज से देखने लगी। हँसकर बोली 'चलो हटो आप तो यों ही , लेकिन उसके सीने में फिर दर्द उठा था। कहाँ से इतने पैसे लाते हैं ? उनके लिए तो कोई भी चीज़ मुश्किल नहीं लगती। कल अगर कहा जाये कि हवाई जहाज़ खरीद लीजिये तो सीधे कहेंगे देखते हैं अगले महीने। कालोनी में औरतें न जाने क्या क्या कहती रहती हैं। मेथा सोने का चोरी-छुपे धंधा करता है और यह उसकी मदद करते हैं—इसलिए इतना पैसा है। सुनदा बेचैन हो गयी।

अपने बाप की पीठ से टिक कर सुनदा की तरफ न देखते हुए जया ने कहा 'बाबूजी आप रोज़ाना देर से घर आते हैं और जल्दी घर से चले जाते हैं। मुझसे तो बातें ही नहीं करते।"

'अरे मेरे तो खयाल में ही नहीं आया।

आज काम पर नहीं जाइये। मेरे सवाल हल करा दीजिये।"

अरे यों कैसे चलेगा ? हम लोगों को मोटर खरीदनी है न।"

सच ?'

और नहीं तो क्या ?"

"फिर मज़ा आयेगा। मैं तो रोज़ाना मोटर से ही स्कूल जाया करूँगी हमारे स्कूल में दो बच्चे अपनी मोटर में आते हैं। ऐसे अकड़ते हैं ।'

'देखो, तुम भी अकड़ने लगोगी।"

'हाँ ।"

दयानंद ने उसकी पीठ प्यार से थपथपा दी और फिर बाहर जाने की तैयारी करने लगा। उसे खुद को शिक्षा-दीक्षा मिली नहीं सुनदा भी ऐसी खास पढ़ी लिखी न थी। लेकिन जया को अच्छी तरह पढ़ाना-लिखाना चाहिए। इसी वजह से उसने उसे कॉन्वेंट स्कूल में दाखिला दिलवा दिया था। उसके संस्कार अच्छे हों इस तरफ वह खास ध्यान देता था। इसी वजह से उसके सीने में कभी-कभी दर्द उठना अपना धंधा। उसे पता चल जाये तो वह क्या सोचेगी। सुनदा की फिक्र नहीं है। वह ज्यादा-से-ज्यादा उसका तिरस्कार करेगी। लेकिन जया? वह क्या सोचेगी? जया देखने में सुंदर है होशियार है। उस पर इन बातों का जरा भी असर नहीं पड़ना चाहिए। उसकी जिंदगी शांतिपूर्ण होनी चाहिए। मेरी जिंदगी भी आखिर किसके लिए है? मेरा पैसा किसके लिए है? अगर उसे पता चल जाये कि यह पैसा किस तरह आ रहा है तो उसे कैसा लगेगा? यह धंधा क्या बाद में छोड़ा जा सकता है? मैया की आँखें? नूर अब्राहिम मैया की लड़कियाँ शराब ट्रक ड्राईवर पेपर की बातें सान की छड़ें सुनदा की फूलती साँस और जया की भोली भाली आँखें—बाथरूम के शॉवर के नीचे दयानंद इन ख्यालों से परेशान हो गया। क्या नहीं छोड़ा जा सकता? क्यों नहीं? हर्ज क्या है? अब मेरी जानकारी भी काफी हो गयी है। मैया के एक्के पंजे समय में आ गये हैं। फिर क्यों नहीं?

'अब जो जाऊँगा तो कल दोपहर तक नहीं लौट सकूँगा।'

बाहर आकर दयानंद ने कहा।

सुनदा कुछ न बोली। इस बात की उसे आदत हो चुकी थी। कोई नयी बात न थी। वह तेजी से रोटी सेंकने लगी।

जया बाथरूम में गयी तो दयानंद ने सुनदा को चूम लिया।

'हटिये हमेशा देर से लौटते हैं और जल्दी जाते हैं। देखा जया कैसे कह रही थी?

'कल लौटकर दो दिन की छुट्टी ले लेता हूँ, बस?" उसका हाथ दबाते हुए दयानंद ने कहा।

'कोई सुन लेगा।'

'अच्छा देख लेना।'

'देख ही रही हूँ इतने दिनों से।'

'देखो भई, नया फ्लैट देखने चलना है? पूरा बन ही चुका है अब। महीने भर में वहाँ रहने चल चलेंगे।

"पाँच कमरे मतलब, कितना बड़ा फ्लैट!"

—

फिर ?"

'तुमने वाकई पद्रह हजार रुपये भरे हैं ?

'और क्या ? '

सुनदा ने तरकारी छौंक दी। फिर दयानद की ओर बिना देखे ही बोली 'औरतें ताने मारती है। पप के मैनेजर को क्या कोई इतने रुपये मिल सकते हैं ?'

अरे औरतें तो पागल हुआ करती हैं। उनसे कहना कि तुम्हारा पति सिर्फ मनेजर ही नही है हिस्सेदार भी है।'

और अपने नये फ्लट के आस पास ऐसी जिरह करने वाली औरतें होगी ही नही। सभी मोटर वाले होंगे।"

वहाँ जाने पर तो आपका घर की तरफ बिलकुल ध्यान नही रहेगा।'

'मतलब ?"

अभी कौन-सा ध्यान होता है ? घर की कुछ जानकारी है ?

क्यो किसी बात की कमी है ? अभी परसो ही तो दो सौ रुपये दिये थे। मैं तो पहले ही कह चुका हूँ कि घर म किसी बात की कमी नही पडनी चाहिए।

सुनन्दा उसकी ओर पीठ किये गस की ओर देख रही थी। कुछ दर वह चुप रही फिर बोली 'मुझे दो महीने चढ चुके है, जानते हैं आप ?'

'एँ ?'

सुनदा न थाली परोस दी तो दयानद चुपचाप खाने क लिए बठ गया। सुबह के वक्त खाना खाया नही जाता। लेकिन घर खाना खाने के मौके भी कम ही आ पाते है। अब सुनदा के पेट म एक जीव और आ गया है इसस हडबडाहट कसी ? इससे तो खुशी होनी चाहिए। वैसे हुई भी है लकिन बचेनी भी बढी है। दिमाग मे घूमत चक्र की गति कम नहीं हो पाती। अब यह दूसरी जिम्मेदारी। जया क वक्त कितना डर लगता था ! सुनदा को अस्पताल ले जाने के लिए भी पैसा न था। अब उसे बम्बई के सबसे अच्छे अस्पताल मे भेज सकते है। पर फिर भी बेचैनी ? यह धधा क्या छोडा नही जा सकता ? ज्यादा स-ज्यादा क्या होगा ? मधा की नज़र नूर अब्राहिम ट्रक पीली छड़ें—!

जया नही खायेगी ?

उसे अभी तयार होना है।

कल लौटने पर छुट्टी ले लेता हूँ। तुम्हे डाक्टर के पास ल चलेंगे।"

क्यो ? मैं खुद जो चली जाऊँगी।'

"नहीं। गाड़ी से ही चलेंगे। कुछ दिन के लिए हमारी ही है।"

"मुझे तो डर लगता है।"

'इसमें डर कैसा? दूसरी बार है अब तो?"

'मुझे नहीं आपके लिए? चाहे जब आते हो चाहे जब जाते हो।'

औरतों की ऐसी आदत क्यों होती है? सुनंदा के ऐसा कहने से मुझे चिढ़ क्यों आती है? वाकई अगर देखा जाय तो वह जो कुछ कहती है वह सभी सच है। डर लगना स्वाभाविक ही है। धोखाधड़ी तो है ही। मैं सब बातें उसे क्यों नहीं बता पाता? मैंने मन की बात उसे कभी बतायी ही नहीं। कभी भी नहीं। इसी वजह से वह चिढ़ती है। उसका चिन्ता वाजिब ही है। लेकिन इलाज नहीं। मुझे कुछ बताने की इच्छा ही नहीं होती। पति-पत्नी होने के बावजूद हम दोनों एक-दूसरे से काफी दूर हैं। माँ ने ज़िद न की होती तो मैंने सुनंदा से शादी की होती?

दयानंद ने उसकी ओर देखा। सुनंदा घुटनों पर मुंह रखे बैठी हुई थी और बर्तन में रखी दाल चला रही थी। वह सांवली थी लेकिन खूबसूरत। भरे बदन की गदरायी हुई। और अब तो उसके चेहरे पर अलग ही नूर था। पर उसकी खूबसूरती से वह कभी पिघलता नहीं था। भैया के बँगले की लड़कियों या नूर की बीवी को देखकर वह जिस तरह पगला जाता था वैसे सुनंदा की ओर देखकर कभी नहीं पगलाया। उसके सौंदर्य को वह तटस्थ नज़रों से देखा करता था। अपनी इस आदत से वह खुद बेचैन हो जाया करता था।

लेकिन आज की बेचैनी कुछ अलहदा ही है। क्यों ऐसी बेचैनी महसूस हो रही है? आज का काम खतरे का है लेकिन क्या ऐसे काम पहले कभी किए नहीं। आज ही ऐसा क्यों लग रहा है? यह सब छोड़ देना चाहिए। कोई रास्ता ढूंढना ही होगा। क्या कोई रास्ता नहीं निकल सकता? भैया को भी उसकी हालत मालूम है। उसका पासपोर्ट है। लंदन स्विट्जरलैंड के बैंकों में पैसा है। दुबई में आदमी हैं। उसकी कुछ तो योजनाएँ होंगी ही। क्या हम भी कुछ कर सकते हैं?

आपका खाने में मन नहीं है।'

'भूख ही नहीं है। बाहर खा लूंगा।'

अरे बाबूजी आपका तो खाना भी हो चुका? आप आज इतनी जल्दी जायेंगे काम पर?'

'पर कल हम छुट्टी लेंगे। शाम को घूमने चलेंगे। कहीं अच्छा खाना खायेंगे। है न?

एक भारी खामोशी। गंभीर मौन। फिर दयानंद ने हाथ धोए और—

अंदर के कमरे में आकर वह कपड़े पहनने लगा। आज टाई बांधनी चाहिए। कामर्शियल एजेंट जैसा दीखना चाहिए। पेंट पहनकर जब वह खिड़की के करीब आया तो कॉलोनी के सभी लोग स्टेशन की ओर जाते नजर आये। हाथ में बैग लटकाये गाड़ी पकड़ने के इरादे से तेज़ी से भागे जा रहे थे। औरतें भी थीं। इधर-उधर न देखते हुए हर कोई गाड़ी पकड़ने की जल्दबाजी में था। कलाई की घड़ी की ओर देखते हुए साड़ियों के पल्लू सम्हालते हुए बालों पर हाथ फेरते हुए वे तेज़ी से बढ़े जा रहे थे।

दयानंद ने लम्बी सांस ली। वह रेलिंग पकड़े कुछ देर यों ही खड़ा रहा। जया बड़ी होगी। बेचारी! इस दुनिया में जैसी कशमकश में हम जिये उस तरह की जीने की ताकत क्या उसमें होगी? हम उसे मदद दे सकते हैं? लेकिन आखिर में तो उसे खुद ही दुनिया के सामने जाना होगा। कौन होगा जिसका हाथ थामे वह इस दुनिया में रहेगी? और सुनंदा? बादलों की तेज गड़गड़ाहट जैसी आवाज उसके कान में हुई। मैं उसका खयाल ही नहीं करता। उसे हमेशा नजरअंदाज करता रहा हूं। अब एक नया जीव पनप रहा है। वह पल पल बढ़ रहा होगा। और जब वह जन्म लेगा और पूछेगा—मेरे पिता कौन हैं तब सुनंदा क्या बतायेगी? हम क्या बतायेंगे?

उन खयालों को दूर हटाने के लिए उसने अपने सिर को एक झटका दिया। आज इस काम की वजह से हम नर्वस हो रहे हैं लेकिन क्या ऐसे काम कभी पहले किये नहीं हैं? आज भी कर गुजरेंगे! फिर तो अलग होने की राह तलाशेंगे। रास्ता तो ढूंढना ही होगा। रास्ता तो कोई होगा ही। क्या नहीं होगा? नहीं भी हो तो हम खोज लेंगे।

दयानंद को अचानक डीकोस्टा की याद आयी। कोस्टा कोई राह बता देगा। उसे यह खयाल ही हास्यास्पद लगा। और उसने वह खयाल ही दिमाग से झटक दिया।

पर कोस्टा उसके दिमाग से हट नहीं रहा था। 'डेंजरस आदमी है' मेथा के शब्द उसे याद आये। कोस्टा यूनियन-लीडर था। और उसने कई बातों के खिलाफ आन्दोलन चला रखा था। इस बात को वह जानता था कि उसने हमारे धंधे के विरुद्ध भी खिलाफत छेड़ रखी थी। लेकिन कोस्टा से मिल कैसे सकते हैं? और वह हमें राह कैसे दिखा सकता है? खुद कोस्टा के खिलाफ ही लोग हो गये हैं।

कोस्टा का खयाल उसके दिमाग से हटता न था। उसने हिसाब लगाया—अगर कोस्टा से चुपचाप मिला जाय तो क्या होगा? ज्यादा से ज्यादा हम उसे कुछ जानकारी दे सकते हैं। उस जानकारी का उपयोग वह

कर सकता है। लेकिन क्या उससे मेरा कुछ फायदा हो सकेगा ? हम बाहर निकल सकेंगे ? हम इस धंधे में गले तक फँस चुके हैं। मैथा की तरह। इस तरह बाहर निकलना मुश्किल है। कोस्टा के पास जाने वक्त अपने हाथ तो साफ होने चाहिए। फिर क्या फायदा ?

और फिर कोस्टा के पास चले भी गये तो ? कोस्टा कैसा आदमी है इसकी भी पूरी जानकारी नहीं है। मैथा कहता जरूर है कि डेंजरस आदमी है लेकिन वह किस अर्थ में डेंजरस आदमी है ? इस बम्बई में और इस दुनिया में कौन कैसा आदमी है यह बताना मुश्किल है। यह बात वह खूब जानता है। वह खुद क्या काम करता है, कालोनी के कितने लोग जानते हैं। कोस्टा और मैथा के आपसी संबंध हों तो ? हो सकता है संबंध न भी हों। लेकिन नहीं होंगे यह क्या विश्वास के साथ कहा जा सकता है ? मैथा के संबंध बड़े-बड़े लोगों के साथ हैं, इस बात का वह जानता था। दोनों ओर से खतरे की संभावना हो सकती है। चाहे कोस्टा अच्छा आदमी हो फिर भी खतरा है।

कुछ देर बाद उसका सिर भिन्नाने लगा। धंधे से बाहर निकलने की इच्छा तो खत्म ही न होगी। पता नहीं निकल भी सकेंगे या नहीं ? ऐसे ही जिन्दगी भर पैसा कमाना नसीब में लिखा है शायद। दाँतों से होंठ चबाते हुए उसने टाई बाँध ली। बस। अब बस। धंधे से जितना जल्दी हो बाहर निकलना है।

बाहर के कमरे में आकर उसने जया को ऊपर उठा लिया। जया की नजर बचाकर सुनंदा के गाल मसल दिये। फिर वह बाहर आ गया।

"शायद मैं रात को घर न आ सकूँगा। बहुत जरूरी काम है।"

"हूँ।"

'बाबूजी पर कल सुबह जरूर आ जाना, मेरे स्कूल जाने से भी पहले। मुझे मोटर में ही स्कूल ले चलना।'

"लेकिन भई, हो सकता है कि मैं रात को देर से आ जाऊँ। नहीं हुआ तो सुबह तक तो आ ही जाऊँगा। ठीक है ?"

"ठीक है।'

'और खर्च के लिए पैसे हैं न ? परसों ही दिये थे।'

'हाँ हैं। जल्दी आना।'

"टा-टा।"

'टा-टा।'

दयानंद रोड में नीचे उतर आया। गाड़ी का दरवाजा बंद कर ऊपर गैलरी की तरफ हाथ हिलाया। फिर चाबी घुमाकर उसने स्टार्टर दबा

और गाडी तेज़ी से आगे बढा दी। सुनंदा गैलरी से तब तक देखती रही जब तक गाडी मोड पर घूम न गयी। फिर जया को लेकर वह अंदर आ गयी।

दयानंद का जाना उसे कुछ अच्छा नहीं लगा। जया को उसने समझाया। उसे खाना खिलाया। लेकिन उसका ध्यान उस तरफ नहीं था। वह खुद ही गुनगुनाए जा रही थी। धीमे धीमे मुस्करा रही थी। अपने पेट पर हौले हौले हाथ फेर रही थी। वह जानती थी कि पेट का वह जीव अब बडा हो जायेगा। अब तक तो उसके हाथ-पाँव भी बन चुके होंगे। और वह ज़रूर गोरा गोरा लडका होगा। सुनंदा कांप रही थी। किसके जैसा होगा? दयानंद-सा?

दयानंद ने गाडी कालोनी से बाहर निकाली और स्पीड बढा दी। तभी दूसरे घुमाव पर किसी ने उसे रोकने का इशारा किया। कोई लिफ्ट मांगने वाला होगा इस इरादे से उसने स्पीड कम कर दी। ब्रेक दबाया। उस आदमी को देखकर दयानंद हक्का-बक्का रह गया।

वह डीकोस्टा था।

'क्या लिफ्ट देंगे?' कोस्टा ने हंसते हुए पूछा और दयानंद कुछ कहे इससे पहले ही वह दरवाजा खोलकर अपने आप अंदर दाखिल हो गया।

'माई गाड, पानिटकर तुम!' कोस्टा भी हक्का बक्का था।

इस बात का अचम्भा दयानंद को था कि कोस्टा ने मुझे पहचान लिया। दयानंद कुछ कहने की स्थिति में न था। गाडी की स्पीड बढाते हुए उसने पूछा 'कोस्टा साब कहां जायेंगे?'

'अरे शीव के नाके के करीब। कितनी देर से खडा हुआ था इधर में टैक्सी वाले अपन को पहचानते नहीं न। पर तुम क्या करते हो आजकल? गाडी तुम्हारी ही नज़र आती है।'

'धंधा एजेंसी का। पैट्रोल पंप है।' दयानंद ने टुकडों में जवाब दिया। लेकिन वह कुछ परेशान हो उठा था। कोस्टा अचानक इधर कहां से आ टपका? गाडी में किसी ने उसे देख लिया तो। तो गाडी में कोस्टा की उपस्थिति उसे ज़हर-सी लगी। जितनी जल्दी हो कोस्टा को उसकी जगह पर पहुँचा देना चाहिए। एक्सीलैरेटर पर पाँव दबाकर उसने गाडी की स्पीड तेज़ कर दी। स्टीयरिंग पर रखे हाथों पर पसीना आ गया।

'धंधा ज़ोरों पर चल रहा है शायद!' कोस्टा ने पूछा। 'अच्छा नाम कमाया लेकिन यूनियन से कोई वास्ता तुमने नहीं रखा? मेरा तो ख्याल था कि तुम नौकरी छूटने के बाद गांव चले गये होगे।'

"नहीं जम पाया, और अब यहाँ की दुनिया कुछ और ही है!'

'पर कभी-कभार मिल तो लेते। अपने को आन्दोलन से इस तरह तो नहीं तोड़ लेना था। हमारे लिए कुछ तो उपयोग होता ही तुम्हारा और हमारा उपयोग तुम्हारे लिए ।'

दयानंद हँसा। गाड़ी जिस गति से भाग रही थी, उसी गति से उसके दिमाग में पिछले विचारों की रीलें घूम रही थीं। कोस्टा से मिला जाये?

अभी सब-कुछ बताना ठीक न होगा। लेकिन मौक़ा तो है ही। अभी मुलाक़ात तय कर ली जाय?

आगे की सभी गाड़ियों को पीछे छोड़ते हुए दयानंद आगे बढ़ा जा रहा था। कोस्टा की बातें, तेज़ी से भागने वाली गाड़ियाँ, हॉर्न की आवाज़, उसकी गाड़ी की आवाज़, मेघा की नज़रें खाने की टेढ़ें, जया सुनंदा के होंठों की रहस्यमय हँसी—इन सबकी फ़िल्म एक साथ उसकी आँखों के आगे घूमने लगी।

'कभी तो यूनियन के दफ्तर में आना।' कोस्टा उससे कह रहा था। शीव करीब आ रहा था।

'ज़रूर आऊँगा।'

'हाँ आना। ज़रा इत्मीनान से बातें करेंगे। अभी तो तुम बोलने के मूड में ही नहीं दीखते।''

'नहीं वैसी बात नहीं पर आऊँगा कभी।'' दयानंद नर्वस हो रहा था। लेकिन तब तक वह तय कर चुका था। बिलकुल नामुमकिन असंभव मुझसे यह न हो सकेगा। धोखा। बड़ी स्टेक्स हैं। हम तो मामूली आदमी हैं। झटके से दूर फेंक देंगे। पहले ठीक था। सब-कुछ ज़िद में किया था। जान तक दे देते। लेकिन अब मुमकिन नहीं है। ज़िम्मेदारियाँ हैं। जया, सुनंदा और उसके चेहरे की रहस्यमय हँसी।

गाड़ी की स्पीड और बढ़ गयी तो कोस्टा बेचैन हो उठा। लेकिन वह कुछ न बोला।

शीव के नाके पर दयानंद ने इतने ज़ोर से ब्रेक दबाया कि उस तीखी आवाज़ से रास्ते के सारे लोग एकदम हड़बड़ा गये। गाड़ी का दरवाज़ा खोलते हुए उसने कहा 'माफ़ कीजिए कोस्टा साब बातें न कर सका। अभी ज़रा जल्दी में हूँ, बाद में ज़रूर मिलूँगा।''

कोस्टा की ओर बिना देखे ही उसने गाड़ी फिर तेज़ कर दी। कोस्टा के उतरने के लिए बस एक सेकिंड गाड़ी रोकी होगी।

किंग्स सर्कल के सिगनल के क़रीब गाड़ी रोकनी पड़ी। वजह यह थी कि उसे बहुत पसीना आ रहा था। कालर और शर्ट पसीने में तर थी। माथे पर भी पसीना था। जेब से रूमाल निकालकर उसने पसीना पोंछा तो

लगा कि उसके हाथ बुरी तरह से काँप रहे हैं।

कोस्टा की मुलाकात से हालत ऐसी हो जायेगी। इसी से पता चलता है कि हम इस धंधे में कितने गहरे में हैं। वाकई देखा जाये तो इसमें ऐसी कोई अजीब बात भी न थी। कोस्टा ने लिफ्ट माँगी और मैंने दी। मेथा की गाड़ी को हाथ दिखाया जाता तो मेथा भी गाड़ी रोक देता। फिर इसमें ऐसी कौन सी घबराने की बात है!

लेकिन कोस्टा से उसकी पुरानी मुलाकात है इसे मेथा अच्छी तरह जानता था। कोस्टा से संबंध न रखने की हिदायत मेथा ने दी थी। अब किसी ने कोस्टा को मेरी गाड़ी में बैठा देख लिया और मेथा को पता चल गया तो? उसके पेट में अजीब गोला-सा उठा। मैंने कोस्टा को लिफ्ट ही तो दी है लेकिन मेथा बड़ा शक्की आदमी है। वह न जाने क्या-क्या सोच लगा। मैं अगर उसे सही बात बता भी दूं तो क्या वह मानेगा?

शायद किसी ने देखा भी न हो। ज्यादा-से-ज्यादा दस बारह मिनट कोस्टा गाड़ी में रहा था। दयानंद ने खुद को समझाने की कोशिश की।

लेकिन उसकी बेचैनी बनी रही। सुबह से हम क्यों नर्वस हैं? कहीं यह कोस्टा से मुलाकात हो जाने की निशानी तो नहीं?

दयानंद ने सिगनल से गाड़ी आगे निकाली तो उसे हँसी आ गयी। मैं बड़ा डरपोक हो गया हूँ। धंधे से बाहर निकलने की इच्छा शांत जिंदगी जीने की कामना से उत्पन्न नहीं हुई है—धंधे में कहीं पकड़े जाने के डर से पैदा हुई है। धंधे में आगे बढ़ने की ताकत क्या मुझमें नहीं है? लगन से काम करूँ चौकस रहूं तो मैं भी मेथा की तरह बन सकता हूँ। लेकिन हर कदम पर डर जाता हूँ। बाहर जाने की बारी आ जाये तो हम घबरा जाते हैं।

मेथा के और मेरे संबंध भी अजीब हैं। प्रेम आदर द्वेष और भय—इन सबसे बने संबंध। मेथा ने मुझे काम दिया और आगे लाया इसलिए मन में प्रेम। उसकी बुद्धि और होशियारी के लिए किसी के भी मन में उसके लिए आदर हो सकता है। लेकिन जबसे उससे धंधे के बारे में बातें हुई हैं तबसे एक अजीब-सा डर हर वक्त बना रहता है। मेथा बड़ा भयंकर आदमी है। हरामी है। वह लोगों को पकड़ लेता है तो फिर छोड़ता नहीं है। कई बार मन में आया कि उसका सिर फोड़ दे या उसके सीने पर गोली चला दे। उसके मन के मुताबिक रहा जाये तो उसके जैसा मीठा आदमी दुनिया में और कोई नहीं हो सकता।

मेथा कहता है धंधा छोड़ना नामुमकिन है। उसके लिए भी नामुमकिन है। बहुत साल पहले उसने इस बारे में सोचा था ऐसा लोग कहते हैं।

लेकिन हो नहीं पाया। वह किससे डरता है? उसका बास कौन है? उसी को अपने साथ खींच लूं तो? उसे पटा लिया जाये तो बाहर निकलना मुमकिन है तो ?

दयानंद के वदन पर काँटे उभर आये। अपने ही मनसूबा पर उसे हँसी आ गयी और उसका तनाव कुछ कम हो गया। कोस्टा की मुलाकात की बात तो एकदम मामूली है। मुझे उसे खास महत्व न देना चाहिए। यही सोचते हुए उसने गाड़ी आगे बढ़ाना शुरू कर दिया।

मन की बेचैनी दूर हो जाने की वजह से उसने यों ही दो-तीन बार हॉर्न बजाया और गाड़ी वाद्रा की ओर बढ़ा दी।

दयानंद खुश न था। लेकिन सुबह वाली बेचैनी कम थी। हो सकता है कि कोस्टा की मुलाकात के वक्त जो विस्फोट उसके मन में हुआ था उससे उसका मन अजीब तरह से खाली-खाली हो गया हो। लेकिन अब वह सही मन से गाड़ी चला रहा था।

एक अनिश्चित और स्थिर चित्त के साथ दयानंद आगे बढ़ रहा था। अब तक उसने कुछ तय नहीं किया था। हम आगे क्या करने वाले हैं यह बात उसने सोची ही नहीं थी। उसे यही विश्वास था कि आज का काम वह जरूर करेगा। आने वाले दिनों में वह क्या करेगा इस पर वह अभी सोच भी नहीं सकता था। कई रास्ते थे लेकिन किसी भी रास्ते के बारे में वह सोच नहीं सकता था। उसके सामने जैसे एक कोरा परदा था। उसे लगता था कि भविष्य के बारे में अभी कुछ सोचने की खास जरूरत नहीं है। जया मुनम और सुनंदा के चेहरे की रहस्यमय हँसी की याद जरूर उसके मन की तह में छुपी हुई थी। अपनी जवानी की, जिन्दगी की और खुद की ताकत की समझ भी वहाँ मौजूद थी। उसी मस्ती में एक खास अकड़ एक खास गति के साथ गाड़ी चलाते हुए दयानंद पानिटकर अपने काम पर जा रहा था।

मन में जो हो उसे पूरा करने की जिद कोस्टा में थी। लेकिन कई बातें ऐसी भी थीं, जिन्हें वह समझता जरूर था पर वे मन में जम नहीं पाती थीं। इस बात का एहसास उसे परेशान करता था कि हर बार कहीं-न-कहीं कोई गलती हो रही है। गलती कौन-सी है उसे वह सही तरह से जान न पाता था। पर गलती हो जाने का एहसास जरूर उसे हर वक्त चुभता रहता था।

वह सुबह इसी वजह से उसे बेचैन कर देने वाली थी। मायखला के उसके फ्लैट में जब उसकी नींद टूटी तब साढ़े छह बज चुके थे। उसे एक आदमी को घाटकोपर के अस्पताल में भर्ती कराने के लिए जाना था। लेकिन आज नींद देर से टूटी। सच पूछा जाये तो सात बजने से पहले ही उस आदमी के यहाँ पहुँच जाना जरूरी था। कभी ऐसा नहीं हुआ। लेकिन कल नींद ही जरा देर से आ पायी थी। सच बात तो यह थी कि डीकोस्टा को वहाँ जाने की ऐसी कोई खास जरूरत भी न थी। वह अगर कह भी देता तो दस लोग उसका काम करने के लिए आगे बढ़ आते। लेकिन गंगाराम कासरे बड़ा जिद्दवाला आदमी था। किसी की बात सुनने के लिए तैयार ही नहीं होता था। अस्पताल से उसे डर लगता है। इसी वजह से कहता है कि वह अस्पताल जायेगा ही नहीं। इसी वजह से कोस्टा का जाना जरूरी था। कोस्टा को वह बहुत मानता है। कोस्टा के साथ एक आन्दोलन में पुलिस की लाठियाँ खाकर वह बेहोश हो गया था। कोस्टा के लिए जान भी दे देगा। अब बीमारी की वजह से पीला पड़ गया है। बीमारी काफ़ी बढ़ चुकी है। घर पर बीवी-बच्चे हैं। दो महीने से घर पर ही है। खाने-पीने की अलग परेशानी है।

मुँह धोकर वह कपड़े पहनने लगा। आज नहाना-वहाना खत्म। तभी किचन का दरवाजा खोलकर मिल्विया अन्दर आया। वह दूसरा आर के फ्लैट की मालकिन है। डायबोसी। उसका और कोस्टा का किचन एक दूसरे में लगा हुआ है।

मिल्विया ने कहा 'अरे अब भी नींद ?'

हाँ पहले ही देरी हो चुकी है।

'कल रात भी काफ़ी देर तक नहीं आए थे।'

कल आयी थी ?

आप काम ' सिल्विया हँसते हुए बोली।
डाक्टर क्या कहा है ? इधर नहा है ?
टूर पर हैं। पर टी ब्रेकफास्ट के बगैर ही चल दिये ?
वाकई देरी हो गयी है।
वेट ए मोमेंट प्लीज फार मी।'

आधे मिनट में ही सिल्विया अपने किचिन से एक ट्रे ले आयी। सैंडविच खाने के दौरान कोस्टा ने कहा, थैंक यू वेरी मच। वह इस समय सुबह के पेपर पर निगाह डाल रहा था।

'मुझे तो तुम जैसा फार्मल होना आता नहीं' जरा नाराजगी के साथ सिल्विया ने कहा। कोस्टा सिर्फ हंसता रहा और चाय पीने के दौरान उसकी निगाहों को टालता रहा।

मैंने तो पहले ही कहा। हम अपनी दोस्ती तोड़ दें ऐसा अभी मुझे नहीं लगता। वी कैन रिमेन फ्रेंड्स।'

कोस्टा ने अपने कंधे हिलाये।

'और मैं कहती हूं कि डाक्टर बक्षी हैज नो आब्जेक्शन। उन्हें मैं सब कुछ बता चुकी हूं। ही इज वेरी फेयर।

मिल्विया यू आर ए गुड गर्ल।'

बस दैट्स आल ?

बन वी कैन रिमेन फ्रेंड्स।

ओह कोस्टा! सच तुम कुछ भी नहीं जान पाये सिल्विया बचन सी बोली। और आगे भी वह न समझ पायेगा यह सोचकर बीच में ही चुप हो गयी।

कोस्टा हंस दिया और बोला अच्छा चलता हूं। पहले ही काफी देर हो चुकी है।' वस्टन स्टार के पहले पृष्ठ की स्टोरी पढ़कर उसने पेपर एक ओर रख दिया था। उसे बगल में दबाकर वह बाहर आ गया।

बाहर आते ही कोस्टा को ध्यान आया कि आज यूनियन की जीप रिपेअर के लिए गयी है। मतलब आज दिन भर पैदल चलना होगा। वह तेजी से चल दिया। चलने के दौरान मन ही मन आज के काम याद करने लगा। पहला काम है वह खबर जरा ढंग से पढ़ना। अय्यर ने कुछ हिम्मत करके यह स्टोरी दे दी। हैडिंग से अर्थ ठीक से लग न पा रहा था। क्या लिखा है पढ़ना चाहिए। और हो सके तो अय्यर का उपयोग अपने काम के लिए कर लेना चाहिए। उस ढाल्ने से कुछ होगा नहीं। अय्यर साहसी हैं। उसे अगर मेरी हालत समझ में आ गयी तो वह जी तोड़कर मेरे लिए कुछ कर सकता है। गाड़ी में पेपर पढ़ डालेंगे। गंगाराम को एक बार

अस्पताल पहुँचकर आफिस जाया जा सकता है।

सुबह दस के करीब आफिस पहुँचकर चिट्ठी-पत्री देखनी होगी। दो तीन अर्जियाँ डिक्टेट करानी थीं। साढ़े ग्यारह बजे लेबर-कमिश्नर के यहाँ एक केस है। तीन बजे मुख्यमंत्री से मुलाकात का टाइम तय है। अकेले हो। मुख्यमंत्री शिंदे ने मुझे किस लिए बुलाया है इसकी भनक उसे जरूर थी। स्मगलिंग की उसकी फाइल अब काफी मोटी हो चुकी थी। वक्त-बेवक्त वह अपने भाषणों में इसका उल्लेख किया करता था। उनके नाम लेता था। उसके इर्द गिर्द रहस्यमय किस्म के लोग रहने लगे हैं इस बात का एहसास उसे खुद था। उसके साथी कामरेड उसे सम्हलकर रहने की हिदायत देते रहते थे। उसे धमकी भरे खत भी आने लगे थे। पिछले महीने ही उसने गृहमंत्रालय को खत लिखकर सुरक्षा के लिए पिस्तौल का लायसेंस माँगा था। लेकिन उसके लिए मुख्यमंत्री ने मुझे क्या बुलवाया है? डीकास्टा के मन में संशय था। उसकी फाइल में कई मंत्रियों के नाम थे लेकिन मुख्यमंत्री शिंदे का नाम नहीं था। लेकिन कैसे कहा जा सकता है कि उनसे उनका संबंध न होगा? कुछ कहा नहीं जा सकता। कभी कभी वह स्मगलिंग के खिलाफ इस तरह अकेले लड़ने का इरादा छोड़ देता था। वह यह न जान पाता था कि कौन सच्चा है और कौन झूठा। कई लोग उसकी अच्छी पहचान के थे। कई बार तो उसे लगता कि कहीं वह खुद ही इस झमेले में उलझता तो नहीं जा रहा है? इन सभी कारणों से आज मुख्यमंत्री से मुलाकात जरा परेशानी पैदा करने वाली हो गयी।

मुलाकात कितनी देर चलेगी इस बात का उसे कोई अंदाज नहीं था। उसके बाद अगर वक्त मिला तो फिर ऑफिस में बैठना भी जरूरी था। खत-किताबत जरूरी है। उसकी सेक्रेटरी नीरा बड़ी फास्ट डिक्टेशन लेती है। किसी भी कामर्शियल फर्म में वह उसे फोन पर ही अच्छी-खासी नौकरी दिलवा सकता है। लेकिन उसका मोह खुद ही नहीं छूट पाता। खतो-किताबत हो जाय तो कर्मचारियों से मुलाकात। शाम को तेरह नंबर की मिल के गेट पर कामगारों की सभा और फिर फरियास में विनीता दशपुत्र के साथ खाना। विनीता की याद उभरते ही उसके सीने का दर्द बढ़ गया। उसे अपराध भाव सताने लगा। मिनिस्टर की लड़की है तो क्या हुआ? अपने बाप की तरह वह भ्रष्ट नहीं है। तनाव ज्यादा न हो इस वजह से उसने वह ख्याल छोड़ दिया। रात को घर जाने से पहले आंटी पेगी के पास जाना चाहिए। नहीं तो बुढ़िया यूँ ही भड़क जायेगी। मरते दम तक यह परेशानी सहन करनी होगी। पाँच-सात साल और।

*

बाद में तो उसका बँगला मुये मिल ही जायेगा। उसने फिर इस खयाल का भी झटक दिया।

रास्ते म हमीद मिला।

'बाहर जा रहे हैं कोस्टा साब ?'

घाटकोपर। गंगाराम को अस्पताल ले जाना है। इतने सुबह कसे आये ?

दस निकाल दिया साब मुकादम ने नौकरी से।"

पीके गया होगा स्साले ! तू यों ही मरेगा गधे की तरह। हजार बार तेरे को बोला पीना छोड़ दे। चल, भाग अब। जान दे दे समदर म कूद के।'

कोस्टा गुस्से म आगे बढ़ गया। हमीद उसके पीछे पड़ गया। "मैंने खुद के पैसे से नहीं पी, कोस्टा साब। रामू को तेरह रुपये का मटका हाथ लग गया उसने पिलायी। अब नहीं पीऊँगा—बच्चों की कसम!" अपने ही मुँह पर लप्पड़ लगाते हुए हमीद कोस्टा के पीछे-पीछे चलने लगा। कोस्टा का गुस्सा बढ़ गया। मन यही किया कि हमीद के गालों पर झापड़ जमा दे। वह पीछे मुड़ा पर तभी उसने अपने-आप को सम्हाल लिया। एक लम्बी साँस ली।

अब मेरे पीछे मत लग। दस बजे आफिस आ जा रामू को साथ ले के। दोनों की हड्डी नरम करूँगा।'

रामू अब शिफ्ट पर है साब!'

फिर शाम को आना।

जी। बहुत शुक्रिया।

फिर भी हमीद कोस्टा के पीछे लगा रहा। बड़ी महरबानी साब! बस अब कभी नहीं पीऊँगा साब। बाल-बच्चे वाला हूँ।

कोस्टा टिकट निकालने लगा तो हमीद बोला अकेले ही जायगा कोस्टा साब ? साथ म आऊँ ?'

कोस्टा हमीद की बातों से द्रवित हुआ। हमीद का पीला मैला पाजामा घुटनों पर से फट चुका था। मैली-कुचैली शर्ट बदन पर थी। पाँव म कुछ नहीं दाढ़ी बढ़ी हुई। किसी झगड़े म आगे के दो दाँत टूटे हुए। आँखें अंदर धसी हुई गाल पिचके हुए चेहरा अजीब!

कोस्टा ने कहा अब घर जाओ। शाम को मिलेंगे। तब देखेंगे नौकरी के लिए। फिर भी हमीद टल न रहा था। वह नीची गर्दन किये खड़ा था। कोस्टा समझ गया। उसने एक तीखी गाली दी। जेब से दो रुपये का नोट निकाला और हमीद को देते हुए बोला, "हरामजादे, बाल बच्चे भूख

भरते हैं और तू है कि शराब पीता है। अब यो आया तो सिर तोड़ दूंगा, समझे ?"

तब तक तीन चार और भी मजदूर आ इकट्ठा हुए। आँखों का कीचड़ निकालते हुए दाढ़ी के खूंट खुजलाते हुए। कोस्टा के आगे बीड़ी पीने की हिम्मत किसी की न हो रही थी। कोस्टा का ध्यान अपनी ओर करने के लिए वे सलाम किये जा रहे थे। 'साब, वो पोस्टर लगा दिये जीप को अभी दिन भर लगेगा, साब कोस्टा साब, आपका काम ।'

कोस्टा ने तीनों को जवाब देकर भगा दिया और वह स्टेशन पर आ गया। सवा सात बज चुके थे। कोस्टा का टिकट फर्स्ट क्लास का था। ठसा ठस भरी कल्याण की एक गाड़ी छोड़ दी। अगली गाड़ी में खड़े होने लायक जगह मिल पायी। सांकल पकड़े हुए वह खड़ा रहा। चिंचपोकली और करी रोड पर रात की पाली के मजदूर भीड़ किये हुए थे। काफी लोग उसकी पहचान के थे। कुछ तो उसकी यूनियन में काम करने वाले भी थे। कोस्टा एक-एक से बातें किए जा रहा था। यूनियन के कई लोगों को वह नाम से भी जानता था। लेकिन आज सच पूछा जाय तो वह बातें करने के मूड में नहीं था। एक तो घाटकोपर जाने में देर हो चुकी थी। दूसरे, मुख्यमंत्री की मुलाकात का विषय मन में परेशानी पैदा कर रहा था। इसके अलावा विनीता और नीला भी दिमाग में थी। आज के मैस में मार बाकई मार खाने वाला था। मार खा गया तो कांदिविली की एक मिल की यूनियन का रिप्रेजेंटेशन जाने वाला था। एक कारखाना चला भी जाये तो कुछ बनना बिगड़ता नहीं। लेकिन उसका असर जरूर दूसरे कारखानों पर होता है। यूनियन के हिसाब के बारे में कोस्टा बड़ा पक्का था। हर जगह के ट्रेजररों पर वह निगाह रखता था। मतलब एकाध कारखाना चला जाये तो उसकी तनखाह में कुछ कमी हो सकती थी। लेकिन कारखाना जाये या आय पसों की बात ही वह ध्यान में क्यों लाए ? उसे अपनी यूनियन पर गर्व था। यूनियन के लीडर की हैसियत से होने वाले फ़ायदों को वह टाल न सकता था। जीप, आपसखर्च में कुछ कम रुपया न मिलने वाला फ्लैट, ईनाम के तौर पर मिला हुआ फ्रिज, रोज़ाना खाने के निमंत्रण, यूनियन को मिलने वाले फायदे—वह टाल न सकता था। इसी वजह से अजीब अपराध बोध भी उसे हो रहा था। स्मगलिंग के बारे में जानकारी इकट्ठा करने की वजह से उसके संबंध लोगों के साथ और बढ़ गये थे। बड़े बड़े लोगों के साथ जान-पहचान बढ़ गयी थी। अनजाने ही कहीं कुछ गलती हो रही है इस बात का एहसास भी हो रहा था। उन मज़दूरों की ओर देखकर उसे बुरा भी लग रहा था। वैसे उस तरह महसूस

करने की जरूरत न थी। उससे जो कुछ बन सकता था वह उन लोगों के लिए करता था। उन्हें संगठित करता था उनके अधिकारों के लिए लडता था, उन्हें सुधारने की कोशिश भी किये जाता था। लेकिन यह सब करते हुए उसका अंतिम लक्ष्य क्या है यह वह न समझ पा रहा था। वह स्वयं निर्णय नहीं कर पा रहा था कि इसी तरह तनखाह बढाने और अधिकारों के लिए लडते हुए आज की समाज-व्यवस्था का एक हिस्सा बन जाना उद्देश्य है या सारी समाज-व्यवस्था तबदील करना जहाँ अधिकारों के लिए लडने की जरूरत ही न हो ? उसे सही रास्ता नहीं दिख रहा था। पार्टी के साथ उसकी पटती न थी। पक्के विश्वास से वह यह तय नहीं कर पा रहा था कि आज के चलन में अपनी प्रामाणिकता कायम रखे या पार्टी को बचाये ? साम्यवादी तरीके से आज की समाज व्यवस्था बदलकर नये समाज में मेहनतकश लोगों को न्याय मिल सकेगा या नहीं इस बारे में उसे खुद भी शंका थी। वह संभ्रमित था। इसी वजह से हर पार्टी के लोग उससे दूर रह रहा करते थे। लेकिन वह किसी को दोष न देता था। वह युवा और साहसी लोगों के बीच लोकप्रिय था। लगातार अपनी ताकत बढा रहा था।

घाटकोपर पहुंचने तक कामना ने वैस्टर्न स्टार की वह खबर अच्छी तरह से पढ ली। खबर उसे कोई खास पसंद न आ पायी थी। काफी कुछ जानकारी तो कोस्टा की खुद की दी हुई थी। लेकिन अगर अय्यर फैक्टस दे देता तो ज्यादा अच्छा रहता। घाटकोपर आते ही लारी से उतरकर वह तेज कदमों से गंगाराम की झुग्गी के करीब आया। तभी उसे कुछ लोगों की भीड नजर आयी। उसे लगा जरूर कुछ झगडा हो गया है। तभी एक आदमी आगे बढा।

कोस्टा साब अभी आपको फोन किया था।

क्यों ? मैं तो आ ही रहा था।

गंगाराम चल बसा।

अरे— कब ?

सुबह ही साब।

कोस्टा परेशान हुआ। गंगाराम का केस होपलेस था यह वह जानता था। लेकिन आज ही वह मरा ! बम्बई में आने पर उसे पहला साथी गंगाराम ही मिला था। अपनी होशियारी की वजह से कोस्टा आगे निकल गया और गंगाराम मजदूर ही बना रहा। कुंभारवाडा से घाटकोपर की बस्ती में आ गया लेकिन कोस्टा पर उसकी निष्ठा कायम थी। कोस्टा को बुरा लगा। उसने सोचा, गंगाराम को पहले ही अस्पताल ले जाना

चाहिए था। बकार ही टालमटोल की।

कोस्टा के इर्द गिर्द लोग इकट्ठा हो गये। उन सबके सामने आँखों म आसू आना ठीक नही। लेकिन कोई चारा न था। उसे रोते देख दूसरों की आँखा म भी आँसू आ गय। कोस्टा न रूमाल स आँखें पोंछ ली। भीड म गगाराम का साला था। उससे कास्टा न पूछा, "मैयत की क्या व्यवस्था है ?'

उसी क वास्ते तो फोन किया था कोस्टा साब।"

कोस्टा ने जेब टटोली तो बीस रुपये और कुछ खुले पैसे निकले।

यह लो और दस बजे यूनियन के आफिस म आ जाना। पस और भी लगेंगे। अर महीने पहले अस्पताल ले गये होते तो बच भी जाता।'

नही सुनता था साव। जिद्दी आदमी था।'

"हूं।' कास्टा को फिर बुरा लगा।

'औरत क्या करती है ?

कही कुछ नही साब। बरतन मांजती है साब।'

'देखते हैं। हो सका तो कारखाने म लगवा देंगे।'

फिर कोस्टा गगाराम की झुग्गी के पास पहुँचा। आस-पास की औरतें गगाराम की जवान बीवी के करीब बठी रो रही थी। वह सूने चेहरे से गगाराम की लाश की ओर देख जा रही थी। कास्टा और दूसरे लोगो को आते देखकर वह सिर पर पल्लू लेकर जोर-जोर से रोने चीखने लगी। उसके साथ दूसरी औरतें भी रोने लगी। बच्चे नजर न आ रहे थ। उन्हें शायद कही भेज दिया होगा।

वहाँ बने रहने की कोस्टा की हिम्मत न हो रही थी। लेकिन कुछ देर रुकना लाजिमी था। किसी ने गगाराम के सिर पर स चादर एक बार हटायी। उसका पीला चेहरा मौत के बाद भी दयनीय नजर आ रहा था। कोई एक हार ले आया था कास्टा न उसे लाश पर रखा। नमस्कार किया और झुग्गी के बाहर आ गया। आसपास खड़े लोग गगाराम की तारीफ किये जा रहे थ।

कुछ देर बाद कोस्टा ने गगाराम के साले से पूछा, 'बहन का क्या करने वाले हो ?'

साले की आखो म आँसू आ गय।

'क्या करेगा कोस्टा साब ? जवान है बच्चे हैं।

एक न कहा, गाँव भेज दो। दूसरे ने दुबारा शादी कर देने की सलाह दी। कुछ और बातें सुझाने लगे।

कोस्टा न कहा घबराओ नही। गगाराम की अठारह-बीस साल की

नौकरी हो चुकी है। प्राविडेंट फंड होगा। और भी कुछ सोचेंगे। कल-परसों आफिस आना।'

फिर कोस्टा वहाँ ज्यादा देर नहीं रुका। कुछ देर वहाँ पूछताछ की। लोकल से जाना उसे परेशानी वाला लगा। टक्सी की तलाश में वह पैदल ही चल दिया। कालोनी के नाके पर काफी देर तक खड़ा रहा। सभी टक्सियाँ मीटर पर जा रही थीं। परेशान हो गया। आखिर उसने एक नीली एंबेसेडर को लिफ्ट के लिए इशारा किया।

सेबस्टियन कोस्टा बचपन में ही होशियार आदमी था। बम्बई की कई भाषाएँ वह सफाई से बोल लेता था। इसी वजह से वह कहाँ का रहने वाला है यह जल्द न जाना जा सकता था। वसे वह रहने वाला गोवा का था। पोर्तुगीज भाषा कुछ पढ़ा-लिखा था। कोस्टा की पूरी पढ़ाई लिखाई नहीं हो पायी। उसके पिता ने उसे पादरी बनाने का फैसला कर रखा था और इसी कारण जब वह चौदह साल का था तो उसे एक धार्मिक स्कूल में भर्ती कर दिया। कोस्टा को वहाँ का माहौल पसंद न आया। बाईबिल को लेकर उसकी वहाँ के शिक्षकों से कहा-सुनी होने लगी और वह समझ गया कि उसकी लाइन गलत है। एक दिन स्कूल की दीवार फलांगकर उसने वहाँ से छुट्टी पा ली। अपना सामान बेच बाचकर पणजी भाग गया और पहले जहाज से बम्बई आ गया। तब उसकी उम्र पंद्रह के आस-पास थी। भाऊ के धक्के पर वह उतरा तब उसकी जेब में एक रुपया था। बदन पर सिर्फ पहने हुए कपड़े ही थे। किसी से उसकी पहचान न थी। वह यह जरूर जानता था कि उसके कुछ रिश्तेदार बम्बई में रहते हैं लेकिन उनके पते उसके पास न थे।

दिन भर घूमते हुए उसने पहली रात बोरीबंदर के फुटपाथ पर बिताने की सोची। लेकिन तभी उसे पता चला कि यहाँ फुटपाथ पर सोने के लिए भी पैसे भरने होते हैं या झगड़ा करना पड़ता है। वह वैसे ही फुटपाथ पर लेट गया और दूसरे ही पल उसे नींद आ गयी। रात में उसे किसी ने हाथ पकड़कर उठाया 'इधर किधर सोता है? तेरे बाप का घर है क्या?' कहकर उसे भगा दिया। और दूसरी जगह पर उसने सोने की कोशिश की तो भी वही हुआ जो पहले हो चुका था। एक जगह जब उसे कमर पर लात जमाकर उठाया गया तो वह परेशान हो गया। चलते चलते वह काफी थक चुका था। उसने कुछ खाया भी न था। आँखों में भरपूर नींद थी इसी वजह से परेशान हालत में उसने उस आदमी पर धावा बोल दिया। उसे नीचे गिराया और घूसों से मारना शुरू कर दिया। हाय-तोबा मच

गयी। पाँच-छह लोग और आ पहुँचे। उन्होंने उसको नीचे खींचा और खूब पीटा। एक मोटे-से आदमी ने कोस्टा को छुड़ाया और पीटने वाले लोगों को अलहदा किया। उसी आदमी ने कोस्टा से पूछा, "बच्चा किधर से आया तू ?"

कोस्टा चुप रहा। उस आदमी ने कोस्टा के गाल पर एक लप्पड़ जमा दी। 'समझता नहीं क्या ? अब बोल, किधर से आया ?"

गोवा से।"

माँ-बाप नहीं क्या ? इधर काय वास्ते आया ?"

'नौकरी के लिए।'

वह आदमी हँस दिया। उसने कोस्टा के बाल खींचे और बोला, 'नौकरी क्या इधर इतना सस्ता हो गया है ?" उसने बीड़ी सुलगा ली कहाँ तक पढ़ा है तू ? मट्रिक ? '

'ना।'

वह आदमी फिर अजीब तरह से हँसा। इर्द गिर्द खड़े लोग भी हँस दिये। कोस्टा परेशान हो गया। चारों ओर हाथ नचाते हुए वह आदमी बोला, 'इसी सब झगड़े के वास्ते यहाँ आया था !" उसने बीड़ी का लम्बा कश खींचा और कोस्टा से कहा, 'पैसा है पास में ?"

कोस्टा ने पैंट की जेब उलट दी।

फिर क्या मरने के वास्ते आया है बम्बई में ? मोटे ने पूछा।

कोस्टा कुछ न बोला। मोटे आदमी ने तेज़ निगाह से उसकी ओर देखा। फिर कोस्टा की गर्दन पकड़कर उसे ढकेलते हुए बोला 'जा, आज इधर सो जा। देखना, नौकरी मिलती है या नहीं। कल पैसा नहीं लाया तो इधर सोने के वास्ते नहीं आने का। नहीं तो अपन बतायेगा, कैसा करना।"

दूसरे दिन कोस्टा की नींद किसी के जूते के टकराने की वजह से खुली। लेकिन वह जूता किसी स्कर्टवाली का था। थकान की वजह से कोस्टा को गहरी नींद आ रही थी। सूरज काफी ऊपर आ गया था। फिर भी उसकी नींद नहीं टूट पायी थी। सड़क पर आफिस जाने वालों की भीड़ थी। तभी कुछ लोगों के पाँव उससे टकराने लगे। फिर भी उसकी नींद नहीं टूटी। आखिर में एक दौड़ती हुई लड़की का जूता उससे टकराया।

करीब वाले सार्वजनिक यूरिनल पर जाकर उसने सुबह का काम निबटाया। मुँह पर पानी मारा। बाल ठीक किये। एक होटल में घुसकर दो गिलास पानी पेट में डाल लिया। और फिर नौकरी ढूँढने के लिए वह बम्बई की सड़कों पर आ गया। खाली जेब और खाली पेट।

नौकरी हो चुकी है। प्राविडेंट फंड होगा। और भी कुछ सोचेंगे। कल-परसों आफिस आना।"

फिर कोस्टा वहाँ ज्यादा देर नहीं रुका। कुछ देर वहाँ पूछताछ की। लोकल से जाना उसे परेशानी वाला लगा। टैक्सी की तलाश में वह पैदल ही चल दिया। कालोनी के नाके पर काफी देर तक खड़ा रहा। सभी टैक्सियाँ मीटर पर जा रही थीं। परेशान हो गया। आखिर उसने एक नीली एंबेसेडर को लिफ्ट के लिए इशारा किया।

सेबेशियन कोस्टा बचपन से ही होशियार आदमी था। बम्बई की कई भाषाएँ वह सफाई से बोल लेता था। इसी वजह से वह कहाँ का रहने वाला है यह जल्द न जाना जा सकता था। वैसे वह रहने वाला गोवा का था। पोर्चुगीज भाषा कुछ पढ़ा लिखा था। कोस्टा की पूरी पढ़ाई लिखाई नहीं हो पायी। उसके पिता ने उसे पादरी बनाने का फैसला कर रखा था और इसी कारण जब वह चौदह साल का था तो उसे एक धार्मिक स्कूल में भर्ती कर दिया। कोस्टा को वहाँ का माहौल पसंद न आया। बाईबिल को लेकर उसकी वहाँ के शिक्षकों से कहा-सुनी होने लगी और वह समझ गया कि उसकी लाइन गलत है। एक दिन स्कूल की दीवार फलाँगकर उसने वहाँ से छुट्टी पा ली। अपना सामान बेच बाचकर पणजी भाग गया और पहले जहाज से बम्बई आ गया। तब उसकी उम्र पंद्रह के आस पास थी। भाऊ के धक्के पर वह उतरा तब उसकी जेब में एक रुपया था। बदन पर सिर्फ पहने हुए कपड़े ही थे। किसी से उसकी पहचान न थी। वह यह जरूर जानता था कि उसके कुछ रिश्तेदार बम्बई में रहते हैं लेकिन उनके पते उसके पास न थे।

दिन भर घूमते हुए उसने पहली रात बोरीबंदर के फुटपाथ पर बिताने की सोची। लेकिन तभी उसे पता चला कि यहाँ फुटपाथ पर सोने के लिए भी पैसे भरने होते हैं या झगड़ा करना पड़ता है। वह वैसे ही फुटपाथ पर लेट गया और दूसरे ही पल उसे नींद आ गयी। रात में उसे किसी ने हाथ पकड़कर उठाया 'इधर किधर सोता है? तेरे बाप का घर है क्या?' कहकर उसे भगा दिया। और दूसरी जगहों पर उसने सोने की कोशिश की तो भी वही हुआ जो पहले हो चुका था। एक जगह जब उसे कमर पर लात जमाकर उठाया गया तो वह परेशान हो गया। चलते चलते वह काफी थक चुका था। उसने कुछ खाया भी न था। आँखों में भरपूर नींद थी, इसी वजह से परेशान हालत में उसने उस आदमी पर धावा बोल दिया। उसे नीचे गिराया और घूँसों से मारना शुरू कर दिया। हाय-तोबा मच

गयी। पांच-छह लोग और आ पहुँचे। उन्होंने उसको नीचे खींचा और खूब पीटा। एक मोटे-से आदमी ने कोस्टा को छुड़ाया और पीटने वाले लोगों को अलहदा किया। उसी आदमी ने कोस्टा से पूछा, "बच्चा, किधर से आया तू ?"

कोस्टा चुप रहा। उस आदमी ने कोस्टा के गाल पर एक तप्पड़ जमा दी। 'समझता नहीं क्या ? अब बोल, किधर से आया ?"

"गोवा से।

'माँ-बाप नहीं क्या ? इधर काय वास्ते आया ?"

नौकरी के लिए।"

वह आदमी हंस दिया। उसने कोस्टा के बाल खींचे और बोला, 'नौकरी क्या इधर इतना सस्ता हो गया है ?' उसने बीड़ी सुलगा ली, कहाँ तक पढ़ा है तू ? मट्रिक ?'

ना।'

वह आदमी फिर अजीब तरह से हँसा। इर्द गिर्द खड़े लोग भी हँस दिये। कोस्टा परेशान हो गया। चारों ओर हाथ नचाते हुए वह आदमी बोला, इसी सब झगड़े के वास्ते यहाँ आया था।" उसने बीड़ी का लम्बा कश खींचा और कोस्टा से कहा, 'पैसा है पास में ?"

कोस्टा ने पैंट की जेब उलट दी।

फिर क्या मरने के वास्ते आया है बम्बई में ?' मोटे ने पूछा।

कोस्टा कुछ न बोला। मोटे आदमी ने तेज निगाह से उसकी ओर देखा। फिर कोस्टा की गर्दन पकड़कर उसे धकेलते हुए बोला 'जा, आज इधर सो जा। देखना, नौकरी मिलती है या नहीं। बस पैसा नहीं लाया तो इधर सोने के वास्ते नहीं आने का। नहीं तो अपन बतायगा, वैसा करना।'

दूसरे दिन कोस्टा की नींद किसी के जूते के टकराने की वजह से खुली। लेकिन वह जूता किसी रूटवाली का था। थकान की वजह से कोस्टा को गहरी नींद आ रही थी। सूरज काफी ऊपर आ गया था। फिर भी उसकी नींद नहीं टूट पायी थी। सड़क पर आफिस जाने वालों की भीड़ थी। तभी कुछ लोगों के पाँव उससे टकराने लगे। फिर भी उसकी नींद नहीं टूटी। आखिर में एक दौड़ती हुई लड़की का जूता उससे टकराया।

करीब वाले सार्वजनिक यूरिनल पर जाकर उसने सुबह का काम निबटाया। मुँह पर पानी मारा। बाल ठीक किये। एक होटल में घुसकर दो गिलास पानी पेट में डाल लिया। और फिर नौकरी ढूंढने के लिए वह बम्बई की सड़कों पर आ गया। खाली जेब और खाली पेट।

बाढ़ की तरह लोगों की भीड़ की भीड़ सड़कों पर बह रही थी। बड़ी बड़ी लाल बसें मोटरें विक्टोरिया और आदमी ही आदमी। वह अजनबी के रूप में बम्बई देख रहा था। इस वजह से उसे हर बात अजीब लग रही थी। खोज रहा था कि वह कहाँ ठीक बैठ सकता है। कल जो कुछ हुआ, उसकी वजह से वह चिढ़ गया था। इतनी बड़ी बम्बई इतनी इमारतें इतने वाहन इतने लोग और मुझे कहीं जगह ही न मिले ? एक नौकरी नहीं मिल सकती ? कैसे हो सकता है ? कोस्टा ने दाँतों से होंठ चबाये। उसने तय किया कि नौकरी मिलनी ही चाहिए।

मुझे क्या क्या आता है यह उसने मन ही मन सोचा। उसे पोर्चुगीज और अंग्रेजी अच्छी आती थी। टाईपिंग आती थी। "मेरा फुटबाल जानने का खास उपयोग होने वाला नहीं था। उसने तय किया कि वह अपनी अंग्रेजी का उपयोग करेगा।

पहले वह एक बैंक में गया। लेकिन वहाँ किसी ने उसे पूछा तक नहीं। फिर कुछ सोचकर वह एक पेपर के आफिस में गया। वहाँ के एक क्लर्क ने उसे अर्जी देने को कहा। कोस्टा ने वहीं बैठकर वहीं से कागज-कलम लेकर अर्जी लिख दी। अर्जी उस क्लर्क को दे दी। क्लर्क ने अर्जी पढ़ी और कहा 'यू आर नॉट इवन मैट्रिक ?'

'नो।'

'सॉरी' कहते हुए उसने अपना मुँह बिचकाया। अर्जी एक फाइल में रख दी।

दूसरे पेपर के आफिस में उसने झूठ ही लिख दिया कि वह मैट्रिक की परीक्षा में बैठा है। लेकिन क्लर्क बोला 'अभी जगह खाली नहीं है। अगले महीने चपरासी की एक-दो जगह खाली होगी।'

'चलेगी।'

'फिर दो महीने बाद आना।'

चार छह जगह और घूमने के बाद वह एक गुजराती पेपर के आफिस में गया। सामने बैठे क्लर्क से कहा 'नौकरी के लिए अर्जी देनी है।'

उस क्लर्क ने कोस्टा की हुलिया देखी। फिर दूर की एक टेबिल की ओर इशारा कर दिया।

टेबिल के पीछे रखी एक कुर्सी पर टाइ लगाये बूढ़ा सा आदमी मोटा चश्मा पहने एक किताब पर कुछ लिख रहा था। कोस्टा उसके सामने जाकर खड़ा हो गया। बिना ऊपर देखे ही उस आदमी ने सामने की कुर्सी पर बैठने को इशारा किया।

पंद्रह मिनट तक उस आदमी ने उसकी ओर देखा ही नहीं। कोस्टा

करीबन ग्यारह बजे उसे मोटे आदमी ने उसे हाथ पकड़कर उठाया,
"क्यों व फिर आ गया ? दूसरी जगह नहीं मिली ?"

कोस्टा अलसाया जेब से दो आने निकालकर मोटे के हाथ पर रख दिये। यह रेट कल ही उसे आस-पास के लोगों ने बता दिया था।

नौकरी मिल गयी ?"

मिल गयी वापस लेटते हुए कोस्टा ने कहा।

दूसरे दिन केरकर ने कोस्टा को कुछ मजदूरों क साथ भेज दिया। कोस्टा से सामान उठाने धरने का काम न हो पाया तो दूसरे दिन उसे कारखाने में बदली पर भेज दिया। कारखाने का काम कोस्टा को जम गया। तीन चार रात कोस्टा ने फुटपाथ पर बिता दी। बाद म उसकी इमानदारी देखकर केरकर ने उसे आफिस के बरामदे में ही थोड़ी सी जगह द दी।

कोस्टा कारखाने के काम मे काफी होशियार हो गया। यही नहीं वह आस-पास के मजदूरों में काफी लोकप्रिय हो गया। मजदूरों की अर्जियाँ लिखना उनकी शिकायतें सुनना, उनके झगड़े सुलझाना इस तरह के काम वह करने लगा। उसकी होशियारी जैसे-जसे नजर आने लगी वसे-वसे केरकर उसे दूसरे काम भी सौंपने लगा।

एक दिन केरकर ने कारखाने के गेट पर बोनस के लिए एक मीटिंग आयोजित की थी। काल और लाल झडे लगाकर काफी तयारी की गयी। केरकर की पार्टी का एक नेता वहाँ भाषण देने के लिए आने वाला था। लेकिन वह आया नहीं। तब बोलने का काम अकेले केरकर पर आ पड़ा। केरकर न कोस्टा से कहा, 'कोस्टा, पहले तुम बोलो, फिर मैं बोलूगा।'

मैं क्या बोलू मुझे कहाँ आता है ?'

'अरे, कुछ भी बोलो। मराठी तो ठीक बोल लेत हो न ? यह मीटिंग ठीक होनी जरूरी है। बोनस क्यों मिलना चाहिए, यही बताओ।"

कोस्टा के गेट के करीब भाषण देने के लिए पहुँचने पर सौ सवा सौ मजदूर बठे हुए थे। काफी लोग कोस्टा की पहचान के हो गये थे। इसी वजह से उसे डर न लग रहा था। पर क्या बोले यह न सूझ रहा था। धार्मिक स्कूल में याद की गयी बाईबिल पादरियों के भाषण केरकर और दूसरे नेताओं के सुन हुए भाषण पेपर के सम्पादकीय, मजदूरों की गरीबी धकारियों और मालिकों की हठधर्मी उनकी मोटरें—सभी एकदम आँखों के आगे घूम गया। वह वापस पलटने वाला था तभी उसे

और वह जोर से बोलने लगा—

। हम लोग सब बोनस के लिए झगड़ने वाले हैं। हमको

आया हुआ है। गावा का है। होशियार लगता है। उसे कहीं लगवा दो। कहीं भी। नहीं तो यूनियन में ही। हाँ, अभी भेजता हूँ उसे। सेवेशियन डीकोस्टा।'

फुटजडो ने फोन नीचे रख दिया। तेज़ी से उसने चश्मा नीचे रखा। आखें पोछीं। नाक पोछी। टेबिल पर रखा मोटा चश्मा उठाया उसे पोंछ कर नाक पर चढ़ा लिया। पेन उठाया और गिरगाव में केरकर की यूनियन का पता एक छोटे से कागज़ पर लिखकर कोस्टा की ओर बढ़ाया और कहा इस पते पर चले जाओ केरकर से मिलो। मेरा नाम बताना वह ज़रूर तुम्हें कोई-न-कोई काम दे देगा।'

कोस्टा जाने के लिए उठा तो फुटजडो बोला 'कैसे जाओगे ?'

पूछता हुआ चला जाऊंगा।'

फुटजडो कुछ रुका। उसे किसी चीज़ की एकदम याद हो आयी। उसने फिर चश्मा उसी अंदाज़ में तबदील किया और जेब में हाथ डालकर दो रुपये निकाले। उन्हें कोस्टा के हाथ में देते हुए बोला बस से जाना। वहां पहुँचने पर कोई भी बता देगा। खर्चे के लिए इन्हें अपने पास ही रखना। तनख्वाह मिले तो वापस कर देना।'

पैसे लिये जायें या न लिये जायें यह सोचने का वक्त न था। कोस्टा ने रुपये सीधे जेब में रख लिये। बूढ़े फुटजडो के प्रति आभार कैसे जताया जाये वह न समझ पा रहा था। वह सिर्फ हँस दिया और बाहर आ गया।

पहले उसने चार आने का खाना खाया तब उसकी जान में-जान आ पायी। फिर गिरगांव के पते पर जा पहुँचा।

केरकर ने जब देखा कि उसे अच्छी अंग्रेज़ी आती है तो उसने कोस्टा को एक लम्बी सी अर्ज़ी नकल करने के लिए दे दी। टाइप किये आठ सफे दुबारा हाथ से लिखे जाने थे। कोस्टा ने शाम तक नकल कर के तैयार कर दी।

काम होते ही केरकर ने उसके हाथ पर बारह आने रख दिये। वह बोला, यह आज के काम का मेहनताना है। रोज़ाना तो इस तरह से काम रहता नहीं है। मज़दूरी करोगे ?

कोस्टा ने कहा 'कुछ भी कर सकता हूं।

तो कल सुबह आठ बजे आ जाना।

कोस्टा रात में पहले वाले दिन की जगह पर गया। यूनियन के आफिस से लाये कुछ कागज़ उसने ज़मीन पर बिछा लिये और उन पर ही लेट गया।

करीबन ग्यारह बजे उसे मोटे आदमी ने उसका हाथ पकड़कर उठाया, 'क्यों बे फिर आ गया ? दूसरी जगह नहीं मिली ?'

कोस्टा अलसाया जेब में दो आने निकालकर मोटे के हाथ पर रख दिये। यह रेट कल ही उस आस-पास के लोगों ने बता दिया था।

नौकरी मिल गयी ?"

मिल गयी वापस लेटते हुए कोस्टा ने कहा।

दूसरे दिन केरकर ने कोस्टा को कुछ मजदूरों के साथ भेज दिया। कोस्टा से सामान उठाने धरने का काम न हो पाया तो दूसरे दिन उसे कारखाने में बदली पर भेज दिया। कारखाने का काम कोस्टा को जम गया। तीन चार रात कोस्टा ने फुटपाथ पर बिता दी। बाद में उसकी ईमानदारी देखकर केरकर ने उसे आफिस के बरामदे में ही थोड़ी सी जगह दे दी।

कोस्टा कारखाने के काम में काफी होशियार हो गया। यही नहीं वह आस-पास के मजदूरों में काफी लोकप्रिय हो गया। मजदूरों की अर्जियां लिखना उनकी शिकायतें सुनना उनके झगड़े सुलझाना इस तरह के काम वह करने लगा। उसकी होशियारी जैसे-जैसे नजर आने लगी वैसे-वैसे केरकर उसे दूसरे काम भी सौंपने लगा।

एक दिन केरकर ने कारखाने के गेट पर बोनस के लिए एक मीटिंग आयोजित की थी। काले और लाल झंडे लगाकर काफी तयारी की गयी। केरकर की पार्टी का एक नेता वहां भाषण देने के लिए आने वाला था। लेकिन वह आया नहीं। तब बोलने का काम अकेले केरकर पर आ पड़ा। केरकर ने कोस्टा से कहा "कोस्टा पहले तुम बोलो फिर मैं बोलूंगा।'

मैं क्या बोलूं मुझे कहां आता है ?"

'अरे, कुछ भी बोलो। मराठी तो ठीक बोल लेते हो न ? यह मीटिंग ठीक होनी ज़रूरी है। बोनस क्या मिलना चाहिए यही बताओ।'

कोस्टा के गेट के करीब भाषण देने के लिए पहुँचने पर सौ-सवा सौ मजदूर बैठे हुए थे। काफी लोग कोस्टा की पहचान के हो गये थे। इसी वजह से उसे डर न लग रहा था। पर क्या बोले यह न सूझ रहा था। धार्मिक स्कूल में याद की गयी बाईबिल पादरियों के भाषण केरकर और दूसरे नेताओं के सुने हुए भाषण पेपर के सम्पादकीय मजदूरों की गरीबी अधिकारियों और मालिकों की हठधर्मी उनकी मोटरें—सभी एकदम उसकी आँखों के आगे घूम गया। वह वापस पलटने वाला था तभी उसे खयाल आया और वह जोर से बोलने लगा—

भाइयो ! हम लोग सब बोनस के लिए झगड़ने वाले हैं। हमको

आया हुआ है। गोवा का है। होशियार लगता है। उसे कहीं लगवा दो। कहीं भी। नहीं तो यूनियन में ही। हाँ अभी भेजता हूँ उसे। सेबेशियन डीकोस्टा।'

फुटजडो ने फोन नीचे रख दिया। तेजी से उसने चश्मा नीचे रखा। आँखें पोंछी। नाक पोंछी। टेबिल पर रखा मोटा चश्मा उठाया उसे पोंछ कर नाक पर चढ़ा लिया। पेन उठाया और गिरगाँव में केरकर की यूनियन का पता एक छोटे से कागज पर लिखकर कोस्टा की ओर बढ़ाया और कहा इस पते पर चले जाओ केरकर से मिलो। मेरा नाम बताना वह जरूर तुम्हें कोई-न-कोई काम दे देगा।'

कोस्टा जाने के लिए उठा तो फुटजडो बोला "कैसे जाओगे ?

पूछता हुआ चला जाऊंगा।'

फुटजडो कुछ रुका। उसे किसी चीज की एकदम याद हो आयी। उसने फिर चश्मा उसी अन्दाज में तबदील किया और जेब में हाथ डालकर दो रुपये निकाले। उन्हें कोस्टा के हाथ में देते हुए बोला बस से जाना। वहाँ पहुंचने पर कोई भी बता देगा। खर्चे के लिए इन्हें अपने पास ही रखना। तनख्वाह मिले तो वापस कर देना।

पैसे लिये जायें या न लिये जायें यह सोचने का वक्त न था। कोस्टा ने रुपये सीधे जेब में रख लिये। बूढ़े फुटजडो के प्रति आभार कैसे जताया जाय, वह न समझ पा रहा था। वह सिर्फ हँस दिया और बाहर आ गया।

पहले उसने चार आने का खाना खाया, तब उसकी जान में जान आ पायी। फिर गिरगाँव के पते पर जा पहुँचा।

केरकर ने जब देखा कि उसे अच्छी अँग्रेजी आती है तो उसने कोस्टा को एक लम्बी सी अर्जी नकल करने के लिए दे दी। टाइप किये आठ सफे दुबारा हाथ से लिखे जाने थे। कोस्टा ने शाम तक नकल कर के तैयार कर दी।

काम होते ही केरकर ने उसके हाथ पर बारह आने रख दिये। वह बोला यह आज के काम का मेहनताना है। रोजाना तो इस तरह से काम रहता नहीं है। मजदूरी करलोगे ?'

कोस्टा ने कहा कुछ भी कर सकता हूँ।'

तो कल सुबह आठ बजे आ जाना।

कोस्टा रात में पहले वाले दिन की जगह पर गया। यूनियन के आफिस से लाये कुछ कागज उसने जमीन पर बिछा लिये और उन पर ही लेट गया।

क़रीबन ग्यारह बजे उस मोटे आदमी ने उसे हाथ पकड़कर उठाया, 'क्यों बे, फिर आ गया ? दूसरी जगह नहीं मिली ?

कोस्टा अलसाया जेब से दो आने निकालकर मोटे के हाथ पर रख दिये। यह रेट कल ही उसे आस-पास के लोगों ने बता दिया था।

नौकरी मिल गयी ?"

मिल गयी ' वापस लेटते हुए कोस्टा ने कहा।

दूसरे दिन केरकर ने कोस्टा को कुछ मजदूरों के साथ भेज दिया। कोस्टा से सामान उठाने धरने का काम न हो पाया तो दूसरे दिन उसे कारखाने में बदली पर भेज दिया। कारखाने का काम कोस्टा को जम गया। तीन चार रात कोस्टा ने फुटपाथ पर बिता दीं। बाद में उसकी ईमानदारी देखकर केरकर ने उसे आफिस के बरामदे में ही थोड़ी सी जगह दे दी।

कोस्टा कारखाने के काम में काफी होशियार हो गया। यही नहीं वह आस-पास के मजदूरों में काफी लोकप्रिय हो गया। मजदूरों की अर्जियाँ लिखना उनकी शिकायतें सुनना उनके झगड़े सुलझाना इस तरह के काम वह करने लगा। उसकी होशियारी जैसे-जैसे नजर आने लगी, वैसे-वैसे केरकर उसे दूसरे काम भी सौंपने लगा।

एक दिन केरकर ने कारखाने के गेट पर बोनस के लिए एक मीटिंग आयोजित की थी। काले और लाल झंडे लगाकर काफी तैयारी की गयी। केरकर की पार्टी का एक नेता वहाँ भाषण देने के लिए आने वाला था। लेकिन वह आया नहीं। तब बोलने का काम अकेले केरकर पर आ पड़ा। केरकर ने कोस्टा से कहा, 'कोस्टा पहले तुम बोलो फिर मैं बोलूंगा।

'मैं क्या बोलूं मुझे कहाँ आता है ?'

'अरे, कुछ भी बोलो। मराठी तो ठीक बोल लेते हो न ? यह मीटिंग ठीक होनी जरूरी है। बोनस क्यों मिलना चाहिए यही बताओ।"

कोस्टा के गेट के क़रीब भाषण देने के लिए पहुँचने पर सौ-सवा सौ मजदूर बैठे हुए थे। काफी लोग कोस्टा की पहचान के हो गये थे। इसी वजह से उसे डर न लग रहा था। पर क्या बोले यह न सूझ रहा था। धार्मिक स्कूल में पढ़ी गयी बाईबिल पादरियों के भाषण केरकर और दूसरे नेताओं के सुने हुए भाषण पेपर के सम्पादकीय मजदूरों की गरीबी अधिकारियों और मालिकों की हठधर्मी उनकी मोटरें—सभी एकदम उसकी आँखों के आगे घूम गया। वह वापस पलटने वाला था, तभी उसे ख्याल आया और वह जोर से बोलने लगा—

भाइयो ! हम लोग सब बोनस के लिए हकदार हैं। हमको

बोनस क्या मिलना चाहिए मैं आपको यह बताता हूँ। पहले मैं चंद सवाल करता हूँ। उनके जवाब दीजिए। हमारे मालिक कारखाने में हैं ?'

'नहीं।' दस पंद्रह मजदूर जोर से बोले।

फिर मालिक कहाँ गये हैं ?

विलायत, कुछ लोग बोले। सभी जानते थे कि मालिक विलायत गये हुए हैं।

मालिक विलायत गये हैं तो कारखाना क्या बंद है ?

बिलकुल नहीं। कोस्टा में आत्मविश्वास जाग रहा था।

वह आगे बोला मतलब यह कि मालिक न हों तो कारखाना बंद नहीं होता। अब बताओ दो साल पहले तनखाह के लिए आपने हड़ताल की थी, क्या तब कारखाना चलता रहा था ?

नहीं। सभी की आवाज आयी।

ठीक मालिक न हो तो भी कारखाना चलता है। पर आप लोग न हों तो कारखाना बंद हो जाता है। मतलब कारखाने का असली मालिक कौन हुआ ?'

लोग चुप रहे। फिर जैसे बात उनकी समझ में आने लगी। फिर वे चीखने लगे हम हम मालिक। फिर तालियों की गड़गड़ाहट।

कोस्टा ने आगे कहा कारखाना अपना है। हम लोग काम करते हैं। करघे चलाते हैं। कपड़ा बनाते हैं। इसीलिए हमें तनखाह मिलती है। तो क्या हमें कपड़े को बेचकर मिलने वाला नफा हमें नहीं मिलना चाहिए ?

मिलना चाहिए मिलना ही चाहिए। फिर तालियाँ।

ठीक है तो यही नफा मतलब बोनस हमारा है। हम लोग अपनी ही चीज माँग रहे हैं। वह हमारा हक है। हम जो बोनस माँग रहे हैं वह मेहरबानी के बतौर नहीं। हम अपनी चुराई हुई चीज वापस माँग रहे हैं। हम उसके लिए लड़ने को भी तैयार हैं।

उस दिन केरकर कोस्टा पर बेहद खुश हुआ। पिछले साल डेढ़ साल से उसे नहीं पहचान सका इसी बात का उसे दुख था। रात को उसने कोस्टा को एक होटल में अपने पैसे से खाना खिलाया।

कोस्टा तुम वाकई होशियार हो। नाम कमाओगे केरकर ने कहा। कुछ देर बाद वह फिर बोला तुम्हें एक बार अध्यक्ष के सामने बोलना होगा। वे भी एकदम खुश हो जायेंगे।

खुद कोस्टा को अपनी स्थिति का सही एहसास हुआ। पहली बार। तबसे वह और भी मेहनत से काम करने लगा। घूमने लगा। दूसरों के भाषण

सुनने लगा। खाली वक्त म या ता वह लायब्रेरी म बठता या यूनियन क
आफिस म किसी किताब म खोया रहता।
अखबार वह चाव स पढ़ता। फिर यूनियन ने उस अपने आफिस म
रख लिया तो उसन कारखान वाली नौकरी छोड़ दी।
पढ़न क साथ-साथ कोस्टा न झगड़ा फिसाद म भी हिस्सा लिया। दो
साल म कोस्टा पेड़-सा बढ़ गया था। खूब काम करना और पेट भर खाना
यही उसकी दिनचर्या थी। विरोधी मजदूरों को अँधरे म पीटना विरोधी
पार्टियो की मीटिंग म ऊधम मचाना इन बातो म भी उसने खूब नाम कमा
लिया था। उम्र क बीसवें साल म ही उसम तीस साल की ताकत आ गयी
थी। अपन भाषणो की वजह स वह काफी लोकप्रिय हो गया। अब वह
लेबर कोर्ट म भी यूनियन के काम देखन लगा। करकर म आगे तो वह कभी
का निकल चुका था। काम म मदद देने के लिए रखे जान वाला डीकोस्टा
लीडरी म कब आग निकल गया इसका पता करकर को न चला।
पार्टी म और यूनियन म डीकोस्टा की जगह और रुतबा बढ़ने लगा तो
उसे उनकी कुछ बुराइयां का एहसास भी होन लगा। स्वार्थ पर ध्यान जाने
लगा। पार्टी क घटिया इरादे समझ म आने लगे। पार्टी के कुछ लीडरों की
ओछेपन की स्थिति पर ध्यान जाने लगा। पार्टी की इज्जत बढ़ाने क
लिए आंदोलन करना उसे कतई पसद न था। आंदोलन के लिए वजह होनी
चाहिए। और न्याय के लिए मिनिस्टर के कहने पर आंदोलन वापस लेना
यह भी उसे पसन्द न था। अगले चुनाव म उस वक्त का यूनियन सेक्रेटरी
कांग्रेसी विधायक बन गया तो रहस्य उसकी समझ मे आ गया।
पार्टी और यूनियन के लीडरो के फ्लट और उनके लफड़े देखकर उसे
परेशानी होने लगी। रिटज म अच्छी-खासी पार्टी खाकर य लोग झुग्गी
बस्ती म समाजवाद की दुहाई किस तरह देते हैं इसी बात पर उसे अचरज
था। उसका गुस्सा बढ़ रहा था। पार्टी के इरादे अस्पष्ट और उलझन वाले
हैं यह बात उसके ध्यान म आने लगी। आज के जर्जर समाज की जगह
नये समाज की रचना वाला पार्टी का मनीफेस्टो रंगीन जरूर था। लेकिन
देखकर उसे लगने लगा था कि यह सब जनता को धोखे म रखन के लिए ही
है। कुछ लीडर जरूर ठीक थे ईमानदार थे।
और पार्टी का मजदूर आन्दोलन सिर्फ दिखावा है यह जब उसकी समझ
म आया तो वह और भी ज्यादा परेशान हो गया। यह जानकर तो वह
और भी भड़क गया कि मजदूर यूनियन का उपयोग सिर्फ पार्टी के लिए
किया जाता है। एक कारखाने का आन्दोलन तेजी पर था तभी पार्टी ने
उस वापस लेने का फैसला दे दिया। डीकोस्टा को गुस्सा आ गया। मजदूरों

की माँग वाजिब होने और आन्दोलन तेजी पर होने के बावजूद भी आंदोलन वापस क्यों लिया जाय? सिर्फ इसलिए कि मालिक बात करने का आश्वासन दे रहे हैं? पता लगाने पर असलियत सामने आयी कि मालिक ने पार्टी को चुनाव के लिए काफी पैसा दिया है।

तभी से कोस्टा के झगड़े लीडरों के साथ बढ़ने लगे। ऐसे ही एक आंदोलन के समय उसका यूनियन के सेक्रेटरी के साथ मतभेद हो गया। वह सेक्रेटरी खुल्लमखुल्ला मालिक की गलत शर्तें करार में शामिल किये जा रहा था। कोस्टा ने उसे उसकी गलती समझाने की कोशिश की लेकिन वह समझना ही न चाहता था। कोस्टा को भी गुस्सा आ गया। और उस यूनियन से निकलकर उसने अपनी दूसरी यूनियन बना ली। कोस्टा की लोकप्रियता की वजह से पुरानी यूनियन के पचहत्तर प्रतिशत लोग कोस्टा की ओर आ गये।

तभी से कोस्टा तेजी से आगे बढ़ रहा है। बिलकुल अलग और नितांत मजदूर आंदोलन चलाने की बात उसने तय की। किसी भी पार्टी के साथ संबंध नहीं जोड़ना है यह बात भी उसने तय कर ली। कई लालच थे धोखा भी बहुत था। कोस्टा अपनी बात पर अड़ा हुआ था। उसकी यूनियन बढ़ती जा रही थी। नये नये क्षेत्रों पर उसकी यूनियन का कब्जा होता जा रहा था। उसकी यूनियन अपनी लड़ाई सफाई के साथ चलाये जा रही थी। कोस्टा जेल जाता था पुलिस की लाठियाँ खाता था और ज्यादा से ज्यादा लोकप्रिय होता जा रहा था। मजदूर लीडर की हैसियत से उसका रौब जम गया था। यूनियन के जरिये वह कई तरह के आंदोलन चलाया करता था। सफाई आंदोलन ज्यादा काम आंदोलन भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन स्मगलिंग विरोधी आन्दोलन—इस तरह के आंदोलनों से वह सारी बम्बई हिला देता था।

कोस्टा मजदूर आन्दोलन में इतना व्यस्त हो गया था कि उसे अपनी जिन्दगी का ध्यान न रहा था। पर उसका व्यक्तित्व रौबीला था और उसके जैसे काम वाले आदमी के लिए बम्बई में लड़कियों की कमी नहीं थी। वह पार्टी में था तो पार्टी की लड़कियाँ उस पर जान देती थीं। पार्टी से हटने पर तो और भी ज्यादा। कोस्टा भी फिसड्डी न था। कोई कहे कि वह लड़की उस पर जान देती है तो वह भी यों ही कैसे रह सकता था? कितने धर्मों ऊँचे घरानों, बड़े बापों की लड़कियाँ उसके साथ रहीं इसका हिसाब तक उसने नहीं रखा। लेकिन उसने खुद को किसी के साथ उलझाया न था।

इधर बहुत सी बातों में उलझता जा रहा है इस का एहसास उसे

था। भायखला के फ्लैट में तो वह अनजाने ही उलझ गया था। नयी यूनियन के रजिस्ट्रेशन का मौका आया तो उसे आफिस की जरूरत पड़ी। भायखला का फ्लैट मिला। रजिस्ट्रेशन नहीं था, इसीलिए खुद के नाम पर लेना पड़ा। फिर गिरगाँव में मौके की जगह मिल गयी तो आफिस उधर ले गया। पर फ्लैट उसी के नाम पर रह गया। उसी तरह रह गयी सिल्विया। बेचारी नौकरानी की तरह सेवा करती रहती है। कोस्टा के सारे फ्लैट की देख रेख वही करती रहती है। उससे कोस्टा शादी नहीं करना चाहता यह इरादा नहीं है उसका। पर मन जरूर अटका हुआ है। यूनियन की तनखाह जीप और मिलने वाली सुविधाओं में कोस्टा उलझता जा रहा था। जब नीना को स्टेनो के तौर पर रखा था तो यह इसकी कल्पना भी नहीं थी कि उसके साथ इतना बँध जायेगा? और विनीता? डशिंग रविशिंग विनीता। विनीता ही पहली लड़की थी जिसके लिए कोस्टा खुद इतना परेशान था। फिर आंटी पर्णी ने शिवाजी पार्क के बँगले का लालच दे रखा है। क्या हमसे इतना मीठा बोलता है और हम उसे कैसे पचा जाते हैं? उसके किस कारखान में कितने गेयम हैं किस पैट्रोल पंप के लिए वह मेरा उपयोग करता है यह क्या हम नहीं जानते? या कि उसने जीप इतने सस्ते दामों पर दिलवा दी, इसलिए हम उसकी ओर ध्यान नहीं देते?

लेकिन मजदूर आंदोलन में आठ साल गुजारने के बाद भी एक बात कोस्टा की समझ में नहीं आ पाती थी या जानकर भी वह समझ नहीं पाता था। पार्टी के लीडरों और यूनियन के लोगों को वह जिस बात के लिए गालियाँ दिया करता था, वही बातें अब वह खुद कर रहा था। भायखला का फ्लैट ज्यादा अच्छा न हो पर काफी अच्छा ही था। बड़े होटलों में उसे खाने-पीने की आदत पड़ चुकी थी। आज ही एक गेट मीटिंग के बाद विनीता से मिलने वह होटल फरियास में रात का जाने वाला था। पहले उस बड़े होटल में खाना खाना मजदूरों को धोखा देने जैसा लगा करता था। अब दिन भर काम करने के बाद थकान मिटाने के लिए बढ़िया शराब के दो-तीन पैग लेने में उसे कोई हर्ज न लगता था। अब उसे पीने में परेशानी सी होने लगी थी। पहले से उसका सिर दर्द करने लगता था। डॉक्टर ने उसे बेडरूम एयरकंडीशंड करा लेने की सलाह दी थी। उसका आग वाला कमरा बेहद मामूली-सा रहा करता था। वह वहीं लोगों से मिला करता था। एक बार वह एक नेता से मिलने गया। उसने कोस्टा को अन्दर के कमरे में बुलवा लिया। कोस्टा देखते ही सकते में आ गया। मुलायम गलीचे मुलायम सोफासेट और एयरकंडीशनर से निकलने वाली

मुग्ध ! तभी उसे उस नेता के ढोंगीपन पर हँसी आ गयी थी। उसे उस पर गुस्सा भी आया था। लेकिन अब वह खुद उन्हीं रास्तों पर चल रहा था। उसे अपने पुराने आदर्श ध्यान में न आते थे। दृष्टिकोण की विशालता जरूर उसे महसूस होती थी। इतनी मेहनत क्यों करते हैं ? मजदूरों के लिए ही न ? सुबह से रात तक हम उनके लिए सर खपाते हैं तो क्या हम अपनी तबियत की फिक्र ही न करें ? वह ऐसी बातें सोचने लगा था। बस वह खुलकर इन पर उतना न सोचता था लेकिन इस तरह के विचार उसके मन में मछली की तरह उभर जरूर आते थे। और फिर वह दूसरे रास्तों के बारे में सोचने लगता था।

लेकिन कोस्टा जिन बातों से परेशान रहा करता था वे और ही थी। इतना भ्रष्टाचार वह अपने चारों ओर अपनी ही आँखों से देखता था। मजदूरों और आम आदमी पर किस तरह के अत्याचार हो रहे हैं इस बात का उसे पूरा पूरा एहसास था। कितने भी बोनस मिल जायें और कितनी भी तनखाह बढ़ती रहे फिर भी मजदूर की हालत में खास फर्क नहीं आने वाला। कुछ प्राईवेट कंपनियों के लोग जरूर ठीक जिन्दगी बिता रहे थे। लेकिन शहर की गरीबी कम होने की जगह लगातार बढ़ रही थी और यह सब वह अपनी खुली आँखों देख रहा था। कोस्टा को यह बात पूरी तौर पर मालूम थी कि कुछ मजदूरों के रहन सहन में बदलाव आने पर भी आज की सामाजिक व्यवस्था में कोई खास बदलाव नहीं आने वाला है। ऐसा सोचना भी मजदूरों को सरासर धोखा देना है। अगर वाकई बदलाव लाना है तो क्रांति की जरूरत है। लेकिन इतना जानते हुए भी क्रांति करने और अपना सब कुछ छोड़ देने की इच्छा उसमें न बची थी। दस साल पहले यह समझ आ जाती तो वह बिना आगा पीछा सोचे अपने-आप को उसमें लगा देता। लगता था कि अब वह वक्त जा चुका है। लगता था कि जैसे उसके पाँव जमीन में गाड़ दिये गये हैं। तनाव दोनों ओर से था। कई क्रांतिकारी उसे अपनी ओर खींचने की कोशिश में थे। उसी तरह बड़े लोग भी कई तरह के लालच देकर उसे अपनी ओर खींचने की कोशिश में लगे हुए थे। इन तनावों के बीच वह कुछ भी तय न कर पा रहा था। उसका काम उसी गति में चल रहा था। काम में ढिलाई न थी। तेजी भी कम न थी बल्कि कुछ तेजी ही थी। काम भी बढ़ते जा रहे थे। लेकिन मन की सतह पर इस तरह के विचार चींटियों की तरह काट काट कर उसे परेशान जरूर किया करते थे। कभी कभी तो वह इतना परेशान हो जाता था कि इन ख्यालों को भूलने के लिए वह सुबह से रात तक सिनेमा देखा करता था। दिन या बीत जाय तो खुश हो जाता था। फिर दूसरे दिन से वह

अपने आप को काम मे उलझा देता था ।

दयानद पानिटकर ने कोस्टा को नाके पर उतार दिया तो कोस्टा को अच्छा लगा । उसकी भी हथेलियों पर पसीना आ गया था । इतनी तेज रफ्तार वाली मोटर म वह पहली बार बठा था । कई जगह लगा कि अब मोटर ट्रक से भिड जायेगी । और आखिरी ब्रेक तो दयानद न इस तरह मारा था कि कोस्टा दिल थामे बठा रह गया था । उसके हाथों को झटका सा लगा था । ब्रेक की तीखी आवाज से उसका दिल दहल गया था ।

पहले कोस्टा को लगा दयानद ने शराब पी रखी है । लेकिन उसका चेहरा सफेद पडा हुआ लग रहा था । और इतनी सुबह शराब ? फिर दयानद इतना उत्तेजित क्यों हो गया था ? उसकी आँखें तनाव से भरी क्या लग रही थी ? वह किससे घबरा गया ? उसका चेहरा फक पड गया था जसे उसकी गर्दन पर भूत सवार हो गया हो । बातें करने के दौरान लगता था कि उसकी साँस तेज हो गयी है । पर क्यो ? क्या वह मुझसे डर गया था ?

कोस्टा विश्वास न कर पा रहा था । लेकिन जब सोचने लगा तो उसे विश्वास होने लगा । नुक्कड पर कोस्टा ने हाथ दिया था तब दयानद की गाडी कुछ आगे बढ चुकी थी । कोस्टा ने दो-तीन बार हाथ से इशारा किया तब कहा गाडी रुकी थी । मेरी ओर देखते ही उसका चेहरा फक पड गया था । यहाँ उतरने तक उसने नजरें न मिलायी थी । उसे लगा कि वह उसे उतारने के लिए उतावला है ।

चलते हुए कोस्टा सोचता रहा और पान की एक दुकान पर आ गया । दुकान के सामने दो तीन लोग खडे हुए थे । पान सिगरेट लेकर जब वे चल गये तो कोस्टा ने मसाला पान माँगा । फिर यह देखकर कि इर्द गिर्द कोई नहीं है उसने पानवाले से पूछा 'क्यो उस्ताद सब ठीक है न ?'

'हाँ—साब । बिलकुल ठीक' पानवाला पान लगाते हुए बोला । उसने भी इधर उधर निगाह डाली और फिर एक मुडा-तुडा कागज कोस्टा की ओर बढा दिया । पान देते हुए बोला 'परसो राह देखी थी साब ।'

कोस्टा ने पान मुँह म डाल लिया और कागज जेब म रख लिया । पसे देकर वह चल दिया । तभी दो-तीन लोगों ने उसे सलाम किया ।

इधर किधर कोस्टा साब ?

'टक्सी ढूँढ रहा हूँ ।'

तभी एक टक्सी उसके करीब आकर रुकी ।

चलना है, कोस्टा साब ?'

टैक्सीवाला कोस्टा की पहचान का था।

टैक्सी में बैठकर कोस्टा ने पान वाले का दिया हुआ कागज खोलकर देखा। उसमें अंग्रेजी में कुछ लिखा हुआ था। उनमें कुछ मंत्रियों के नाम और विदेशी बैंकों में उनका कितना पैसा है इसकी लिस्ट थी। मंत्रियों और बैंकों के नाम अंग्रेजी में लिखे हुए थे।

कोस्टा हँस दिया। उसकी फाइल में एक और चीज आ गयी थी। उसका काटकट काफी अच्छा साबित हो रहा था। स्मगलिंग के बारे में जानकारी इकट्ठा करके जब वह अपने भाषणों में ब्यौरे देने लगा तो उसे काटकट खुद-ब-खुद मिलने लगे। इनमें से कुछ धंधे के थे और कुछ बड़े अफसर। पान वाला काटकट तो दिल्ली की सी० आई० डी० के एक बड़े अधिकारी का था। कुछ ऐसे भी थे जो सोचते थे कि उन्हें जितनी जानकारी है उसका वे खुल्लमखुल्ला उपयोग नहीं कर सकते। इसलिए वे खुद-ब-खुद आकर कोस्टा को जानकारी दे जाते थे। कुछ जानकारी मजदूरों की ओर से भी मिल जाती थी। उसकी फाइल जैसे-जैसे मोटी होती जाती थी वैसे-वैसे वह ज्यादा परेशान होता जाता था। किसे किसका इसमें कितना गहरा हाथ है यह जानकर वह हैरत में आ जाता था। उसकी फाइल में न जाने कितने राज्यों के मंत्रियों के नाम थे और उनके काम भी। बम्बई के तो उसमें बहुत-से लोगों के नाम थे।

लेकिन इस तरह की फाइल बनाकर कोस्टा क्या कर सकता था? वह खुल्लमखुल्ला किसी का नाम न ले सकता था। गरज कि कुछ चीजें छोड़ दी जायें तो उसके पास लिखित में कोई सबूत न था। मंत्रियों के माल और आर्थिक प्रगति के आँकड़े जरूर थे। उनके रिश्तेदारों के आँकड़े थे लेकिन उन आँकड़ों को उसी तरह छापने के लिए कोई तैयार ही न होता था। यह काम कोस्टा को खुद-ब-खुद करना था। अय्यर की आज की कहानी तो थी ही थी। फैक्ट्स कुछ भी न थे। इसलिए उस कहानी को कोई भी गंभीरता से नहीं लेगा। अय्यर को नाम और आँकड़े दे दिये जायें तो वह छाप देगा? और फिर आज मुख्यमंत्री ने बुलवाया था। किसलिए?

कोस्टा बेचैन हो गया। उसमें असुरक्षा का भाव जागने लगा। उस वक्त पान की दुकान के करीब सलाम करने वाले कौन थे? मजदूर तो बिलकुल न थे, पहचान वाले भी नहीं थे। लेकिन उन्हें देखा जरूर है, कहीं-न-कहीं।

स्मगलिंग के बारे में जबसे वह बोलने लगा है तब से कईयों ने उसे बचकर रहने की बात कही है—जरा सम्हलकर इन लोगों के जाल बड़ी दूर-दूर तक फैले रहते हैं। हो सकता है कि जान पर भी आ बने।

कोस्टा रोजाना अखबार मे कोर्ट म स्मगलिंग पर चल रहे केस की खबरें पढ़ता रहता था। करोडो रुपयों का केस था। और अपराधी की ओर कौन-से बडे लोग हैं इसकी जानकारी कांटेक्ट के जरिये उसे मिल चुकी थी। केस उसके अदाज के अनुसार ही चल रहा था। लेकिन जरा लबा हुआ जा रहा था। आखिर म सरकार मामला वापस ले लेगी, इस बात की जानकारी भी उसे थी। बडे लोग बडा जाल बडा बसा! मैं अकेला इनसे कैसे भिड सकता हूँ ? कई पार्टियो के लोग उसकी सहायता जरूर करते हैं लेकिन साथ कोई नही देता। यही तो धोखा है। यही फँस गये तो ? बिलकुल ही अकेले पड जायेंगे।

डीकास्टा बेहद परेशान हो गया। उसने आँखें बन्द कर ली। टक्सी तेजी से जा रही थी। और ड्राईवर उस यूनियन के बारे म कुछ बातें बताये जा रहा था।

कोस्टा यूनियन के ऑफिस म पहुँचा तो मजदूरों की काफी भीड थी। यूनियन के दो-एक पदाधिकारी आला आये थे। अभी दस बजने म कुछ देर थी। लेकिन आफिस के सभी नौकर हाजिर थे। कोस्टा का आफिस आलीशान भले ही न हो पर अच्छा था। एक केबिन उसका था और सक्रेटरीज के लिए भी अलग दो केबिन थे। एक सेक्रेटरी लीगल एडवाइजर था। छोटी सी लायब्रेरी भी थी।

आफिस म पहुँचते ही कोस्टा अपने केबिन म दाखिल हो गया। उसने घटी बजाकर बॉय को बुलवाया और दो चाय का आर्डर दिया और बोला 'मामत बाई को भेज देना।'

दो मिनट बाद फाइलें लेकर नीला अदर आयी।

'गुड मार्निंग।'

मार्निंग-मार्निंग कोस्टा ने हँसते हुए कहा। नीला को देखते ही उसके मन का तनाव जाता रहा।

कामरे के मरने का वाल पता चली ?' कोस्टा ने पूछा।

'नही।'

अरे, आज सुबह ही गुजर गया। मैं तो उसे पहले ही अस्पताल म भर्ती करना चाहता था। एक अच्छा वर्कर चला गया।

तभी कामरे के मरने की खबर आफिस म बैठे मजदूरो के बीच फैल गयी। दस-बारह लोग आकर कोस्टा के इर्द गिर्द खड़े हो गये।

"अच्छा आदमी था।"

'झगडा फिसाद से वह डरता नहीं था साब।

"उस बार पुलिस ने उसे खूब मारा था, साब।"

कोस्टा तेजी के साथ डिक्टेशन दे रहा था और बिना रुके नीला डिक्टेशन ले रही थी। नीला जैसी फास्ट स्टेनो उसने अभी तक देखी न थी। उसके साँवले सौन्दर्य के साथ-साथ उसकी होशियारी पर वह खुश था। महत्त्वपूर्ण पेटीशन और चिट्ठियाँ ही वह उसे डिक्टेट कराता था। बाकी के खत नीला खुद लिखा करती थी और कोस्टा सिर्फ दस्तखत मार देता था। ब्रीफ बनाने में नीला बहुत होशियार थी। किसी भी विषय पर भाषण हो, दो घंटे के भीतर नीला लायब्रेरी से ऐसे आँकड़े और जानकारी ले आती थी कि कोस्टा खुश हो जाता था। कोस्टा की लोकप्रियता की वजह से उसे बड़े-बड़े क्लबों में डिनर और भाषण के लिए निमंत्रण आया करते थे। इन क्लबों का थोथापन कोस्टा को मालूम था। लेकिन उन लोगों के मुँह पर उन्हें गालियाँ देने के लिए कोस्टा जाया करता था। ऐसे वक्त पर नीला द्वारा तैयार ब्रीफ कोस्टा को बहुत पसंद आता था। कई मीटिंगों में तो कोस्टा उसे भी साथ ले जाता था।

आधे घंटे के भीतर कोस्टा ने दो पेटीशन लिखवा दिये। उसकी अंग्रेजी अच्छी थी। सिर्फ अभ्यास और बोलने से ही उसने इस भाषा पर कमाल का अधिकार हासिल किया था। उसे इस बात पर गर्व भी था। डिक्टेशन देते वक्त कुछ रुकावटें जरूर आ जाती थीं। कभी फोन आता। कभी कोई मजदूर कोस्टा से मिलने अन्दर आ जाता। कोस्टा को उसकी बात सुन लेनी पड़ती। डिक्टेशन हो जाने के बाद कोस्टा ने पूछा, 'कैसा ड्राफ्ट हुआ है?'

'एक्सीलेंट।'

'टाइप करते समय गलतियाँ ठीक कर लेना।'

'आप भी अजीब हैं।'

'अजीब क्या? जल्दबाजी में डिक्टेशन दी है और तुम तो ग्रेजुएट हो।'

'आप भी अजीब।'

'अरे आज शब्द बहुत कम हैं तुम्हारे पास। अजीब शब्द के अलावा शब्द ही नहीं हैं?'

'आप तो ... ।'

'लवली। इस साड़ी में तो तुम बहुत खूबसूरत लगती हो।'

नीला एकदम खुश हो गयी। डिक्टेशन लेने में भी मजा है। नौकरी लगी तो यूनियन के आफिस का काम जम पायेगा या नहीं इसकी उसे फिक्र थी। मजदूरों से वास्ता पड़ेगा। लेकिन कुछ ही दिनों में उसे यह नौकरी रास आ गयी। और कोस्टा? उसने तो उसकी सारी जिन्दगी ही बदल दी थी। उसके साथ घूमने का मतलब है सुख-ही-सुख! कोस्टा के लिए वह

चाहे जो करने के लिए तयार थी। पर वह यह भी जानती थी कि उसी की तरह और भी लडकियाँ कोस्टा पर मरती हैं। अमीर खूबसूरत उससे मई मामले म अच्छी। नीला तो सिर्फ यूनियन की नौकर थी। कोस्टा का उसस मोहब्बत है इस बात को वह जानती थी। लेकिन वे कितना आग जा सकेंगे ? क्या मोहब्बत के आखिरी मुकाम तक पहुँच पायेंगे ? वह परशान हो जाती।

तभी जसे कुछ याद आया हो, कोस्टा ने जेब से वह कागज निकाल लिया।

ह इसे देखो ज़रा। आज मिला है।

नीला न पढ़कर दखा। उसका चेहरा परशान सा नजर आया।

मैंने कहा था न इन बातों को छोड दन के लिए। अभी भी चल ही रहा है। डजरस है।

कुछ तो करना ही होगा।

क्या करेंगे ? मेरी समझ म तो कुछ नही आता। आप अकेल क्या कर लेंगे ?

मरी समझ म नही आ पाता। कुछ और मसाला मिल जाय तो किसी पार्टी क एम० पी० क पास भज देंगे।

लेकिन मुझे तो विश्वास नही है।'

आज चीफ मिनिस्टर से एपाइंटमट है तीन बजे।

नीला ने हाथ के कागज पर फिर निगाह डाली। "इसी के बारे म ?"

पता नही। उन्होने खुद बुलवाया है।

कुछ देर बाद कोस्टा न कहा कुछ तो करना ही होगा वस्टन स्टार की आज की कहानी पढ़ी ? '

पढ़ ली।

डीटल्स दनी चाहिए थी।

किसलिए ? जो कुछ छपा है वह क्या कम है ?'

क्या ? '

'क्या मतलब ? नीला ने कहा अय्यर ने किससे जानकारी ली है यह इसी कहानी स साफ हो जाता है।

' इसकी वजह तो तुम भी जानती हो।'

ना कोई भी जान सकता है। एंटी स्मगलिंग का नाम आये तो लोग सीधे आपका ही नाम लेते हैं।'

अच्छा! कोस्टा जोर से हँस दिया। फिर बोला, "अब तो मैंन अय्यर को पूरी फाइल दिखाने का फसला कर लिया है।'

वह क्या और भी कुछ छापने वाला है? देखिये आई काशन यू।

वह बात नहीं। अय्यर सिसीयर है। वह कुछ तो रास्ता बनायेगा ही। उससे बातें करनी होंगी।"

नीला ने डायल घुमाया। कोस्टा ने अय्यर से एपाइंटमेंट ले ली।

बाद में कोस्टा ने पूछा 'शाम को क्या करने वाली हो?'

आप क्या करने वाले हैं?'

नेट मीटिंग।' कोस्टा ने अजीब सा मुँह बनाया।

उसके बाद?"

कालाबा में मौसी के यहाँ जाना है।'

नीला का चेहरा मुरझा गया।

कोस्टा बोला मुझसे खाना हो नहीं पायेगा। ऑनेस्टली। कल शाम को मेरा कोई प्रोग्राम नहीं है।

कोस्टा झूठ बोलना नहीं चाहता था। लेकिन विनीता देशमुख से उसने काफी पहले कह रखा था। उसने तय किया कि कल की शाम नीला के लिए रखेगा।

कल हम लोग कहीं खाना खाने चलेंगे शाम को क्यों?

मेरी ट्यूशन है।'

"से मारो गोली। नाना क्या कहते हैं?'

ठीक हैं। आपको याद करते हैं।

खाने के बाद पहुँचाने आऊँगा तब देखूँगा।'

नीला चलने लगी तो उसने पूछा—

'आज के केस की फाइल निकालकर रख दी है न?'

'हाँ, तैयार है। इसका क्या करूँ?" कोस्टा के दिये कागज की ओर उसने इशारा किया।

कोस्टा ने कहा, फाइल में न रखो। लाकर में रख दो।'

आज सी० एम० से मुलाकात के समय फाइल ले जायेंगे?'

कोस्टा ने कुछ पल सोचा फिर बोला "नहीं। बिलकुल खाली हाथ जाने वाला हूँ।

'लंच ?

आज छुट्टी। वक्त ही नहीं है।'

मैं डिब्बा लायी हूँ। दूँ आपको?"

'और तुम?'

'मैं बाद में खा लूँगी।

भेज दो। कुछ खा लूँगा। तुम्हारे लिए बचा रखूँ।"

चाह जो करने के लिए तयार थी। पर वह यह भी जानती थ
तरह और भी लडकियाँ कोस्टा पर मरती हैं। अमीर खूबसूर
मामला म अच्छी। नीला तो सिफ यूनियन की नौकर थी। को
मोहब्बत है इस बात को वह जानती थी। लेकिन वे कि
सकेंगे ? क्या मोहब्बत के आखिरी मुकाम तक पहुँच पायेंग ?
हो जाती।

तभी जसे कुछ याद आया हो, कोस्टा ने जेब से वह का
लिया।

हू, इसे देखो जरा। आज मिला है।

नीला न पढ़कर देखा। उसका चेहरा परेशान सा नज़र आ

मैंने कहा था न इन बातो का छोड़ देने के लिए। अभी १
रहा है। डजरस है।'

कुछ तो करना ही होगा।

क्या करेंगे ? मेरी समझ म ता कुछ नही आता। आप अ
कर लेंगे ?

मरी समझ म नही आ पाता। कुछ और मसाला मिल जाये त
पार्टी के एम० पी० क पास भज देंग।'

लिये मुझ ता विश्वास नही है।

आज चीफ मिनिस्टर स एपाइटमट है तीन बज।

नीला न हाथ क कागज पर फिर निगाह डाली। "इसी के बारे मे
पता नही। उन्होंने खुद बुलवाया है।'

कुछ देर बाद कोस्टा ने कहा कुछ तो करना ही हागा बन
स्टार की आज की कहानी पढ़ी ?'

पढ़ ली।

नीटरम देनी चाहिए थीं।

किसलिए ? जो कुछ छपा है वह क्या कम है ?'

'क्या ?

'क्या मतलब ? नीला ने कहा अय्यर न किसस जानकारी ली है
यह इसी कहानी म साफ हो जाता है।

इसकी वजह तो तुम भी जानती हो।

ना कोइ भी जान सकता है। एटी स्मगलिंग का नाम आये तो लोग
सीध आपका ही नाम लेते हैं।

अच्छा! कोस्टा जोर से हस दिया। फिर बोला, "अब तो मैंने
अय्यर को पूरी फाइल दिखाने का फसला कर लिया है।'

वह क्या और भी कुछ छापने वाला है ? देखिये आई काशन यू।"

वह बात नहीं। अय्यर सिंसीयर है। वह कुछ तो रास्ता बतायेगा ही। उससे बातें करनी होंगी।"

नीला ने डायल घुमाया। कोस्टा ने अय्यर से एपाइंटमेंट ले ली।

बाद में कोस्टा ने पूछा शाम को क्या करने वाली हो ?

आप क्या करने वाले हैं ?

गेट-मीटिंग। कास्टा ने अजीब सा मुँह बनाया।

उसके बाद ?"

कालाबा में मौसी के यहाँ जाना है।"

नीना का चेहरा मुरझा गया।

कोस्टा बोला मुझसे खाना हो नहीं पायेगा। ऑनेस्टली। कल शाम को मेरा कोई प्रोग्राम नहीं है।

कोस्टा झूठ बोलना नहीं चाहता था। लेकिन विनीता देशमुख से उसने काफी पहले कह रखा था। उसने तय किया कि कल की शाम नीला के लिए रखेगा।

कल हम लोग कहीं खाना खाने चलेंगे शाम को क्यों ?"

मेरी ट्यूशन है।'

बस मारो गोली। नाना क्या कहते हैं ?'

ठीक है। आपको याद करते हैं।

खाने के बाद पहुँचाने आऊँगा तब देखूँगा।

नीला चलने लगी तो उसने पूछा—

'आज के केस की फ़ाइल निकालकर रख दी है न ?'

'हाँ तैयार है। इसका क्या करूँ ? कोस्टा के दिये कागज़ की ओर उसने इशारा किया।

कोस्टा ने कहा फ़ाइल में न रखो। लॉकर में रख दो।'

आज सी० एम० से मुलाक़ात के समय फ़ाइल ले जायेंगे ?'

कोस्टा ने कुछ पल सोचा, फिर बोला 'नहीं। बिलकुल खाली हाथ जाने वाला हूँ।

लंच ?

आज छुट्टी। वक्त ही नहीं है।

मैं डिब्बा लायी हूँ। दूँ आपको ?"

"और तुम ?

'मैं बाद में ला लूँगी।'

"भेज दो। कुछ ला लूँगा। तुम्हारे लिए क्या रखूँ।"

ना।

क्यों ? ऐसे नहीं चलेगा।"

नहीं। वैसे कोई बात नहीं। आप खा लीजिये।"

"नहीं, रखूँगा तुम्हारे लिए भी।

'ठीक है। शाम को आफिस आयेंगे ?"

सी० एम० से मुलाकात के बाद वक्त बचा तो आऊँगा।

राह देखूँगी।

नीला केबिन से निकल गयी तो कोस्टा के सीने में अजीब सा दर्द उठा। आह—नीला ! उसके बाल और हाथ ! उसमें अपराध भाव जाग रहा था। अभी विनीता को फोन करके शाम का खाना कैंसिल कर देना चाहिए। पर उसके घर पर फोन कैसे कर सकते हैं ? नहीं वह तो होटल में आयेगी और बैठी रहेगी यों ही। क्या फर्क पड़ता है। पर नीला को परेशान न करना चाहिए। नीला पक्की है। हो सकता है रोजाना मेरा नाम लेती हो। एक-दो दिन या अगले सप्ताह तक वह मुझसे जरूर पूछेगी। फिर क्या जवाब देंगे ? हम इस तरह अनिश्चय की स्थिति में क्यों रहते हैं ? नीला जवान है। मुझसे पंद्रह साल छोटी है। वह हिन्दू है। नाना मान जायेंगे ? मेरा मन क्या नहीं होता ? नीला जैसी साथिन हो तो जिन्दगी अच्छी गुजर सकती है। हर्ज ही क्या है ?

सच पूछा जाये तो कोस्टा ने इस विषय में कभी ज्यादा सोचा ही न था। लड़कियों के बारे इतना सोचने की आदत उसे न थी। ऐसा किया होता तो उसके बाल कभी के सफेद हो चुके होते। गले पड़ने वाली लड़की को मना नहीं करना चाहिए उसका ख्याल था। पर नीला गले पड़ने वाली लड़की नहीं है। उसके पिता पार्टी के पुराने वर्कर हैं। वे बीमार पड़े इसलिए लड़की को नौकरी की जरूरत पड़ी। कोस्टा ने नौकरी दे दी। और वह खुद नीला पर फिदा हुआ था। खुद-ब-खुद न जानते हुए। वह डिक्टेशन लेते वक्त नीची गर्दन किये बैठती थी और कोस्टा लगातार उसकी ओर देखा करता था। नीला खामोश रहने वाली लड़की थी। इसी वजह से उसकी होशियारी एकदम समझ में न आ सकी। वह डिक्टेशन लेती तो लगता, बड़ी होशियार है। एक बार शुरू करती तो खत्म होने पर ही रुकती थी। कोस्टा को सोचने के लिए जरूर कुछ वक्त लग जाता था। तब वह पेंसिल मुँह पर रख धीरे से कोस्टा की ओर देख लेती थी। और कोस्टा उसके इस तरह देखने से परेशान हो जाता था। उसने पहला ब्रीफ तैयार करके कोस्टा को दिया तभी से कोस्टा उस पर बेहद विश्वास करने लगा। और कोस्टा द्वारा विश्वास किया जाना नीला को भी पसंद आया। फिर तो पहचान

बन्ती ही गयी। ढलान पर वाहन जैसे खुद-ब-खुद तेजी से उतरता है वैसे ही दोनों के बीच प्रेम तेजी से पनपने लगा।

विनीता दशमुख की बात कुछ और ही थी। एक क्लब की डिनर-मीटिंग में उसने पहली बार देखा और उसका भाषण सुनकर वह इतनी खुश हुई कि उसने भाषण के बाद उससे कुछ सवाल भी पूछे। उसके सवालों से यह जाहिर था कि उसे राजनीति के बारे में कुछ भी नहीं पता था। लेकिन वह तेज है, यह जरूर जाना जा सकता था। कोस्टा ने सवालों के जवाब देते वक्त उसका काफी मजाक बनाया था। वह भी उसे अच्छा लगा था और खाने के वक्त वह खुद कोस्टा की बगल में बैठ गयी। कोस्टा के आटोग्राफ उसने लिये और भाषण बेहद पसंद आने की बात कह दी।

तभी से इस तरह क्लब के भाषणों में वह जरूर हाजिर होती थी। उसे फोन किया करती थी। वह एक मिनिस्टर की लड़की है यह बात जब कोस्टा को मालूम हुई तो वह हैरत में आ गया। कोस्टा उसकी गोरी चमड़ी पर मरता था, उसकी आँखों पर रीझा हुआ था। विनीता वाकई खूबसूरत थी। बुद्धिमान भी थी। सायकालोजी में एम० ए० कर वह अब पी० एच डी० कर रही थी। न मिलने की स्थिति में वह पहले सप्ताह में एक बार फोन कर लिया करती थी।

एक दिन रात को थका हुआ कोस्टा बिस्तर पर लेटा हुआ था कि फोन की घंटी बजी।

हलो कोस्टा आइ वांटेड टु टेल यू दिस मच बिफोर ओ कोस्टा कोस्टा आई कांट लिव विदाउट यू।

हलो कौन बोल रहा है? साफ सुनायी नहीं दे रहा है।'

माई गॉड! कोस्टा यू आर ए बास्टर्ड! माई गाड! मैं तो यहाँ तुम्हारे लिए परेशान हूँ। और तुम पूछ रहे हो, कौन हूँ? माई गाड!'

'सच—कौन बोल रहा है? प्लीज?' दूसरी तरफ से औरत की आवाज और लम्बी साँस सुनायी दे रही थी।

इस इट कोस्टा!'

कौन विनीता—?

फिर लंबी साँस। खुशी की ध्वनि भी हो सकती है।

विनीता क्या कर रही हो इस वक्त?'

'कोस्टा यू आर ए फूल!" विनीता की आवाज बेहद व्याकुल-सी थी।

'क्या हुआ—?'

'कोस्टा क्या हुआ कोस्टा वाकई अभी तुम कुछ नहीं जानते। माई

एम डाइग विदाउट यू।'

अभी इसी वक्त?'

फिर कब?'

कल।"

'क्षमा भी।'

'पर मुझे काफी लोग जानते हैं। तुम पर आ जायगा। कहीं तुम मेरे साथ किसी को नजर आ गयी तो ?'

उसकी फिक्र तुम न करो कोस्टा। मैं जानती हूँ जगह। आई विल अरेंज।'

"खना कहीं तुम्हारे पिताजी ?"

आई केअर ए डम। सच मुझे आश्चर्य है कोस्टा। तुम अभी तक कैसे नहीं जान पाये ? मैंने जब तुम्हें पहली बार देखा था तभी तय कर लिया था और यू नो आई हट माई फादर। उनकी कुछ बातें मैं तुम्हें बताऊँगी। ही 'ज रिअली स्टुपिड। सिर पर टोपी पहन लें तो कैसा अजीब लगता है !'

'अरे कोई सुन रहा होगा।'

दूसरी तरफ से हँसने की आवाज।

यहाँ सुनने के लिए मेरे कुत्ते और नौकर के अलावा कोई भी नहीं है। हमारे पिताजी अभी घर लौटे ही नहीं हैं। आयेंगे तो होश में न होंगे। कहो, कल कहाँ मिलोगे ?"

नाऊ लुक विनीता आई वान यू ।

शट अप। कल सुबह फोन करूँगी।'

कल तो मुझे बेहद काम है।

आह कास्टा कोस्टा यू आर ए चाइल्ड। लेकिन कोई बात नहीं मैं सब सिखा दूँगी।'

यू सरप्राइज मी ।'

तो मुझे तुम पर आश्चर्य है। कल सुबह फोन करूँगी ।'

सात से पहले करना। सात के बाद मैं बाहर निकल जाऊँगा।'

'डोंट वरी मैं आज सोऊँगी ही नहीं।'

'गुड नाइट !

अरे और कुछ बोलो न ?'

विनीता, यू आर ए स्वीट गर्ल ! लेकिन मैं अभी थका हुआ हूँ, दिन भर काम करता हूँ न ?'

पुअर बाय ! मुझे तुम्हारी जरूरत है। आई विल लुक आफ्टर यू।"

तुम सपने जसी हो ।

ना । देखोगे खुद ही ।

गुट नाइट ।

'फिर कल सुबह । गुड नाइट । '

और तब स यह शुरू हो गया । विनीता का प्रेम बहुत तेज था और कोस्टा भी उसके साथ वहा जा रहा था । उसकी उफनती जवानी के सामने कोस्टा गर्दन झुकाये जा रहा था । विनीता जो चाहती सो करवा लेती । कोस्टा को भी यह सब अच्छा लगता था । वह राजनीति म दखल न रखती थी । लेकिन अपने बाप की राजनीति उसे पसन्द न थी । उसे लगता था कि राजनेता के जो भी खिलाफ हो वह उसका अपना है ।

मन मे जो आये उसको पूरा करके छोडना विनीता की यही आदत थी । उसने कोस्टा से शादी करने का फैसला कर लिया था । और इसी वजह स कोस्टा परेशान था । कोस्टा का अभी तक शादी करने का कोई विचार नहीं था । सिल्विया कितनी पीछे पडी थी । लेकिन कोस्टा ने उसे तरजीह न दी थी । लेकिन पता नहीं क्यो आठ साल उसके साथ गुजारने के बावजूद उससे शादी करने का खयाल तक उसके मन म नहीं आया था । कहा वह शादी से डरता तो नहीं कभी कभी उसे ऐसा लगने लगता था । सिल्विया डायवोर्सी थी । आखिर म चिढ़कर उसने एक बड़े डाक्टर को बाय फ्रेंड के तौर पर रख लिया था । कोस्टा स उसकी पहचान भी करवा दी थी । अगले महीने वह शादी करने वाली थी । कोस्टा को जरा भी एतराज न था । उसे कुछ महसूस ही नहीं होता था ।

लेकिन इस दौरान उसका मन नीला की ओर खिंचता जा रहा था । उसे खुद इस पर अचरज था । लुभावने प्रेम और माशूक अदाओ के आक्रामक सहवास का सुख विनीता देती थी फिर भी चुप रहने वाली ने उसका दिल जीत लिया था । खूबसूरती की दृष्टि से नीला विनीता से आगे पीछे थी लेकिन फिर भी कोस्टा को नीला का आकर्षण जबरदस्त लगता था । और जब विनीता शादी की बात चलाती तो कोस्टा की आंखों के आगे नीला आ जाती थी ।

खाना खत्म होने स पहले ही रघू केबिन म आया । रघू अमीर बाप का बिगड़ा हुआ लड़का था, उम्र अठाईस साल । बिगड़ा हुआ मतलब दुनिया की दृष्टि म । तीन साल से रघू ने दाढ़ी न बनायी थी । भारत मे टोटल क्रान्ति कैसे होगी इस बात पर वह गम्भीरता स सोच विचार करता था । यही उसका पागलपन था । इसी लिए वह एशियाटिक लाय ब्रेरी म सुबह से शाम तक पढ़ने के लिए बैठा रहता था । कोस्टा को क्रांति

का नेता बनाना उसका लक्ष्य था।

कंधे से बैग उतारकर कोस्टा की टेबिल पर रखते हुए रघू ने कहा—

जल्दी में हैं शायद। मैंने सुना ।

हाँ बस निकल ही रहा हूँ। साढे ग्यारह बजे केस है लेबर कमिश्नर के यहां।'

मरो यू ही—यू ही केस लडते मर जाओगे। अच्छा काम तो तुम्हारे हाथों होगा ही नही।

कोस्टा सिर्फ हँस दिया। पास पडा कागज उठाकर उसने हाथ पोछ लिये। एक गिलास पानी पिया। फिर बोला सुबह से तुमने शायद कुछ खाया नही है।

ना। देश के करोडो लोगो को एक वक्त का खाना नसीब नही होता और हम दोनो वक्त खाकर चरबी बढाते रहें—यह तो शोषण है जनाब।"

तुम वाकई नाराज नजर आते हो?'

मैं तो हमेशा के लिए नाराज हू।

चलो मैं टक्सी से जा रहा हू। रास्ते म बातें करेंगे।"

रघू ने बग कधे पर लटका लिया और कोस्टा के साथ निकलने लगा। जाते वक्त कोस्टा ने लच बाक्स बद किया और नीला की टेबिल पर रख दिया। नीला ने फाइल पकडा दी। उसे लेकर वह रघू के साथ बाहर आ गया।

टैक्सी म बठने पर कोस्टा ने कहा 'अब बोलो। क्या तय किया है?'

रघू ने नाक फुलायी पीले दात बाहर निकाल सिगरेट सुलगा ली और बडी कडवाहट से हँसते हुए बोला यही मैं तुमसे पूछ रहा हूँ। तुम क्या करते वाले हो?

कोस्टा कुछ परेशान सा हुआ। बोला मैं तो अपनी समझ से जो करना चाहिए वही कर रहा हू। फिर कुछ रुककर बोला तुम जरूर अपनी जिन्दगी तबाह किये जा रहे हो।

रघू ने सिगरेट के कश खीचे। फिर बोला, ढोंगीपन की भी हद होती है। अपने दिल से कहो कोस्टा तुम जो कुछ कर रहे हो वह क्या काफी है? क्या तुम यही सोचते हो? तनखाह बढवाने के लिए आदोलन करना आश्वासन मिलते ही पीछे हट जाना, लेबर कोर्ट म केस लडना एटी-स्मर्गालिंग, ऐंटी-करप्शन के लिए आदोलन चलाना स्टट छेडना और

प्रसिद्धि पाना—बस यही तुम्हारा लक्ष्य है ?'

'देखो तुम मुझे मत पटाओ। आज की हालत में यही हो सकता है मैं बड़ी ईमानदारी से कह रहा हूँ।'

'यही तो, यही तो' रघु की आवाज़ भारी हो गयी 'आज की हालत, आज की हालत में जो होगा वही करोगे। हालात बदलने की तुम्हारी इच्छा ही नहीं होती। गरज कि तुम भी इस स्थिति के रक्षक बन बैठे हो न ? और तुम्हारा सबसे बड़ा गुनाह यह है कि मजदूरों को भी तुम इस स्थिति में रक्षक बनाये जा रहे हो। सच मुझे तो तुम पर दया आती है। और चिढ़ भी होती है। तुम समझते हो कि तुम अपनी शक्ति से यह सब कुछ कर रहे हो पर यह तो तुम्हारा भोंदूपन है। मैं तो कहता हूँ जो कुछ कर रहे हो वह नाकाफ़ी है। तुम खुद इस बात को अच्छी तरह से जानते हो। और इतना होते हुए भी तुम यही कहते हो क्योंकि तुम भोंदू हो। ढोंगीपन में तुम भी दूसरे लीडरों से कम नहीं हो। और सच बात तो यह है कि सब-कुछ जानते-बूझते भी तुम अपने-आपको ईमानदार समझते हो। आम किस्म के लालच से तुम्हारा यह पालिटिकल करप्शन ज़्यादा बड़ी धाँधलेबाज़ी है। इसलिए तुम पर गुस्सा आता है। तुम से तो भ्रष्टाचारी लोग कम धोखेबाज़ हैं। वजह यह है कि उनकी ओर उँगली तो उठायी जा सकती है। उन्हें दुश्मन कहा जा सकता है पर तुम्हें नहीं।

रघु की आवाज़ काफ़ी ऊँची हो गयी थी। चेहरा लाल हो गया था। बीच में ही उसने बात बन्द की और सिगरेट का टोटा कुचलकर बाहर फेंक दिया।

फिर वह तीखेपन से हँस दिया। सिगरेट सुलगाते हुए बोला, 'तुम ज़रूर नाराज़ हो गये होगे, पर तुम्हें मैं यह सब सुनाना चाहता था।'

कोस्टा रुक गया। टकमी ने दरवाज़े को पकड़कर बाहर सड़क की ओर देखने लगा। फिर कुछ देर बाद बोला 'बोलो मैं अच्छी तरह से सुन रहा हूँ। अभी तुम और भी बोलना चाहते हो।'

'बोलता हूँ। तुम्हारी यह हालत क्यों हो गयी, यही बताये देता हूँ। तुम्हें शुरू शुरू में अच्छा माग-दर्शन नहीं मिल पाया। अब जब तुम कुछ समझने लगे हो तो एस्टेब्लिशमेंट के मेम्बर बन चुके हो। यूनियन की तन-ख़्वाह, जीप, पर्सनल लोकप्रियता, पशनेबल सोसाइटी में लेक्चर, मज़दूरों की मोहब्बत और अगला इलेक्शन जीतने—इन सभी ने तुम्हें करप्ट कर दिया है। तुम अब उलझ चुके हो और इन बेड़ियों को तोड़े बगैर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।''

कुछ देर रुककर फिर बोला 'कड़वा लग रहा है न ?'

कास्टो कुछ देर चुप रहा। फिर धीमे धीमे निश्चय के साथ बोला "तुम विश्वास करो या न करो रघू पर अभी जो कुछ तुम बोले ऐसे ही डायलाग दिन में रोजाना मैं अपने-आप से कर लेता हूँ ।"

'एक और गप्प ।'

'सुनो जैसे मैंने तुम्हारी बातें सुनी हैं वैसे ही तुम भी सुनो। मेरा रास्ता पूरी तौर से ठीक नहीं यह तो मैं भी जानता हूँ। पर इससे अच्छे रास्ते मुझे नजर ही नहीं आते। तुम्हारा रास्ता मुझे मान्य नहीं। इन हालात में तो मुझे वह सब पागलपन लगता है। और उसमें शायद सफलता भी हासिल नहीं हो सकती। मेरा रास्ता सीधा भले ही न हो पर उससे आगे जरूर बढ़ा जा सकता है। उससे कुछ बुरा तो होगा नहीं। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का कुछ तो मूल्य है ही। हिंसापूर्ण क्रांति से निर्मित व्यवस्था में व्यक्ति स्वातन्त्र्य की गुंजाइश बहुत ही कम हुआ करती है। आखिर जिंदगी में कुछ मूल्यों को तो देखना ही होता है न? मुझे भी क्रांति की जरूरत महसूस होती है पर उस रास्ते से नहीं जो तुम चाहते हो। व्यावहारिक तौर पर कुछ हद तक अपने में करप्शन होने की बात मैं भी मानता हूँ—पर पॉलिटिकल करप्शन की बात मुझे जरा भी मान्य नहीं। मैं जिस रास्ते पर चल रहा हूँ, वही रास्ता ठीक है। हमारे देश में तुम जैसी क्रांति चाहते हो वह होना जरा मुश्किल ही है। देश इतना बड़ा है इतने लोग इतनी भिन्नता इतनी भाषा इतने धर्म इतनी जातियाँ—इतनी उलझनें हैं कि इस देश में संपूर्ण क्रांति संभव ही नहीं है। मैं खुद भ्रम में था—पर आज तुमसे बात कर रहा हूँ तो लगता है कि जो कुछ मैं कर पा रहा हूँ वही ज्यादा अच्छा है। और तुमने भी आज तक क्या कर लिया है? मैं कम से कम लोगों के साथ तो हूँ। लायब्रेरी के बाहर तो तुम कभी निकलते नहीं हो?

मतलब यह कि तुम भी बुर्जुआ बन चुके हो। तुम्हारी वह सहानुभूति सरासर झूठी थी।

बेकार की बातें न करो। तब तो मुझे भी ठीक लगता था पर अब बिल्कुल नहीं।

वही तो—वजह यह कि तब तुम्हें पेट की चिंता थी और जिसे पेट की चिंता रहती है वह मूल्यों के बारे में नहीं सोच सकता। लगन होने पर क्रांति में हमेशा विश्वास हो सकता है। तुम्हें अब पेट की चिंता नहीं रही। इसलिए लगन होना भी जरूरी नहीं है। हो सकता है कि कुछ लगन भी हो और ऐसे लोगों को विश्वास ही नहीं होता कि क्रांति के जरिये कुछ नया हो सकता है। तुम भी उनमें से हो।

'बेकार के आरोप तो न लगाओ।"
तुम तो बेतरतीब बातें करते हो। अभी की गयी बातों से तो यही
पता चलता है। वाकई घर छोड़कर आवारा हो जाने की स्थिति मुझे तब
महसूस हुई थी जब मुझे पार्टी से निकाल दिया गया था। हमारी पार्टी भी
अब पूरी तौर पर बुर्जुआ बनती जा रही है। पार्टी में बना रहता तो मैं भी
तुम्हारे जैसा बन जाता। घर और पार्टी छोड़ देने से अब मैं कुछ स्वतन्त्र
रूप से सोचने लगा हूँ और इसी वजह से मुझे तो अपना ही रास्ता ठीक
दिखायी देता है। तुम मुझे अंडर एस्टिमेट मत करो। मैं अकेला ही नहीं
मुझ जैसे कई युवक बम्बई में महाराष्ट्र में और सारे देश में हैं। और मैं
उन्हें एकत्रित करने की कोशिश भी कर रहा हूँ। पार्टी से निकलने का
एक तरीका और भी है। तुम्हारा मजदूर आन्दोलन हो या हमारी क्रांति
कारी कहलाने की बात क्यों यही दोनों वाकई क्रांति के सबसे बड़े दुश्मन
हैं? अगर यह न होते तो समाज के दो पक्ष हो जाते और क्रांति अपने-आप
हो जाती। तुम्हारे आन्दोलन में यह पक्ष कमज़ोर करने की ताकत नहीं है।
पर इस वजह से आप क्रांति को एक तरफ ढकेल देते हैं। मैं क्रम-से-क्रम
इसमें शामिल नहीं हूँ। इस बात का मुझे एहसास है। और जब मुझमें
ताकत आयेगी तो मेरा काम होगा आप लोगों को खत्म करना।

रघू की आवाज में पहले जैसा आवेश और गुस्सा न था। वह हर
शब्द पर ज़ोर देकर बोल रहा था। आवाज़ में उतार चढ़ाव न था। इसी
वजह से उसके संवादों में एक पैनापन था। उसका एक एक शब्द कोस्टा
को काटे जा रहा था उसके बदन पर काँटे उभार रहा था। रघू पाँच छह
महीने पहले मिला था। उसके बाद आज मिल रहा है। इस बीच उसमें
काफी बदलाव आ गया है। उसके हर शब्द के पीछे गज़ब का आत्म
विश्वास दिखना था। एक अजीब कड़वाहट भी नज़र आती थी। कोस्टा
को लगा कि रघू के लिए उसके मन की सारी आत्मीयता खत्म हो चुकी
है। उससे कुछ डर भी लगने लगा है। रघू हमें नष्ट कर देगा। मतलब
क्या करेगा? कोस्टा हँस दिया और बोला—

तुम जब तक जनता के बीच काम करना शुरू नहीं करते तब तक
तुम्हारे खयाल इसी तरह एकतरफा बने रहेंगे। लोगों के कंधे से कंधा
मिलाने और राजनीति को करीब से देखने पर तुम्हारे खयाल खुद-ब-खुद
विकसित हो जायेंगे। कुछ बातें ऐसी भी होती हैं जो करनी ही होती हैं
जिन्हें हम टाल नहीं सकते। यह बात तुम खुद अपने अनुभव से जान
लोगे।

रघू इतनी ज़ोर से हँसा कि कोस्टा घबरा गया। जैसे कोई हँसी

ोर से हँसता है कधे झटकता है, ठीक इसी तरह रघू
टा का रघू की हँसी पागलपन जसी लग रही है यह
पने आप को सम्हाला और बोला, ' एक्जेक्टली—'
ल पूजीपति के बगलबच्चे की तरह बोले। तुमसे एसी
लिए मुझे हँसी आ गयी। आई मीन नो इसल्ट," कहत
न लगा।
की रुक चुकी थी। कोस्टा बहद परेशानी महसूस कर
ाज़ा खोलकर वह बाहर आया और उसने टैक्सी के पस
क उसके मन म रघू के लिए आदर और स्नेह उभर
न धोखा दिये जा रहे है, पर वह धोखा नही खा सकता।
है ? गुस्सा या द्वेष ? कोस्टा कुछ समझ ही नही पा
घू से पूछा—
ाओग ?"
रघू ने अलसाते हुए कहा और अपना बग कधे पर

' हो गया ?'
रे पास पसे मांगने आया था लकिन अब मन नही

'

ए इस तरह अप्रत्यक्ष मदद करने का पुण्य शायद तुम्ह
ुम्हारा ही नुकसान है।"
ास्कल—ए बास्टड !'
। ग्लि खोलकर हसा। कोस्टा न कुछ नोट उसकी कोट
दिये। रघू ने विरोध नही किया। इसे रिश्वत न

कधे थपथपा दिये।
ा फिर कभी फुसत से आना बठ कर बातें करगे।'
र मज़ा ही नही आता।'
ुम जसा बोलने वाला दूसरा नही मिलता।"
ग।

र कोस्टा परेशान सा लेबर आफिस मे आ गया। कस
वक्त था। लकिन अभी कमचारी भी नहीं आये थे। इस
भी परशान हुआ। कमचारियो पर उसे गस्सा भी आया,

खुद पर भी गुस्सा आया। रघू यों मेरे ही मुंह पर बोलता रहे और मैं सुन लूं। रघू को अधिकार ही क्या है? मैं ज़रूर बोलने का अधिकार रखता हूँ। लाइब्रेरी के बंद कमरे में ढेरों किताबों के बीच मुलायम कुर्सियों पर बैठकर रघू सोचता है। इसी वजह से उसके विचारों से अनुभव नहीं बोलता। उसकी गरीबी नकली है। बाप अमीर है। उसको इच्छा घर पर खाने की नहीं होती और वह इस तरह मुझसे बातें कर सीधे लाइब्रेरी का निकल जाता है। हम चुपचाप सुन लेते हैं और पसीना पोंछते हुए यहाँ तक आ जाते हैं। बस में देरी है। एक भी कर्मचारी अभी तक हाज़िर नहीं है। उनकी नौकरी की बस मुझ ही चिंता है। स्साले सब बेफ़िक्र। यहाँ आया हूँ तो क्या थी खाने के लिए? और रघू मुझ ही सुनाता है और हम हैं कि उसकी सुन लेते हैं।

रघू हमें खत्म करेगा, मतलब क्या करेगा? कोस्टा को हँसी आ गयी। पर वह हड़बड़ाया भी। रघू फ़नेटिक है। वह चाहे जो कुछ कर सकता था। मन में आने की देर थी बस। बाप के पैसों की यों लात मारने वाले बहुत कम होते हैं। वह क्या मुझे गोली मार देगा? कोस्टा को फिर हँसी आ गयी। और उसने उस ख़याल को झटक दिया। लेकिन रघू के साथ हुई बातों को वह झटक न पा रहा था। बार बार वे ही शब्द उसके दिमाग पर दस्तक दे रहे थे— तुम तो भोंदू हो ।

कोस्टा को अजीब बेचैनी हो रही थी। रघू पर बहुत गुस्सा आ रहा था। लेकिन उसे यह पता नहीं चल रहा था कि यह गुस्सा रघू पर है या कि खुद पर? कर्मचारी आ गये। बस शुरू हो गया। लेकिन उसके दिमाग में जो कुछ चल रहा था वह बाहर न निकल पा रहा था। उसकी फ़ाइल बिलकुल तैयार थी। इसी वजह से उसे ज़्यादा परेशानी नहीं हुई। सुबह गंगाराम की मौत, नीला और विनीता की मुलाकात, यह केस, मुख्यमंत्री से मुलाकात—सभी बातें एक ही दिन आ पड़ी थीं। तनाव ज़्यादा हुआ तो कोस्टा ने ट्रैंक्विलाइज़र ले लिया। बस अजीब उबाऊ था। आज फ़ैसला हो जाने के आसार नज़र नहीं आ रहे थे। एक तरह से ठीक भी था। दफ़्तर में तनाव और बढ़ सकता था। रघू से ज़रा फ़ुरसत से मुलाकात करनी चाहिए। हो सके तो लाइब्रेरी में ही। गलतफ़हमी उसे हुई या मुझे? क्या मैं भायखला का फ़्लैट छोड़ सकता हूँ? पेगी का शिवाजी पार्क वाला फ़्लैट मिलने पर क्या उसकी ज़रूरत न होगी? लेकिन क्या सारा आंदोलन छोड़ रघू जो कुछ कह रहा है वह किया जा सकता है? रघू जो कुछ कहता है उसमें सच्चाई हो सकती है। हम पूरे बुर्जुआ बन भी गये होंगे। लेकिन क्या रघू का रास्ता ठीक है?

जमी उसम लगन है वैसी लगन क्या हममे हो सकती है ? अभी तो मेरा ही रास्ता ज्यादा ठीक महसूस होता है। फिर रघू की बातें इतना परेशान क्यो कर रही है ?

कस स्थगित हुआ तो कोस्टा परेशान हो गया। वह पूरी तौर पर थक चुका था। उसे लगा कि केस का स्थगित होना ठीक हुआ। फसला उस तरफ होता तो तनाव और बढ ही जाता।

काफी वक्त हो चुका था। अब आफिस जाने के लिए वक्त ही नही है। तीन बजे तक मुख्यमत्री के यहां पहुँचना होगा। सामने के होटल म उसने कमचारियो के साथ चाय पी। एक कमचारी ने कहा—

'कोस्टा साब आप फिकिर न करो। अगली तारीख पर मैं उनके विटनस को आन ही नही दूगा।'

'झगडा न करो। केस हाथ से निकल जायेगा।'

दूसरा नाराजगी से बोला 'साब उनके लोगो न अपन पाडे को पीटा सो ?

खून गिरेगा कोस्टा साब ! इसके बाद किसी आदमी ने अपने आदमी को हाथ लगाया तो दूसरा बोला।

देखो हम लोगो को झगडा नही करना है—केस के दौरान तो बिलकुल ही नही। गलत असर हो सकता है।'

फिकिर न करो कोस्टा साब। अगली तारीख तक हम कुछ-न कुछ तो करेंगे ही। झगडा नही तो दूसरी ट्रिक करेंगे।"

साब उनके लोग डडा चलाते हैं तो हम क्यो नही ? '

कोस्टा चुप रहा। उसे लगा कि उसने ट्रिक करने की इजाजत दे दी है। कुछ देर बाद वह बोला देखो यह केस जरा नाजुक है। इसलिए जरा भी गडबड न करना। झगडा तो बिलकुल नहीं।'

कोस्टा अकेला ही टक्सी लेकर सचिवालय की ओर चला गया। हवा कुछ मलूल-सी थी। ऐसी हवा होने पर कोस्टा का बम्बई म अपना वह पहला दिन याद हो आता था और वह बेचन हो उठता था। अजीब हवा और आसमान म बादल। पसीना। और फिर बम्बई की भीड भाड। मुख्यमत्री क विभाग मे क्या है पता नही। रघू ऐसे क्यो पेश आया ? और मैं भी ऐसे चुपचाप क्यो सुनता रहा ? वह मुझे भ्रष्टाचारी समझता है। नीला का चेहरा आँखो के आगे से नही हटता। कही भीतर विनीता के साथ रात को परियास म होने वाली मुलाकात भी है। मुख्यमत्री के आगे कसे पेश आयें ? कोस्टा मुख्यमत्री से कई बार मिल चुका था। किसी आन्दोलन के दौरान किसी शिष्टमडल के साथ, बहुत से कायक्रमो के

दौरान। लेकिन बिला वजह इस तरह उसे कभी बुलवाया न गया था।
तीन बजने में जब तीन चार मिनट रह गये तो कोस्टा मुख्यमंत्री के सचिव के केबिन में पहुंचा। सचिव ने हँसते हुए खड़े होकर उसका स्वागत किया।

सारी मिस्टर डीकोस्टा सी० एम० इमर्जेंसी मीटिंग में हैं। जरा दस मिनट रुक सकेंगे? उनकी पर्सनल रिक्वेस्ट है।

आल इटस आल राइट।

कुर्सी पर बैठते हुए कोस्टा ने पूछा—

आई एम वंडरिंग मुझे किसलिए बुलवाया है बता सकेंगे?

सचिव ने सिर्फ गर्दन हिलाया।

इधर तो हमारा कहीं स्ट्राइक भी नहीं चल रहा,' कोस्टा ने हँसते हुए कहा।

पंद्रह मिनट बाद कोस्टा मुख्यमंत्री के केबिन में पहुंचा तो उन्होंने खड़े होकर उसका स्वागत किया।

हलो हलो मिस्टर कोस्टा! हाऊ आर यू?

हाऊ आर यू सर? कोस्टा ने उनसे हाथ मिलाया।

'अरे मेरा खयाल था कि आप अपनी वह मोटी फाइल लेकर आयेंगे।

मैं जानता था कि आप यह सवाल जरूर करेंगे कोस्टा ने हँसते हुए कहा 'इसीलिए जान बूझकर मैं वह फाइल नहीं लाया।'

जीवाजीराव शिंदे

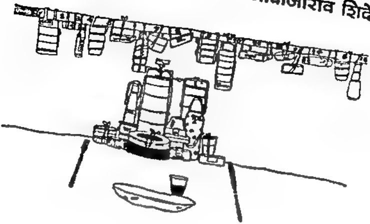

हर महत्वाकांक्षी की ज़िन्दगी में एक क्षण ऐसा आता है, जब उसे लगने लगता है कि लक्ष्य पाने के लिए किये गये सारे ही प्रयत्न बेकार और गलत हैं।

मुख्यमंत्री जीवाजीराम शिंदे अभी उस हालत तक न पहुंचे थे। सोचने-विचारने के लिए उनके पास वक्त ही न था। बुलडोज़र की तरह वे अपने सामने आने वाले सवालों को गिराते जाते थे और ज़िन्दगी में आगे की तरफ बढ़ते जाते थे। किसी दिक्कत पर साहस के साथ क़ाबू पाना, उनकी ज़िद थी। खुद अपने ही हौसले से उन्होंने अपनी कुर्सी पायी थी। इसी वजह से उन्हें किसी का डर नहीं था। ज़िन्दगी के शुरू के दौर में ही उन्होंने अपनी दिशा तय कर ली थी। ज़िन्दगी की गति इतनी तेज़ थी कि उन्हें यह तक पता नहीं चल पाया कि कब उनके बाल सफेद हो गये।

स्वभाव के अनुसार सुबह ठीक पौने छह बजे मुख्यमंत्री की नींद खुल गयी। आँखें खोलीं तो उनकी नज़र सामने की खिड़की पर चली गयी। खिड़की के साफ़ शीशे में से सामने का क्षितिज साफ़-साफ़ नज़र आ रहा था। सूरज की लाली फैलने लगी थी। मुख्यमंत्री ने उठकर खिड़की खोली तो समंदर की ठंडी हवा एकदम अंदर आ गयी। खिड़की के सामने पेड़ लगे हुए थे और उसके पार था अरब सागर। शांत और प्रसन्न। दूरी पर क्षितिज की झिलमिल-सी रेखा। नीचे पक्षियों का कलरव और समंदर से आने वाली भीनी-भीनी हवा। ज़िन्दगी में पहली बार समंदर देखा था, उस दिन की हल्की-सी याद आयी और काम में जुट जाने की प्रेरणा देने वाली हवा ने झकझोरा।

मुख्यमंत्री शिंदे ने साँस अंदर तक खींची और धीरे से छोड़ दी।

दिन में यही पल कुछ अपना-सा लगता था। बाद में तो धक्कापेल वाली ज़िन्दगी शुरू हो जाती है। हर दिन पिछले दिन से ज़्यादा व्यस्त रहा करता है। कल अखबार पर नज़र डालकर सुर्खियाँ लेकर वे लेट गये थे। तब कलाई की घड़ी में सवा तीन बजे थे। धूल ज़िला के आदिवासियों के शिष्ट मंडल को मिलने के लिए नौ का वक्त दिया हुआ था। बाहर की एक मीटिंग खत्म कर वापस आने में ही साढ़े ग्यारह बज चुके थे। बाद में खाना। बाद में दो मिनिस्टर और उनके सेक्रेटरी से डेढ़ घंटे तक सरकारी कामकाज के बारे में चर्चा। शिंदे खुद गरीबी से निकलकर ऊपर आये हैं। इसी वजह से किसी भी शिष्टमंडल से मिलने की बात टालना उन्हें सबसे ज़्यादा

अखरता था। शिष्टमंडल खुद उस क्षेत्र के विधायक के ज़रिये लाया गया था। इसलिए उसे टालना और भी असंभव था। शिष्टमंडल चला गया तो बाहर के कमरे में पार्टी का ट्रेज़रर बैठा हुआ था। वह चुनाव के लिए पैसा इकट्ठा करने के चक्कर में था। आँखों में नींद थी, फिर भी उससे बातें करना ज़रूरी था। उसके पीछे पीछे मराठवाड़ा का एक कार्यकर्ता शिकायत लेकर आया था। ट्रेज़रर से बातें कर मुख्यमंत्री उठे तो कार्यकर्ता मौजूद था। मुख्यमंत्री ने बाथरूम का दरवाज़ा खोला और अंदर घुसने लगे तो वह पीछे पीछे था। अरे अब सुन तो लिया न। अब बाथरूम भी आने लगे या नहीं? इस तरह परेशान होकर बोले तो कहीं उसे समझ में आया कि वह बाथरूम है। फिर वह शर्मिंदा होकर चला गया।

ढाई घंटे की नींद सच पूछा जाय तो मुख्यमंत्री के लिए पूरी न थी लेकिन उन्होंने अपनी ज़िन्दगी को इसी तरह बांध रखा था। पौने छह के बाद जीवाजीराव कभी भी बिस्तर पर नहीं रहते थे।

लंबी सांस वाले व्यायाम के बाद मुख्यमंत्री बेड पर आकर बैठ गये और उन्होंने बेल दबा दी।

सर! कहते हुए नौकर फौरन मुंह धोने का पानी और चाय ले आया। यह भी उनकी आदत में ही शामिल था। बेल बराबर छह पर ही बजती है। तब तक चाय तैयार हो जाती थी। मुख्यमंत्री तकिये से टिककर बिस्तर पर ही बैठ गये। बैठे बैठे ही उन्होंने मुंह धो लिया। पास के स्टूल पर रखी दो गोलियां खा लीं और चाय में चम्मच चलाने से पहले फिर बेल बजा दी। तभी सचिवालय का एक सचिव 'गुड मार्निंग, सर!' कहते हुए अंदर आया।

उसके हाथ में आज के समाचारों के संक्षिप्त अंश, कल के कुछ महत्त्वपूर्ण समाचारों की कटिंग्स, भाषण और सम्पादकीय के सारांश और आज का कार्यक्रम था।

यह तरीका खुद शिंदे जी का बताया हुआ था। सुबह सुबह इस तरह के समाचार और आफिस पहुंचने से पहले गुप्त पुलिस की रिपोर्टों के सार पढ़ लिये जायें तो सारे राज्य की नाड़ी पर हाथ रहता है। मुख्यमंत्री की पढ़ने की गति बेहद तेज़ है। साफ साफ अक्षरों में टाइप की गयी रिपोर्टें वे चट चट पढ़ जाते हैं।

चाय पीते हुए उन्होंने इन कागज़ों पर निगाह दौड़ाना शुरू किया। राज्य की एक हाउसिंग स्कीम केन्द्र ने लौटा दी थी यह बुरा समाचार था। उस विभाग के केन्द्रीय मंत्री को महाराष्ट्र से खास चिढ़ थी इसीलिए हमेशा ऐसा ही होता था। प्रधानमंत्री को इस बारे में खत लिखना चाहिए।

पपर पर वस निशान भी बना दिय । वस्टन स्टार म छपी स्मगलिंग की
कम्पनी वाला मसला उन्ह खटक गया और उन्होंन उस ढंग स पढ़ा तो वह
और भी खटकन लगा । उनक पास वक्त न था इसीलिए इस समाचार को
उन्होंन अधूरा ही छोड दिया । शहाणे इसे पढ़ेंगे ही । बस । और मुख्यमंत्री
कल क समाचारों की ओर आये । दो बातें परेशान कर देन वाली थीं
लेकिन जीवाजीराव या सिर थामकर बठन वालों म से न थ । एक बार
दिल म परेशानी पदा हो जाय तो अनजाने ही प्रक्रिया शुरू हो जाती थी ।
उन्हें सोचन क लिए ज्यादा परेशान न होना पड़ता था । उनका मन खुद
ही निर्णय ल लिया करता था । इस वजह स यह कभी न होता था कि एक
ही बात उनक दिमाग को परेशान करती रह । उनकी इसी कुशलता की
वजह स लोग-बाग और उनक राजनीतिक दुश्मन घबराते थे । कहत हैं कि
उनक मन का पता लगना मुश्किल काम है ।

कल क समाचारपत्रों की कटिंग्स मजेदार थीं । तीन समाचारपत्रों म
उनकी तारीफ थी । वजह तो कुछ भी न थी । विरोधी पार्टी के एक नेता
न मुलाकात क दौरान बताया था कि अगले चुनाव स पहल विधान सभा
का जो अधिवेशन होगा उसी म शिंद मंत्रिमंडल को हम हरा देंगे । मुख्य-
मंत्री क चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट दौड़ गयी ।

पढ़त-पढ़त उनकी नजर एक छोटी-सी कटिंग पर पड़ी । एक बार पढ़-
कर उन्होंने उस दुबारा पढ़ा । उनकी मुस्कराहट जाती रही और चेहरे पर
सख्त भाव उभर आया । उस कटिंग को उन्होंन अलग निकालकर रख दिया ।
बाकी की कटिंग्स पर नजर दौड़ायी । आज के कार्यक्रम जरा जबरदस्त थे ।
कबिनेट मीटिंग थी । मिलन वालों म खास मतलब का आदमी कास्टा
ही था । कास्टा का नाम पढ़त ही उन्होंन फिर स वह छोटी सी कटिंग उठा
ली और पढ़ी । कोस्टा को खुद उन्होंने ही बुलवाया था । उस कस हैंडिल
किया जाये इस बार म उन्होंने अभी कुछ सोचा नहीं था । शेष विजिटरों
म ऐसा कोई खास आदमी न था । हाँ दिन भर के कार्यक्रम काफी थ ।
सुबह नौ पर एक कारखाने का उद्घाटन था । तब से लेकर दस बजे तक
आराम न था । बीच म रात आठ बज एक सभा थी । जीवाजीराव न लंबी
सांस ली और निकालकर रखी कटिंग्स पर निशान लगात हुए सक्रटरी से
बोल 'शहाणे से कहिए कि पता लगाये कि बापूसाहब जोशी बम्बई म कब
आने वाल हैं और उन्हें यहीं बुलवा लीजिये ।

करीब वाली कुर्सी पर सुधाजी आ बठी थीं । वे बोलीं 'बापूसाहब
कल शाम ही को यहाँ आ चुके होंगे । आज दोपहर मुझस मिलने आने वाले
हैं ।

'अच्छा ? चलो ठीक ही हुआ। कितने बजे आयेंगे ?'

वक्त तो कोई दिया नही है। कभी भी आ सकते हैं।'

'काफी दिनो बाद आ रहे हैं।

'बम्बई आते हैं तो मुझसे मिले बगैर नही जाते। कई बार आ चुके हैं। आपकी तबीयत के बारे में पूछते रहते हैं।

मुझसे मिले नहीं।

आपको वक्त तो होता नहीं। पिछली बार आप बाहर के कमरे में लोगो के साथ बैठे हुए थे तो वे अंदर के कमरे में थे। बाद में चले गये। उनका स्वभाव तो आप जानते ही हैं ? '

मुख्यमंत्री का चेहरा कुछ सख्त हो गया। उन्होने अपने कार्यक्रम पर फिर नजर डाली। ताज में व्यापार मंडल के सामने उनका एक भाषण था। व्यापारी वर्ग के गैरजिम्मेदाराना तौर तरीकों के खिलाफ वे डांट मारने वाले थे। पार्टी का ट्रेजरर भी उसी सभा में अपने काम के लिए आने वाला था। इसलिए वहाँ जाना लाजमी था। ठीक तीन बजे मजदूर यूनियन के लीडर डीकोस्टा को एक खास काम के लिए बुलवाया था। साढ़े तीन पर केबिनेट मंत्रियों की बैठक थी। वह कब खत्म होगी इसका कोई अन्दाज़ नही था। बैठक खत्म हो तो प्रेस-कॉन्फ्रेंस। फिर एकदम निकलना संभव नहीं था। गरज के मिलने वालो का ताँता लगा रहेगा। शाम आठ बजे सार्वजनिक सभा थी।

शिंदे ने अपने सेक्रेटरी को जाने के लिए कहा और सुधाजी से बोले आज तो मैं दोपहर खाने के लिए भी घर पर नहीं आ सकूँगा। बापूसाहब आयें तो उन्हें रात के खाने के लिए रोक सकोगी ?

कहकर देखती हूँ पर वे अपने यहाँ खाना नही खाते। जीवाजीराव को अपनी पत्नी का स्वर जरा आक्रामक लगा। ऐसे लगा जैसे पुलिस गुनहगार से बोलती है।

लेकिन इसे नजरअंदाज़ करते हुए वे बोले कहना मैंने रिक्वेस्ट की है।

कह दूंगी।'

अब मुख्यमंत्री का तैयार होना था। लेकिन पत्नी से कुछ और बात करना लाजमी था। सामने रखे कागजो को टटोलते हुए उन्हें एक अच्छा सा विषय याद आया।

फिर कल तुमने चेकअप करवा लिया न ?

चेकअप तो पिछले सप्ताह करवा लिया था। प्रेशर नार्मल पर आने की बात तो पिछले सोमवार को ही मैंने बता दी थी।

जीवाजीराव को लगा ज.. पलक माथे पर ठंडा पानी डाल दिया गया हो। लेकिन चेहरे पर अंकित तनाव न लौटते हुए उन्होंने कहा 'नामल है न? ठीक है। फिर कोई चिन्ता नहीं।'

आज शाम कमला आने वाली है चार-छह दिन रहने के लिए।

मुख्यमंत्री को चुप देखकर सुधाजी हँसते हुए बोली "कमला मतलब मौसेरी बहन नागपुर वाली।

हाँ-हाँ मैं जानता हूँ। उसकी अच्छी खातिरदारी होना चाहिए।'

मुख्यमंत्री कड़े मन से उठे और बाथरूम म चले गये। आगे का पूरा दिन होगा तेज बहती धारा और इस प्रवाह म मुख्यमंत्री को बड़ी सुरक्षा का एहसास हुआ करता था। सेक्रेटरीज का मिलना विजिटर्स की लाइनें, फाइलो के गट्ठे बैठकें सभा सम्मेलन चर्चा भाषण—तेजी से सारा दिन गुजर जाने वाला था। ऐसे समय मुख्यमंत्री को एक नशा सा चढ़ा रहता था।

बाहर आने पर उस सेक्रेटरी ने मुख्यमंत्री द्वारा लगायी गयी निशान वाली कटिंगों को पढ़ा—

पूना सोमवार आज की भ्रष्ट सरकार का तख्ता पलटना मेरा पहला कर्तव्य है और इसीलिए आगामी चुनाव लड़ने वाला हूँ। यह विचार आज स्वतंत्रता-सेनानी श्री बापूसाहब जोशी ने एक सभा के बीच व्यक्त किया।

श्री जोशी ने कहा भ्रष्टाचार और रिश्वत इस हद तक पहुँच गये हैं जहाँ कभी न पहुँचे थे। जिन लोगों ने स्वतंत्रता के लिए अपनी जिन्दगी की परवाह न की उन लोगों को यह बात बेहद खटक रही है।'

भ्रष्टाचार राज्य के नेताओं पर पलता है। नेता यदि साफ हो कड़ा हो तो भ्रष्टाचार रोक सकता है। इसीलिए नेतृत्व बदलन की कोशिश करना जरूरी है। श्री जोशी ने घोषणा की।

मुख्यमंत्री जब तक बाथरूम से बाहर आये तब तक उनका बंगला चहल-पहल से भर गया। हर मिलने आने वाले से मिला जाये यही उनकी तमन्ना रहा करती थी। लेकिन वे ज्यादा किसी से बात न करते थे। तयार आवेदन हाथ में आते ही वे तत्काल दूसरे को बुलवा लिया करते थे। साधारण शिकायत हो तो वे सेक्रेटरी से कहते हैं 'इन्हें समझा दीजिये। दूसरे को बुलवाइये।' इस तरह प्रत्यक्ष मुलाकात की तसल्ली मिलने वाले को हो ही जाती थी।

कपड़े पहन कर वे अपने बंगले के आफिस में जा पहुँचे। दूसरा सेक्रेटरी कमरे में था। उसने कार्यक्रम की लिस्ट टेबिल पर रख दी। जीवाजीराव

क्या करें ? वस्र्न स्टार के भंडारी के दो-तीन लोज़ के मसल अपने पास पड़े हैं ।'

नहीं । अभी इसकी जरूरत नहीं है । बाद में देखेंगे कि क्या हो सकता है । अखबार गलत सलत जानकारी छापने में क्या तुक है ? जरा समाधान की बात है बस । किसे समझायें यह आप देख लीजिये ।'

अच्छा साहब ।

शिंदे ने फोन नीचे रख दिया ।

भेजो एक एक करके अंदर । नौ से पहले खत्म होना चाहिए ।'

चक्र शुरू हो गया । जीवाजीराव को अपने तरीकों पर गर्व था । अपने हिसाब से वे ठीक ठाक सलूक करते थे । इस कारण बापूसाहब जोशी जैसे आदमी इस तरह के आरोप उन पर लगाते रहें यह बात उन्हें पसन्द न आ रही थी । किसी और पार्टी वालों ने इस तरह की बात की होती तो वे हँसते हुए टाल जाते । कोल्टा ऐसी बातें हमेशा कहता रहता है । लेकिन बापू साहब! उनका खून उमड़ पड़ा । मन हुआ कि अभी इस वक्त बापूसाहब को बुलवाया जाय—मैंने कौन सा भ्रष्टाचार किया है बताइये ? दीजिये कोई साक्ष्य । लेकिन बुलाते ही आने वालों में से बापूसाहब नहीं हैं यह भी वे अच्छी तरह से जानते थे । उन्होंने टेबिल पर रखी घंटी बजा दी । पहले से निर्धारित ड्रिल की तरह पहली बेल पर नौकर पानी ले आया । हाथ में रखी विटामिन की गोलियाँ उसने जीवाजीराव को दीं । गोलियाँ लेकर उन्होंने पानी पी लिया । फिर दूसरी बेल बजा दी और मिलने वाले लोग एक के बाद एक अंदर आने लगे । विद्यार्थी व्यापारी अधिकारी सामाजिक कार्यकर्ता राजनैतिक कार्यकर्ता लीडर किसान नर्सें भंगी —अलग-अलग तबकों के लोग । सबसे जीवाजीराव कुछ न-कुछ बात जरूर कर रहे थे । शिकायत सुनते थे । निमंत्रण स्वीकार करते थे । कई लोगों के कई काम और यह सब करते हुए उन्हें अपनी भूमिका पूरी तरह याद रहती थी । एक महान राज्य की पूरी-की-पूरी ज़िम्मेदारी मुझ पर है इस बात को वे कभी नहीं भूल पाते थे और इसी एहसास के साथ उन्हें दिलासा भी मिलती रहती थी ।

साढ़े नौ बज गये, फिर भी विज़िटर्स खत्म न हो रहे थे । मुख्यमंत्री उठ खड़े हुए । 'कल आने के लिए कहिए' सेक्रेटरी से कहकर कारखाने के मैनेजिंग डायरेक्टर के साथ वे कमरे से बाहर आ गये । तभी बुलढाणा के लोगों ने उन्हें घेर लिया । उनसे जैसे-तैसे निबटकर उनकी गाड़ी बँगले के बाहर आयी तो पौने दस बज रहे थे । मतलब उद्घाटन में आध घंटे की देर हो गयी । दिन भर के सभी कार्यक्रमों में देर होती जायेगी । मुख्यमंत्री

वम्बई दिनाक

ांस ली और आँखें मूद ली। फिर उन्होंने सीट के पीछे रखी
ठा ली और सक्रेटरी द्वारा तयार किया गया भाषण पढना शुरु कर
भी उन्हे कुछ याद आया और उन्होने सामने की सीट पर बठे
त पूछा —
रे होम डिपाटमेट कास्टा वाली फाइल भेजने वाला था। आ गया

टरी जरा रुका।
हाणे साहब को मालूम होगा सर।'
रे मतलब क्या है आखिर ? आज तीन बजे वह मिलने वाला है
ल अभी तक नही आयी है ? अब मैं पढूगा कब ?' मुख्यमत्री
ा गये। सक्रेटरी चुप बैठा था। अभी शहाणे को काटक्ट कर के
क बारह बजे तक फाइल मेरी टेबिल पर होनी चाहिए और दो
किसी जानकार अधिकारी को भेजिये।
ल अभी तक न आ पायी थी इस वजह से मुख्यमत्री नाराज थे।
जाय तो वह फाइल कल ही आ जानी चाहिए थी ताकि अच्छी
ह्नी से उसे पढा जा सके। मुख्यमत्री कोस्टा से कई बार मिल
किन उसकी फाइल अभी तक उन्होने न देखी थी। इस बीच
भाषणो के कई अशो को देखने का मौका उन्हें मिला था। और
ग मे मुख्यमत्री की आलोचना होती थी। आरोप था कि मुख्यमत्री
को शील्ड किये हुए हैं। भ्रष्टाचार के आरोप थे। कोस्टा के शब्द
पहल-पहल तो जीवाजीराव ने उसकी तरफ ध्यान ही नही दिया।
ान टाल दी कि यह भी प्रचार ही होगा। पर कोस्टा जब प्रमाण
ात कहने लगा तो उन्हे गुस्सा आ गया। मेरे हाथ इतने साफ होन
द यह प्रमाण देने की बात करते है ? प्रमाण दें—आखिर प्रमाण
होंगे ? जहां कुछ है ही नहीं वहां प्रमाण कस ? मुख्यमत्री को
लग रहा था। मैं राज्य के लिए अठारह घटे मेहनत करता हूँ।
री मे सारे काम करता हू और कोई भी ऐरा गैरा मुझ पर ही
लगाने लग जाता है। धरी रह गयी सारी ईमानदारी। कोस्टा की
है। वह यूनियन-लीडर है। उसे तो इस तरह बोलना ही पडता
उससे सवाल पूछ सकते हैं। उसकी फाइल डिपार्टमेंट मे तयार है
ापूसाहब गोशा ! उन्हे तो बुलवाकर भी नही पूछा जा सकता।
यमत्री शिंदे ने फिर आँखे मूद लीं। पल भर के लिए वे कोस्टा
ामी का खयाल भूल गये। दूसरे ही पल उन्होंने आँखें खोलकर
ढ़ना शुरु कर दिया। शिंदे की यही विशेषता है। जसे मशीन क

बटन दबा दिया जाये उसी तरह वे एक विषय से दूसरे विषय पर जा सकते हैं। वे अनचाहे खयालों को कुछ देर के लिए दिमाग से अलग हटा सकते हैं और मन चाहे खयाल को पूरी एकाग्रता से सोच सकते हैं। भाषण तो छोटा सा ही था। शिन्दे ने कुछ वाक्य और जोड़ दिये और भाषण के हाशिये में याददाश्त के लिए कुछ शब्द लिख लिये। लिखित भाषण उनके मन के अनुरूप न था। उन्हें पसंद आने वाला भाषण लिखने वाला सेक्रेटरी अभी उन्हें मिला ही नहीं था। यह भाषण तो उस कारखाने पर निबंध जैसा था जिसका उद्घाटन होने वाला था। इसमें निर्यात बढ़ाने की जरूरत को स्पष्ट किया गया था। राज्य की प्रगति के आँकड़े दिये हुए थे और कंपनी के संचालकों की पीठ थपथपाई गयी थी। भाषण बेजान-सा था। मजदूरों की सुविधाएँ, नयी जिम्मेदारियाँ, कार्यशीलता बढ़ाने की जरूरत—इस बारे में कुछ न था। जीवाजीराव ने भाषण की प्रति एक ओर रख दी और एन वक्त पर दूसरा ही भाषण देना उन्होंने तय किया।

कारखाने में मुख्यमंत्री के स्वागत के लिए उद्योगमंत्री और मालिक हाज़िर थे। हार पहनाये गये, उद्घाटन के लिए रिबन काटी गयी, हँसी मजाक हुआ। उद्घाटन के औपचारिक कार्यक्रम के लिए शामियाना लगाया गया था। सभी लोग अपनी-अपनी जगह पर बैठ गये। तीन खूबसूरत लड़कियाँ माइक पर खड़ी हो गयीं और तीनों ने स्वागत-गीत गाना शुरू कर दिया।

कार्यक्रम के दौरान आपस में बात करना या कुछ पढ़ते हुए बैठना मुख्यमंत्री शिन्दे को कतई पसंद न था। उनका खयाल था कि इससे लोगों का उत्साह ठंडा पड़ जाता है। इसी वजह से कार्यक्रम के दौरान उनका ध्यान सब जगह रहा करता था। स्वागत गीत की धुन गलत बनायी गयी है, वे इस बात को ताड़ गये। लेकिन गलत होने के बावजूद भी वह मन पर असर ज़रूर डालती है। उन्हें लगा कि कुछ लाइनें मन में कुछ यादों को कुरेद रही हैं। वह धुन किसी पुराने विरह गीत की तो नहीं? मुख्यमंत्री ने अपने मन में गहरे टटोलकर देखा लेकिन कुछ याद न आ सका। उन्हें लगा तीनों लड़कियों में से सिरे वाली लड़की उन्हें कुछ याद दिला रही है। पुरानी जवानी के और गरीबी के दिनों की अव्यक्त वासना और आकांक्षा अभी भी कैसे उभर आती है इस बात पर उन्हें अचरज हुआ। उस लड़की की नाक जानी-पहचानी है या कि उसकी आँखें? जिससे मेरी अव्यक्त आकांक्षा जुड़ी होगी, उसे मेरे मुख्यमंत्री हो जाने के बाद कैसा महसूस हुआ होगा?

उद्योगमंत्री कुछ कहना चाहते हैं यह बात उनके ध्यान में तब आयी

जब मुख्यमत्री ने अपनी गदन उनकी ओर की।

वसतराव जी का काम हो गया, साहब," उद्योगमत्री हसन हुए कह रह थ।

मुख्यमत्री कुछ समझ नही पाये। इसलिए उनके चेहरे पर सवाल उभर आया। उद्योगमत्री ने फिर कहा 'उनका लायसेंस अगले महीने इशू हो जायेगा।

'कौन वसतराव ?"

उद्योगमत्री कुछ हक्कबकाये। इसका मतलब मुख्यमत्री को बात समझ म नहीं आयी। वसतराव मतलब सुधाजी के छोटे भाई।'

'अच्छा हाँ कसा लायसेंस ?"

इजिनियरिंग प्लाट वाला। जगह भी दिलवा नी है। सुबह ही सुधा जी को फोन किया था।

मुख्यमत्री चुप रहे। उन्हें खुद पर गुस्सा आ रहा था। लेकिन व चुप रहे। फिर सुधाजी पर गुस्सा आने लगा पर इसका कोई इलाज न था। सुधाजी से वे कभी खुरदरी आवाज म बोले ही न थे। वे बोल भी न सकत थे इस का एहसास उन्ह था। क्या हुआ हागा वे अब समझ चुके थ। सुधाजी का काम तो होगा ही ' वसतराव जरूर उद्योगमत्री से मिले होंगे। वसतराव ने अपनी बहिन से जरूर कहा होगा। वसतराव को अपनी बहिन से कहने का तरीका मालूम था। वसतराव ने अपनी बहिन से कुछ इस तरह कहा हागा मैंने अर्जी दी है। उद्योगमत्री ने कहा है कि काम होगा। बस तुम उन्ह फोन कर देना।' उद्योगमत्री को मत्रिमडल म शामिल किया था जीवाजीराव ने इस वजह से उनकी यह हिम्मत नही थी कि काम करन म मना कर दें। अब गुस्सा करने म कोई तुक नही थी। सुधाजी को नाराज करन से भी कोई फायदा नही। इस लायसेंस के बारे म क्या कानूनन सम्मत है और क्या गरकानूनी यह सब हम ही देखना होगा। गर कानूनी कुछ हुआ तो उस कानून म फिट करना होगा। फिर वसतराव का यह पहला लायसेंस तो है नही। दो एक साल पहले उन्होने इसी तरह पूना के पास ऐसा ही परमिट हासिल किया था। फिर मुख्यमत्री को खुद बीच म पडकर मामला रफा-दफा करा देना पडा था। मुख्यमत्री ने लबी सांस ली और वे आन्तन उस स्वागत-गीत की तरफ ध्यान देने लगे। तभी एक बात और उनके दिमाग म आयी। उनके बडे भाई के लडके ने सांगली के पास काफी बडी जगह खरीदी थी। उसके बारे म काफी शिकायतें आयी थीं। आज उसके बारे म भी असलियत सामने आनी था। अगली विधानसभा की बठक म यह मसला जरूर निकाले जायेंगे इस का अदाज मुख्यमत्री

शिन्दे को था। टेबिल पर रखे एक कागज पर उन्होंने नाम नोट कर लिया और कागज जेब में रख लिया। परेशान कर देने वाली यही बातें उनके लिए सिरदर्द थी, लेकिन इलाज न था। उनसे रिश्ता जोड़ने वालों में किस किस को वे रोक सकते थे? कितने अफसर हैं जिनसे यह कहोगे कि मेरे रिश्तेदारों का कोई काम मत कीजिए। मुख्यमंत्री परेशान हो गये। पल भर उन्हें अपने शादी के पहले की बात याद हो आयी। स्वतंत्रता से पहले की यादें हमेशा ही उनके बदन में रोमांच ला देती हैं। ऐसे ही किसी क्षण में वे सुधाजी में प्रेम बंध गये थे वह भी याद आया। शादी न की होती तो? इस तरह का खयाल इधर बार बार उनके मन में उभरता है? लेकिन तभी यह भी याद आया कि सुधा उन दिनों इतनी स्वार्थी न दिखती थी। वह अब भी यही अर्थों में स्वार्थी कहाँ है? स्नेहिल है—बस यही! लेकिन उनके इस स्नेह की वजह से हमें जरूर कई जगह समझौता करना पड़ता है।

उद्योग परेशानी बढ़ने से पहले ही मुख्यमंत्री ने मशीन की तरह अपने खयाल दूसरी ओर मोड़ लिये। स्वागत-गीत खत्म हो गया था। हार पहनने के लिए उन्हें खड़ा होना पड़ा था। हार पहनाने वाली तीस साल की उम्र वाली उस औरत की ओर देखते हुए वे मुस्कराये और उसी वक्त कई फोटोग्राफरों ने अपने कैमरों के बटन दबा दिये। मुख्यमंत्री जीवाजीराव शिन्दे की यह मुस्कराहट बड़ी जानी मानी है। हजारों फोटो में यह मुस्कराहट अखबारों में स्कूलों में नजर आती रहती है। शिन्दे को कैमरे के फ्लैश के प्रकाश से परेशानी होती है। हार पहनाने वाली उस औरत के शरीर से आने वाली गंध उन्हें अवश किये जा रही थी। उनका मन खिल उठा।

उद्योगमंत्री से बोले नानासाहब आपकी बेटी के क्या हाल चाल हैं? परसों एक रिसेप्शन में मिली थी। स्मार्ट। हमारी पत्नी हमेशा पूछती रहती है।

नानासाहब देशमुख सिर्फ हँस दिये। इसी बात से वे खुश थे कि मुख्यमंत्री इस तरह पूछ रहे हैं। समझ नहीं पा रहे थे कि क्या कहें। फिर वे कुछ आगे की ओर झुक और बोले—

सुधाजी की तबियत अब कैसी है? पिछले हफ्ते चेकअप करवाया था। बता रही थीं वे।'

लेकिन मुख्यमंत्री का ध्यान नानासाहब की बातों की ओर न था। कंपनी के एक हिस्सेदार ज्यादा सरकारी मदद की अपेक्षा प्रकट कर रहे थे। इस बात को उन्होंने मन ही-मन नोट कर लिया।

फिर नानासाहब देशमुख बोले। उनका भाषण लोगों ने बड़े धीरज के साथ सुना। कोई हँसा नहीं। पहले ऐसे मौकों पर मुख्यमंत्री को शर्म महसूस हुआ करती थी पर अब नहीं। नानासाहब जनता के प्रतिनिधि हैं। जनता के सामने आने में कैसी शर्म? नानासाहब को मंत्री बनाकर जीवाजीराव ने उस ज़िले के सभी लोगों के मुँह बंद कर दिये थे। नानासाहब को उनकी ज़िद पर मंत्रिमंडल में शामिल किया था, इसी बात से खुश थे। एक और बात थी। नानासाहब का अनुभव कम था और समझ भी कम। इसी वजह से लगभग पूरा का पूरा उद्योग मंत्रालय जीवाजीराव के संकेत पर चला करता था। हाथ में अधिकार लिये बिना योजनाओं को अमल में लाना कठिन होता है, इस बात को वे अच्छी तरह जानते थे। हम चुनाव जीतने के लिए इतने परेशान क्या होते हैं? अपने विचार और योजनाएँ अमल में लाने के लिए सत्ता का हाथ में होना लाज़मी है। यह न हुआ तो विचार धरे रह जाते हैं। सत्ता के बगैर ताकत आ ही नहीं सकती। इसीलिए सत्ता के लिए इतनी कोशिश होती है। इसमें कष्ट तो हैं ही, परेशानियाँ भी कम नहीं हैं। लेकिन सम्मान भी उतना ही है।

नानासाहब का भाषण खत्म होने पर मुख्यमंत्री ने भी तालियाँ बजायीं। फिर वे भाषण के लिए उठ खड़े हुए। एक-एक शब्द तोलकर बड़े आत्मविश्वास के साथ बोलने के लिए वे प्रसिद्ध थे। पहले उन्होंने कारखाने की योजना का स्वागत किया। आयातित माल के लिए देशी उत्पादन खोज निकालने की प्रशंसा की और कारखाने के मालिक का अभिनन्दन किया। फिर सरकारी मदद पर निर्भर रहने की प्रवृत्ति की ज़ोरदार आलोचना की। सरकारी सुविधाएँ लेना, कर्ज़ा लेना और मज़दूरों की सुविधाओं की ओर ध्यान न देना, बोनस के लिए मज़दूरों को परेशान करना, चीज़ों के बढ़ते हुए मूल्य—इन तमाम बातों पर टीका टिप्पणी की। जब वे बोलकर बैठे तो मज़दूरों ने तालियाँ बजायीं।

'बहुत बढ़िया साहब!' उद्योगमंत्री ने कहा।

मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा, 'इंसपायरिंग! आपका भाषण बहुत इंसपायरिंग था साहब। अगली बार जब आप यहाँ आयेंगे तो खुद देखेंगे कि आपकी बातों पर अमल किया गया है।' वैसे उनका अपना चेहरा ज़रूर मायूस नज़र आ रहा था। मुख्यमंत्री को हँसी आ गयी। अपनी ताकत का उन्हें एहसास हुआ और बेहद तसल्ली का भी।

मेहमानों के लिए चाय-पानी की व्यवस्था की गयी थी। लेकिन मुख्यमंत्री वहाँ नहीं गये। संचालक ज़रा दुखी-से होने लगे तो अपनी गाड़ी के पास खड़े रहकर ही उन्होंने मौसम्बी का रस मँगवा लिया। मैनेजिंग

डायरेक्टर से वे बोले "अरे, अभी तक एप्रोच रोड तैयार नहीं है। यह प्रेस्टिज कारखाना है।"

कुछ न सूझने पर मैनेजिंग डायरेक्टर ने कहा, "लिखिये न साहब, वी आर ट्राइंग हार्ड।"

"अरे भाई नानासाहब, यह क्या कह रहे हैं? आपके ही विभाग का काम है यह।"

"जी बात ई! अभी तक क्या नहीं हो पाया? हो जाना चाहिए था अब तक।" फिर उन्होंने अपने सेक्रेटरी को बुलवाकर नोट करवाया।

जीवाजीराव बोले, "आपकी जो भी दिक्कतें हों वे हम जरूर बतायें। जिस तरह हम लोगों को आपसे कुछ अपेक्षाएं हुआ करती हैं, उसी तरह आप भी अपेक्षाएँ रख सकते हैं। आपके कारखाने को हम महत्व देते हैं।"

सब के चेहरे खिल गये। अपने भाषण से उन्होंने सबको परेशान कर दिया था लेकिन अब सभी खुश थे। मैनेजिंग डायरेक्टर समझ नहीं पा रहे थे कि वे अपनी खुशी किस तरह जाहिर करें। बार बार हाथ जोड़कर वे कह रहे थे, "यू आर वेरी काइंड, सर। वी आर ओब्लाइज्ड। थैंक्यू सर!"

पाँच मिनट के भीतर ही एक ट्रे में साफ-सुथरे रूमाल से ढके काँच के गिलास में मौसंबी का रस आ गया। मुख्यमंत्री ने खड़े-खड़े ही रस पी लिया। फिर उन्होंने एक दो बातों के बारे में पूछताछ की। सबसे हाथ मिलाये। नानासाहब को उन्होंने अपनी ही गाड़ी में बिठा लिया और अपने सेक्रेटरी को उद्योगमंत्री की गाड़ी में आने के लिए कहा।

गाड़ी में उद्योगमंत्री नानासाहब देशमुख बोले, "एक्सेलेन्ट फर्स्ट क्लास, साहब! आपका भाषण बहुत बढ़िया हुआ।"

कुछ देर रुककर जीवाजीराव बोले, "आखिरी बात का इफेक्ट कैसा रहा?"

पहले तो उद्योगमंत्री कुछ समझ न पाये। फिर बोले, "बेहद अच्छा, साहब। पहले तो वे लोग घबरा गये थे। अब एकदम खुश।"

जीवाजीराव गूढ़ ही हँस दिये। फिर बोले, "ट्रैक्टर का अब इन भागों के पास भेजने में कोई हर्ज नहीं। इलेक्शन करीब आ रहे हैं। आप भी जरा ध्यान रखिये।"

फिर मुख्यमंत्री गंभीर हो गये। कुछ देर चुप ही रहे। फिर उद्योग-मंत्री से बोले, "वसंतराव की अर्जी क्लियर करने से पहले मुझसे पूछ लेना चाहिए था नानासाहब!"

नानासाहब कुछ सकपकाये, "पर... पर साहब, प्रिलिमिनरी स्टेज पर

फाइल आपकी ओर गयी थी। मुझ लगा, यू हिज़ायड इट। मुधाजी ने भी एक बार याद दिलवायी थी।'

मुख्यमंत्री को गुस्सा आ गया। फिर भी व अपने आप को सम्हाल रहे। किसने कहा कि मैंने सिफारिश की थी ?"

इस सवाल का जवाब उद्योगमंत्री के पास न था। उन्होंने सिर पर से टोपी उतार ली और रूमाल से माथे का पसीना पोंछ लिया। चश्मा निकालकर पाछा और फिर नाक पर रख लिया। रूमाल से नाक पोंछी। जीवाजीराव को उन पर गुस्सा आ गया। व अच्छी तरह जानते हैं कि नानासाहब देशमुख जितना दिखावा करते हैं उतने मूर्ख नहीं है। फिर वे यह भी जान चुके थे कि आजकल वसंतराव से उनकी काफी पटने लगी है। वसंतराव के प्रोजेक्ट में उनका हिस्सा होने की भी संभावना थी। बस उनके कई जगह हिस्से होने की खबर उनके कानों तक आ चुकी थी। जीवाजीराव की आदत थी कि जब तक चीज़ें सीमा से बाहर नहीं हो तब तक ठीक है। गरज कि नानासाहब का मंत्रिमंडल में रहना उनकी दृष्टि से जरूरी था। उन्होंने पूछा प्रोजेक्ट कितने का है ?

नानासाहब ज़रा सकपकाये लैंड की कीमत छोड़कर सवा करोड़ तक जायगा।

जीवाजीराव हड़बड़ाये। इतना बड़ा प्रोजेक्ट और मेरे ध्यान में ही नहीं आ पाया ? नज़रों से तो फाइल कई बार गुज़र जानी चाहिए थी।

ममी-ट्रैवी इडस्ट्री जमा है वह साहब।

हिस्सेदार कौन-कौन है ? '

'पाँच लोग हैं तीन बड़े सेठ हैं।'

और चौथा कौन है ? '

एँ मेरी बेटी है साब। विनाता। '

अच्छा !

मुख्यमंत्री कुछ देर चुप रहे। फिर उन्होंने पूछा,"इडस्ट्रीज कारपोरेशन ने कितना कर्ज़ा दिया है ?

' सिक्स्टी परसट।'

मुख्यमंत्री ने आँखें मूंद लीं। फिर उन्होंने लंबी साँस ली। व उद्योग मंत्री से बोले देखिये नानासाहब अब इसे वसंतराव को दिया जाने वाला आखिरी लायसेंस समझिये। आपकी बेटी पर आपका स्नेह मैं समझ सकता हूँ। लेकिन यह ममता हम लोगों को कुछ भारी पड़ेगा। एसेंबली की अगली बैठक में विरोधी दल जरूर इस मसले को उठायेगा। कम-से कम यह बात तो आपको सोचनी चाहिए था। लोग वाग इस तरफ आँख

गड़ाये बैठे हैं। फिर फाइनेंस मिनिस्टर का ग्रुप हम लोगों पर कैसी नाराज़ निगाह रखता है यह बात तो आप जानते ही हैं। उन लोगों के लिए बोलने की जगह रखना ठीक नहीं है। और वसंतराव की आदतें मुझे ठीक नहीं लगतीं।'

बोलते-बोलते मुख्यमंत्री मन-ही मन घबरा रहे थे। उनका लड़का क्लास में पढ़ रहा था। वह हर बार पैसे मँगाता था। लेकिन इधर पैसे मँगाने के खत कम आने लगे थे। और सुधाजी ने बातों बातों में बताया था   उसका मामा कुछ बता रहा है।' इसका मतलब क्या हो सकता है? वे ध्यान   वसंतराव इधर मेरे पास आने में हिचकिचाते हैं पर उन्हें एक बार पकड़ना होगा।'

फिर मुख्यमंत्री कुछ देर के लिए विचारमग्न हो गये। उनके पेट में अजीब शून्य सा उभरा पल भर के लिए। लेकिन उन्होंने अपने को फौरन सम्हाला। जब तक मेरे हाथ साफ हैं तब तक मुझे कोई कुछ नहीं कह सकता। बस ये तीन-चार बातें जरूर ठीक कर लेना चाहिए।' उन्होंने आँखें मूँद लीं।

आगे पायलट कार के होने से मुख्यमंत्री की कार तेजी से आगे की ओर बढ़ रही थी। मुख्यमंत्री ने सभी विषय दिमाग से परे कर दिये और उन्होंने आँखें मूँद लीं। आँखें बन्द कर लेने के बावजूद बायीं ओर से गुजरने वाले वाहनों के प्रवाह का एहसास उन्हें हो रहा था। मुख्यमंत्री को बेकार में परेशान हो जाने की आदत नहीं है। लेकिन कभी-कभी वे इस तरह की हालत में पुरानी बातें सोचने लगते हैं। आँखें बंद करके कुछ देर के लिए। वैसे ऐसा अक्सर नहीं होता। गरज कि अतीत की नाली में रेंगना उन्हें कतई पसन्द नहीं था। वे हमेशा आगे की बात सोचते हैं। द चीफ मिनिस्टर हू थिंक्स इन फ्यूचर। यह वाक्य एक पश्चिमी पत्रकार ने लिखा था। पहले क्या हुआ कैसे हुआ क्या हुआ—इन बातों पर बेकार रोने का कोई अर्थ नहीं है। इससे तो अच्छा है कि आगे की बातें सोची जायें। इसी वजह से वे लोकप्रिय भी हैं। इसी वजह से वे राजनीति में लोगों को मान्य सकते हैं। हमेशा आगे ही बढ़ते रहना, पीछे मुड़कर देखना ही नहीं। लेकिन कभी-कभी व्यक्तिगत रूप से इस तरह सहज ही पीछे देखने में भी कोई हर्ज नहीं है।

जीवाजी लक्ष्मण शिंदे सच पूछा जाय तो रोनी शकल का लड़का था। मास्टर लोग इस चिंता में कि वह स्कूल में चौथी क्लास भी पास हो पायेगा या नहीं। जीवाजीराव का जब जन्म हुआ तब उनके पिताजी के पास एक

गाँव में पौने एकड़ ज़मीन शेष रह गयी थी। बाप और माँ दोनों मजदूरी करके पेट भरते थे। जीवाजीराव के दो बड़े भाई बिना पढ़े लिखे ही रह गये। लेकिन गाँव के मास्टरों के कहने पर जीवाजीराव को स्कूल में दाखिला दिलवा दिया गया। पर उनका सारा वक्त मटरगश्ती में ही निकल जाता था। बाप ने यही निर्णय ले लिया कि चार क्लास पढ़ाकर लड़के को पशु चराने भेज देना चाहिए। लेकिन चौथी क्लास का रिजल्ट निकलने पर मास्टर ने ही कहा कि लड़का बिलकुल बेकार नहीं है। सांगली में परीक्षा में बैठा दिया जाये तो हो सकता है कि पास भी हो जाये। आधी फीस में पढ़ाई भी हो जायेगी। बाप का कहना था क्या होगा लिख-पढ़ कर ? नौकरी तो मिलने से रही।' लेकिन परिवार के भाइयों ने भी कहा 'घर में एक तो पढ़ा लिखा हो। हम भले ही मजूरी करते रहें।' और उम्र के बारहवें साल में जीवाजीराव सांगली के अंग्रेजी स्कूल में छह मील रोजाना चलकर जाने लगे।

पहले एक-दो साल लड़खड़ाते ही गुज़रे। लेकिन आगे जीवाजीराव पढ़ाई लिखाई में रुचि लेने लगे। मन लगाकर वे पढ़ने लगे। इस बात का भी एहसास होने लगा कि उनमें काफी सामर्थ्य है। फिर तो मैट्रिक के इम्तहान में वे सेकिंड क्लास में पास हुए।

अब जीवाजीराव की महत्त्वाकांक्षा जाग गयी। उस वक्त उनकी महत्त्वाकांक्षाएं सीमित थीं—इंटर पास कर लें फिर बी० ए० फिर स्कूल में टीचर हो जायें या पढ़ लिखकर वकील बन जायें। फिर यह भी समझ में आने लगा कि इन महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करना इतना मुश्किल नहीं है। कुछ मेहनत कर ली जाये तो सभी कुछ हो सकता है। एक साल तक उन्होंने प्राइमरी स्कूल में टीचरी की और दूसरे ही साल सीधे पूना का रास्ता पकड़ा। पहले ज़रा मुश्किलों में दिन कटे। लेकिन धीरे धीरे रास्ता तय होने लगा। पार्ट टाइम काम मिलने लगे। एक सस्ते किस्म के हॉस्टल में जगह मिल गयी। पूना के आस-पास का माहौल और गाँव का माहौल —दोनों का अंतर समझ में आने लगा। गाँव की उस ज़िन्दगी को भूलकर उन्होंने अपने-आप को पूना की ज़िन्दगी में घुला मिला दिया।

जीवाजीराव की ज़िन्दगी की दिशा अभी निश्चित न हो पायी थी। लेकिन ज़िन्दगी से मेहनत के साथ जूझने का निश्चय उन्होंने कर लिया था। क्षितिज भले ही दूर हो पर आगे बढ़ने की धुन पैदा हो चुकी थी। ज़िन्दगी में एक अजीब बेचैनी आ गयी थी। चौबीसों घंटे काम करके आगे बढ़ने का हौसला पैदा हो चुका था।

कॉलेज में दूसरे साल ही से वे चमकने लगे। यूनिवर्सिटी में न सही,

पर कॉलेज म उन्होंने पहला स्थान पाया। कोशिश की जाय तो सब-कुछ हासिल हो सकता है। ट्यूशन के जरिये पेट भरने लायक उन्हें पैसे मिलने लगे। सुबह ट्यूशन करना और दोपहर को मन लगाकर पढना। बचे हुए वक्त म लायब्रेरी म बैठकर किताबें पढना और शाम को विभिन्न चर्चा-गोष्ठियों म शामिल होना। सख्त मेहनत करने का वे निश्चय तभी कर चुके थे। गाँव का कोई भी आदमी आता, वह जीवाजीराव से मिले बगैर न जाता था। सभी के कामों म वे मदद किया करते थे।

चर्चा-गोष्ठिया म जीवाजीराव काफ़ी मेहनत करके जाया करते थे। पूना के ब्राह्मण-समाज म अपने गवई शब्द अखरते हैं। इस बात का एह-सास उन्हें था। उन्होंने कोशिश करके अपना उच्चारण ठीक किया। भाषण लिखकर वे पूरी तैयारी के साथ चर्चा-गोष्ठियों म बोलने के लिए खड़ा हुआ करते थे। कई बार आइने के सामने खड़े रहकर वे अपना भाषण पढकर देखत थ। गलतियाँ ठीक करत थे। और इस तरह कई वाद विवादों के मौकों पर वे अव्वल आने लग। बाद म तो वे बिना तैयारी के भाषण देने म सिद्धहस्त हो गये।

दूसरे साल कॉलेज क इलेक्शन क़रीब थ। अचानक एक दिन शाम के वक़्त उन्हीं के कॉलेज के अगल दर्जे का एक छात्र लीलाधर आठवले होस्टल म उनके कमरे पर आया।

इस इलेक्शन म सेक्रेटरी के लिए खड़ा हो रहा हूँ।'

गुड लक।'

सिर्फ गुड लक?

मैं और क्या कर सकता हूँ, अपना मत दे दूगा।''

'सिर्फ तुम्हारे मत स क्या होगा? मुझ तो तुम्हारी सपोर्ट चाहिए।''

सपोर्ट? मैं कैसे सपोर्ट कर सकता हूँ?'

आठवले ने अजीब निगाहों से उनकी ओर देखा। फिर बोला तुम सिर्फ कह भर दो। तुम्हारे ग्रुप के सभी के मत मुझे मिल जायेंगे।'

तब अजीब निगाहों से देखने की बारी जीवाजीराव की था। वे अपनी पढ़ाई लिखाई म इतने उलझे हुए थे कि उन्हें अपनी ताकत का एहसास न था। पल भर म ही उनके दिमाग म बहुत-सी बातें उभर आयीं और तभी उन्होंने एक निर्णय ले लिया। उन्हें इस बात पर अचम्भा था कि ऐसा निर्णय उस वक्त उन्होंने किस तरह ले लिया था। लेकिन तभी से महत्त्वपूर्ण मसलों पर तुरत निर्णय लेने की खास आदत उनम पनप चुकी थी। अपना जजमेंट कभी ग़लत नहीं हुआ यह आत्मविश्वास उनम आ चुका था।

दोस्ती की वजह से मैं अपने मत देने की बात ज़रूर कह सकता हूँ।''

जीवाजीराव ने आठवले से कहा, "पर मुझे सपोर्ट के लिए मत कहो।"

‘मतलब, क्या तुमने किसी और को भी प्रॉमिस कर रखा है?’

‘नहीं, किसी को भी नहीं।’

‘फिर आखिर वजह क्या है?’

‘तुम पूछ रहे हो तो बताए देता हूँ,’ एक-एक शब्द पर ज़ोर देते और आठवले की ओर देखते हुए वे बोले, ‘वजह यह है कि मैं खुद इस इलेक्शन में खड़ा हो रहा हूँ।’

आठवले एकदम हड़बड़ा गया। कुछ पल चुप रहा। जीवाजीराव कपड़े पहनकर उसके साथ बाहर हो लिये। दोनों ईरानी होटल में आ गये। चाय पीते-पीते चुप रहा न गया तो आठवले ने कहा—

‘तुम्हारी स्ट्रैंथ मान ही मानी हो, लेकिन जीतने के लायक नहीं है।’

‘कैसी स्ट्रैंथ?’

‘आई मीन तुम्हारी जाति की।’

‘इलेक्शन में जाति को कौन पूछता है?’

‘तुम बच्चे तो नहीं हो?’

‘न? मैं जाति के बल पर इलेक्शन नहीं लड़ूँगा। तुम देख ही लेना।’

‘मैं तो अब इरादा बदल रहा हूँ। मैं तो तुम्हारी सपोर्ट पर खड़े होने की बात सोच रहा था।’

‘मतलब, तुम्हारा मत मुझे मिलेगा?’

‘तुम ऐसा मानते हो?’

‘मैंने अपना व्यक्तिगत मत तुम्हें देने की बात कही थी।’

‘पर और भी तो कोई खड़ा हो सकता है न।’

‘औरों की बातें बाद में सोचेंगे।’

और उस साल जीवाजीराव प्रसिद्ध हो गये। कॉलेज के इलेक्शन में तो वे जीते ही, इंटर कॉलेज और इन्टर-यूनिवर्सिटी में भी खूब चमके।

बयालीस के आन्दोलन में उन्होंने कॉलेज नहीं छोड़ा। और-तो-और जो कॉलेज छोड़ने के लिए कहते थे, उन पर ही उन्होंने हमला बोल दिया। उन्होंने प्रचारित किया कि यह सब हमें लंगड़ा कर देने की चालें हैं। उनके विचारों को सुनकर बहुत-से लोगों का ध्यान उनकी ओर गया। बापूसाहब जोशी से उनका पहला झगड़ा हुआ था इसी बात पर। इसी झगड़े से ही उनमें दोस्ती पनपी और राजनीति में दोनों का साथ हो गया।

इसी दौरान जीवाजीराव अपनी ज़िन्दगी के बेहद नाज़ुक झमेले में अनजाने ही उलझ गये। इस झमेले से ही दो साल बाद जीवाजीराव बाहर

निकल ता बिलकुल बदले हुए थ। अब उन्हे ज़िन्दगी का एहसास हो चुका था। बरवाहट जाने बगर ज़िन्दगी की असलियत जानी नहीं जा सकती यह वे अच्छी तरह जान चुके थ। आदमी कितना ही पढ लिख ले लेकिन अनुभव के बिना ज़िन्दगी म ठोसपन और गहराई नहीं आ पाती। इस अनुभव के बाद उनकी ज़िन्दगी कुछ और ही हो गयी। ज़िन्दगी एक आकार लेन लगी। पहले का डर और बचनी जाती रही और स्थिरता जान लगी।

प्रोफेसर केलकर जीवाजीराव के चहेत थ। जिदे की बुद्धिमानी का पता उन्हें था। राजनीति शास्त्र के छात्रो म जीवाजीराव उनके लाडल थ। जाति-पाँति के बन्धन दूर रखकर जीवाजीराव खुद अपने पाँवो पर खड होकर इतना आगे आये हैं इस बात को व अच्छी तरह जानत थ। उनकी गरीबी को व जानत थे। इसी वजह स वे दूसरो की अपेक्षा जीवाजीराव को ज्यादा चाहते थ। व उन्हें प्रेरणा भी देते रहते थ। मदद करने के लिए तयार रहत थ। घर पर बुलात थे।

किसी से भी मदद लेने के लिए जीवाजीराव तैयार न होत थे। लेकिन चर्चा-सभाओं और कालज के काम के लिए केलकर के यहाँ जाना उन्हे बुरा न लगता था। केलकर जी के यहाँ उनकी काफी खातिरदारी भी हुआ करती थी।

प्रोफेसर केलकर के यहाँ तीसरी या चौथी मुलाकात के दौरान जीवाजीराव जिदे ने शालन केलकर को पहली बार देखा। पूना की दूसरी औरतो की तरह पहले उन्होंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। पूना की लडकियाँ और जीवाजीराव की जाति म इतना अन्तर था कि ग़लती स भी कोई विचार उन्हे छू न सकत थे।

लेकिन काम की खातिर जिदे का केलकर के यहाँ आना-जाना बढ गया। शालन स मुलाकात के मौके भी ज्यादा आने लग। धीरे धीरे उनकी बातो म शालन भी रस लने लगी। तब उनम भी कुछ तबदीली आने लगी। केलकर के यहाँ साफ-सुथरे और कम फटे कपडे पहनकर जाने लग। बोलन म शौरान ज्यादा दिखावा करने की चेष्टा करने लग। उनके बोलत समय जब शालन लगातार उनकी ओर देखन लगी तो ज़िन्दगी म एक खास सुगन्ध आने लगी। उन्हे लगा, जस सारी दुनिया चाँदनी म नहा गयी हो।

फिर तो दोनो का परिचय बढत समय न लगा। शालन साइस कॉलेज म थी। जल्द ही एक वाद विवाद प्रतियोगिता म दोनो का प्रत्याशी के रूप म चुनाव हो गया। उसके बाद स तो दो साल तक जीवाजीराव सपनो की

दुनिया म बहत रहे। वे न्नि याद आत ह ता आज भी उन्ह लगता है कि जैस गुलाबजल बदन पर पड रहा हो। मीने म अजीब सा न्द उठना है। तब व गरीब थ। कई बार तो उन्ह भूखे पेट रह जाना पडता था। बग्न भी कमजोर था। पहनने के लिए बढिया कपडे भी नहीं थ। तिस पर भी जिन्दगी का सबस सुहाना समय उनस पूछा जाये तो वे कहग—वही! भावुकता क माहौल म व दो-न्ढाई साल मखमल से चिकने गुजरे थ। जिन्गी म आसू दुग दद तो जसे थे ही नही। फूलो की पँगुरिया पर जस व चलत थ। देह म बिजली सी थी। आशा और महत्त्वाकान्क्षा का क्षितिज जस कहीं खो गया था। लगता था जस सारी दुनिया उनकी ताल पर नाच रही है। जाति पाँति के भेन्भाव की उन्ह परवाह न थी। घटों राजनीति पर बचा हँसी मजाक रूठना मनाना साथ घूमना हाथ म हाथ डाल यहाँ से वहा भटकना करीब आना और झिलमिल चुबन! जिन्दगी एसे गुजर रही थी जसे गानो पर मारपख फेर दिया हा।

उसी दौरान जीवाजीराव ने कई प्रसिद्धियाँ भी हासिल की। वान्विवाद म इनाम हासिल निय। बी० ए० की परीन्शा म स्वण-पन्क पाया और कानून पन्न क लिए का नज म दाखिला ल लिया।

बी० ए० का परिणाम निकलने के बाद केलकर जी न जीवाजीराव को अपन घर बुलवाया। बगल पर कलकर और उनके नौकर के अलावा दूसरा कोई न था। शालन और उसकी माँ शायद बाहर गय हुए थे।

कनकर जी ने जीवाजीराव का हार्दिक स्वागत किया। नौकर चाय ल आया। उसे पीन क बाद उ हाने अलमारी खोलकर एक लक्डी का बक्सा निकाला और उसम स एक रिस्ट वाच निकालकर जीवाजीराव की कलाइ पर बाँध दी।

न्दिस इज माई वे आफ काग्रेच्यूलटिंग यू।'

शिंदे इतन खुश हुए कि आभार जताना भी भूल गये। शालन के साथ उनका घूमना क्लकर जी को मालूम है या नहीं इसकी जानकारी उन्ह न थी। लेकिन उन्ह कुछ तो मनक होगी ही। पर यह शुरुआत अच्छी न थी।

मिस्टर शिंदे प्राफसर केलकर अग्रज़ी म बोले मुझे लगता है कि मेरे स्नेह क लिए इस दिखाव की जरूरत नहीं थी।"

यू आर रेफर्लक्गि माइ फीलिंग्स सर!

ठीक है। आप मुझ पर विश्वास करत ह न, अब मरी सुन लीजिय।'

शिन्दे कुछ देर चुप बठे रह। कनकरजी न टेबिल पर रखा पाइप उठा लिया। उसे सुलगाकर एक लम्बा कश लिया।

आप मेरी लडकी का पीछा छाड दीजिये।

प्रोफेसर केलकर ने ये शब्द इतने धीरे से कहे कि शिंदे उन्हें सुनकर हड़बड़ा गये। फिर उस पूरे वाक्य का अर्थ उसके पीछे छिपे कारण को जानकर वे गुस्सा हो उठे। लेकिन उन्होंने अपने पर काबू रखा। मुट्ठी कसे वे केलकर जी की ओर देखते रहे। शालन के साथ रहने में उन्होंने उसके पिताजी का खयाल न किया था। केलकर जी पर उन्हें विश्वास था। बीच में अगर किसी ने टाँग अड़ाई होती तो अपने माँ-बाप ने ही। पर इन बातों का खयाल उन्हें खुद न था। और केलकर जी अब ऐसे पेश आये।

"आई सी। यू आर एंग्री ?"

'यस सर आइ एम।'

'आई एम सॉरी यंगमैन। पर वजह बताने पर शायद तुम खुद ही समझ सकोगे।

कोई जरूरत नहीं सर। आइ कैन अंडरस्टैंड।

नो। यू डू नाट।'

कुछ देर दोनों चुप बैठे रहे। केलकरजी ने पाइप के दो-तीन कश खींचे। उनकी नजरों में दुख और गुस्से का अजीब सा मिश्रण था।

कुछ देर बाद वे बोले, मिस्टर शिंदे आप होशियार हैं। राजनीति की बातें आप समझते हैं। आप जरूर नाम कमायेंगे। आपका भविष्य उज्ज्वल है। इसीलिए आपके ही हित के लिए कह रहा हूँ कि यह अच्छी बात नहीं है। आप जम नहीं पायेंगे। आई नो माई डाटर मोर दैन यू।'

शिंदे का गुस्सा इतना बढ़ गया था कि वे तिलमिलाने लगे। फिर वे जानबूझकर हँस दिये। उनका खयाल था कि उनकी हँसी केलकरजी को चुभ जायगी। फिर बोले सर आपसे इस ढोंगीपन की अपेक्षा न थी। सही वजह आपने भले ही न बतायी हो फिर भी मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ।

यह बात केलकरजी को चुभ गयी। उन्होंने पाइप टेबिल पर रख दिया। लंबी साँस ली। घायल नजरों से शिंदे की ओर देखा। फिर बोले—

वाकई मैं गलतफहमी में नहीं हूँ। मुझे समझने की कोशिश कीजिये।

शिंदे फिर हँस दिये। बोले 'सच। मुझे कोई गलतफहमी नहीं है सर! मैं आप पर गुस्सा नहीं हूँ। मैं आपकी स्थिति अच्छी तरह समझ सकता हूँ।

'देखिये मिस्टर शिंदे, आप कुछ नहीं समझ रहे हैं।' जैसे क्लास में बोल रहे हों उसी अंदाज में केलकरजी कहा आपने कभी शालन से

पूछा है ? उसने कभी इन बातों का सवाल किया है ? आपसे पूछा है ? नहीं ! आप अभी जवान हैं। अभी ठीक तरह से सोचने की शक्ति आप में नहीं है। आप दोनों साथ-साथ घूमते रहते हैं यह बात क्या मैं जानता नहीं ? पर मैंने जानबूझकर नजरअंदाज कर दिया था। सोचा करने दो कुछ समय के लिए मौज। लेकिन अब आपको गंभीरता से सोचना होगा। क्या आपने शालन को ठीक ठीक समझा है ?

शिंदे को चुप देखकर केलकर फिर बोले "नहीं। तो मैं बताये देता हूँ। शालन ऐसे ही मौज के लिए आपके साथ घूमती घामती है। उसका आप पर कुछ स्नेह भी होगा। लेकिन आप उससे शादी की बात करके देखिये। मैं जानता हूँ वह क्या जवाब देगी। शालन बड़ी क्लासमेकाशम है। वह बहुद डिमांडिंग है। शी विल मेक युअर लाइफ मिजरेबल। आप बहुद इटेंस है इसीलिए कह रहा हूँ। नहीं तो कहने की जरूरत ही न थी। आप खुद पूछकर देख लीजिये। यू विल बी सॉरी। आई एम वार्निंग यू। आप दोनों के व्यवहार, संस्कार और रुचियों में जमीन-आसमान का फर्क है। अभी इस बात का एहसास शायद न हो पाये पर शादी के बाद आप खुद ही जान जायेंगे। फिर जीना एकदम मुश्किल हो जायगा।"

प्रोफेसर केलकर ने और भी बहुत कुछ कहा। जीवाजीराव का ध्यान उस तरफ था भी और नहीं भी। उन्हें केलकर पर गुस्सा आ रहा था और खुद पर दया। उनकी कलाई पर बंधी वह घड़ी भी ठीक न लग रही थी। उन्हें लगा कि उस पूरे ड्राइंगरूम में न जँचने वाली एक ही चीज है और वह है वे खुद ? केलकरजी की बातें कुछ हद तक ठीक थीं। शालन और उनके बीच स्नेह जरूर था लेकिन वह शायद जवानी के दौर की उपज हो सकता है। लेकिन दोनों की रुचियों में अंतर है इसका एहसास उन्हें भी कई बार हुआ था। पर इस बात की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया था। इतना होने पर भी वे जानते थे कि केलकर जी के मन की तह में वही जाति वाली बात गहराई से चिपकी हुई है। इसी बात पर उन्हें गुस्सा आ रहा था।

जीवाजीराव ने फैसला लिया और पूना छोड़ दिया। वे कानून की पढ़ाई के लिए बम्बई आ गये। शालन से उन्होंने मन से प्यार किया था। दो ढाई साल तक उनका पूरा व्यक्तित्व शालनमय हो गया था। वे पढ़ाई करते थे उसके लिए। जी रहे थे उसके लिए। उनका हर पल उसके लिए था। उनके अंग-अंग में वह समायी हुई थी। वह उनकी कल्पनाओं का सागर थी। इतना कुछ होते हुए भी उन्होंने पूना छोड़ दिया। उससे बिना मिले ही, उससे पूछे बगैर ही। उन्होंने साहस के साथ अपने मन को दबाया था।

पूछने की इच्छा हुई पर लगता कि उसने कहा दूसरा जवाब दे दिया तो ? उन्हें अपने मन में उसकी प्रतिमा को ज्यों-का त्यों रखना था।

दो-तीन महीने बड़े अजीब हालत में गुजरे। जीवाजीराव ने कई खत शालन को लिखे और जला दिये। दिन खत लिखने में ही गुजर जाया करता था। खत लिख लिखकर वे ऊब गये। वे तटस्थ हो गये। जिन्दगी को दूसरे ही नजरिये से देखने लगे। मोहब्बत करके लोग कैसे खुदकुशी कर लेते हैं इसी पर उन्हें अचम्भा था। प्रेम पूर्णत्व तक शायद पहुँच ही नहीं पाता। इसी का उन्हें अजीब अनुभव हुआ था। इससे जिन्दगी में एक रस आता है गहरी अनुभूति पैदा होती है। एक दृष्टि बनती है। उनका ऐसा विश्वास हो गया था। शालन की एक प्रतिमा उनके मन में बन गयी थी। अब कुछ भी होता रहे यह प्रतिमा खण्डित न हो सकेगी।

तीन चार महीने बाद शालन के खत लगातार आने लगे। लेकिन अब तो दुनिया बदल चुकी थी। उन्होंने जिस शालन से प्रेम किया था, वह शालन दूसरी ही थी। यह अलग है। उस शालन का स्थान स्थिर था। वह शालन टूट नहीं सकती। जीवाजीराव न खत पढ़े और जला डाले। आदमी क्यों जीता है वे क्यों जीते हैं—इसे वे अच्छी तरह समझते थे। जिन्दगी की असली प्रेरणा कौन-सी है वे अच्छी तरह जान चुके थे।

शालन को यकायक इस तरह उन्होंने कैसे छोड़ दिया, इस बात को जीवाजीराव भी ठीक तरह से न समझ पाये थे। दो-ढाई साल उसके साथ बिताने के बाद भी हम उसे नहीं समझ पाये। उन्हें लगता था कि इस बात को यदि वे समझ लें तो मन शांत हो सकता है कि उन्होंने केलकर जी की बातों पर विश्वास कर लिया है। या कि केलकर जी की बातों से नाराज होकर उन्होंने यह निर्णय ले लिया है। लेकिन उन्होंने वजह जानने की कोई कोशिश नहीं की थी। अपने निर्णय पर उन्हें पश्चात्ताप भी न था। हो सकता है कि केलकर जी के मन में जाति पाँति की भावना हो, या उन्होंने शालन के लिए अपनी जाति का कोई लड़का तय कर लिया हो या उनकी पत्नी ने विरोध किया हो, या शालन की बात जानकर उन्होंने जीवाजीराव को खुद सलाह दी हो। ऐसी सभी सम्भावनाएँ जीवाजीराव ने सोची थीं। पर उन्होंने खुद ऐसा निर्णय क्यों लिया इसकी तह तक वे न पहुँच पाये थे। वे खुद भी इस झमेले में न पड़ना चाहते थे। केलकर जी के घर से निकलते समय उन्होंने कलाई घड़ी उतारकर टेबिल पर रख दी थी और तब वे इस तरह का निर्णय ले चुके थे।

कुछ भी हो, पूना के वे दिन और वह शालन, दोनों को ही वे अपने सीने में सँजोये हुए थे। लोगों के सामने वे अपनी जिन्दगी की बहुत-सी

बातें बताते थे लेकिन पूना की बात चलने पर वे चुप हो जाया करते थे। दूर कहीं देखते हुए मुस्कराते रहते थे। उस विषय को ज्यादातर टालने की कोशिश किया करते थे। वह सब सिर्फ उनके लिए था। बाद में शादी होने पर अपनी बीवी को भी उन्होंने यह बात कभी बतायी नहीं। हो सकता है कि बापूसाहब को इस बात का पता हो। लेकिन जीवाजीराव के मन पर इसका इतना असर हुआ कि कल्पना नहीं की जा सकती।

उस दौरान पूना में इस की कुछ चर्चा जरूर छिड़ी थी। लेकिन लोग बाद जल्द ही भूल भी गये थे। जीवाजीराव के मन में वे यादें हमेशा ताजी रहीं। अपने सार्वजनिक जीवन में आगे बढ़ जाने के बाद दो-तीन बार शालन से मुलाकात जरूर हुई थी। लेकिन वह शालन ही कुछ और थी। जीवाजीराव ने जबरन अपने मन के दरवाज़े कसकर बंद कर रखे थे। वे दरवाज़े खुद उनसे न खुल पाते थे।

बम्बई में जीवाजीराव ने कानून की पढ़ाई पूरी की तब हिन्दुस्तान आज़ाद हो चुका था। तभी उनकी शादी एक अच्छे-खासे खानदान की लड़की से हो गयी। जिन्दे अभी भी गरीब ही थे। लेकिन समाज में उनकी शोहरत एक होशियार युवक के तौर पर फैल चुकी थी। माँ-बाप ने जो लड़की तय कर दी उसके साथ जीवाजीराव ने शादी कर ली। फिर साँगली में वकालत शुरू कर दी। वकालत अच्छी चल निकली। खूब पैसा कमाने लगे। पार्टी के अधिवेशन में भी उन्होंने अपना सिक्का जमाया।

दो साल में ही जीवाजीराव जिला बोर्ड में चमक गये। एसेंबली के लिए उनके नाम की चर्चा भी शुरू हो गयी। प्रचार कैसे किया जाये इसे वे बखूबी जानते थे। उनका नाम प्रस्तावित कर दिया गया। चुनाव जीतना सरल ही था।

एसेंबली में पहुँचने पर जीवाजीराव की महत्त्वाकांक्षा का दर्जा और ऊपर उठ गया। सिर्फ मन में महत्त्वाकांक्षा रखने वालों में से वे न थे। उन्होंने एसेंबली और बम्बई की राजनीति का अध्ययन किया। आस पास के लोगों के स्वभाव अच्छी तरह से जान लिये और मौका आते ही खुद को उस प्रवाह में बहा दिया।

एक बार विधानसभा में प्रवेश पा जाने पर दुनिया की हर चीज़ हासिल हो सकती है इसे वे अच्छी तरह से जान गये। सवाल है खुद की ताकत का अपनी कुशलता का। सीढ़ी दर सीढ़ी वे एक एक पद हासिल करते गये। विधानसभा की पार्टी के सेक्रेटरी से लेकर मंत्री पद तक जा पहुँचे। जब वे उपमंत्री थे तभी अफसर उनसे घबराते थे।

राज्य-सत्ता का अंतिम छोर होता है—मुख्यमंत्री पद। हर मंत्री वहां

तक पहुँचना चाहता है। जीवाजीराव ने खुद कोशिश नहीं की। लेकिन विधानसभा में आने के बाद से ही उनकी नजर उस पद पर थी। राज्य के हर विभाग और जिले से वे संपर्क बनाये हुए थे। राजकीय तनाव, संगठन की खींचातानी, व्यवहार, समझौता, प्रहार, स्वार्थ—इन सारे ही जंगलों से होते हुए वहाँ तक पहुँचा जाता है। वे पहली बार जरूर असफल हुए। लेकिन दूसरी बार वे सफल हो गये।

अखबार वालों के साथ मुलाकात के दौरान वे बताया करते थे कि देश की गरीबी को खत्म करने के लिए वे राजनीति के क्षेत्र में उतरे हैं। सच पूछा जाये तो उसमें कुछ सच्चाई जरूर है। लेकिन कई बार सुबह उठकर जब वे आत्मचिंतन करते हैं तब खुद उन्हें लगता है कि यह बात पूरी तौर पर सही नहीं है, गौण है। राजनीति में आने के संदर्भ में गौण। गरीबी तो हटानी ही है। लेकिन वास्तविक प्रेरणा कुछ और ही है। और वह जब तक कायम है तब तक जिन्दगी के कांटे सरकते ही रहेंगे।

हवा को चीरती हुई कार तेजी से आगे की ओर बढ़ रही थी। सामने सायरन बजाती पायलट-कार काफी दूरी पर चल रही थी। इस वजह से रास्ता खुला था। एक-दो जगह रास्ता रुका हुआ भी मिला। वहाँ लोग उनकी ओर कुतूहल से देख रहे थे। कुछ उन्हें पहचान कर हाथ हिला रहे थे। बीच में उन्हें झुग्गी बस्तियाँ नजर आ जाया करती थीं। उन्हें देखकर मुख्यमंत्री का दिल पसीज जाता था। और उनमें काम करने की जिद बढ़ जाती थी। आज ही केंद्र ने हाउसिंग-स्कीम रद्द कर दी थी। दूसरी कोई योजना बनानी होगी। कम से कम बम्बई के बाहर इन लोगों को मकान दिये जाने चाहिए। या यहीं सस्ते मकान इन्हें मिलने चाहिए। लेकिन केंद्र आर्थिक जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार न था। राज्य की योजनाएँ पूरी नहीं हो रही थीं। एक झुग्गी हटायी जाये तो वहाँ दूसरी खड़ी हो जाती थी। कुछ जोरदार चीज करनी जरूरी थी। हमेशा की तरह ऐसे विचार मुख्यमंत्री के दिमाग में आ रहे थे। अगली कैबिनेट मीटिंग में यह सवाल आयेगा। मुख्यमंत्री अचानक उद्योगमंत्री से बोले—

'इधर फाइनेंस मिनिस्टर मिले थे ?'

'नहीं। इधर वे दौरे पर गये हुए हैं। मुझसे भी कई दिन से मिले नहीं। बस कैबिनेट-मीटिंग में जरूर मिल लेते हैं। पता नहीं उनके मन में क्या है ?

साहब उनका प्रचार तो तेजी से चल रहा है। अगली बार वे जरूर कांटेस्ट करेंगे।'

देखते हैं। कांटेस्ट की बारी आ ही गयी तो मैं रिटायर हो जाऊँगा। मुझे कांटेस्ट नहीं चाहिए। इस बार भी पार्टी का सर्वसम्मति से नेता चुन लेना चाहिए।'

नानासाहब जरा परेशान होकर बोले, "इस बार जरा मुश्किल ही दिखता है साहब! फाइनेंस मिनिस्टर तो अब खुल्लमखुल्ला बोलने लगे हैं! कुछ अखबारों में भी बातें शुरू हो गयी हैं।

हाँ। वह तो मैंने भी सुना है। देखते हैं कुछ तो करेंगे ही। झगड़ा पार्टी के हित में नहीं है। किसी एक को तो रिटायर होना ही पड़ेगा।

कौन रिटायर होगा इस बात को जीवाजीराव शिंदे अच्छी तरह जानते थे। वे पहले गृहमंत्री थे फिर मुख्यमंत्री बने। तब से ही उन्होंने फाइनेंस मिनिस्टर की गोपनीय फाइल बनाना शुरू कर दी थी। अब तो वह काफ़ी मोटी हो गयी होगी। उनके पास कई तस्वीरें हैं। कुछ फोटो भी हैं। इस वजह से अर्थमंत्री ही रिटायर होंगे उन्हें यह विश्वास था। अगले पाँच साल उनके ही होंगे। कई बचे हुए काम पूरे हो सकते हैं। कम से कम मकान वाली समस्या तो हल की ही जा सकती है। यह विभाग ही अपने हाथ में लिया जा सकता है।

कुछ पल रुककर जीवाजीराव बोले 'अब आप बाहर भी इस बात को कह सकते हैं। सी० एम० की मुकाबला करने की इच्छा ही नहीं है। मौका आ ही गया तो वे खुद रिटायर हो जायेंगे। बताते रहना।"

ऐसे कैसे चलेगा साहब, आप रिटायर हो यह।

बिलकुल चलेगा दस साल काफी हो गये। अब और किस लिए? काम काफ़ी कर चुके— काम और भी करने हैं। लेकिन क्या कुर्सी पर बैठ कर ही वे काम हो सकते हैं?'

नहीं साहब। आपकी तो बेहद जरूरत है साहब। पार्टी आपके रिटायर होने की बात कतई नहीं मानेगी।'

मुख्यमंत्री हँस दिये। देखते हैं देखेंगे।'

नानासाहब की आजिज़ी को वे खूब समझ रहे थे। चाहते थे कि मुख्यमंत्री पद पर बने रहें। वजह साफ थी। अगर फाइनेंस मिनिस्टर मुख्यमंत्री बन गये तो नानासाहब की छुट्टी हो जायेगी। मुख्यमंत्री फिर हँस पड़े।

ठीक है। काफी आगे की बात है। लेकिन अभी जो कुछ मैंने कहा उसे जरा याद रखिये। किसी को हायतौबा मचाने की जरूरत नहीं है।'

उसी पल जीवाजीराव ने निर्णय लिया—अगले मंत्रिमंडल में नानासाहब को लेना ठीक न होगा। उनके जिले का दूसरा कोई आदमी देखना होगा। तत्काल दो चार नाम उनके दिमाग में घूम गये और उन्होंने तय कर

लिया। इस दौरान नानासाहब उनका प्रचार करेंगे ही। जीवाजीराव को अपने निणय पर तसल्ली हुई। अब जो भी तबदीली करनी हो वह बिना किसी झंझट के करनी होगी। इस विषय में जीवाजीराव को पूरा आत्म विश्वास भी था। आदमी को किस तरह जोड़ कर रखना है वे अच्छी तरह जानते थे।

अच्छा तो आप विनीता को बिजनेस म डालना चाहते हैं ?"

हाँ साहब। कोशिश तो यही है। पर उसे खास पसंद नहीं है।"

फिर ?'

फिलहाल तो मैं खुद ही देखूंगा। बा" म देखेंगे। शा"ी हो जाये तो सवाल खत्म हो जायेगा।

उसकी शादी " बारे म क्या खयाल है ?"

क्या बताऊँ साहब बड़ा कठिन मामला है। उसके मन का ठीक-ठाक पता ही नहीं चल पाता। मेरी उससे बातें ही कहाँ हो पाती हैं ? इतने कामों के बीच तो ।

इस बात को जीवाजीराव अच्छी तरह से जानते थे कि नानासाहब क" काम कौन-स होते हैं उनकी फाइल भी उनके पास थी लेकिन मुख्यमंत्री न कहा यह कसे होगा जनाब ? हम लाग जनता के लिए इतना काम करत हैं लेकिन अपन घर के लिए तो कुछ वक्त निकालना ही चाहिए न ?

नानासाहब का दिल भर आया। मुख्यमंत्री इतने प्रेम से पूछ रहे हैं, यह जानकर ही वे खुश हो गये।

जीवाजीराव को जरूर अपन ढोंगीपन पर चिढ़-सी हुई। फिर उन्हें लगा कि जैसे वे मु" से वह वाक्य कह बैठे हों। एक लबी सांस लेकर वे चुप ही रहे।

तब तक गाड़ी मरीन ड्राइव पर आ चुकी थी। तेजी से दौड़ रही थी। समु"र की लहरें उफान पर थीं। आसमान साफ था। लेकिन गर्मी ज्या" अनुभव हो रही थी। कोट का ऊपरी ब" बटन उन्हें नहीं सुहा रहा था। पसीने स अजीब चिपचिपापन महसूस हो रहा था। गाड़ी एयरकंडीशंड करवा लेनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने निर्णय ले लिया। आज ही सेक्रेटरी को नोट करवाना चाहिए। "िन भर हम परेशान होते रहते हैं। कष्टों के बीच इतनी राहत तो मिलनी चाहिए।

नानासाहब की और बातें करने की इच्छा थी लेकिन तभी सचिवालय आ गया। चौकी"ार ने फाटक खोला। ड्यूटी पर तैनात पुलिसमान ने सलाम ठोंका। सलाम स्वीकारत हुए मुख्यमंत्री अपने केबिन म

य। साढ़े बारह बज चुके थे।
कमरे से उनके पी० ए० अदर आये। टेबिल पर फाइलों का

फाइल पर दस्तखत करने हैं? मुझे अभी बिलकुल वक्त नहीं
त्री ने कलाई की घड़ी देखते हुए कहा।
ने चुपचाप दो फाइलें आगे कर दी। जीवाजीराव ने कहा,
रूरत है?'
ली है साहब। एडमिनिस्ट्रेशन की रिपोर्ट का एप्रूवल है

वी ने हस्ताक्षर कर दिये। टेबिल के दायी ओर अभी और भी
उनकी ओर इशारा कर के बोले और ये?
नी अर्जेंट नहीं। कल भी हो सकेंगी। उनमें कुछ पन्ना भी

डेली रिपोर्ट में कुछ है?'
मुख्यमंत्री के दायी ओर खड़े थे। मककर टेबिल पर हाथ टिका
मे से बोले खास कुछ नहीं। पर एफ० एम० की हरकतें बढ़
जकल वे कोल्हापुर में ही जमे हुए हैं पिछले तीन दिन से।
नके साथ ही है।'
डिप्टी रवेन्यू?'
हब।
ी सोचता था कि वे बदल जायेंगे। अच्छा तो यह बात है!

ने दो कागज आगे सरका दिये। मुख्यमंत्री ने झट से पढ़ लिये।
ो। ठीक है। अच्छा हुआ जो पहले ही पता चल गया। नहीं
गलतफहमी में रहते।'
त्री कुछ देर के लिए सोच में पड़ गये। फिर उन्होंने ही पूछा
?
डेली रिपोर्ट में कुछ नहीं है।
त्री को शहाणे पर पूरा भरोसा था। शहाणे पिछले नौ साल से
० थे। मुख्यमंत्री के आधे काम वे ही देखा करते थे। खुद
ही बाहर के जिले से उन्हें बुलवाया था। काफी मामलों में वे
तबार करते थे।
वस्टन स्टार' को फोन किया था?'
त्री ने सख्त चेहरे से उनकी ओर देखा। शहाणे ने कहा उनके

चीफ रिपोर्टर अय्यर को तो आप जानते ही हैं ? उसी ने यह खबर दी थी।

हां अय्यर। पर वह इतना चीफ नहीं है। अच्छा आदमी है।'

'यस। एंड ही इज टफ। मेरा तो यही खयाल है। उससे एक बार मिल लेना चाहिए। मैंने उसे बुलवाया है।"

कोई हर्ज नहीं पर हमें क्या करना है ? जो कुछ आरोप लगाने हों खूब लगाते रहें। प्रमाण तो दें वे। कम-से-कम हम कोर्ट में तो जा सकते हैं। या छप्पर तोड़ चलाने में क्या रखा है ? मुझे तो इन सब में एक लिंक नज़र आती है।

बिल्कुल सही है साहब। अय्यर और डीकास्टा के अच्छे संबंध हैं। फ़ोन और मिलना-जुलना भी।'

'अच्छा।

मुख्यमंत्री चुप रहे। फिर बोले "कास्टा की फाइल आ गयी ?'

'हां साहब अभी चाहते हैं ?

'देखता हूं। अभी कुछ वक्त है।'

शहाणे ने टेबिल पर रखी घंटी का बटन दबाया। तभी चपरासी अन्दर आया।

देखो जरा सबनीस साहब को अंदर भेजो।

तत्काल एक रोबीला सी० आई० डी० अफसर अंदर आया। आते ही उसने मुख्यमंत्री को सलाम ठोका। उसके दायें हाथ में एक मोटी सी फाइल थी।

बैठिये कुर्सी की ओर इशारा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा। शहाणे अन्दर चले गये।

सबनीस बैठे नहीं। खड़े खड़े ही उन्होंने फाइल मुख्यमंत्री के सामने कर दी।

यह तीन पेज की समरी है, सर। पाइंट बाई पाइंट। और हर पाइंट के डिटेल्स अंदर हैं।

मुख्यमंत्री ने फिर कलाई की घड़ी पर निगाह डाली। पौने बज रहा था। और बीस पच्चीस मिनट रुका जा सकता था। उन्होंने कहा बैठिये।

जीवाजीराव ने फाइल पढ़नी शुरू की। वे उस पन्ने में पूरी तरह मशगूल हो गये। समरी में संक्षेप में काफी जानकारी दी हुई थी। कास्टा की पूरी भूमिका उसमें थी। मुख्यमंत्री को वह बड़ी आकर्षक लगी। कास्टा की ग़रीबी। उसका बम्बई में अजीब हालत में आना और नेता के

तौर पर उसकी प्रगति ! कोस्टा के लिए उनके मन म वडी सहानुभूति-सी पैदा हो गयी। वह पन्ते समय जीवाजीराव को अपने न्नि याद आ रहे थे। उन्होने खुद पहले मुफलिसी मे दिन गुजारे थे।

समरी म कोस्टा को मिला फ्लट जीप, ईनाम—सबकी जानकारी दी गयी थी। किस किस म उसकी खास पहचान है इसकी जानकारी भी थी। उसको जानकारी दने वाले कौन कौन थे, दिल्ली से आन वाली जान कारी कहा से आती है—इस बारे म छानबीन चल रही थी। यूनियन की तनखाह ऊपर से मिलने वाले पैसे की जानकारी उसमे थी। किस किस लडकी के साथ उसके सबध हैं इसकी भी लिस्ट थी। विनीता दशमुख का नाम आया तो मुख्यमत्री रुक गये। उन्होने ऊपर नजर उठायी।

विनीता देशमुख—नानासाहब की बेटी ? '

यस सर।

हाऊ डीप इज इट ? '

वेरी मच, सर। डिटेल्स पीछे दिये हुए हैं।

' देखें।'

सबनीस न खडे होकर फाइल से कागज निकालकर सामने कर दिये। मुख्यमत्री ने अच्छी तरह पढ लिये। कोस्टा और विनीता की मुलाकातो के डिटल्स थे। एक होटल म हुए सवाद भी दिये हुए थे। मुख्यमत्री को अपन सी० आई० डी० पर गव हुआ। उनके चेहरे पर मुस्कराहट खिल आयी। सुराग मिलन की खुशी हुई। उन्होंने फाइल एक ओर रख दी।

और कुछ ? '

सबनीस कुछ देर ऐसी हालत म रहा कि कहे या न कहे। फिर वह बोला कोस्टा पर हम लोगो की पक्की निगरानी है। और भी लोग उस ट्रैक करते है। '

यह लोग कौन है ?

एक को पकडने की कोशिश की गयी थी पर सफल न हो सके। फिर हमने ही ट्रकिंग रोक दिया।'

अब फिर ट्रकिंग शुरू कीजिये और दूसरे लोग कौन है जरा पता लगाइये। मुख्यमत्री ने कडे शब्दों म कहा।

यस सर। इन फक्ट वी आर अवेटिंग आडस, सर।'

नाऊ डू इट क्विक।

' यस सर।

एक बात और मुख्यमत्री ने आराम से कहा "कोस्टा के जो आरोप हैं, उनके बारे म इस फाइल मे कुछ है ?"

सबनीस कुछ परेशान हुए। उन्हें पसीना आ गया। मुख्यमंत्री ने कहा "परेशान होने की जरूरत नहीं। आप जो कुछ कहना चाहते हैं कहिये। मेरे पास वक्त कम है।"

"सर, सर आई वाज टोल्ड कि डीकोस्टा की कांप्रिहेंसिव फाइल आपको चाहिए। आई वर्कड हार्ड ।"

आई नो आई नो और फाइल वाक़ई अच्छी है।"

मुख्यमंत्री ने बेल बजायी और चपरासी से कहा 'शहाणे को भेजना।' शहाणे अंदर आये। जीवाजीराव ने कहा—

कोस्टा के एलिगेशन्स क्या हैं ?"

शहाणे ने कुछ सोचकर कहा "साहब मेरे ख्याल से इनके लिए आपको एम० सवनीस की हरेक फाइल देखनी होगी। आई० जी० की एडवाइस है कि फाइलें तयार करना डेंजरस है।"

'ठीक है।" फिर शहाणे को रुकने का इशारा कर के मुख्यमंत्री ने सबनीस से कहा यू नो कोस्टा क्वाइट वेल ?"

वैल यस सर, फ़ेअरली वेल।"

अच्छा अब साफ़-साफ़ बताओ कि यह आदमी कितना स्ट्रौंग है ? मतलब पालिटिकली नहीं प्रेशर पर कितना झुक सकता है ?"

सबनीस ने सोचा और कहा "डाइरेक्ट प्रेशर का उल्टा ही रिएक्शन हो सकता है मुझे ऐसा लगता है। पर आई थिंक ही कन बी वनरेबल टू मर्टेन प्रेशर। मतलब सीधे उसके आर्डिनाज को चलेंज कर दिया जाये तो ही इज क्वाइट क्लियर। मतलब इफ यू परमिट मी सर आई विल से—वह बड़ा महत्त्वाकांक्षी आदमी है। आई मीन उसकी महत्त्वाकांक्षा को बल दिया जाये तो ही वन बी टक्कर"। आई एम सारी। वाक़ई असलियत कहनी नहीं बनती, सर। पर वह आदमी कैसा है यह मैंने बता दिया सर। आप अगर लिबर्टी दें तो तो।'

'यस।'

'छोटी-मोटी बातों से वह नहीं करीब आ सकता, सर।'

अच्छा। आपने ठीक काम किया। थैंक्यू वेरी मच।'

सबनीस उठा और सलाम ठोककर चला गया। मुख्यमंत्री ने शहाणे से पूछा, "आपने फाइल पढ़ी ?"

'यस, सर।"

एम० सेवानी की फाइल पर नोट तैयार होने में कितना वक्त लग सकता है ?'

"इट डिपेंड्स। पर मैं होम-सेक्रेटरी से कहता हूँ।"

कास्टा तीन बजे आन वाला है। आई वाट द नोट हाफ एन अवर बिफोर दट। उसके आरोपों म कितना दम है, यह जानकारी मिल जाये ता काफी है।"

'यस सर।"

फिर कुछ देर सोचकर मुख्यमंत्री ने कहा, "आपको क्या लगता है? आर० जी० को कसल्ट किया जाये?"

मै ऐसा नही सोचता साहब। ही इज टफ दैट व। मेरा खयाल है आप ही पसनली उस अच्छी तरह हैडिल कर सकते हैं।"

ऐसी बात है?"

यस, सर।'

'ठीक है।

मुख्यमंत्री उठ गये। एक बज चुका था। तभी पार्टी का ट्रेजरर भी बाहर आकर बठ गया था। बाहर एक दो शिष्टमण्डल भी आये हुए थे। मुख्यमंत्री ने उनके आवेदन ल लिये और व शहाणे को दे दिये। हार लिये और वे गाडी म आ बठे। ट्रेजरर भी गाडी म बैठ गया। एक सक्रेटरी ने भाषण क कागज साथ म दे दिये। उन्ह बिना देखे ही जीवाजीराव ने सिर के पीछे रख लिये। फिर वे आँखें मूद कर गद्दे से टिक कर बठ गये। गाडी सचिवालय से बाहर आयी तो बिना आखें खोले ही वे ट्रेजरर से बाले, कहिये, शुरुआत तो अच्छी हुइ न?

हा, साहब।'

नानासाहब आपको और भी पार्टियाँ देंगे। मैंने उनसे कह दिया है। उनसे मिलते रहिये।'

ताज आने तक जीवाजीराव बस ही आखें मूदे पडे रहे। बस इतना ही आराम। पहले तो उन्ह इतने आराम की जरूरत भी महसूस न होती थी। लेकिन इधर यो आखें मूदकर पडे रह ना अच्छा लगता था। नींद तो आती नही लेकिन ताजगी जरूर महसूस होती है। जीवाजीराव ने इसकी आदत ही बना ली थी। आँखें मूद ली जायें तो दिमाग म चल रहे सारे ही विचार अलग हो जाते हैं। मन एकदम खाली-खाली सा हो जाता है। लगातार चलती मशीन बद कर दी जाये तो कैसी शाति महसूस होती है। उन्ह कुछ ऐसा ही लगा करता था। मशीन रूम का दरवाजा बद कर देने पर जसा महसूस होता है वसा ही उन्हे लगा करता था। शात निश्चल, और निर्विकार। इतने ही वक्त म वे अपनी थकान स मुक्ति पा जाते थे और नये जोश के साथ काम म जुट जाते थ।

ताज' के दरवाजे पर व्यापारी सघ के लोग उनके स्वागत क लिए

तयार खड़े थ। लच-मीटिंग थी और मुख्यमत्री खास महमान थ। उनक भाषण का विषय था— व्यापारी सगठन और सरकार की अपक्षाएँ। सभी जान-पहचान चेहरे थे। बैठ जाने पर मुख्यमत्री न पत्रकारो की ओर नज़र डाली। सभी कुर्सियाँ भरी हुई थी। एक-दो चेहरे जान पहचाने थे। पत्रकारों ने नमस्कार किया। जीवाजीराव भी मुस्करा दिय। व सोचन लगे कि भाषण म ऐसा क्या कुछ कहा जा सकता है कि जिससे यह पत्रकार ज़ोरदार रिपोट लिख दें।

जीवाजीराव के आते ही लच शुरू हो गया। हाल एयरकडीशड था। कडीशनर स सुगध बह रही थी। महीन और मधुर सगीत की धुन चल रही थी। बत्तियाँ भी धूमिल थी। खाना अच्छा था। पत्रकारों को छोड़ दिया जाय तो बाकी सभी अच्छे लिबास म थ। वेटरों के कपड़े भी टिपटाप थे। जीवाजीराव शिंदे खुश हो गय। पहल उन्हें ऐसी जगह पर अजीब लगा करता था। लगता था कि दम घुटा जा रहा है। लेकिन अब आदत हो चुकी है। अपराध-बोध होता ही नहीं। आखिर यह पैसा इन्हीं व्यापार-लोगों का है। इनके खाने का अपनी बुद्धि पर असर न हो जाय, बस! फिर इन लोगों का भी कुछ हक़ तो है ही। इनके बगैर सरकार के भी काफी काम रुक सकते हैं। इन्हें जोड़कर रखना चाहिए।

लच के दौरान सगठन क अध्यक्ष करणजी देसाई मुख्यमत्री को सगठन का महत्त्व समझा रहे थ और उनके करीब बैठा पार्टी का सक्रेटरी ट्रेजरर स राजनीति पर बातें कर रहा था।

लच खत्म हुआ और कॉफ़ी के दौरान ही करणजी भाई बोलने के लिए उठ खड़े हुए। उन्होंने बतलाया कि सगठन की उपयोगिता कितनी है। सगठन के ज़रिए व्यापारी वग की माँगों पर सरकार स कुछ करने को कहा जा सकता है। व्यापारियों और सरकार के बीच सबन्ध ठीक रहे तो बहुत-सी ग़लतफ़हमियाँ दूर हो सकती हैं। सगठन क सामाजिक कार्यों क बारे म उन्होंने बताया कि सगठन न डिनर बन्द करके लच स काम चला-कर सात हज़ार रुपये बचाय हैं और वे अध्यक्ष को दे दिय गय हैं।

इतनी बात सुनकर मुख्यमत्री को हँसी आ गयी। अपन भाषण क शुरू म ही उन्होंन कहा कि वाकई अगर सोशल-वर्क करना हो तो आज के लच की भी ज़रूरत न थी। केवल दिखावा करने से कुछ होना नहीं है। ठोस काम करन की सख्त ज़रूरत है। कीमतें स्थिर रखन के लिए व्यापारी वग सरकार और जनता के प्रतिनिधियों की एक समिति बनाने का सुझाव कैबिनेट की मीटिंग म आया था। इसकी घोषणा भी उन्होंने कर दी। पत्रकारों को सामग्री मिल गयी। ज़्यादा नफ़ा कमाने के लालच पर भी

उन्होंने प्रहार किया। उन्होंने कहा कि सगठन के सदस्यों को याद रखना चाहिए कि उनकी कुछ सामाजिक जिम्मेदारी भी है। समाज ज्यादा देर इतजार नहीं करेगा।

भाषण के दौरान मुख्यमत्री पत्रकारो की ओर जरूर देख लेते थे। सभी पत्रकार गदन नीची किये नोटस लेने म मशगूल थे। उन्ह अच्छा खासा मसाला मिल गया था। इसी वजह से वे खुश थ। भाषण खत्म होने पर तालियाँ बजी। बाद म पत्रकार मुख्यमत्री के इद गिर्द आ खडे हुए।

एकदम फस्ट क्लास कापी साहब!'

'फट पेज स्टोरी सर!'

जीवाजीराव सिफ तसल्ली से हँस दिय।

शिंदे साहब आप जो समिति बनाने वाले हैं वह कब तक बन जायगी?'

बस जल्दी ही।

पर उससे कीमतें घटेंगी क्या आप ऐसा सोचते हैं?'

हाँ। इसीलिए तो समिति बनायी जायेगी जीवाजीराव जरा कडे शब्दा म बोल। फिर हँस कर बोल और अगर सभी मदद करें तो क्या मुश्किल है? खास तौर पर आप लोग और इनका सगठन।"

इस पर सभी हँस दिये और मुख्यमत्री चल दिये। गाडी म बठने पर मुख्यमत्री ने दृजरर स पूछा कहिये आपका काम हुआ कुछ।

बस हुआ ही समझिये सर। वाकई आपका भाषण बडा जोरदार रहा। सभी पत्रकार एकदम खुश थे।' मुख्यमत्री फिर हँस दिये।

जीवाजीराव ने खाना खास नहीं खाया था। सक्रेटरी दो गोलियाँ ले आया था उन्हें वे ल चुके थे। फल का रस चिकनसूप कुछ उबली तरकारियाँ और काफी। इतने स चुस्ती बनी रहती है। भारीपन महसूस नहीं होता। नीद भी ठीक आती है। इसी वजह से जब वे अपने केबिन म वापस पहुचे तो ताजे लग रहे थ।

शहाण जरा बचन नजर आ रहे थे।

नोट तैयार हो गया?

'हाँ साहब। आई० जी० खुद ही आय हुए है।

अरे! फिर उन्हें अदर भजिये।

साहब घर से सुधाजी का फोन था।

क्या—कुछ खास?"

आने पर कार्टेक्ट करने के लिए कहा है।"

टायल कीजिये।'

सहाय ने टायल किया और रिसीवर जीवाजीराव के हाथ में देकर वे केबिन के बाहर खुद ही चले गये।

हू " जीवाजीराव ने फोन में सिर्फ आवाज भर दी।

अजी, आपको अभी तक खबर नहीं लगी शायद ? ' सुधाजी की आवाज कांप रही थी।

क्या क्या हुआ ?

' पेरिस से मिलिंद का केबिल आया है !'

क्या ?"

सुधाजी परेशान हुई। दूसरी तरफ़ से नाक पोंछने की आवाज आयी फिर वे रानी आवाज में बोलीं अजी, वहीं की एक फ्रेंच लड़की के साथ वह परसों शादी कर चुका है।'

जीवाजीराव के पेट में गोला-सा उठा। जरा साँस भी तेज हुई। पर जीवाजीराव ने खुद को सम्हाला। कुछ देर रुककर वे इतना ही बोल अच्छा !"

सुधाजी भी कुछ न बोलीं। कुछ देर बाद फिर नाक पोंछकर बोलीं जरा अच्छा क्या ? अब क्या करना होगा ?"

' सुनो, जरा तसल्ली से काम लो, जीवाजीराव ने शांत स्वर में कहा। कुछ देर रुककर बोले, ' अब किया ही क्या जा सकता है ? बेकार हायतौबा न मचाओ। चारों तरफ़ खबर फैलेगी। लोग-बाग तुम्हें बधाइयाँ देंगे। तुम स्वीकार करो। तमाशा खड़ा करने में कुछ नहीं रखा। इधर मैं उसे बुलवाये लेता हूँ। क्या ?' उधर से कोई स्वर नहीं उभरा। तब उन्होंने दुबारा पूछा ' क्या ?' सुधाजी ने सिर्फ 'हाँ' कहा।

अच्छा वह रकम आयी होगी न ?'

आयी है।

"उसे लेकर किसी अच्छे सिनमा में चली जाओ। अपनी दूसरी गाड़ी वर्कशाप से आ गयी है न ?"

हाँ।

'ठीक है। और सुनो, मिलिंद ने तार में कुछ खुलासा किया है ?"

' नहीं। सिर्फ शादी करने की बात लिखी है।'

'अच्छा मैं देखता हूँ।'

फोन नीचे रखकर जीवाजीराव चुपचाप बैठे रहे। मिलिंद उनका अकेला लड़का था। दूसरी लड़की थी। जीवाजीराव बस बड़े ज़िलेदार आदमी थे। लेकिन यह खबर अनपेक्षित थी। इसी वजह से हल्का-सा

धक्का लगा था। बस।

एक मिनट के भीतर ही उन्होंने अपने-आप को सम्हाल लिया, घंटी दबा दी। शहाणे के आने पर उन्होंने हँस कर पूछा 'आप को मालूम हुआ ?'

सुधाजी ने ही बताया था।

जीवाजीराव कुर्सी से टिक कर बैठ गये। फिर हँसकर शहाणे से बोले—

'खैर जाने दो जो हुआ सो हुआ।' शहाणे खड़े थे।

अब ऐसा कीजिये—काँग्रेचुलेशन का तार कर दीजिये।'

यस सर।

और रात अपने घर से उसे काल कीजिये नंबर है न ?

है सर।'

ठीक है। उससे ज़रा डिटेल्स पूछ लीजिये। कौन सी लड़की है बैक ग्राउंड क्या है ? यू नो मैं आप पर छोड़ता हूँ और उसे इधर बुलवा लीजिये। वह चाहेगा तो मुझ या अपनी माँ को फोन कर सकता है। क्या ? व्हाट डू यू थिंक ?'

कोई हर्ज नहीं सर।

ओ के०। आई० जी० को भेज दीजिये।

इंसपेक्टर जनरल के अंदर आने पर मुख्यमंत्री ने कहा 'इट वाज ए गुड जाब। इट मोस्टा फाइल। एट मच ए शार्ट नोटिस।'

थैंक्यू सर।'

शहाणे ने नोट आगे कर दिया। एक ही पृष्ठ था। जीवाजीराव ने नोट पढ़ लिया और वे कुछ हड़बड़ाये। सोच में पड़ गये। दिमाग परेशान हो गया। उन्हें लगा जैसे पैरों तले की ज़मीन खिसक रही है। सिर भन्ना गया। पर तत्काल उन्होंने अपने आप को सम्हाला। इतनी जल्दी हार मानने में कुछ नहीं रखा। ऐसे वक्त ही मज़बूती से खड़े होने की जरूरत होती है।

मतलब यह कि उसके आरोपों में कुछ सच ज़रूर है।"

कुछ देर तक कोई कुछ न बोला। खामोशी। जीवाजीराव ने होंठ चबाये। इसे केबिनेट में माफ करने की बात उन्होंने तय कर ली। कुछ देर बाद आई० जी० बोले डायरेक्ट संबंध तो किसी का दिखता नहीं। पर कम-से-कम दो का संबंध तो है ही। लीगली फाइट आउट तो कोई करेगा नहीं। लेकिन मॉरल इम्प्लिकेशंस काफी हैं।

आई नवर इमेजिंड' मुख्यमंत्री बोले।

आई० जी० ने कुछ अचरज दिखाया। 'मेरा खयाल था कि आपको

पहले से ही खबर होगी। फाइल में सब कुछ है ही।"

मुख्यमंत्री ने गर्दन हिलायी। 'फाइल मैंने पूरी तौर पर पढ़ी नहीं, थोड़े थोड़े एक-आध पीस देखा है। इसी वजह से वे इम्प्लिकेशंस ध्यान में नहीं आ पाये।'

कुछ देर बाद मुख्यमंत्री ने आई० जी० से कहा, 'ठीक है। यह नोट तो पर्सनली आपने ही तैयार किया है न?'

'यस सर। मेरी ही हैंडराइटिंग में है। जानबूझकर टाइप नहीं करवायी।'

'गुड।' मुख्यमंत्री ने वह कागज मोड़कर जेब में रख लिया। 'आई विल हैंडिल इट।'

'मेरी आवश्यकता है?'

'ना-नो यू कैन गो नाऊ। थैंक्यू वेरी मच।'

शहाणे ने कहा, 'सर, वर्ल्ड बैंक आफिसेस की एक टीम कर्टसी कॉल के लिए आयी हुई है।'

'ठीक है, भेजिये उन्हें। काम तो कुछ नहीं है न?'

'सिर्फ कर्टसी कॉल। साथ में फाइनेंस-सेक्रेटरी हैं। दस-पंद्रह मिनट।'

'ठीक है।'

'कास्त्रा भी आया है। उसे रुकने के लिए कहता हूँ।'

मुख्यमंत्री ने गर्दन हिलायी और अंदर आने वाली टीम का खड़े होकर हँसते हँसते स्वागत किया। हरेक से हाथ मिलाया। यह टीम दूसरे एक की थी। पहली टीम के साथ जिस प्रोजेक्ट पर मुख्यमंत्री और अर्थमंत्री ने चर्चा की थी, उस योजना और उसके आर्थिक परिणाम की जांच के लिए यह टीम आयी हुई थी। मुख्यमंत्री ने उनसे बातें कीं। काम के बारे में सवाल किये। चाय ली और उनके साथ फोटो खिंचवाये।

घंटी बजाने से पहले उन्होंने अपने हाथ मसले। मुंह पर हाथ फेरा। मन में अन्दर कुछ सोचा और घंटी दबा दी।

राशिशियन डीकास्टा के अन्दर आने पर मुख्यमंत्री ने हँसते हुए उसका स्वागत किया।

'हलो हलो मिस्टर कास्त्रा, हाउ डू यू डू?'

'हलो सर। हाउ डू यू डू?'

'काफी दिनों बाद मिल रहे हो और कभी अजीब बात है कि आपके पास वह फाइल नहीं दिखायी दे रही?' जीवाजीराव ने हँसते हुए पूछा।

'मैं जानता था कि आप यह सवाल जरूर करेंगे, इसीलिए मैं अपने साथ वह फाइल नहीं लाया।' कोस्टा भी उसी स्वर में बोला।

मुख्यमंत्री जीवाजीराव शिंदे फिर हँस दिये। बैठ गये। बोले, 'बैठिये।"
आपकी फाइल के बारे में काफी सुना है।'
सिर्फ सुना है ?"
आपकी फाइल से भी मोटी फाइल मेरे पास है इफ यू बिलीव मी।'
वेल आई डोंट हैव एनी रीजन नॉट टू बिलीव यू सर। लेकिन वह आपका जाब है। मैं तो एक मिशन के तौर पर काम कर रहा हूँ।"
'आई एप्रिशिएट।'
और यह सब अकेला ही कर रहा हूँ। आपको तो उन मुश्किलों की जानकारी होगी। मुझे जान से मारने की धमकियाँ तक मिल चुकी हैं।
बाई द वे आपकी पिस्तौल की अर्जी स्वीकार कर ली गयी है।'
थैंक्यू।'
पर मेरा ख़याल है कि आप यदि सरकार और पुलिस पर विश्वास रखें तो उसकी जरूरत आपको नहीं पड़ेगी।'
सरकार और पुलिस पर विश्वास ?
ह्वाई नाट ?"
आप मुझे हँसने के लिए मजबूर कर रहे हैं।'
नहीं। आई एम स्पीकिंग विद आल सीरियसनस। आप यदि हम पर विश्वास करते रहें तो आपकी कई मुश्किलें हल हो सकती हैं।
'आप क्या कह रहे हैं यह मैं नहीं समझ पा रहा हूँ।'
'मैं तो बिलकुल सीधी बात कह रहा हूँ कास्टा साहब। कोई रहस्य वाली बात नहीं। हम आपका विश्वास ही तो चाहते हैं।"
पर विश्वास किस पर किया जाये ? कुछ पल बाद कोस्टा ने कहा, 'मैं सच कह रहा हूँ शिंदे साहब जितनी ज्यादा जानकारी मिलती जाती है उतना ही लोगों पर से विश्वास जाता रहता है।
मैं मानता हूँ पर आपसे ज्यादा जानकारी तो हम हासिल कर सकते हैं। गरज कि हमारे पास साधन हैं। तिस पर भी हम लोगों पर विश्वास करते हैं। करना ही पड़ता है। अब देखिये न, मैं तो आप पर पूरा विश्वास करके बोल रहा हूँ,' पास रखी फाइल पर हाथ रखते हुए मुख्यमंत्री ने कहा।
मतलब ? '
मतलब पूरे विश्वास के साथ। मुख्यमंत्री की हैसियत से नहीं। बिलकुल मैन टू मैन।'
मैं यह नहीं जान पा रहा हूँ कि आपका इशारा किस तरफ है।' कोस्टा ने हँसते हुए कहा आपने मुझे क्यों बुलाया, यह भी नहीं समझ पा

रहा हूँ ?'

मुख्यमंत्री जीवाजीराव शिंदे दिल खोलकर हँस दिये। उन्हें लगा पहली बाजी वे जीत गये हैं। स्थिति हाथ में आने से उनका आत्मविश्वास भी बढ़ गया। हँसते हुए ही वे बोले 'बातें जरूर करेंगे। मैंने आपको दूसरे ही काम के लिए बुलवाया है। आपकी फाइल के बारे में आज एक कम्गि पढ़ी इसलिए ।' इतना कहकर उन्होंने घंटी दबा दी और चपरासी से चाय लाने के लिए कहा। शहाणे को इंटरकाम पर बुलाया और कहा—

कैबिनेट का वक्त तो तय हो चुका है न ?

साढ़े तीन का वक्त था। लेकिन अभी तक एफ० एम० कोल्हापुर से नहीं लौटे हैं सर।

ठीक है। कलाई की घड़ी की ओर निगाह डालते हुए उन्होंने कहा, मैं पाँच-दस मिनट देर से ही आऊँगा। अभी सवा तीन हुए हैं।

ओ के सर।'

चाय आने तक मुख्यमंत्री ने इधर उधर की जानकारी ली। एक-दो फोन भी इसी बीच आये। एक सेक्रेटरी फाइल लेकर आया। उस पर हस्ताक्षर किये। चाय वाला जब चला गया तो कोस्टा से धीमे से बोले—

हूँ जिन्दगी में सेटिल होने की बात नहीं सोचते आप ?

मतलब ?'

'नहीं यों ही पूछ रहा हूँ। हमने सुना है कि नानासाहब देशमुख की लड़की के साथ आपके गहरे संबंध हैं।

कोस्टा हड़बड़ाया। उसकी और विनीता की एक-दूसरे से जान पहचान है यह बात जाहिर थी। लेकिन बात मुख्यमंत्री तक पहुँच गयी, यह बात नहीं जानता था।

'नहीं। वह तो मेरी गुड फ्रेंड है।'

एंड यू आर वेरी क्लोज एडमायरर।'

वेल आई डोंट नो।

बट आई नो।

मुख्यमंत्री हँस दिये। 'उसके पिता को भी मालूम है।' फाइल की ओर देखते हुए उन्होंने कहा 'यू डोंट हैव टु अपोलोजाइज। जैसे मैं अपने वीक पाइंट जानता हूँ वैसे आपके भी समझ सकता हूँ। डोंट बी एबेरेस्ड ।'

मुख्यमंत्री को एहसास हुआ कि वे जरा ज्यादा ही भावना और प्यार से बोल गये। खुद के वीक पाइंट की याद कोस्टा के सामने ही कैसे आयी ? यह उसकी फ़ाइल से मालूम होता है कि कोस्टा बड़ा जीवट का आदमी है। हमने जरूर अपनी जवानी में अपनी आकांक्षाएँ दबाकर रखी थीं।

कोस्टा कुछ न बोला। लेकिन इस बात को वह ताड गया था कि मुख्यमंत्री के पास जो फाइल है, उसमे क्या हो सकता है। ज्यादा से-ज्यादा क्या हो सकता है उसमे ? मेरे फ्लट की बात जोप फ्रिज, लडकियो क बारे म जानकारी मुझे जानकारी देने वाले काटक्ट। लेकिन इस जानकारी के बल पर मुख्यमंत्री कर ही क्या सकते हैं ? वे मुझे खरीद तो सकते नही। विनीता दशमख को लेकर इतने इल्जिाम तो हो नही सकते। उस लडकी को तोडा नही जा सकता। वह मासूम है और जिद्दी भी। मौका आ जाये तो बाप को धक्का दे मेरे पास आ सकती है।

मुख्यमंत्री गभीर स्वर म बोले मैंने आपको एक जरूरी काम के लिए बुलवाया था। आपकी पिस्तौल की अर्जी परसो मेरे पास आयी इसीलिए याद हो आयी आपकी फाइल की।'

शिंदे फिर बोले मैं आपकी लेबर मूवमट बारीकी म देख रहा हूँ। बिलकुल शुरू स ही।

ठीक है" कोस्टा ने हसते हुए कहा आपकी पुलिस ने हम डडे भी लगाये है।

अजी अपना काम आपने किया और हमने अपना काम। लेकिन क्या आप समझते है कि हमने यह काम दुश्मनी की वजह से किया ? फ्रैंकली बताइए। मजदूरो की सभा म जो बातें कहत है वह नही।'

नही। सभाओ मे भी मैंने आप पर दुश्मनी के आरोप नही लगाय है। मैं तो व्यक्तिगत रूप से कह रहा हू।'

एक्जक्टली। और हम जो करना हो वह हम कर सकते हैं यह भी आप जानते है।'

आप जरूर कर सकते है कोस्टा रूखेपन से बोला।

पर वे तो मामूली बातें हैं। आपके बडे-बडे साथियो के बारे म इतनी बात होने पर भी आप कुछ नही कर पा रहे।

आइ एम सारी। आपकी बातें जरा कुछ और ही हुई जा रही है। मुझे इस विषय पर बात ही नही करनी है।

कोस्टा कुछ न बोला। यह देखकर मुख्यमंत्री मुस्कराये। वे बोले आपको यह तो नही लगता कि मैं आप पर प्रेशर डाल रहा हूँ ?'

ना बिलकुल नही।

नही अगर वह बात हो तो आज बातें यही बद करते है। दूसरी बात कभी और कर लेंगे। मैं किसी खास उद्देश्य से कुछ कहूँ और आप कुछ और ही समझ लें तो ठीक नही। हमारे मन साफ हो तो ही बातचीत का कुछ अर्थ है।'

बिलकुल ठीक। मैं भी यही सोचता हूँ।

फिर ठीक है। मैंने तो पहले ही कहा था मैं आपके काम को अच्छी तरह देख रहा हूँ। एड आई लाइक यूअर मथड्स। हमारे काम मे आप मदद कर सकते हैं?"

अपने मजदूरों के कल्याण के लिए मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हूँ।

हर डिपाटमट के लिए हम सलाहकार समिति बना रहे हैं। मजदूर सलाहकार समिति का काम आप देखिये।"

आपकी पार्टी में भी तो कई मजदूर-नेता हैं।'

फिर भी पर्सनली आपसे रिक्वस्ट है कि आप ही इसे सभालिये।'

कुछ देर रुककर वे बोले वैसे अभी लेबर मिनिस्टर को पता नहीं है पर आपको कान्फिडेंस में लेकर कह रहा हूँ।'

खयाल तो अच्छा है पर मुझे जरा सोचना होगा।

जरूर सोचिये पर इसमें सोचने लायक क्या है?

है तो। आप एक जिम्मेदारी का काम सौंप रहे हैं। सिर्फ मेंबरशिप के लिए पूछते तो कोई बात न थी। लेकिन आप तो समिति की जिम्मेदारी मुझ पर डाल रहे हैं।

ठीक है पर मुझे एक बात और पूछनी है। मजदूरों के कल्याण और अधिकारों के बारे में कुछ खयाल तो आपके होंगे ही। क्या आप यह नहीं सोचते कि ऐसा जरूर होना चाहिए?'

बिलकुल लगता है। इसीलिए तो इतनी जानकारी कर रहे हैं हम लोग।

राजनीति और मजदूरों के बारे में आपके यह विचार हैं। उसके लिए आप इतनी जानकारी कर रहे हैं। और इतना होने पर भी उनका भला होगा या नहीं यह विश्वास नहीं है आपको?'

'मतलब?

मतलब यह कि अपने राजनैतिक खयाल अमल में लाने के लिए हाथ में सत्ता जरूरी होती है और बिना सत्ता के कुछ नहीं हो सकता। हम लोग सत्ता प्राप्त करने या उसे हाथ में बनाये रखने की कोशिश क्यों किये जाते हैं इस बारे में कभी आपने सोचा है?

पर मेरा अनुभव तो यह है कि सत्ता आदमी को करप्ट कर देती है।

'वह तो आदमी के कैरेक्टर पर निर्भर करता है। अपने विचारों और विश्वासों पर निर्भर होता है यह सब। और इसी डर में सभी सत्ता

से भागने लगें तो कस चल सकता है ?'

'पर शिंदे साहब यह सब आप क्यों पूछ रहे हैं ?"

आप समझ ही गये होंगे ?'

'इसे निमंत्रण मान लिया जाये ?'

खुद मैंने दिया है, बीच म कोई भी नही है।

'मुश्किल है जरा।'

इसम मुश्किल क्या है ?'

कोस्टा ने अदर तक सांस खीची। वह सपने म भी म सोचता था कि मुख्यमंत्री के बुलवाने के पीछे यह बात हो सकती है। लेकिन शायद मुख्य मंत्री जीवाजीराव शिंदे ने इसी बात के लिए बुलवाया होगा। वह अस्थिर था। कड़वी चीज मुह में हो और वह यकायक मीठी लगने लगे उसका चेहरा कुछ उस तरह का हो गया। अपने चेहरे की घबराहट वह छिपा न पाया। मुख्यमंत्री हँस दिये।

देखिये मिस्टर कोस्टा,मैं आपके बारे म काफी दिनों से सोच विचार कर रहा हू। और जसे-जैसे मुझे आपके बारे म जानकारी होती गयी वस वसे आपके बारे में आदर भाव भी बनता गया। मुझे अपनी सरकार को एक खास तरफ मोड़ना है और इसी बात के लिए मुझे ऐसे लोगों की सख्त जरूरत है। जब भी मैंने सोचा तब आनेस्टली कह रहा हूँ मेरे सामने आपका ही नाम सबसे पहले था।'

जीवाजीराव रुक गये। उन्होने अपनी कलाई की घड़ी को ऐसे ही इधर उधर घुमाया और खिड़की से बाहर की ओर देखते हुए बोले, 'बिना किसी को बीच म रखे हुए मैंने सीधे आपसे काटक्ट किया है। इसी से सब कुछ समझ लीजिये। माई कार्ड स आर ओपन। अब चुनाव आप पर है।"

कोस्टा कुछ परेशान सा हुआ। वह इन सब बातो स परे था। इस दृष्टि स उसन सोचा तक न था। सपने म भी न सोचा था। इस वजह से वह सुन सा हो गया। एक मिनट तक बिना बोले बाहर की ओर देखता रहा। फिर धीमी आवाज म बोला—

मेरी आज तक की सारी जिंदगी सरकार की खिलाफत म गुजरी है। आपकी पार्टी के खिलाफ भी रहा हूँ। उसी पार्टी का साथ देना मुझे गलत लगता है।

मुख्यमंत्री शिंदे जोर से हँस पड़े।

आपकी बातें इतनी बचकानी हो सकती है यह मैंने नही सोचा था।"

कुछ देर बाद फिर बाले—

और सच पूछा जाये तो इसम गलत क्या है मैं तो समझ ही नही

पाता। आपकी निगाह से सोचूँ तो भी नहीं सोच पाता। सत्ता के साथ रहकर आप मजदूरों का जितना भला कर सकते हैं, उतना सत्ता से बाहर रहकर नहीं। क्या आप यह नहीं सोचते कि ऐसे मौके को नकारना गलत है।'

'आप मुझे परेशानी में डाल रहे हैं। एक तो आप इस की चर्चा आज करेंगे इसका जरा भी अंदाज मुझे नहीं था और आज तक सपने में भी मैंने इस बात पर नहीं सोचा था।'

'आपका रिएक्शन एकदम विरोधी होगा इसे मैं अच्छी तरह जानता था। लेकिन आप सोच लीजिये वक्त ले लीजिये। हमारी पार्टी में आपको पूरा स्कोप मिलेगा।

कोस्टा सिर्फ हँस दिया।

और मैं आज आपसे यह बात कर रहा हूँ, उसकी भी वजह है।' आवाज धीमी करते हुए मुख्यमंत्री शिंदे ने कहा, 'अगले चुनावों को अब डेढ़ साल रह गया है। हमारी केबिनेट कैसी है यह आप दूसरों से ज्यादा जानते हैं। सारे सेटअप की मुझे पुनर्रचना करनी है। देखिये और सोच लीजिये।"

मुख्यमंत्री कुर्सी की पीठ से टिक गये और बोलना बंद करके हँस दिये। उन्हें इस बात की तसल्ली थी कि वे बातें जिस रुख में करना चाहते थे बातें उसी रुख में हुई। कोस्टा के चेहरे पर उनकी निगाह जमी हुई थी। उसकी हड़बड़ाहट से वे समझ चुके थे कि आधी लड़ाई तो वे जीत चुके हैं। कोस्टा को लेने से पार्टी में काफ़ी विरोध होगा, इस बात को भी वे जानते थे। लेकिन उस विरोध को वे काबू कर सकते थे। केबिनेट बनाने में अध्यक्ष जी का गुट आड़े आयेगा। पर देखेंगे। जो कुछ कहा है वह करना ही होगा। कोस्टा का क्या रिएक्शन है देखना चाहिए। उसने हामी भले ही न भरी हो पर वह हायतोबा नहीं मचायेगा।

कोस्टा बोला 'मुझे सोचना होगा। आप जो कुछ कह रहे हैं उसमें वज़न है। लेकिन आपकी पार्टी के सेटअप में मुझे कहाँ तक स्वीकार किया जायेगा मैं नहीं जानता। एक कार्यकर्ता के तौर पर काम करने के बजाय यदि सरकार का प्रतिनिधि बनकर काम किया जाय तो कैसा रहेगा, मुझे इस पर भी सोचना जरूरी है।"

'आप जरूर वक्त लीजिये और सोचिये। कोई जल्दी नहीं है।'

"ठीक है, देखता हूँ। बस इतनी ही बात थी?"

मुख्यमंत्री हँस दिये और बातें खत्म होने का संकेत देने के लिए उन्होंने दाईं ओर रखी फ़ाइल सामने रख ली।

ठीक है ' मुख्यमंत्री ने कहा, पर जरा सभलकर रहिये। आप सोच भी नही सकते कितने दुश्मन आपने बना रखे हैं।'

कोस्टा उठ खडा हुआ। मुख्यमंत्री न बठे-बैठे ही हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे कर दिया। फिर वे खुद ही बोले कोई बात नही। भले ही आपका हम पर विश्वास न हो पर हम आपको धोखे मे न रखेंगे।"

कोस्टा को उनका व्यग्य समझ म आ गया लेकिन वह कुछ न बोला। महीने बाद मिलन की बात कह कर चला गया।

मुख्यमंत्री शिदे तसल्ली से कुर्सी से टिक गये। घटी का बटन दबाया। चपरासी अदर आया और उसके पीछे शहाणे। केबिनेट का एजेंडा उन्होने देखा। फाइलें भजने की बात पक्की कर ली। उनको खुश देखकर शहाणे के चेहरे पर भी मुस्कराहट आ गयी। उन्होन कलाई की घडी देखते हुए कहा, तीन चालीस हो गया साहब। अब मंत्री अभी अभी केबिनेट रूम मे दाखिल हुए ह।

चलो अब चलत हैं कहत हुए मुख्यमंत्री खडे हो गय। फिर हसते हुए शहाणे से बोले आई थिंक आइ हैंडल्ड हिम एक्स्ट्रीमली वल।

जाते जात दरवाजे पर रुके और शहाणे से फिर बोले वस सौदा जरा मॅहगा पडने वाला है पर देखते हैं।'

शहाणे सिर्फ मुस्करा दिये।

डी॰ कोस्टा

डाकोस्टा जब केबिन के बाहर आया तो काफी परेशान था। उसे इसी बात की परेशानी थी कि वह उनके सामने इस तरह ठंडा कैसे बैठा रहा। उसे या तो जोरदार विरोध करना था या जोर जोर से हँसना था या फिर मुख्यमंत्री का मज़ाक ही बनाना था। लेकिन हम कुछ बोले ही नहीं। मरे चुप रहने से हामी की गंध आती है।

यह सोचकर वह हड़बड़ा गया। क्या मैंने वाकई हामी भर दी है? असम्भव। सारी ज़िन्दगी मज़दूरों के लिए सरकार का विरोध करने में गुज़ार दी मंत्रियों के खिलाफ भाषण दिये और अब उसी सरकार का साथ देना कोस्टा को जंच नहीं रहा था। लेकिन अंदर-ही-अंदर उसे लगता था कि वह एकदम ठंडा पड़ चुका है। उसे लग रहा था कि उसने कोई निर्णय ले ही लिया है जो तर्क से परे है। बिलकुल शारीरिक लालसा की तरह । ऊपर से क्रूर बनकर कितने भी निर्णय क्यों न ले लिये जायें पर जो निर्णय शरीर ले चुका है वह तब्दील नहीं हो सकता। शरीर के संकेतों पर ही चलते हैं। कोस्टा अपने-आप को बे-सहारा महसूस करने लगा था। फिर भी वह अपने-आप को समझाने की कोशिश कर रहा था। अभी निर्णय नहीं हुआ है। हम पूरी तौर पर विरोध में खड़े हो सकते हैं। सारी ताक़त के साथ विरोध करेंगे। यह तो लालच है—सरासर लालच। मेरा मुँह बंद करने के लिए ही यह सब किया जा रहा है। यह नैतिक है गलत है। ज़िन्दगी को धोखा देने वाली हरकत है। इस तरह हम मज़दूरों के गले पर छुरी फेर देंगे। कोस्टा को हंसी आ गयी। उसे लगा कि यह खयाल तो सभाओं में दिये जाने वाले भाषणों की तरह है। मज़दूरों के हितों का ही ध्यान रखना है तो मुख्यमंत्री की बात स्वीकार कर लेनी चाहिए। सत्ता हाथ में हो तो मज़दूरों का जितना भला कर सकते हैं उतना विरोध कर के नहीं। सत्ता से इतना घबराना पागलपन होगा। मुख्यमंत्री की बातों में कुछ तो तथ्य है ही। हम लोग आंदोलन किस लिए करते हैं? सरकार पर दबाव डालने के लिए ही न? हम खुद ही सरकार बन जायें तो हमारे काम का दायरा और भी बढ़ सकता है। तब सारे समाज को बदलने की बात हम कर सकते हैं। आज हम मज़दूरों और समाज को क्या दे सकते हैं? आंदोलन हड़ताल, झगड़े भाषण और भविष्य के लिए आशाएँ। सत्ता हाथ में रहे तो इन मज़दूरों का निश्चय

ही भला किया जा सकता है। सत्ता को वेश्या समझने का पागलपन कम से कम हम तो नहीं करेंगे। हर नये आदमी के लिए सत्ता कुंआरी कन्या की तरह होती है। बिना उसके हर पार्टी सत्ता के लिए झगड़ती है? फिर हम ही सत्ता को क्यों अस्पृश्य मानते हैं? मुख्यमंत्री के कहने में कुछ तो वजन है ही। शिंदे से सिंपल आदमी है। कोस्टा को अजीब उत्साह-सा महसूस हुआ। हम भी जवान हैं। हम में ताकत है कुछ करने और बनने की जिद है। हम सच्चे हैं। उद्देश्य के लिए कुछ भी कर सकते हैं। सत्ता हाथ में हो तो हम क्या नहीं कर सकते? परंपरागत विरोध करने से क्या होना है? उसे लगा कि दुनिया और फैल गयी है। उसने लंबा साँस ली। उसे लगा कि उसने निर्णय ले लिया है। अचानक जो कुछ हुआ पर उस अचरज था। निर्णय जब तक अमल में आयेगा तब तक वक्त लगेगा। इस पर मन सोच विचार में लगा रहेगा। कुछ दिन हम अनिश्चय की स्थिति में रहेंगे। कुछ व्यावहारिक दिक्कतें आयेंगी तो चुप लगा जायेंगे। आठ महीने में कुछ-न कुछ हो जायेगा। लेकिन असली निर्णय तो हो ही चुका है। कोस्टा कुछ उदास और निराश सा हो उठा।

रास्ते में उसे एक पत्रकार मिला। कोस्टा की पुरानी पार्टी का ही था।

कहिये कोस्टा साहब? आज सचिवालय में?'

हाँ जी। यूनियन के लफड़े न जाने कहाँ-कहाँ जाने को मजबूर करते हैं?' कोस्टा ने उसका हाथ दबाते हुए कहा।

दोनों करीब के एक होटल में चाय के लिए चल दिये।

कहो भई साले आजकल तुम्हारे पास कोई काम वाम नहीं है शायद?' कोस्टा ने कहा।

पत्रकार हँस दिया। वैसे कोई खास काम तो नहीं है। अभी अभी एक मिनिस्टर की प्रेस-कान्फ्रेंस खत्म हुई है। अब केबिनेट मीटिंग चल रही है। कुछ देर बाद ब्रीफिंग। वैसे एक सेंसेशनल खबर भी है।

कैसी?'

तुम्हें बताने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन किसी को बताना मत। अपना स्कूप है उसने धीमी आवाज में कहा। फिर बोला मुख्यमंत्री का बड़ा लड़का बड़ा लफड़ेबाज मालूम होता है? उसने फ्रांस में एक लड़की के साथ लफड़ा कर लिया है। सुनते हैं बाद में पुलिस ने उसे पकड़ लिया। दन ही बाज फारेड टु मरी।

अच्छा? कहाँ से मिली खबर?

है अपना भी एक सोर्स।'

तुम्हारा स्कूप है शायद ?'

'यस।

फिर तो मैं भी तुम्हें और जानकारी देता हूँ।"

एँ ?

यस।'

मतलब मेरी जानकारी सच्ची है ?

हाँ। कुछ तो ठीक है। पर तुम्हारे सायज़ जानकारी मेरे पास है। कहाँ से मिली, यह न पूछना। किसने बतायी यह भी किसी को न बताना।"

जो जानकारी कास्टा के पास थी वह उसने बता दी और साने खुश हो गया।

चाय पीने के बाद साने ने मुंह बनाते हुए कहा—

पार्टी क्या कहनी है जनाब ? स्साला फूटे मटके-सा हाल है। लगातार पानी चलता रहता है।'

अब और क्या हो गया ?

यही जी। जिसे देखा वही पार्टी छोड़कर चल देता है। सीधे सरकार की पार्टी में शामिल हो जाता है। सरकार टुकड़ा डाल देती है और लालची उधर ही बढ़ जाते हैं।

इसमें नयी बात कौन सी हो गयी ? यह तो पुरानी चाल है।'

'मतलब, तुम्हें मालूम नहीं है ?'

"क्या ? आजकल पार्टी के लोग मुझसे बातें ही नहीं करते हैं ?"

पर यह तो हर जगह हो रहा है। हमारे आल इंडिया सेक्रेटरी भी अब पार्टी बदल रहे हैं। सुनते हैं उन्हें किसी सेंट्रल कमेटी की मेंबरशिप भी जा रही है।'

'सच ?'

सच, मतलब एकदम सही। अब अपनी ही पार्टी की बदनामी होती है इस वजह से मैंने कुछ छापा नहीं। क्यों झंझट मोल लूँ ? अब दिल्ली से खबर आ जाये तो देखना कम छापता हूँ। दिल्ली का समाचार बम्बई से।'

'अच्छा, यह तो मुझे मालूम ही न था।"

'इससे तो हम अच्छे हैं। राजनीति ही छोड़ दी। सच देखा जाय तो अब किसी में विरोधी पार्टी के तौर पर जीने की हिम्मत ही नहीं बची।'

कास्टा कुछ देर चुप रहा। साने की बातें सेक्रेटरी को नहीं पर लेकिन उसे भी चुभ रही थीं। कुछ सोच कर वह बोला—

"क्या कहते हो साने? किसी को लगता हो कि उसके विचार सरकार

म शामिल होकर पूरे हो सकते हैं तो उधर जाने म हज ही क्या है ? पार्टी कर ही क्या सकती है आखिर ?"

अरे सब चोर हैं। काहे के विचार। सब एक नम्बर के ढोंगी हैं। स्वार्थी स्साले !' साने गरम हो गया। वह लगातार सिगरेट के कश खींचे जा रहा था।

कोस्टा न कहा "अरे सभी को गालियाँ क्यों दे रहे हो ? कम-से-कम अपने सेक्रेटरी के बारे मे तो ऐसा नही कहा जा सकता।'

'सुनो कोस्टा, यह तुम मुझसे न कहो' साने न गुस्से से कहा। उसे तो मैं तुमसे ज्यादा जानता हूँ। तुम जब बम्बई आये भी न थे तब म वह मेरे साथ काम करता था। अब मुझसे ज्यादा न कहलवाओ। वह कौन है कैसा है मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। उसके विचार क्या हैं यह भी खूब जानता हू। मुझे तो आश्चय इसी बात का है कि अभी तक वह पार्टी म बना कस रहा ?

कोस्टा न लबी साँस ली और चुप हो गया। साने ने आगे कहा, 'और सरकार म जाकर यह लोग करेंगे भी क्या ? यहाँ स वहाँ तक सब गडबड है। तुम क्या जानते नही हो ? तुम खुद ही कहते रहते हो। और ये लोग उसी माहौल मे जाकर बठने वाल हैं। अपनी पार्टी से गये हुए लोगों का रिकाड निकालकर देख लो। मोटर बँगला, जमीन—यही हैं उनके विचार ? सब के पौ बारह।

हाँ यह बात तो ठीक है। कुछ लोग ऐसे ही होते हैं। लेकिन हरेक का एक माला म तो पिरोया नही जा सकता ? तुम क्या समझते हो कि पार्टी स जाने वाले लोगों का कोई लक्ष्य नहीं है ?'

यही तो मैं भी कहता हूँ। पार्टी की यह हालत किसने कर दी ? इन्ही लोगो ने न ? सत्ता मिलने के सपने देखते हैं और चल देते हैं।'

कोस्टा चुप बठा रहा। साने की बातों का व्यग्य वह अपने पर समझ रहा था। वह जानता था कि साने प्रतिक्रियावादी है। कुछ सावधानी के साथ वह बोला—

'हम तो तुम्हारी बातें जचती नहीं। मैं यह नही कहता कि सत्ताधारी लोगो म भ्रष्टाचार नही है। लकिन हमारी पार्टी मे क्या कम गडबड है ? जरा पिछली बातें याद करो। सत्ता नही थी तो भी पसो की कसी गडबड हुई थी ! भ्रष्टाचार तो राजनीति का एक अभिन्न अग बन गया है। वह कम कसे हो सकता है, यही देखना है। पर असल बात यह नहीं है। जिन्हे कुछ करना है क्या वे पार्टी म रहकर कुछ कर सकते हैं ? सत्ता हासिल कर के ही वे कुछ कर सकते हैं। जरा सोचो, काम करने वाले यदि सत्ता

न होते तो आज दुनिया कुछ और ही होती। लेकिन वे तो पार्टी के साथ ही मर-खप गये।'

साने परेशान हो गया। लेकिन फिर भी हँस पड़ा। वह कुछ तैश में बोल गया था। लेकिन कोस्टा की बात वह मानने को तैयार न था। कोस्टा ने भी कोशिश छोड़ दी। लेकिन उसकी अपनी बातें जरूर जँच गयी थीं। साने ने ठट्ठा करने की कोशिश की, लेकिन कोस्टा ने अपने को परेशान न होने दिया। जाते जाते साने ने कहा 'तुम्हारी बातें ठीक नहीं लगतीं।'

'क्यों, क्या हुआ ?'

'जान जाओगे। तुम जो कुछ भी बोले हो, उससे मैं सब कुछ समझ गया हूँ।'

कोस्टा हँस पड़ा 'अरे छोड़ो भी। मैं तो राजनीति कभी की छोड़ चुका हूँ। अपनी यूनियन सलामत तो हम सलामत। तुम पत्रकार बने रहो, बस।'

'देखते हैं।'

और कोस्टा अपने आफिस की ओर चल दिया। चार बज चुके थे। रघू से मिलकर और कोर्ट जाने के बाद उसकी नसें बुरी तरह से तन गयी थीं। सिर भन्ना गया था। रघू पर गुस्सा आ रहा था। लेकिन अब जरा तसल्ली-सी महसूस हो रही थी। जैसे तूफान खत्म हो गया हो। जैसे नदी की बाढ़ खत्म हो गयी हो। जैसे विनीता के साथ रात बिताकर सुबह हो गयी हो। जैसे भीड़ भाड़ वाले रास्ते से शब्दहीन शांतिपूर्ण। एयरकंडीशंड कमरे में आ गये हों।

सुबह सिल्विया की आरजू, गंगाराम की मौत, दयानंद कानिटकर की घबराहट, नीला को डिक्टेशन, कोर्ट में केस, रघू से मुलाकात, उसके आरोप —सारी ही परेशान करने वाली बातें वह भूल गया हो, ऐसी बात नहीं थी। लेकिन अब उन बातों से वह परेशान न हो रहा था। उसके मन की हल-चल जैसे रुक गयी थी। पहले वाली उदासी जाती रही थी। सच पूछा जाय तो सारी परेशानी पैदा हुई थी मुख्यमंत्री से मुलाकात के दौरान उनकी बातों से। बातों की बातें रोजाना ही होती रहती हैं।

कोस्टा को रघू की बातों पर हँसी आ गयी। पहले उसे जरा अपराध भाव महसूस होता था। रघू जो कुछ बोलता था उसका असर हक जैसा होता था। उसकी बातों में कुछ वजन जरूर था। अब उसे हँसी आ रही थी। अब अगर वह मिला तो उसे परेशान कर देंगे। वह जरा भावुक ज्यादा है, अव्यावहारिक है। वह सिर्फ किताबी कीड़ा है। उसे दुनिया का कोई अनुभव नहीं है। उसके हाथ से तो दल का नुकसान ही ज्यादा होगा।

अब मिला तो उससे यह बात कहनी होगी। लेकिन उस वक्त इतना हौसला क्यो नहीं हुआ था ?

और कल अगर अय्यर आ गया तो उसे वह फाइल पूरी तरह दी जा सकती है ? कोस्टा सोच मे पड गया। यह एक दूसरा ही सवाल था। अपनी मुहिम का क्या होगा ? उस तो जारी रखना होगा। लेकिन उसे खास मुकाम पर मोड देना भी जरूरी है कोस्टा बेचैन हो उठा। सत्ता आते ही क्या हम दिशा बदल देंगे ? लेकिन फिर उसे अपने पर ही तैश आने लगा। हम कही अपनी दिशा तो नहीं बदल रहे ? दिशा तो वही है रास्ता जरूर बदल रहा है। अय्यर के आने पर कल देखेंगे।

कोस्टा आफिस म पहुँचा तो दरवाजे पर ही हमीद मिल गया। दरवाजे पर बैठा वह बीडी पी रहा था। कोस्टा को देखते ही उसने वही जमीन पर बीडी घिसकर बुझा दी। बीडी का टोटा वापस फटे कुरते की जेब म रख लिया। खडे होकर उसने कोस्टा को सलाम किया। दरवाजे के करीब वामन भी खडा था। सच पूछा जाये तो सुबह कोस्टा ने दोनो को पीटने का फैसला किया था।

लेकिन अब पीटने का मूड न था। उसने सिर्फ नाराजगी दिखायी। दूसरी तरफ फोन म नीला और एक दो लडकियाँ बैठी हुई थी। इस वजह से गाली देने का मौका भी नहीं था।

साले दारू पीते हो। घर म तो खाने को नही है। मटका लगाते हो। लग जाय तो दारू पीते हो। शराब पीकर काम पर जाओगे तो कोई भी लात मारकर भगा देगा। अब मेरे पास आ रहे हो ? क्या वे वामने तेरी माँ को टी० बी० है न ? उसकी दवा दारू करने के बजाय दारू पीते हो ? बदमाश कही के। फिर नजर आये तो मुझसे बुरा कोई न होगा। यूनियन के लोग तुम्हारे वास्ते चदा करते है ? चलो भागो यहाँ से यूनियन को तुम जैसे गद्दारो की कोई जरूरत नही है सूअर कही के !

डाटते डपटते कोस्टा केबिन के घुसा। उसके पीछे कापते और आखें पोंछते हमीद अदर आया। माफ करना, साब। अल्ला कसम अब शराब मैं देखूगा तक नही साब !' कहते हुए वह अपने मुह पर थप्पड लगाने लगा। वामन भी अदर आया और उसके पीछे पीछे दूसरे मजदूर भी किसी न किसी काम से अदर हो लिये। केबिन बद होने पर कुर्सी पर बैठते हुए कोस्टा ने चार छह तीखी गालियाँ सुना डाली।

फिर कुछ नरम पडकर वह बोला गधो तुम लोगो को तो अक्ल है ही नही। खाने को तो मिलता नही दारू जरूर पीते हो। कौन रखेगा ऐसो को नौकरी पर ? जरा तो आदमी की तरह रहो। घर पर तुम्हारे वाल

बच्चे हैं। अब क्या चोरी करोगे या डाका डालोगे? कबख्त स्साले।'
हमीद और वामन ने फिर शराब न पीने की क़सम खायी। वे दिल
से क़सम खा रहे हैं इस बात का कोस्टा खूब जानता था। लेकिन कल
अगर मटका लग जाये तो वे फिर शराब की ओर बढ़ जायेंगे यह भी वह
अच्छी तरह जानता था। कोई इलाज न था। शराब की आदत क़सम खान
से तो जाती नहीं लेकिन इन्हें काम पर न लगाया जाये तो स्साले या तो
चोरी करने लगेंगे या और भी बिगड़ जायेंगे।
अगर फिर कभी तुम्हारे मुँह से दारू की गंध भी आयी तो पहले
अच्छी तरह से मरम्मत होगी फिर पुलिस में दे दूँगा समझा।' कोस्टा ने
चेतावनी दी। हमीद और वामन ने फिर कान पकड़े और क़सम खायी।
फिर कोस्टा ने घण्टी बजाकर आफ़िस-सेक्रेटरी को बुलवा लिया।
कुछ पूछने से पहले ही सेक्रेटरी बोला, साहब,इस हमीद का रिकार्ड बहुत
खराब है। छह जगहों पर यह शराब पीकर गया और वहाँ से निकाला गया
है। अब इस कोई रखने के लिए तयार ही नहीं होता।
कोस्टा ने हमीद की ओर देखते हुए एक तीखी गाली दे दी।
ठीक है आज पोस्टर लगाने का काम है न? वही दे दो इस हराम
जादे को सिर्फ़ आज के लिए। बाद में देखेंगे।
हमीद कोस्टा के पाँव पकड़ने लगा तो कोस्टा ने उसके बाल खींचकर
उसे उठाया। फिर आँखें तरेरकर वामन से बोला हरामखोर अब फिर
मटका लगाना। फिर बताऊँगा।' फिर कोस्टा दूसरे मजदूरों की ओर मुड़ा।
किसी की नौकरी किसी की अर्जी किसी की शिकायत यूनियन की
रिपोर्ट किसी की पैसे खाने की शिकायत बोनस के झंझट। तरह नम्बर के
कारखाने में मजदूरों में छँटनी होने वाली थी। उसके लिए आज मीटिंग
थी। उस मिल का हिसाब किसी की माँग किसी का और कुछ। लगभग
डेढ़ घंटा इसी गड़बड़ी में बीत गया। फिर भी मजदूरों की भीड़ कम न हो
पा रही थी। आखिर उसने कहा 'अब बचे हुए लोग कल आना घर पर।
आज मुझे और भी काम है।' इस पर भीड़ कम हो गयी।
भीड़ हटने पर नीला फाइलें लेकर अन्दर आयी। नीची गर्दन किये
उसने फाइलें टेबिल पर रख दीं और हँसकर ऊपर देखा। कोस्टा उसी
की ओर देख रहा था। वह भी हँस दिया। फिर थोड़ा सकपकाया। निर्णय
लेने की बारी आ ही गयी तो? आज ऐसा क्यों हो रहा है? आज तक तो
कभी ऐसे खयाल मन में आये नहीं।
हाथ ऊपर कर कोस्टा ने एक लंबी जम्हाई ली। फिर बोला, "हूँह।
आज नहाया ही नहीं।

'गद हैं आप बड़े ।'
क्या ? क्या हुआ ?' कोस्टा ने हँसते हुए पूछा ।
आपको तो कुछ है ही नही काई कायदा ।'
'किसी ने सिखलाया ही नही ।'
कौन सिखलायगा ? जरूरत ही क्या है ?"
नही है ?"
मन म हो तो सब कायदा जाना जा सकता है।'
हम तो बस यो ही हैं । काहे का कायदा-वायदा ? और अपनी फिक्र कौन करता है ?
वाह । ऐसा क्यो कहते हैं ? '
यो ही ।'
इसलिए इस तरह रहना चाहिए ?
एक दिन न नहाया जाये तो क्या बनने बिगडने वाला है ? '
मैं सिफ नहाने की बात नहीं कह रही हूँ । और भी बातें हैं । बवकन ना रहना सब-कुछ । आदमी को ढग स तो रहना चाहिए न ?
मुझ जसे आदमी के लिए क्या ढग वग ? न घर है न फैमिली । ऐसे ठीक हैं ।
हुह ! '
फिर हाथ ऊपर करके कोस्टा हस दिया । फिर थोडा सकपकाया । ला के साथ इतनी गभीरता से बातें न करनी थीं । वह आज ऐसे क्या ल रही है ? वह बेहद सेंसेटिव है । अपने मन की बातें चाहे न बतलाये किन मुझ पर एतबार जरूर है उस । मैं बस हाथ आगे कर दूँ लकिन मन हा होना । नीला मुझे ठीक लगती है । इसलिए मन म आने वाले खयालों ो मन-ही मन दबा देना पडता है । शादी वगर उसका स्पश गुनाह क्यों गता है ? और विनीता के रहते उसके साथ शादी कैसे हो सकती है ? ौर आज लिया हुआ निणय ? नीला को वह रुचेगा ? उसकी प्रतिक्रिया या होगी ?
कोस्टा ने दोनो हाथ टेबिल पर पटक दिये । हथलियाँ मसली और ौर तजी से बोला चलो, जल्दी निबटाना है । आज का क्या काम है ?"
नीला ने एक-एक कागज उसके सामने रखने शुरू कर दिये । कुछ अपने नाय ड्राफ्ट कुछ कोस्टा की सुबह दी गयी डिक्टेशन के कागज कुछ पुरानी ाइलें और कुछ नयी । कुछ खत । कोस्टा ने जल्दी स दस्तखत किये । ीला के तैयार ड्राफ्ट पढे और बहुत अच्छा कहकर नीला को दाद दी । ुछ इधर उधर की गलतियाँ ठीक की । फिर दोपहर आये खत देखने

लगा। किस सवाल का क्या जवाब दिया जाये, यह भी बताया। तभी फोन की घंटी बज उठी। नीला ने हाथ बढ़ाया तो उसके पहले ही कोस्टा ने रिसीवर उठा लिया। वह जानता था कि यह विनीता का फोन होगा।

हलो, कोस्टा हीअर।

हलो डार्लिंग! हाऊ आर यू ?"

कोस्टा ने नीला की ओर देखा। वह उसी की ओर देख रही थी। कोस्टा उसकी ओर देखकर मुस्कराया। फोन पर बोला 'हाऊ आर यू ? फिर माउथपीस पर हाथ रखकर नीला से बोला 'आंटी आज छोड़ेगी नहीं। बुढ़िया खाने पर बुला रही है।

हेना डीयर। आज शाम मुझे कोई काम है कोस्टा फिर फोन पर बोलने लगा।

ओ नो।' दूसरी तरफ से विनीता ने मिन्नत की 'मैं आज तुम्हारी एक न सुनूंगी। तुम्हारी गेट-मीटिंग कितने बजे है यह मुझे मालूम है। उसके बाद कौन-सा काम है ?'

'सच कह रहा हूँ। कुछ एपाइंटमेंटस हैं।

झूठ न बोलो कोस्टा। मुझे अब शंका होने लगी है तुम किसी नयी छोकरी के चक्कर में तो नहीं हो ?'

कोस्टा ने फिर नीला की ओर देखा और हँस दिया। फिर फोन पर बोला 'तो भी क्या ? तुम जलती हो न ?'

'जहाँ भी होगे वहाँ से खींच लाऊँगी।'

'माई गाड! तुम तो बिलकुल आंटी लगती हो।"

दूसरी तरफ से विनीता जोर से हँस दी।

ओ नॉटी मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि कहीं भी चले जाओ पर आओगे मेरे पास ही' विनीता की आवाज बदली हुई थी। मिन्नत करते हुए बोली 'मैंने कभी ईर्ष्या की है कोस्टा ? तुम मुझे बताकर कहीं भी चले जाओ।'

कोस्टा जोर से हँस पड़ा। उसकी यह हँसी नीला को पसंद है। इस हँसी से उसके बदन में रोमांच हो आता है। कोस्टा दिल खोलकर हँसता है। बच्चे जैसी हँसी। मौका आने पर कोस्टा कितना झूठ बोलता है, यह भी नीला जानती है। उसे विश्वास नहीं था। कोस्टा का शिवाजी पार्क की आंटी पुरानी थी। लेकिन कोलाबा की यह आंटी नयी थी। फिर कोस्टा और विनीता के संबंध आफिस के हर आदमी को मालूम थे। नीला ने विनीता के कई फोन सुन लिये थे। लेकिन संबंध कितने गहरे हैं इस बात को वह न जानती थी। उसका फोन आता था तो वह परेशान हो जाती

थी। उसके दिल की हालत अजीब हो जाया करती थी। पर इलाज न था। कोस्टा की हंसी सुनकर उसे लगता कि सब कुछ माफ कर दिया जाय।

घबरा गयी ?" कोस्टा ने फोन पर ही हँसते हुए पूछा।

ना। आज शाम आ रहे हो या नहीं बताओ ? अगर ना करोगे तो तुम्हारे आफिस या गेट मीटिंग में गाड़ी लेकर आ जाऊँगी और अच्छा खासा सीन खड़ा कर दूँगी।'

'अरे भाई आ जाऊँगा। तुम नहीं जानतीं, तुम्हारे लिए कितने एपाइंटमेंट्स रद्द करने पड़ेंगे।'

कोई नहीं हम लोग परसों ही तो तय कर चुके थे। और रद्द भी कर दो तो कोई हर्ज नहीं। मेरे लिए इतना तो करना ही होगा।

ठीक है ठीक है पर ज्यादा वक्त नहीं है मेरे पास। आज किसी भी हालत में आंटी पगी के पास जाना ही होगा। वह बुढ़िया बेहद नाराज हो गयी है। माउथपीस पर हाथ रखकर नीला से बोला उसे बुढ़िया कहा जाये तो वह खुश हो जाती है।

वह तो देर लगेगी। पहले तुम आओ तो सही। आज का मिलना जरा जरूरी है।

हमेशा ही जरूरी हुआ करता है।

'नहीं। आज खास वजह है।

'क्या क्या बात है ?'

'मुझे तुमसे एक खास मसले पर सलाह लेनी है।'

मेरी सलाह ? तुमने मुझसे कभी भी किसी भी मसले पर सलाह नहीं ली है। उल्टे तुम जरूर सलाह लिया करती हो।

बेकार बातें न करो। आओगे तो पता चल जायेगा।

पर कुछ तो हिंट दो।'

फोन पर नहीं बताती। मेरे बाप ने मुझे बेकार ही लफड़े में उलझा दिया है।

'मतलब ?"

आने पर बताऊंगी।

ओ के। सी यू डार्लिंग बाई !

बाई !

कोस्टा ने फोन नीचे रख दिया। चेहरा सख्त बना लिया। फिर फुसफुसाया 'साला जिसे टालना चाहता हूँ, वही अटक जाता है।' फिर नीला की ओर देखते हुए बोला सच कहता हूँ कि किसी प्रेमिका को झिड़का जा सकता है। लेकिन ये बूढ़ी आंटियाँ बड़ी चिपकू होती हैं।'

नीला भी हँस दी।

कोस्टा फिर काम में तेज़ी से जुट गया। एक-दो ज़रूरी ड्राफ्ट नीला को लिखवाये। तभी कुछ मिलने वाले लोग आ गये। लोग दरवाज़े से अंदर झाँकने लगे थे। तरह नंबर के कारखान का सेक्रेटरी भी एक बार अन्दर झाँक गया था। कोस्टा ने सारा काम तेज़ी से खत्म कर लिया। वक्त हो रहा था। मीटिंग में जाना ज़रूरी था।

नीला फाइलें समेटने लगी तो कोस्टा ने कहा, 'थैंक्स नीला। मेरा आधा काम तो तुम ही कर देती हो।'

नीला हँस दी। 'आपको वक्त लगेगा। गेट मीटिंग है।" हाँ है। पर उठने की तबीयत ही नहीं होती।'

'चलिये उठिये अब।'

नीला ने फाइलें उठायी और केबिन से बाहर आ गयी। कोस्टा कुछ न बोल पाया। तभी दो-तीन लोग अंदर आ गये। तरह नंबर की यूनियन के सेक्रेटरी ने कहा 'चलिये कोस्टा साब वक्त हो चुका है।"

'बस चलते ही हैं। आप लोगों का क्या काम है?' दूसरे लोगों की ओर देखते हुए कोस्टा ने पूछा।

साब नौकरी चला गया।

दूसरी यूनियन के लोग बहुत तंग करने लगे हैं साब मिल में।

अरे कल सुबह आना दस बजे यहाँ पर। अभी तो मीटिंग में जा रहा हूँ।

कोस्टा उठ गया। केबिन से बाहर आया तो और दो तीन ने उसे घेर लिया। उनसे बातें करते-करते ही वह बाहर आ गया।

सीढ़ियों पर आते हुए बोला, 'अरे आज जीप नहीं है। ज़रा टैक्सी देखो। मैं आ ही रहा हूँ।

फिर सीढ़ियाँ चढ़कर वह ऑफिस में आ गया। नीला निकलने की तैयारी कर रही थी। जेब से एक कागज़ निकालकर उसने नीला को दे दिया। 'अलमारी में बीच वाली फाइल में रख देना इसे।' उसने फिर से ड्राअर खोला, चाबियाँ निकालीं और अलमारी खोलकर उस फाइल में वह कागज़ रख दिया। अलमारी बंद करके चाबियाँ वापिस ड्राअर में रख दीं। कोस्टा वहीं मँडरा रहा था। नीला ने हँसकर कहा 'बस? थैंक्यू।'

कोस्टा उससे बातें करना चाहता था। विनीता का ध्यान आने के बाद उसे नीला से बातें करने का दिल हो रहा था। उसमें अपराध भाव जाग रहा है। वह नहीं समझ पा रहा था नीला आखिर है क्या?

'ज़रा बातें करनी थी।

'फिर ?"

अभी तो वक्त नहीं है। कल शाम का वक्त खाली रखता हूँ। तुम भी खाली रहना।"

किस बारे में बातें करना चाहते हैं ?

'आज चीफ मिनिस्टर से बात हुई न उसी के बारे में।

नीला का चेहरा एकदम खिल गया। "मैं सोच रही थी पूछना भी चाहती थी। लेकिन सोचा आप खुद ही बतायेंगे।

फिर पूछा क्यों नहीं ?"

'ऊहूं।

ठीक है कल बातें करेंगे। घर पर ही आ रही हो न ? टक्सी से छोड़ दूं।'

'नहीं, आपको देर हो जायेगी।

कोस्टा सीढ़ियाँ उतर गया। पहले वाला अपराध भाव अब नाराज़ था। नीला बोलती नहीं पर हमेशा मेरा खयाल रखती है। लेकिन मैं क्या उसके बारे में इतना सोचता रहता हूँ ? उसके हाथ और बाल हमेशा नज़रों के आगे क्यों आ जाते हैं ? विनीता और दूसरा कोई इस तरह दिमाग पर असर क्या नहीं डाल पाते ?

टक्सी में बैठने के बाद तरह नंबर के सेक्रेटरी ने कहा कोस्टा साहब उन लोगों ने बिलकुल गलत हिसाब दिखलाये हैं। एकाउंट सेक्शन के कुछ लोग हमारे भी पहचान के हैं। उनसे हमने सारे हिसाब ले लिये हैं। एक के भी रिट्रेंचमेंट की ज़रूरत नहीं है।"

फिर ?

नोटिस लगा हुआ है।'

देखते हैं। मैनेजर कौन है ?

वही लालूभाई।'

अच्छा वह ! अभी तक वह बात नहीं भूल पाया ? इस बार तो साले को छकाकर ही छोड़ेंगे। उसकी सारी पोल पट्टी अपने को मालूम है कोस्टा ने कहा। फिर कुछ क्षण रुककर बोला पहले घेराव करेंगे फिर स्ट्राइक की सोचेंगे। आप लोगों की स्ट्राइक की तयारी तो है न ?

सेक्रेटरी ज़रा सोच में पड़ गया। फिर बोला घेराव डिमास्ट्रेशन गेट मीटिंग तो ठीक है। लेकिन इस बार स्ट्राइक ज़रा मुश्किल ही दिखती है।

कोस्टा भी सोचने लगा। फिर उसे अचानक जैसे कोई बात याद हो

आयी। वह बोला, ठीक है। स्ट्राइक की तयारी नहीं तो कुछ और सोचा जायेगा। वसे भी स्ट्राइक पर मजदूरों क हाल दखे नहा जात।"

फिर कुछ देर बाद उसने सेक्रेटरी से कहा हम लोग स्ट्राइक की धमकी देंगे। स्ट्राइक न हो यह मैं देख लूगा। आज ही मैं मुख्यमत्री स मिला हू। तुम तो जानते ही हो वह अच्छे आदमी हैं। मिल की बात चली थी। तब मैं मिल क हिसाब की बात नहीं जानता था। उन्होंने देखने की बात कही है। लेकिन मैं सोचता हूँ कि यदि उन्हें हिसाब वाली बात बता दी जाये तो वह जरूर इस मसले को देखेंगे। ठीक है न?"

कुछ भी कीजिये, कोस्टा साहब पर स्ट्राइक मुश्किल है। और जरा कुछ हो गया तो लालूभाइ लाकआउट क लिए तैयार बठा है।'

अरे उसके बाप की हिम्मत नहीं। देखना तो सही, कसे हडिल करता हू स्साले को। आज मुख्यमत्री से मिलना अच्छा रहा। सच पूछा जाये तो वह अपनी ही तरफ है।'

आप कुछ भी कह लीजिए कोस्टा साब स्ट्राइक का नाम सुनते ही लाग तैयार जरूर होते ह पर परेशान हो जाते ह। सभी मन म डरते रहत ह। लेकिन यूनियन क लिए तयार हो जाते ह। आग कुछ हासिल होने की आशा बँधी होती है। वसे स्ट्राइक कोइ पसद नहीं करता।

हां बात सच है। मुफ कौन स्ट्राइक से मोह है। लेकिन यही एक हथियार है। मालिक लोग उसके बगर काबू म आ ही नहीं पात। फिर इधर वे मुँहजोर भी हो गय हैं। हमारा तो सिस्टम हमार आड आता है," कहते हुए कोस्टा सकपकाया। जरा सोच म पड गया। पास म कौन बठा हुआ है यह भी भूल गया। और सडक की ओर देखत हुए खुद ही फुसफुसाया अरे अब हम कभी भी ढील पड गय हैं। मार सहने की हिम्मत अब नहीं रही। मालिक जरा सा लालच दे दे तो हम लोग मौका बद कर देते हैं। सब-कुछ हासिल करन की जिद ही जसे खत्म हो गयी ह। साला वह रघू कौन झूठ बोलता है। उसके कहने में भी कुछ सच्चाई है। सिस्टम बदलने की ताकत हम लोगों म नहीं है। देखत हैं। तुमने तो खुद इतने लौहर देखे है पर कभी किसी ने यह बात पूरी तरह सोची है? साले क्या करेंगे? यह सब तो होता ही रहता है। हम भी तो इसी सिस्टम की पैदावार हैं न? अय्यर लीडरों को कायर कहता है तो दूसरे अथ म। लेकिन वह भी सच है। फिर अय्यर को वसा कहने का अधिकार ही क्या है? लेकिन सवाल अधिकार का नहीं है। वह जसा समझता है वसा ही बोलता है। हमारे पास जवाब नहीं है। सिर्फ एक दिन की टोकन स्ट्राइक हम लोगों को मुश्किल पड जाती है न?'

मिल का गेट आने तक कोस्टा बड़बड़ाता रहा। बीच बीच में सेक्रेटरी हाँ-हूँ किये जा रहा था। कोस्टा की बातों का वास्तविक अर्थ वह नहीं समझ पा रहा था। कोस्टा को भी इसकी खास फिक्र न थी।

गेट पर खास भीड़ न थी। कुछ मजदूर इकट्ठा हो गये थे। लाल-लाल झंडे थे। कोस्टा ने अपने खास स्टाइल में भाषण दिया। मैनेजर का मज़ाक बनाकर मजदूरों को हँसाया। सरकार पर आरोप लगाये। भ्रष्टाचार और स्मगलिंग के एक-दो किस्से सुनाये। और इसी बीच उसने अपना स्वर ऊंचा किया। फिर वह मिल के विषय पर आ गया। 'एक मजदूर को तो निकाल फिर हम देखते हैं। दो दिन के ही भीतर नोटिस वापस न करा दिया, तो हमारा नाम नहीं।' फिर मजदूरों को दिलासा दिया कि उनकी बातें ऊपर तक पहुंचा दी जायेंगी।

मजदूर खुश हो गये। सबके चले जाने के बाद कोस्टा ने सेक्रेटरी से कहा 'कल सब हिसाब ले आना। देखते हैं क्या कर सकते हैं। खुद मुख्य मंत्री से ही बीच-बचाव के लिए कहता हूं।'

वहीं कुछ और हिदायतें उसने सेक्रेटरी को दीं। अखबार के लिए दिये जाने वाले समाचार को वहीं डिक्टेट करवाया। और भी दो-तीन मिलों की यूनियन के सेक्रेटरी आये हुए थे। सेंट्रल यूनियन की मीटिंग कब हो इस बारे में कोस्टा ने उनसे चर्चा की। पास के ही एक होटल के बाहर खड़े होकर उसने आलू-बड़े खाये। फिर उन्हें विदा करके टक्सी में बैठकर कोलाबा की ओर चल दिया। विनीता से मिलने जाते समय उसका मन हमेशा ही खुश हो जाता था। वैसे विनीता से बातें करने, उसे स्पर्श करने या उसे चूमने के दौरान नीला की याद जरूर उभरती है। वैसे विनीता के पास होने से उसका तनाव जरूर कम हो जाता है। लेकिन आज उसे मेरी सलाह चाहिए। विनीता दूसरों को सलाह देने वाली लड़की है लेकिन आज उसका स्वर फोन पर बदला हुआ लग रहा था। होगा कुछ। वही बतायेगी। अभी से दिमाग क्यों परेशान करें? लेकिन आज ज्यादा देर बैठ न सकेंगे। किसी भी हालत में आंटी के यहाँ आना ही होगा। विनीता नाराज़ नहीं होगी। परसों पूरी रात उसके साथ बितायी थी। बड़ा मजा आया। उसने इस खयाल को तत्काल झटक दिया। अगर उसी खयाल में डूबे रहे तो आज भी बँध जायेंगे और आंटी के यहाँ नहीं जा पायेंगे। पर विनीता के साथ मज़ा बड़ा आता है। और नीला कैसी होगी? बड़ी कोशिश से उसने यह सवाल अंदर ही अंदर दबा दिया। आज विनीता सीरियस है। वजह? उसके पेट में अजीब हलचल-सी पैदा हुई। उसने कहीं हाथ पकड़कर शादी की बात की तो?

कोस्टा होटल के करीब पहुँचा तो सामने ही विनीता की सफेद मर्सीडीज़ खड़ी नज़र आयी। मतलब वह अन्दर बैठी होगी। डोरमैन ने दरवाजा खोल कर सलाम किया। हमेशा की तरह बरामदे के कोने में एक कुर्सी पर विनीता धूमिल उजाले में बैठी हुई थी। हल्का संगीत चल रहा था। उसने चम्पई रंग का बेल-बॉटम पहन रखा था। ऊपर स्लीवलेस ब्लाउज़। कोस्टा को देखते ही उसने हाथ ऊपर किया और उस धूमिल उजाले में उसकी गोरी बाँह नज़र आ गयी। कोस्टा की साँस तेज़ हुई। हमेशा यही होता है। विनीता की यही विशेषता है। और किसी भी लड़की में ऐसा अन्दाज़ नहीं। और किसी लड़की ने कोस्टा को इतना पागल नहीं बनाया था। आज तो विनीता ने अपने लहराने वाले बाल भी खोल रखे थे जो उसकी पीठ पर लहरा रहे थे। इस पर अगर विनीता कहती तो कोस्टा उसके तलवे भी चूम लेता।

बड़ी कोशिश करके कोस्टा ने अपना चेहरा गंभीर बनाया। उसने हाय कहा तो उसने सिर्फ़ गर्दन हिलायी। कुर्सी पर करीब बैठने पर उसने कहा 'सुन्दर दिख रही हो।'

विनीता उसके मन की बात ताड़ गयी। कुछ पल उसकी ओर सख्त चेहरे से देखती रही। फिर आँखें नचाते हुए बालों को एक खास नज़ाकत के साथ झटका देकर बोली 'बस?'

कोस्टा पिघल गया। अँधेरा होता तो वह विनीता को अपने करीब कर लेता। वैसे अभी भी ऐसा करने में कोई हर्ज न था क्योंकि उस बरामदे में दूर-दूर रखी कुर्सियों पर सभी यही किये जा रहे थे। लेकिन कोस्टा के लिए कुछ नियम-कायदे थे। उसने होंठ चबाते हुए उसका हाथ पकड़ लिया और खुलकर हँसते हुए विनीता ने अपना हाथ एक खास अन्दाज़ के साथ छुड़ा लिया।

'यू आर जस्ट ए चाइल्ड' उसने हँसते हुए कहा।

कोस्टा भी हँस दिया। जो वह कहे वही सही। इस वक्त तो वह रानी और मैं गुलाम। उसके सामने वह ऐसा कमज़ोर क्यों हो जाता है? इतनी लड़कियाँ देखीं लेकिन यह कुछ कहती है 'जस्ट ए चाइल्ड।' वह फिर उसकी ओर देखने लगा। दिन भर की थकान और परेशानियाँ जैसे हवा हो गयीं। सच पूछा जाये तो अब इस संगीत की भी ज़रूरत नहीं थी। कोस्टा ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

खाने का आर्डर देकर विनीता गंभीर हो गयी। बोली 'मेरा बाप मुझे एक लफड़े में उलझाना चाहता है।' बाप की बात करते हुए उसकी आवाज़

नफरत आ जाती थी और ऐसी नफरत देखकर कोस्टा भी
करता था। वह जानता था कि विनीता के अपने पिताजी
रे खयालात कुछ ऐसे ही है। लेकिन उसे इस तरह की बातें
थी।
न्या लफड़ा है ?'
टो। मैं नही उलझने वाली। कहते हुए कुछ ऐसे मीठे अदाज
ा की ओर देखा तो उसे लगा कि उसकी आखो ने कुछ तय
ऐसे मौको से कोस्टा घबराता है। लेकिन उस पल कोस्टा को
हज ही क्या है ? सच क्या हज है ?
क्या आखिर ? कोस्टा ने पूछा।
ड़ी कपनी की जिम्मेदारी म वह मुझे उलझा रहा है।'
?
यल यूनिट। बड़ा भारी प्रोजेक्ट है। पहले तो उसने मेरे
लिये और कल सब बातें बतायी। करीबन डेढ करोड़ का

? तो मुझसे क्या पूछती हो ?
न कोस्टा की ओर देखा।
नही पूछू तो किससे पूछूगी ? मेरा इस तरह उलझना तुम्हे
?
?'
उसकी ओर देखा और उसे बात एकदम समझ म आ गयी।
ज़रो से अपने को बचाने लगा। सामने की बत्ती की ओर
बोला—
पागल हो।'
तुम ? विनीता ने तेज़ निगाह से कोस्टा की ओर देखा।
कुछ देर चुप रहा। फिर धीरे धीरे बोला—
मुझे तुम्हे सलाह देने का कोई अधिकार नही है। मैं कौन होता
ला ? तुम और तुम्हारे पिताजी जानें।
ने उसकी आंखो म आंखें डाल दीं। लबी सांस लेकर होठ
बोली, कोस्टा तुम बिलकुल पागल हो।"
स्टा का सिर चकराने लगा। लेकिन उसने अपने होश सभाले।
फेरा। फिर बोला—
तक तुमने मुझसे पूछा है ? विनीता सच तुम कुछ बातें अपने
य जाती हो।'

विनीता न अपनी आंखें अभी भी कोस्टा की आंखो मे डाल रखी थी। कोस्टा क बेचन होने को वह देखती रही। कुछ बोली नही। उसकी परेशानी देखकर वह फिर हंस दी।

सच कोस्टा तुम इतनी-सी भी बात कसे नही जान पा रहे हो? तुम पागल ही नही, बिलकुल बचकाने हो। इतने बडे लीडर कसे बन गये तुम? अपन मन की बात भी नही जानते?'

विनीता फिर मीठी हंसी हंस दी। उसकी हंसी म तीखापन न था। हां कोस्टा के सारे मोर्चे ढहा देने वाली हंसी जरूर थी वह। फिर उसने कोस्टा का हाथ अपने हाथ म ले लिया और उसे सहलाया। फिर सामन आये बाल नखरे के साथ पीछे की ओर किये। फिर ऐसे बोली, जसे किसी बच्चे को समझा रही हो—

तुम अगर कुछ नही समझते तो मैं तुमको सब कुछ समझा दूगी। याद रखो तुम मेरे बगर जी नही सकते? तुम क्या सोचते हो कि जी सकोगे? बिलकुल नही। जरा सोचोगे तो खुद ही समझ जाओगे। जिद मे कुछ वक्त मेरे बिना जरूर बिता सकते हो लकिन ज्यादा देर तक नहीं। तुम फिर मेरे पास वापिस आ जाओगे। चाहो तो, देख लो कोशिश करके।

उसके आत्मविश्वास म कोस्टा पूरी तरह पिघल गया। उसका यह रूप नया ही था। एक ओर उसकी बातें बचकानी लगती थी तो दूसरी ओर वह खुद ढीला हुआ जा रहा था। उसका हर शब्द उसे सच्चा लग रहा था। उसे महसूस हो रहा था कि वह पूरी तौर से उससे बंध चुका है। इसी पल वह उठकर क्यों नही चल देता? लेकिन मेर लिए यह समभव नही है। गरज कि विनीता ने पूरी तौर पर उसे बांध लिया है। उसकी आंखो के सामने पल भर के लिए नीला की वस्त्रहीन आकृति चमक गया और उसन लबी सांस ली।

खाना आ जाने पर कोस्टा स कहा, 'तुम्हारे बाप को बात पसन्द न आयेगी।'

'टु हल विद दट बास्टर्ड।'

'मैं क्रिश्चियन हू।'

टु हैल विद रिलीजन।

कोस्टा चुपचाप खाना खाता रहा। उसके दिमाग म अजीब परेशानी पल रही थी। सिल्विया को कसे हमने एकदम मना कर दिया था। उसने कितनी मिन्नतें की थी! लकिन मुझ उलझना ही न था। और भी ऐसी कितनी लड़कियां थीं लकिन विनीता कुछ और ही है। यहां कोई तर्क चल नहीं पाता। शादी स हम डरते हैं? उसका सिर और भी चकराने लगा।

विनीता ने कुछ देर खाने की कोशिश की। कोस्टा को चुप बैठा देखकर वह भी चुप बैठ गयी। लेकिन उससे ज्यादा देर रहा न गया। हाथ का चश्मा उसने टेबिल पर रख लिया। उसे अचानक गुस्सा आ गया। गुस्से के मारे आँखों में पानी आ गया। उसकी साँस तेज हो गयी। झटके के साथ उसने कोस्टा का हाथ पकड़ लिया और दबी आवाज में उसने कहा—

कोस्टा कोस्टा यू फूल ! सच तुम कुछ भी नहीं समझते हो। तुम राजनैतिक व्यक्ति हो। काम बाद में देखते हो हिसाब पहले लगाते हो। लेकिन तुम में समझ नहीं है। तुम समझते हो कि मैं तुम्हारे पास यों ही चली आयी हूँ ? तवायफ की तरह ? मैं कुमारी थी जानते हो न ? फिर किसलिए आयी थी तुम्हारे पास ? मुझे जो कुछ चाहिए वह मैं खुद हासिल कर लेती हूँ। क्या तुम अभी भी नहीं समझ पाये ? सच नहीं समझ पाये ?

विनीता इतने आवेश में बोल रही थी कि उसकी आँखों में आँसू आ गये थे। कोस्टा भी उसकी हालत देखकर परेशान हो गया। उसने और करीब होकर उसके कंधों पर हाथ रख दिया और समझाने के स्वर में बोला—

डार्लिंग प्लीज इस तरह अपसेट न हो। तुम मजाक नहीं समझतीं क्या ? कुछ तसल्ली से काम लो।'

विनीता ने तत्काल उसका हाथ परे हटा दिया। रूमाल से अपनी आँखें पोंछकर वह फिर खाने लगी। वह इतने आवेग में थी कि रो नहीं पा रही थी। बात कोस्टा की समझ में आ गयी थी। उसे कुछ भारीपन महसूस हुआ। लगा किसी ने कंधे पर वजनदार चीज रख दी है। ऐसा क्या ? यह एहसास एकदम नया था। विनीता के पूछे या मेरे बगैर बताये ही मैं विनीता से इस तरह क्या बँध गया हूँ ? लेकिन इसमें हर्ज क्या है ? एक बार फिर उसकी आँखों के सामने डिक्टेशन लेने वाली नीला की आकृति उभरी और उसने विनीता से कहा—

हम लोगों के झगड़े होंगे।

बिलकुल नहीं। नान्सेंस। मैं तुम्हें सम्भाल लूंगी।

बरामदे के सामने वाले चबूतरे पर दो-तीन वाद्य बजाने वाले सुर मिला रहे थे। एकदम पुराने स्वर—कोस्टा को उसके गाँव ले जाने वाले सुर सुर की संगति बैठ नहीं पा रही थी लेकिन कोस्टा को ऐसा महसूस हो रहा था।

'अब तो बताओ कि मैं क्या करूँ उसका ?' विनीता ने पूछा।

'तुम्हारे पास कांट्रैक्ट के कागज तो होंगे ? कल उन्हें मुझे दिखलाना। मैं देखूंगा।'

'मैं बताती हूँ। मेरा खयाल है कि मैं उन्हें फाड़ दूँ। पता नहीं मेरा बाप कहाँ से ले आया यह लफड़ा?

पहन देखें तो सही—कानूनन ठीक है या नहीं। यही देखना होगा।"

'होगा ही।'

खाना खाने के दौरान अब दोनों बातें कर रहे थे। तभी होटल का एक वेटर करीब आया। अदब से झुककर बोला, 'यू आर मिस्टर कोस्टा?"

यस। व्हाट इज इट?'

'फोन-काल सर।'

मेरा।' कोस्टा को अचरज हुआ। वह यहाँ है यह बात क्या किसी को मालूम थी? आता हूँ कहते हुए वह परेशानी में उठा और वेटर के पीछे पीछे चल दिया। फोन उठाया तो वह दूसरी ओर से डिसकनेक्ट हो गया।

परेशान-सा वह वापस आ बैठा। विनीता ने पूछा कहाँ आऊँ उन कागजों को लेकर?

फ्लैट पर आओ मायखला में। सुबह आठ-साढ़े आठ बजे आना।'

फ्लैट पर? देखना फिर।

हाँ तो क्या हुआ? अब हर्ज क्या है?' उसकी गर्दन पर हौले हौले हाथ फेरते हुए कोस्टा ने कहा मुझे डरपोक न समझो। एक बार तय कर लूँ तो आखिरी दम तक टिका रहता हूँ।

इस तरह की बातें अपने भाषणों में ही कहते रहो मुझसे न कहो। तुम खुद को इतना न जानते होगे, जितना मैं तुम्हें जानती हूँ।

मैंने बताया तो सही झगड़े होंगे। दोनों जोर से हँस पड़े।

कुछ देर बाद विनीता ने कहा सच कहती हूँ कि मैं अपने बाप से इतनी नफरत करती हूँ कि याद तक करने का दिल नहीं करता। अभी तुमने कहा तो याद आयी। एक नंबर का डरपोक आदमी है। न जाने कितनी औरतों को फँसाया होगा। मेरे ही सामने कितनी आयी होंगी। माँ बेचारी मर गयी ठीक हुआ। नहीं तो उसने खुदकुशी कर ली होती।

अब यह कहने की जरूरत है?'

अच्छा छोड़ो।

कुछ देर बाद वही वेटर फिर आ गया। अबकी बार उसका चेहरा अपराधी-सा हो गया था। कोस्टा की आँखों में सवाल उभरा तो उसने अदब के साथ कहा 'फिर से आपका फोन है, साब।

अब कोस्टा तैश में आ गया। "बोलो, नहीं हैं। जाओ कह दो। फिर

पूछना कि कुछ कहना है क्या ? नाम पूछना। कहना, कोस्टा नहीं है।'

उसके चले जाने के बाद कोस्टा सोच में पड़ गया। किसका फोन होगा ? नीला तक को मेरे इधर आने की बात मालूम नहीं थी। दूसरे किसी का मालूम होने का सवाल ही न था। फिर उसने विनीता से पूछा तुमने किसी को बताया था हमारे इधर आने के बारे में ?

'नहीं तो। मैं तो इसी वजह से ड्राईवर तक को नहीं लाती।''

होगा कोई। मारो गोली ! ' कहते हुए कोस्टा हँस दिया। विनीता हँस दी। उसके बदन पर रोमांच उभर आया। उसका हाथ अपने हाथ में लेकर और दूसरे हाथ में बँधी घड़ी देखते हुए उसने कहा चलो अब चलना चाहिए।' फिर बोला, आज मैं नहीं रुक सकता।

कौन कहता है रुकने के लिए ? विनीता मुस्करायी।

कोस्टा ने उसकी कमर दबा दी। उसने हाथ कहा तो उसने जब से मनीबैग निकाल लिया और विनीता कुछ कहे उससे पहले ही बोला आज बिल मैं देता हूँ।

नो। वैसे भी आज मैं पैसे लायी ही नहीं हूं।

बिल चुकता किया तो कोस्टा ने देखा कि अब उसके पास वापिस जाने लायक टैक्सी के पैसे भी नहीं बचे हैं। लेकिन वह चुप रहा।

दोनों दरवाजे के करीब आये तो वह वेटर मलूल चेहरा लिये सामने खड़ा था। कोस्टा ने पूछा किसका फोन था ?

फिर से कट गया साब !'

ठीक है। अच्छा ही हुआ।

गाड़ी के करीब आने पर विनीता ने कहा चलो मैं खुद तुम्हें पहुंचाये देती हूँ।

नहीं मुझे शिवाजी पार्क जाना है आंटी के यहां।

तो वहां पहुँचा देती हूँ।

नहीं काफी वक्त हो जायगा।

मौसी के यहां ही जाना है न ?

क्यों शक हो रहा है ? झगड़े हुंगे ?

विनीता फिर जोर से हँस दी। दरवाजा खोलकर गाड़ी में बैठ गयी। गाड़ी स्टार्ट करके बोली टैक्सी से जाओगे ? '

हाँ।

अच्छा बाई ! गुड नाइट !

विनीता की गाड़ी नजरों से ओझल होने तक वह देखता रहा। फिर उसने टक्सी को इशारा किया। टैक्सी से वह वी० टी० तक आया। वहाँ

बस की क्यू म खडा हो गया। कुछ दर बाद बस आयी और वह शिवाजी पार्क की बस म ऊपर की मंजिल पर हवा म बैठ गया।

होटल म आये फोन की बात उस जँच न रही थी। किसे पता हो सकता है ? किसी न आस पास देखा होगा। फिर फोन की क्या जरूरत थी ? कोस्टा को बात सीधी न लग रही थी। कुछ ऐसा था जो उसे चुभ रहा था। लकिन इस विषय म ज्यादा सोचने का अथ भी क्या था ? पहल हो वह सुबह स थक चुका है। उसन आँखें मूद ली और उस खयाल का दिमाग स निकाल दिया।

दिन भर म दो महत्त्वपूण निणय लिये गये थे जो उसकी जिन्दगी की दिशा बदल सकत थ। उसे फिर उदासी-सी महसूस होने लगी। सच पूछा जाय तो आंटी के यहाँ जाने का आज मन न हो रहा था। निणय लेने का असर इतना ज्यादा था कि उसका मन सीधे बिस्तर पर जा लेटने का हो रहा था। लकिन जाना भी जरूरी था। ऐसी उदासी क्यो महसूस हो रही है ? अकेलपन की वजह से ? सुबह से तो अकेलेपन का असर हुआ नही। फिर यह उदासी क्या ?

कोस्टा न जम्हाई ली। भारीपन हट नही पा रहा था। बस की ऊपरी मंजिल पर ज्यादा लोग न थ। बातें करने के लिए पहचान वाला कोई दिख न रहा था। कडक्टर बातूनी नजर न आया। कोस्टा को पहचान कर उसने सलाम जरूर किया था। फिर वह पिछली सीट पर बैठकर ऊँघने लगा था। बस म बैठ सभी लोग अपने-अपने घर जाने की फ़िक्र म थ। सब के चेहरे अजीब थकान भरे नजर आ रहे थे। अजीब चेहरे परेशान, मुरझाये पसीने स तर।

कोस्टा ने आँखें मूदने की कोशिश की लकिन बचैनी दूर नही हो पा रही थी। सारे दिन की बातें आँखों के आगे आ जाती थीं। अजीब थकान महसूस हो रही थी। आज आंटी के यहाँ ही सो जाये। गगाराम की औरत जवान है। वह अब क्या करेगी ? उसकी रोनी शक्ल सामने आ गयी। बदन पर काँटे उभर आये। लायसेंस मिल चुका है। अब पिस्तौल खरीद लेनी चाहिए। और उस फाइल का क्या किया जाय ? प्रधानमत्री से मिलना ठीक हो सकता है। अय्यर को भी कल अपने विश्वास म लेना चाहिए। वह जरूर मदद कर सकता है। आज की स्टोरी का कुछ तो असर हो ही रहा होगा। उसे कल कैसे हैंडिल करें ? देखते हैं। चीफ़ मिनिस्टर रीजन-बल आदमी है। ऑफर बुरी नहीं है। फोन की बात कुछ सच नहीं लगती। रघू को एक बार झाड़ना होगा। तभी वह जमीन पर आ पायेगा। हमीद को तो आज बच्चों तरह स पीटना था। नालायक, स्साला। तेरह नबर

का मामला क्या बिना हुडताल के हल हो सकता है ? क्या इतनी भी ताकत नहीं है हमम ? इतने साल बाल धूप म तो पकाये नहीं है। अब तो चीफ मिनिस्टर भी सुन लेगा। आह, एक घटा और विनीता के साथ गुजार लेता तो थकान का नाम निशान न रहता। ओ गाड कैसी अजीब छोकरी है नीला नीला नीला ।

किशोर वड्डे

किशोर जब प्रभादेवी की उस चाल में पहुँचा तो शाम ढल चुकी थी। अँधेरा गहराने लगा था। रास्ते की बत्तियाँ जल चुकी थीं। चाल में ज़रूर अँधेरा सा था। चाल तक पहुँचते ही एक परिचित गंध उसकी नाक में समाने लगी। इस चाल में उसने चार-पाँच साल गुज़ारे थे। उसके बदन पर काँटे उभर आये। बीच के चौक में गन्दगी, पास वाले संडास की बू, हर घर में पकने वाले खाने की गंध और चाल की लड़कियों के पाउडर की सुगंध और पड़ोस के एक प्रेस की स्याही की अजीब-सी गंध। इन सारी ही गंधों को मिला दिया जाय तो एक अजीब-सी गंध बन जाती है जिसे उस चाल की गंध कहा जा सकता है। कहीं भी इस तरह की गंध आ जाये तो फौरन किशोर को प्रभादेवी की इस चाल की याद आ जाती है और तब उसके पेट में अजीब-सा गोला उठने लगता है। फिलहाल उसके बदन पर काँटे उभर आये। सीने में अजीब-सी धड़कन हुई। साँस कुछ तेज़ हुई। और फिर वह चाल की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। सीढ़ियाँ उसकी पहचान की थीं। उसे रोशनी की ज़रूरत न थी। सीढ़ियों की कौन-सी सिल हिलने वाली है इस बात को वह खूब जानता था। उजाला नहीं था, ठीक ही था। नहीं तो चाल में जो मिल जायेगा उसे औपचारिकता की खातिर ही नमस्कार करना पड़ेगा।

पहली मंज़िल के दो एक घर बंद थे। तीसरे घर में ही रहकर किशोर ने बम्बई में शुरू-शुरू के पाँच साल गुज़ारे थे। उस घर के सामने एक बूढ़ा खाट पर लेटा हुआ था। बीच-बीच में खाँसी का दौरा पड़ जाता तो वह सींखचों के बीच में से नीचे चौक में थूक देता था। इस घर को छोड़ते वक्त बच्चों ने उसे पागल कहा था। लेकिन किशोर को उन लोगों की ज़रा भी परवाह न थी। वैसे भी वह मकान खुद उसके नाम पर न था। उसे वह मकान इसी शर्त पर मिला था कि जब ज़रूरत होगी तब छोड़ देना होगा। इस तरह किसी के भरोसे रहने के बजाय खुद ही मकान छोड़ देना ज़्यादा ठीक था। इसी वजह से उसने वह मकान छोड़ दिया था। खास बात यह भी थी कि उसका खुद इस मकान में रहना असंभव हो गया था। इसी वजह से उसने छोड़ा। ज़िन्दगी में कभी न मिलने वाली प्रेयसी जिस मकान के करीब ही रहती हो, उस मकान में कौन भावुक और होशियार आदमी रह सकता है?

दरवाज़े के करीब वाली गलरी में अंदर से आने वाले प्रकाश में दरी बिछाकर एक तेरह साल का लड़का पढ़ाई कर रहा था। किशोर के आने पर भी उसने मुंह ऊपर न किया। अंदर अजीब शक्ल की दीवारों पर ट्यूब का उजाला अजीब लग रहा था। नाना सामंत हमेशा की तरह खाट पर नहीं थे। कहीं बाहर गये हुए थे। सामने की दीवारों पर लोहिया और जयप्रकाश की तस्वीरें लगी हुई थीं। टेबिल पर किताबों के ढेर के बीच डाकोस्टा की तस्वीर रखी हुई थी। टेबिल के सामने वाली कुर्सी पर शैला एक किताब से मुंह ढांपे बैठी हुई थी। किशोर के जूतों की आवाज आते ही उसने मुंह ऊपर किया और आवाज दी, 'जीजी वह साहब आये हैं।

किशोर को शैला से हमेशा डर लगता है। शैला नीला की दूसरे नंबर की छोटी बहन थी। नीला से छोटी बहन की शादी हो चुकी है। शैला बीस साल की होगी। गोरी। नीला से ऊंची मर्दाने अंदाज़ की लड़की है। उसकी सारी पढ़ाई स्कालरशिप पर होती रही है। आजकल भी स्कालरशिप पर राजनीति शास्त्र में एम० ए० कर रही है। वह किशोर से कभी बात नहीं करती। मैट्रिक से पहले ज़रूर अपनी पढ़ाई में आने वाली दिक्कतें पूछती थी। लेकिन मैट्रिक में मेरिट में आ जाने के बाद से उसने पूछना छोड़ दिया था। किशोर ने भी वह मकान छोड़ दिया था। किशोर को लगता कि वह उसे तुच्छ समझकर ही वैसा व्यवहार करती है। लेकिन ऐसा शक उसे क्या है इस बात को उसने कभी नहीं सोचा। तुच्छता समझ में आती है लेकिन बनावटीपन आते ही वह मुझे नीला की ओर रेफर कर देती है मतलब ?

नाना नहीं हैं ?" उसने पूछा। लेकिन शैला ने किताब से मुंह ऊपर किया ही नहीं। किशोर को बेहद झुंझलाहट हो आयी।

कह रहे थे कि बाहर हो आता हूं नीला ने ही भीतर से आते हुए जवाब दिया। टॉवेल से हाथ पोंछती हुई जब वह बाहर के कमरे में आयी तो किशोर को लगा कि उसकी सांस रुक गयी है। वह जानता था कि कुछ भी हो जाये लेकिन यों ही चलता रहेगा।

नीला ने उसकी ओर ऐसे देखा कि किशोर के बदन में रोमांच हो आया।

बस दो मिनट और। वैसे भी इन लड़कों का वक्त हो चुका है' कहते हुए वह उन लड़कों के करीब चली गयी। नीला के बारे में यह शिकवा हमेशा रहा है। मेरी ओर ऐसे देखकर वह एक बड़ा सा गुनाह कर देती है। उस हँसी में कई सवाल उभर आते हैं। यादों का अंबार खड़ा हो जाता है। कई मीठी बातें याद हो आती हैं। उन यादों में कहीं भी नकार की भावना

नहीं होती। यादों में भी वे यादें—एक बार घर में कोई न होने पर लिया चुंबन और नाना को देखने जाते वक्त जे० जे० अस्पताल के करीब हाथ में हाथ थामना। उसकी मुस्कराहट में क्या भविष्य के लिए कोई दिलासा है? बस यही गाड़ी रुक जाती है या उसी दिलासा की खोज में हम यहाँ चले आते हैं? क्या नीला खुद हँसते समय इन बातों का खयाल करती है? या मेरी कल्पना ही ऐसी दौड़ लगाया करती है?

पाँच मिनट में ही उन लड़कों को विदा करके नीला अन्दर आ गयी और उसने फिर हजारों तरंग पैदा करने वाली हँसी कमरे में बिखेर दी।

नाना बोले कि आज कुछ ठीक लग रहा है। इसलिए जरा घूम आता हूँ। बस अब आते ही होंगे।

अकेले ही गये हैं?

नहीं, बिजू साथ में है।

आज जरा हवा में ठंडक है।

कोट पहनकर गये हैं।'

कुछ देर खामोशी। और क्या बोलें? नाना होते तो वे ही बोलते रहते।

शीला ने किताब बंद कर दी। अँगड़ाई ली और उठकर खड़ी हो गयी। बोली, जीजी मैं अभी आती हूँ।

अरे रुको भी, चाय बनाती हूँ।'

नहीं, चाय के लिए ही जा रही हूँ। पंद्रह मिनट में आ जाऊँगी।'

जाते वक्त शीला ने किशोर की ओर देखकर अजीब तरह से हँस दिया। उसमें समझने का संकेत था या दया भाव? किशोर बेचैन हो गया।

चाय अभी बनाऊँ या नाना के साथ लेंगे?

नाना को आ जाने दो।

'शीला की क्लास फर्स्ट है इसी साल में। आजकल उसी से खूब पटती है। नीला ने टेबिल ठीक करते हुए कहा। किशोर ने सिर्फ 'हूँ' कहा। वह उसी की तरफ देख रहा था, जैसे सब कुछ पी जाना चाहता हो। उसकी हर अदा प्यासी आँखों से देखे जा रहा था। नीला भी कुछ न कह रही थी। वह ऐसा क्यों करती है? वह जरा भी नजरों में नापसंदगी दिखला दे तो हम इधर कभी न आयेंगे। लेकिन वह मेरे साथ ठीक तरह से पेश आती है।

नीला ने टेबिल पर बेतरतीबी से रखी किताबें करीने से रख दीं। डीकोस्टा का फोटो पोंछकर वापिस उसी जगह पर रख दिया। उसी पर निगाह डाली फिर किशोर की ओर देखते हुए बोली, आपका भाई आने —

वाला था न ?'

'हाँ। आया हुआ है पर तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

'पिछले हफ्ते ही तो आप नाना से कह रहे थे।'

अरे, हाँ मैं तो भूल ही गया था।

उसे यहाँ लाइये न एक बार।

देखते हैं। वह घाटकोपर में है कम्पनी के गेस्ट हाउस में।

टेबिल साफ करके नीला कुर्सी पर बैठ गयी। दोनों की आँखें मिल गयीं। दोनों अकेले थे न जाने कितने दिनों बाद! दिन क्यों सालों बाद। बिजली के भार से दो भारी बादल आपस में टकरा जायें कुछ इसी तरह दोनों की नजरें टकरा गयीं। नीला की नजरों में भी क्या बिजली बसती है! उसे कुछ कहना है। और उसे जो कुछ कहना है वह मुझे नहीं सुनना। यह हँसी पिछली हँसी से अलग है। अनजानी सी है। उसमें कई बातें दबी हुई हैं। वह मुझे मालूम नहीं। यह नजर तो किसी और के परिचय की होनी चाहिए। किसकी? या यह मेरा खुद का भ्रम है? नीला, तुम यों न देखा करो सिर्फ मुस्करा भर दिया करो। फिर वह मुस्कराहट भले ही निरर्थक ही क्यों न हो! लेकिन इस तरह कलेजे को चीरती हुई नजरों से न देखो। पहले वाला समय होता तो मैंने समदर पर चलने की बात कही होती। पर अब नहीं।

पल दो पल के नजरों के मिलन से किशोर के आगे सारी दुनिया घूम गयी। उसे लगा वह इसी क्षण की राह देख रहा था। कह जाय एक बार हो ही जाये फैसला! नीला ना नहीं कहेगी। हर्ज ही क्या है? नाना कितने खुश हो जायेंगे! उसकी छोटी बहिन की शादी हो चुकी है। शला तो खुद ही तय कर लेगी। बिजू भी शादी लायक हो चुकी है। वह भी अपने लिए किसी को चुन लेगी। तुम ही कितने दिनों तक यों झुलसती रहोगी? हम जो चाहते हैं वह हमेशा तो मिलता नहीं। तुम्हें कौन चाहिए था मुझे मालूम नहीं। लेकिन वह मिल न सका। मिलेगा भी नहीं शायद फिर कोई और क्यों नहीं ढूंढ लेती? मैं तो तुम्हारी ही राह देख रहा हूँ। इसमें गलत कुछ नहीं है। खुद सोच लो नीला नीला, पल दो पल के लिए सोचो! किशोर परेशान हो उठा।

दूसरे ही पल नीला ने नजरें फेर लीं। उसने भी इन क्षणों में क्या अपने से कुछ कहा? उसने टेबिल पर रखी एक किताब उठा ली।

कोस्टा ने यह नाना के लिए दी है। पढ़ी है?'

किसी अफ्रीकी लेखक की सोशलिज्म पर किताब थी। किशोर ने उलट पुलट कर देखी।

‘कोस्टा बीच-बीच म नाना को याद करता है। मतलब ?’
वसी बात नही। वह हमशा ही नाना को याद करता है। पार्टी क
दूसरे लोग भले ही भूल जायें पर वह नही भूलता।’
नाना का पार्टी के बारे म बातें करना ही किशोर को कतई पसन्द नही
था। नीरा पार्टी की मवर नही है। वह सिर्फ नौकरी करती है। फिर पार्टी
की ऐसी तरफदारी किसलिए करती है? पहले उसे पार्टी की इतनी फिक्र थी
क्या? उल्टे वह गालिया दिया करती थी। खास तौर पर नाना की बीमारी
के दौरान। वह अक्सर कहा करती थी कि पार्टी ने नाना की जिन्दगी बर्बाद
कर दी। और यह बात सच भी थी। नाना सामत ने पार्टी के लिए अपनी
जिन्दगी तबाह कर दी थी। लकिन उनकी बीमारी म पार्टी कहाँ मर गयी
थी। नाना और उनकी लडकिया की तरफ किसने ध्यान दिया था? फिर
नाना को पार्टी म इतनी मोहब्बत कब स हो गयी? फिर भी कोस्टा क बारे
म इतनी बातें? वैसे कोस्टा ने नीला को पार्टी-आफिस म नौकरी पर जरूर
जमा दिया था। लेकिन इससे नाना की जिन्दगी की कीमत नही चुक
जाती। और फिर वे नीला से काम भी कितना लेते है। और किसी जगह
स्टेनो स इतना काम लिया जाता है? लेकिन नीला होशियार है। महत्वा-
कांक्षी है। वह सब काम कर लेती है। कोस्टा का फोटो वह खुद ले आयी
होगी। किशोर के मन म एक जहरीली लहर फैल गयी थी। सीने म अजीब
आग थी। अचानक किशोर को अपने ही विचारो पर शर्म आने लगी।
अब इसे क्या कहूँ? कोस्टा का फोटो हुआ तो क्या? हो सकता है कि
नाना खुद ही ले आये हो। नाना कोस्टा की इज्जत करते हैं। कोस्टा भी
धीरे धीरे ऊपर आया है। नाना अगर आज पार्टी म होते और किस्मत न
साथ दिया होता तो आज वे पार्टी म पहली लाइन म होते। लेकिन साथ
वालों ने दगा दी। बीमार पडे तो पार्टी वाले उन्हें भूल ही गये। पार्टी क
लिए जल गये पुलिस ने डडे खाये नौकरी छूटी तो कोई पूछने तक न
आया। बस नाना भी उनके पास नहीं गये।
कोस्टा का एन्टी स्मगलिंग कम्पेन कैसी चल रही है? अब तो बातें
पेपर म भी आने लगी हैं।
जोर शोर से। पर काम बडे खतरे का है’ नीला ने कहा। किशोर
न देखा कि अब तक नीला की बातो म जोश न था, लेकिन यह बात आते
ही नीला आवेश म बोल रही थी। उसके शब्द उसके कान पर दस्तक द
रहे थे। पर उनका अर्थ उसे समझ म न आ रहा था। नीला कोस्टा की
पक्की भक्त बन गयी है यह बात जरूर किशोर समझ चुका था। नीला
जोर जोर से बोल रही थी और किशोर चुपचाप सुन रहा था। उसके पेट

वाला था न ?'

हाँ। आया हुआ है पर तुम्हे कैसे मालूम हुआ?'

'पिछले हफ्ते ही तो आप नाना से कह रहे थे।'

अरे, हाँ मैं तो भूल ही गया था।

उसे यहाँ लाइये न एक बार।

देखते हैं। वह घाटकोपर में है कंपनी के गेस्ट हाउस में।"

टेबिल साफ करके नीला कुर्सी पर बैठ गयी। दोनों की आँखें मिल गयीं। दोनों अकेले थे न जाने कितने दिनों बाद ! दिन क्या, सालों बाद। बिजली के भार से दो भारी बादल आपस में टकरा जायें, कुछ इसी तरह दोनों की नजरें टकरा गयीं। नीला की नजरों में भी क्या बिजली बसती है ! उसे कुछ कहना है। और उसे जो कुछ कहना है वह मुझे नहीं सुनना। यह हँसी पिछली हँसी से अलग है। अनजान भी है। उसमें कई बातें दबी हुई हैं। वह मुझे मालूम नहीं। यह नजर तो किसी और के परिचय की होनी चाहिए। किसकी ? या यह मेरा खुद का भ्रम है ? नीला तुम या न देना करो सिर्फ मुस्करा भर दिया करो। फिर यह मुस्कराहट भले ही निरर्थक ही क्यों न हो ! लेकिन इस तरह कलेजे को चीरती हुई नजरों से न देखो। पहले वाला समय होता तो मैंने समंदर पर चलने की बात कही होती। पर अब नहीं।

पल दो पल के नजरों के मिलन से किशोर के आगे सारी दुनिया घूम गयी। उसे लगा वह इसी क्षण की राह देख रहा था। कह जाय, एक बार हो ही जाय फैसला ! नीला 'न' नहीं कहेगी। हर्ज ही क्या है ? नाना कितने खुश हो जायेंगे ! उसकी छोटी बहिन की शादी हो चुकी है। शैला तो खुद ही तय कर लेगी। बिजू भी शादी लायक हो चुकी है। वह भी अपने लिए किसी को चुन लेगी। तुम ही कितने दिनों तक यों झुलसती रहोगी ? हम जो चाहते हैं, वह हमेशा तो मिलता नहीं। तुम्हें कौन चाहिए था मुझे मालूम नहीं। लेकिन वह मिल न सका। मिलेगा भी नहीं शायद फिर कोई और क्या नहीं ढूंढ लेती ? मैं तो तुम्हारी ही राह देख रहा हूँ। इसमें गलत कुछ नहीं है। खुद सोच लो नीला नीला पल-दो पल के लिए सोचो! किशोर परेशान हो उठा।

दूसरे ही पल नीला ने नजरें फेर लीं। उसने भी इन क्षणों में क्या अपने से कुछ कहा ? उसने टेबिल पर रखी एक किताब उठा ली।

वास्टा ने यह नाना के लिए दी है। पढ़ी है ?

किसी अफ्रीकी लेखक की सोशलिज्म पर किताब थी। किशोर ने उलट पुलट कर देखी।

कोस्टा बीच-बीच म नाना को याद करता है। मतलब ?'

कभी बात नहीं। वह हमेशा ही नाना को याद करता है। पार्टी क दूसरे लोग भले ही भूल जायें पर वह नहीं भूलता।'

नीला का पार्टी के बारे म बातें करना ही किशोर को कतई पसद नहीं था। नीना पार्टी की मेम्बर नहीं है। वह सिर्फ नौकरी करती है। फिर पार्टी की ऐसी तरफदारी किसलिए करती है? पहले उसे पार्टी की इतनी फिक्र थी क्या? उल्टे वह गालियाँ दिया करती थी। खास तौर पर नाना की बीमारी के दौरान। वह अक्सर कहा करती थी कि पार्टी ने नाना की जिन्दगी बर्बाद कर दी। और यह बात सच भी थी। नाना सामंत ने पार्टी के लिए अपना जिन्दगी तबाह कर दी थी। लकिन उनकी बीमारी म पार्टी कहाँ मर गयी थी। नाना और उनकी लड़कियों की तरफ किसने ध्यान दिया था? फिर नाना को पार्टी म इतनी मोहब्बत कब स हो गयी? फिर भी कोस्टा के बारे म इतनी बातें? बस कोस्टा ने नीला को पार्टी-आफिस म नौकरी पर जरूर जमा दिया था। लकिन इसस नाना की जिन्दगी की कीमत नहीं चुक जाती। और फिर वे नीला से काम भी कितना लेते हैं। और किसी जगह रहना म इतना काम लिया जाता है? लेकिन नीला होशियार है। महत्वाकांक्षी है। वह सब काम कर लेती है। कोस्टा का फोटो वह खुद ले आयी होगी। किशोर के मन मे एक जहरीली लहर फैल गयी थी। सीने म अजीब आग थी। अचानक किशोर को अपने ही विचारों पर शर्म आने लगी। अब इस क्या कहूँ? कोस्टा का फोटो हुआ तो क्या? हो सकता है कि नाना खुद ही ले आये हों। नाना कोस्टा की इज्जत करते हैं। कोस्टा भी धीरे धीरे ऊपर आया है। नाना अगर आज पार्टी म होते और किस्मत ने साथ दिया होता तो आज वे पार्टी म पहली लाइन म होते। लकिन साथ वालों ने दगा दी। बीमार पड़े तो पार्टी वाले उन्हें भूल ही गये। पार्टी के लिए जेल गये पुलिस के डंडे खाये नौकरी छूटी तो कोई पूछने तक न आया। बस नाना भी उनके पास नहीं गये।

'कोस्टा का एन्टी स्मगलिंग कैम्पेन कैसी चल रही है? अब तो बातें पेपर म भी आने लगी है।

'जोर शोर स। पर काम बड़े खतरे का है,' नीला ने कहा। किशोर ने देखा कि अब तक नीना की बातों म जोश न था लेकिन यह बात आते ही नीना आवेश म बोल रही थी। उसके शब्द उसके कान पर दस्तक दे रहे थे। पर उनका अर्थ उसे समझ म न आ रहा था। नीला कोस्टा की पक्की भक्त बन गयी है यह बात जरूर किशोर समझ चुका था। नीना जोर शोर स बोल रही थी और किशोर चुपचाप सुन रहा था। उसके पेट

म अजीब-सा खालीपन पदा हो रहा था।

बस ! बातो का दायरा इतना ही है ? नाना की बीमारी, बिजू की पढ़ाई कोस्टा जयत—सारी दुनिया की बातें हो जायेंगी लेकिन हमारे तुम्हारे बीच की बातें ?

फिर कुछ देर खामोशी।

नौकरी कसी चल रही है ? आखिर किशोर ने ही पूछ लिया।

ठीक है, इटरेस्टिंग है।

काम काफी होता है न ? '

'हा। पर थकान महसूस नही होती।'

'इटेस्ट हो तो कसी थकान ! हम तो किसी बात म इट्रेस्ट ही नही रहा ।'

इस पर नीला चुप रही। उसने पल भर किशोर की ओर देखा और नजरें दूसरी ओर फेर ली।

अचानक किशोर को लगा कि वह फिजूल ही यहां आया। मेर लिए यहा कोई जगह नही है। यहां आना निरथक है। पहले यहां स्वागत हुआ करता था। लकिन अब मैं यहां न भी आऊँ तो भी कोई फक नही पडता। दो सप्ताह तक यहां न आया था तो किसी ने लाज पर आकर पूछताछ भी न की। नीला कभी लाज पर आयी है पता लगाने के लिए ? या कभी उसने लाज या आफिस म फोन किया है ? बेकार ही चल आये। बस अब चलना चाहिए। सारा दिन बर्बाद कर दिया। अब और परेशानी नही चाहिए। उसे अजीब घुटनी हो रही थी।

सीढियो पर कदमो की आहट हुई।

शायद नाना आ गये।

किशोर को तसल्ली-सी हुई लेकिन दूसरे ही पल निराशा भी हुई। और कुछ वक्त मिल जाता तो कोई और विषय बात के लिए निकल सकता था। नीला कुछ तो बोली होती। हम बात हात। लकिन रहने दो। मन की बातें मन ही म दबाकर रखन म कुछ नही। अब यहा नही जाना। इससे तो नाना का आना ही ठीक रहा।

वाह वाह कब आये ?

नाना ने दिल खोलकर किशोर का स्वागत किया। नाना को किशोर वाकई पसन्द है। आज वे ज्यादा ही बूढे नजर आ रहे थे। उम्र पचास के आस पास होगी पर वे सत्तर के नजर आ रहे थे। साथ म बिजू भी थी। वह भी किशोर की ओर देखकर हँस दी।

कहो ठीक है न सब ?'

'अब को तो आप काफी दिनों बाद आये।'

बातें शुरू हो गयीं। नाना को राजनीति बेहद पसन्द है। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय राजनीति, महाराष्ट्र की राजनीति। किशोर को डर था कि वही विषय फिसल कर कोस्टा पर न आ जाय? और आज का ताजा विषय स्मगलिंग ही था। नाना कह रहे थे, "कोस्टा ने इस विषय पर सवाल जरूर उठाया है लेकिन उस आखिरी सिरे तक ले जाये तो मैं उसे मानूँ। नहीं तो समझेंगे कि यह भी एक स्टंट है।'

चाय पी और वचन मन से किशोर वहाँ से चलने लगा।

"आज काफी दिनों बाद आये हो। ऐसा मत किया करो। बीच-बीच में आते रहा करो" नाना ने कहा। उनकी आवाज थकी थकी लग रही थी। उसमें हताश करुणा भी नजर आ रही थी।

'आता तो हूँ।'

"हमें खुशी होती है। आप हमेशा आते रहें यही हम चाहते हैं।" नाना ने नीला की ओर देखकर कुछ इस अंदाज में कहा कि किशोर का दिल पसीज गया। गरज कि वे नीला से कुछ कहना चाहते थे। किशोर भी कुछ कहना चाहते थे, लेकिन वे कह न पाते थे। तभी नीला ने गर्दन घुमा कर ऐसा भाव दिखाया जैसे उस तरफ उसका ध्यान हो न हो। लेकिन उसके चेहरे का बदलता भाव किशोर की नजरों से छुपा न रह सका। किशोर सिर्फ हँस दिया। भारी मन से वह वहाँ से चल दिया।

यह एक और हार। दिन भर की हारों पर और काला रंग चढ़ाने वाली हार। हम यहाँ आये ही क्यों? जरूरत ही क्या थी? किस तरह बेशर्म की तरह चले आये? तुम में जरा भी स्वाभिमान नहीं है? उसे लगा, जैसे चाल के हर कमरे से आने वाली उजाले की लकीरें खंजर की तरह उसके बदन पर पड़ रही हैं। खुद से नफरत होने लगी। नीला के कमरे का उजाला भी मायूस सा महसूस हुआ जैसे हर पल उस पर हावी हो रहा हो। फिर भी वह बैठा रहा।

हवा ठंडी थी। किशोर के कदम मायूसी में तेज हो गये। बस-स्टॉप पर उसने चारमीनार सुलगा ली। उस बस में खड़े होने की जगह मिल गयी। उससे सट कर एक काली मोटा-सी बदशक्ल औरत खड़ी थी। बस जैसे ही हिचकोले लेती वैसे ही वह औरत अपने पूरे बदन के साथ किशोर से टकरा जाती थी। किशोर को मितली-सी आने लगी।

वह खोली में आया तब लोग खाना खत्म करके जा रहे थे। चाचा गल्ले पर बैठे हुए थे। किशोर ने पूछा, "अनिल आ गया?"

'आये हैं। पर आज खाना खाने का इरादा नजर नहीं आता।'

'क्या ?"

चाचा मिफ हस दिये और उन्होंने हाथ अजीब तरह से मटकाये। चाचा आज बोलने के मूड म नहीं थे। कुछ अजीब लग रहा था। अनिल के बारे म क्या फैसला हुआ यह जाना जा सकता था। अगर कोई बात होती तो चाचा ज़रूर कुछ बोले होते। लेकिन अनिल पर चाचा इतने नाराज क्यों हो रहे हैं? किशोर को अचानक बाबूजी को लिखने वाले ख़त की याद हो आयी।

चाचा एकाध लिफाफा है ? या इनलैंड ?

चाचा ने टेबिल की दराज म देखा और चेहरा अजीब सा बनाकर बोले सारी।'

लिफाफा न मिला तो न सही—सादे कागज पर तो ख़त लिख ही सकता हूँ और कल का पहला काम यही होगा कि लिफाफा पोस्ट कर दिया जाय। किसी भी हालत म आज बाबूजी को ख़त लिखना ही होगा। लापरवाही काफी हो चुकी है। मेरी वजह से दूसरों को क्या तकलीफ हो? सीधे लिख देता हूँ।

पूज्य बाबूजी को सादर चरण स्पर्श। ख़त लिखने की वजह यह कि—।

अनिल मुँह पर चादर लिये सो रहा था। उसके पलंग के करीब सिगरेट के कई टोटे पड़े हुए थे। वे सभी ट्रिपल फाइव या इसी तरह की किसी मँहगी सिगरेट के थे। यह साला हमेशा ही ड्रामा किया करता है। किशोर को हँसी आ गयी। मेरी सारी जिन्दगी म कहाँ नाटकीयता नहीं है। और अनिल की हर बात म नाटकीयता ! इसी को कहते हैं लाइफ। खूब मजे कर रहा है।

'उठिये मिस्टर खाना खाने चलिये ' अपने पलंग पर बैठ कर जूते निकालते हुए किशोर ने कहा। उसे बस भूख न थी। लेकिन अनिल को कंपनी देना जरूरी था। वह हाथ-पाँव धो आया लेकिन अनिल सो ही रहा था। उसने मुँह से चादर भी अलग न की थी।

क्यों क्या ख़याल है जनाब ? किशोर ने फिर पूछा।

अनिल म कुछ हरकत हुई। दो तीन मिनट बाद अनिल पलंग पर उठ बैठा।

अब खाने म क्या रखा है ?'

किशोर को लगा कि उसे हँसी आ जायेगी। अनिल से बड़ा अपनापन महसूस होने लगा। उसे लगा कि वह उसके लिए न जाने क्या क्या कर सकता है। कहीं उसके हँसने मे कड़वाहट तो नहीं थी ? कुछ पल उसे

अजीब-सी राहत महसूस हुई।

अरे पागल तो नहीं हो गये ?"

'पागलपन से भी परे पहुँच गया हूँ। फैसला क्या हुआ, जानते हो?

तुम्हारे चेहरे से ही पता चल रहा है।'

अनिल कुछ देर तक शून्य में देखता रहा। फिर बोला, "चलो, कुछ घूम आते हैं।

अरे, यहीं जो बातें कर लेते हैं। यहाँ दूसरा है ही कौन ?"

नहीं बाहर ही चलते हैं। बस भी अब भूख तो है नहीं" अनिल बड़े इतमीनान से बोला। वह झटके से उठ बैठा। पाजामा-कुर्ता पहन लिया पाँव में चप्पल अटका ली और बोला "चलो।

बाहर बम्बई की रात को खुश करने वाली हवा थी। दिन भर की थकान के बाद यह हवा अच्छी लग रही थी। रात के साढ़े नौ बज चुके थे। फिर भी रास्ते पर लोगों का आना जाना कम न हो पाया था।

कुछ देर तक दोनों चुपचाप चलते रहे। फिर एक ईरानी होटल में घुस गये। अनिल ने दो कप चाय मंगायी।

सिगरेट पान-पीते उसकी जीभ जल गयी थी। "देख," वह बोला।

आदत नहीं है तो पीते ही क्यों हो ? नाटकबाजी स्साली !'

अनिल ने आँखें ऐसे बनायी जैसे सीने में अजीब सा दर्द उठा हो। किशोर ने पूछा, 'अरे बताओगे भी कि आखिर हुआ क्या ?'

आज दोपहर चाचा ने उसके बाप को फोन किया था। पूछा था कि मिलने आऊँ ? बाप ने कहा नहीं जरूरत नहीं। उसने पहले ही कोई लड़का ढूंढ लिया है।'

बस इतनी सी ! बस इतना ही ?"

धत ? तुम मतलब समझते हो ?'

'तुम तो पागल हो !'

दोनों ने चुपचाप चाय सुड़की। किशोर ने चारमीनार का पैकेट खरीदा और दोनों बाहर आ गये। किशोर को अजीब-सी तसल्ली महसूस हो रही थी। बाबूजी का अभी खत निकला है। कोई हर्ज नहीं। घूमने के बाद लिख देंगे। सोने से पहले लिख लें बस ! मीना के घर पर डायरेक्ट का सामना करना ही आ रहा है। उसका फोटो इस तरह रख जाने का मतलब, यानी बहुत बड़ा खुशी है। नौकरी पर लगाने का मतलब इतना लगाव तो नहीं होता।

'किशोर तुम मेरी हालत समझ नहीं पा रहे हो," खुली सड़क पर आते ही अनिल ने कहा। 'मुझे वसन्ती से प्रेम है और उसके बगैर मैं भी

नहीं सकता।'

किशोर ने गर्दन हिलायी। उसे लगा कि अनिल जरा सीरियस है। उसने पूछा शाम को बसंती मिली थी न ?

हां।"

वह क्या बोली ?'

वह क्या बोले बेचारी ! '

मतलब तुमने उससे कुछ पूछा ही नहीं ? '

क्यों किशोर वह एकतरफा कार्यवाही नहीं कर सकती।

अब किशोर को गुस्सा आ गया। एकतरफा नहीं है तो फिर दिक्कत क्या है ?

फिर तुम्हारी दिक्कत क्या है ?

अनिल ने सांस ऐसे छोड़ी कि जैसे कह रहा हो कि तुम कुछ समझते ही नहीं। फिर बोला देखो बसंती से मुझे मोहब्बत है। मुझे उसे उलझन में नहीं डालना है। पिताजी की अनुमति के बिना अगर वह शादी करेगी तो खुश नहीं रह पायेगी।

किशोर को तैश आ गया। कुछ देर तक वह कुछ न बोला। वह न समझ पा रहा था कि अनिल नाटक कर रहा है या वह वाकई भावुक है। या तो वह पागल है या बहुत भावुक। लेकिन अनिल मूर्ख नहीं है। आज तक उसने बहुत सी लड़कियां देखी हैं। एक के लिए भी उसमें ऐसी भावनाएँ नहीं थीं। या मुझसे ही गलती हो रही है। हो सकता है मैंने अनिल को अभी तक जाना ही न हो।

दोनों चुपचाप समंदर के किनारे आ गये। रास्ते से हटकर जहाँ बालू थी वहाँ आ बैठे। समंदर की लहरें खामोश दिख रही थीं और हवा भी तेज न थी। पर हवा में काफी ठंडक थी। किशोर को लगा कि सारे दुख दर्द अवास्तविक और काल्पनिक हैं। अनिल का प्रेम हास्यास्पद है। एक सिगरेट सुलगाकर उसने कहा—

सच कह रहा हूँ अनिल तुम्हारी बातें सुनकर तो मुझे हंसी आ रही है। एक मामूली-सी बात का इतना बतंगड़ बनाकर तुम खुद परेशान हुए जा रहे हो। बात एकदम सीधी है। तुम एक-दूसरे को बहुत चाहते हो—बस। तुम्हारे पास ढेर सारा पैसा है। तुम उसे खुश रख सकते हो। बाकी की बातें तो ऊलजलूल हैं। तुम क्यों बेकार रो गा रहे हो ?"

कुछ देर के लिए किशोर रुका और फिर बोला एक बात ध्यान में रखो। हम जिससे प्रेम करते हैं वह भी अगर हमसे प्रेम करे तो इससे बढ़कर बात क्या हो सकती है ! तुम्हारे साथ यही बात है और तुम हो कि

पागलों की तरह परेशान हुए जा रहे हो। ऐसा सहसा नहीं होता है। हम जिससे प्रेम करते हैं वह किसी और से प्रेम करती है और वह किसी और को चाहता है—जंजीर तो यों बनती है। उससे लोग दुखी होते हैं। एक तुम हो। जिससे प्रेम है उसी के साथ शादी हो तो इससे बढ़कर बात क्या हो सकती है। मतलब पागलपन छोड़ो। सीधे जाकर बसंती के बाप के आगे खड़े हो जाओ और पूछो। अगर वह इनकार करे तो सीधे बसंती को साथ लेकर सिविल मैरिज कर लो। अगर मौका चूक गये तो ज़िन्दगी भर पछताते रहोगे।

अनिल बेचैन हो उठा। किशोर की बातों का रुख उसने पहचान लिया था।

तुम अनुभव से यह कहते हो?

कुछ पल किशोर चुप रहा। मुझे ऐसा अनुभव कहाँ? यह तो साधारण सी बात है बिलकुल स्वाभाविक।

नहीं जी मेरा क्या खास अनुभव होगा। लेकिन हर चीज़ का प्रत्यक्ष अनुभव होना लाज़मी नहीं है। कुछ बातें ऐसी होती हैं कि देखकर समझी जा सकती हैं। दुनिया के बारे में मेरी जो कुछ समझ है उसी के बल पर यह सब कह रहा हूँ। देखो तुम्हारी समझ में आ सके तो...।'

किशोर की बातें खत्म हो गयीं। अनिल कुछ न बोला। चारों ओर खामोशी थी। चौपाटी पर एक बत्ती तक न थी। दूर से लोगों के आने जाने की आवाज़ें ज़रूर आ रही थीं। दूसरी तरफ के श्मशान में कुछ उजाला इधर नज़र आ रहा था। माहौल कुछ बोझिल था। अनिल समंदर की ओर पीठ किये बैठा था और सामने के रास्ते पर लोगों की ओर देख रहा था। कुछ देर तक दोनों ही चुप रहे।

तुम्हारी बातों में दम ज़रूर है,' आखिर अनिल ने कहा।

फिर खामोशी। अब दोनों के ख्याल बिलकुल विरोधी दिशाओं में बह रहे थे। बातें खत्म हो चुकी थीं। लेकिन वहाँ से उठने की तबियत न हो रही थी। किशोर को लॉज पर जाकर खत लिखना था। जितनी ज़्यादा देर हो रही है उतना ही ख्याल अच्छा लग रहा है। देरी की वजह से खत लिखना कहीं टल तो नहीं जायेगा? नहीं... असम्भव है। आज भले ही बारह एक बज जायें लेकिन टेबिल-लैंप लगाकर खत लिख देना चाहिए। न जाने कितने दिनों से दिमाग़ में है और न जाने कितने कागज़ बरबाद कर दिये हैं। कम-से-कम जयंत का ख्याल करके तो लिख ही देना चाहिए। नहीं तो आज की बात कल पर चली जायेगी। कल की बात परसों पर और हर बार की तरह टल जायेगी। लॉज पर जाते ही लिखना शुरू कर

दना होगा— पूज्य बाबूजी, सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि आपके सभी खत मिल गये। आलस की वजह से खत न लिख सका। क्षमा करें। अभी छुट्टी भी नहीं मिल पायी है इसी वजह से न आ सका। अगले महीने छुट्टी लेकर आऊँगा। आपकी तबियत अब कैसी है? आज ही जयंत इंटरव्यू के लिए यहां आया है। उसने बताया कि पूज्य माता जी का पेट खराब चल रहा है ठीक ही चल रहा है। जयंत ने आज ही मुझे इलेक्ट्रिक शेवर दिया है। वह इंटरव्यू में जरूर सफल होगा। बाकी ठीक है। मैं ठीक ही चल रहा हूँ।

इतने दिन से तय कर रहा हूं पर आगे बात बनती ही नहीं। यह अनिश्चय क्यों? हम क्यों निर्णय नहीं ले पाते हैं? अनिल को हम लाख समझाते रहें पर जरूरत तो हम अपने को समझाने की है। कितने दिन तक मामला ऐसे ही लटकता रहेगा? एक दिन सीधे नीला से पूछ ही लेना चाहिए ताकि अनिश्चितता तो खत्म हो। या सारी जिन्दगी ऐसे ही बिता देनी है उजड़े रेगिस्तान की तरह? बकौल अनिल इससे तो सीधे समंदर में चला जाना क्या बुरा है! त्रिशंकु की तरह लटकने में क्या रखा है? मान लो नीला ने मना ही कर दिया तो क्या होगा? बस इसकी संभावना कितनी है? उसकी आँखों में कुछ और ही होता है। नकार उसकी आँखों में नहीं है यह भी सच है। अगर नकार होता तो हम वहां क्यों जाते? मान लो उसने ना कर दिया तो क्या बिगड़ेगा? बाबूजी जिससे कहेंगे उसी से शादी करना क्या बुरा होगा? किशोर के बदन पर कांटे उभर और उसे लगा कि जैसे हजारों चींटियां उसके बदन पर चढ़ गयी हैं। एकदम असह्य। फिर बाबूजी को क्या लिखें? यही न कि मेरी राह न देखिये। जयंत की शादी कर दीजिये। पूज्य बाबूजी सादर चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि ।

अनिल रास्ते की तरफ चुपचाप देख रहा था। दूर मोटरों की बत्तियाँ चमकतीं और अदृश्य हो जातीं। उनके इंजन की आवाज जरूर काफी दूर तक आती रहती थी। रास्ते पर एकाध ही पैदल नजर आ रहा था। बीच में एक युगल कमर में हाथ डाल नजरों के सामने आ गया और बसंती की याद तीव्र हो उठी। किशोर की बातों का अर्थ उसकी समझ में आने लगा। अचानक अनिल एकदम हड़बड़ाया। तनकर बैठ गया और किशोर से बोला—

किशोर जरा उधर देखना क्या हो रहा है?

किशोर ने घूमकर देखा। पहले तो उसकी कुछ समझ में न आया। सामने वाले रास्ते से जो छोटी-सी गली आ मिलती है वहाँ नारियल के

दो पेड थे। वहां अँधेरा था। उसके नीचे नजर गयी तो किशोर भी हडबडा गया। "अरे बाप रे!" वह बीच में ही चिल्लाया।

उन दो पेडों के करीब एक ऊंचे से आदमी को दो तीन लोग पीट रहे थे। अँधेरे में उनकी हरकतें साफ न दीख रही थीं। अनिल ने किशोर का ध्यान उधर खींचा तभी तीन लोगों ने उस ऊँचे आदमी को घेर लिया था। दूसरे ही पल एक आदमी ने उस पर लोहे के किसी औजार से हमला बोल दिया। तभी वह ऊँचा आदमी नीचे गिर पडा। बाकी दोनों ने भी उस पर हमला कर दिया।

किशोर एकदम डर गया। पहले उसने वहां से भाग जाने की सोची। लेकिन तब तक अनिल ने निर्णय ले लिया था। अनिल झट से उठा और दौडते हुए उधर की ओर लपका। तेजी से चीखा "पुलिस पुलिस अरे पकडो पकडो खून! खून!" तभी किशोर भी चीखने लगा। "अनिल करीब न जाओ। करीब न जाओ। भागो कहीं तुम पर हमला न बोल दें वे लोग।" लेकिन अनिल उधर ही बढ रहा था। और किशोर को उसके पीछे भागना लाजमी हो गया।

उन दोनों के चीखने और भागकर उधर बढने से काफी काम हो गया। आस पास के कुछ बंगलों की खिडकियाँ खुल गयीं। वे लोग रुक गये। अनिल और किशोर को उन लोगों ने तेज आवाज में धमकी दी और वहां से भाग खडे हुए। रास्ते के करीब ही एक टैक्सी खडी थी। शायद उन लोगों की ही थी। उन तीनों के उसमें बैठते ही टैक्सी तेजी से चल दी। आध-पौन मिनट के भीतर ही यह सब हो गया। और फिर खामोशी छा गयी जैसे कुछ हुआ ही न हो। और जैसे वाकई कुछ हुआ ही नहीं, इस अंदाज में मकानों की खिडकियाँ फिर बंद हो गयीं। इतना सब तेजी से हो गया। अब खामोशी।

वहां अँधेरा था। वह आदमी औंधा पडा हुआ था। दोनों उस पर झुक गये।

"सिर से खून आ रहा है। जल्दी टैक्सी लानी चाहिए।"

"अभी जिन्दा दिख रहा है।"

सच पूछा जाय तो उस अँधेरे में कुछ भी नजर न आ रहा था। लेकिन चोटों के दर्द की वजह से वह आदमी पाँव पटक पटक कर कुछ बडबडा रहा था। उसके जिन्दा रहने का यही प्रमाण था।

"मैं टैक्सी लाता हूँ, तुम यहीं रुको" कहते हुए किशोर रास्ते की ओर भागा। दो मिनट उसे टैक्सी की राह देखनी पडी। फिर दोनों ने मिल कर उस आदमी को उठाकर टैक्सी में रखा। टैक्सीवाले ने पिछली बत्ती

जलायी और वह चाखा अरे बाप र खून! यह तो बडे खतरे की बात है।'

पहले क० ई० एम० अस्पताल चलो। फिर दूसरी बात होगी। यह आदमी मर रहा है अनिल चीखा। झीकत हुए ही ड्राईवर न टक्सी बन्दायी।

टक्सी की बत्ती जली तो उस जख्मी आदमी का चेहरा नजर आया। किशोर ने उस आदमी का सिर अपनी गोद म ले लिया था। उसकी पट खून से भीग गयी थी। चेहरा देखते ही उसे कुछ याद आया।

अनिल, इस आदमी को तुम पहचानते हो?'

अनिल न प्रकाश म ध्यान से देखा नही पर इस आदमी का फोटो जरूर इधर उधर म छपा था।

कोस्टा!

हाँ। डीकोस्टा ही है। करक्ट। माई गाड! अच्छा हुआ जो हम करीब ही थ।'

अनिल ने जब से रूमाल निकाल लिया। जहाँ स खून निकल रहा था उधरे म ही वहाँ अदाज स रूमाल बाँध दिया।

दद से कोस्टा कराहा।

आ-आ आंटी आंटी नीला नीला! वह बडबडा रहा था। दद से उसन पाँव झटके तो व अनिल के सिर स टकराय। फिर उसने दो-तीन बार गदन हिलायी। वह फिर बर्राया ओह आंटी नीला नीला!

किशोर का सिर पल भर के लिए चकरा गया। मन पर एक छाया मँडरायी। लगा जैसे बदन पर किसी ने गरम पानी उँडेल दिया हो। डीकोस्टा दिखने म अच्छा खासा है। हो सकता है कि उसन नीला को उसी वजह स नौकरी दी हो। हो सकता है यह कारण न रहा हो। पर सहज ही शक होना है। डीकोस्टा ब्रह्मचारी है। उसके पीछे कई लडकियाँ दीवानी है। उन सब म स यह नीला का नाम ल रहा है।

कौन है यह साहब? क्या हुआ? टक्सी चलात हुए ड्राईवर ने पूछा।

लवर-लीडर कोस्टा है। कोई मार रहा था उसे। हम लोगो ने उसे छुडवाया।

अरे बहुत बुरा हुआ। कोस्टा को हम भी पहचानता है। बहुत बुरा हुआ साब।

कुछ देर बाद वह बोला कौन थे वे बदमाश? अकेले को मार रहे थ। साब कोस्टा साब बडा अच्छा आदमी है साब। हमने कई बार उन्हे

टैक्सी में बिठाया, मगर पैसा नहीं लिया। इधर उसकी छोटी मासी रहती थी, साब। उसमें मिलने जा रहा होगा। किसी ने धोखा दिया होगा। बड़ा अच्छा आदमी है साब।'

ड्राईवर बोल जा रहा था। रास्ते पर चहल पहल न थी। तिलक ब्रिज आया तो किशोर ने चारमीनार सुलगा ली। उसके खत्म होते ही के० ई० एम० अस्पताल आ गया। कोस्टा के सिर में और पीठ पर हमले किये गये थे। सिर में फ्रेक्चर हो गया था। अस्पताल पहुँचते ही उसे आपरेशन रूम में ले जाया गया। पुलिस की पूछ-ताछ हुई। पेपर के पत्रकार पूछ-ताछ करने लगे। सुबह दो के करीब डीकास्टा को ऑपरेशन थियेटर से बाहर निकाला गया। खतरा खत्म हो चुका था।

किशोर और अनिल लॉज में अपने-अपने पलंग पर लेटे तो साढ़े तीन बज चुके थे। किशोर चारमीनार का एक पैकिट ज्यादा पी गया था। अनिल को नींद आ गयी। किशोर की आँखों के सामने पर्चा चमक रहा था। उसका प्रतिबिम्ब उसमें उभर रहा था। उसकी नज़रों के आगे नीला की टेबिल पर रखा डीकोस्टा का फ़ोटो उभर रहा था। नीला की आँखें कुछ और कह रही थी। डीकास्टा का कराहना उसके कानों तक आ रहा था। और दिमाग़ में खत का वही मज़मून बार बार चक्कर काट रहा था—'पूज्य पिताजी चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि ।'

जलायी और वह चीखा अरे बाप रे खून! यह तो बड़े खतरे की बात है।'

पहले के० ई० एम० अस्पताल चलो। फिर दूसरी बात होगी। यह आदमी मर रहा है अनिल चीखा। झौंकते हुए ही ड्राईवर ने टैक्सी बढ़ायी।

टैक्सी की बत्ती जली तो उस जख्मी आदमी का चेहरा नज़र आया। किशोर ने उस आदमी का सिर अपनी गोद में ले लिया था। उसकी पैंट खून से भीग गयी थी। चेहरा देखते ही उसे कुछ याद आया।

अनिल इस आदमी को तुम पहचानते हो?

अनिल ने प्रकाश में ध्यान से देखा नहीं पर इस आदमी का फोटो जरूर इधर पेपर में छपा था।

कोस्टा!'

हां। डीकोस्टा ही है। करवट। माइ गाड! अच्छा हुआ जो हम करीब ही थे।'

अनिल ने जेब से रूमाल निकाल लिया। जहां से खून निकल रहा था अंधेरे में ही वहां अन्दाज से रूमाल बांध दिया।

दर्द से कोस्टा कराहा।

आ आ आंटी आंटी नीला नीला! वह बड़बड़ा रहा था। दर्द से उसने पांव झटके तो वे अनिल के सिर से टकराये। फिर उसने दो-तीन बार गर्दन हिलायी। वह फिर बर्राया ओह आंटी नीला नीला !

किशोर का सिर पल भर के लिए चकरा गया। मन पर एक छाया मंडरायी। लगा जैसे बदन पर किसी ने गरम पानी उँडेल दिया हो। डीकोस्टा दिखने में अच्छा खासा है। हो सकता है कि उसने नीला को उसी वजह से नौकरी दी हो। हो सकता है यह कारण न रहा हो। पर सहज ही शक होता है। डीकोस्टा ब्रह्मचारी है। उसके पीछे कई लड़कियां दीवानी हैं। उन सब में से यह नीला का नाम ले रहा है।

कौन है यह साहब? क्या हुआ? टैक्सी चलाते हुए ड्राईवर ने पूछा।

लेबर लीडर कोस्टा है। कोई मार रहा था उसे। हम लोगों ने उसे छुड़वाया।

अरे बहुत बुरा हुआ। कोस्टा को हम भी पहचानता है। बहुत बुरा हुआ साब।

कुछ देर बाद वह बोला कौन थे वे बदमाश? अंकल को मार रहे थे। साब कोस्टा साब बड़ा अच्छा आदमी है साब। हमने कई बार उन्हें

टैक्सी में बिठाया, मगर पैसा नहीं लिया। इधर उसकी छोटी आंटी रहती थी, साब। उससे मिलने जा रहा होगा। किसी ने धोखा दिया होगा। बड़ा अच्छा आदमी है साब।'

ड्राइवर बात जा रहा था। रास्ते पर चहल पहल न थी। तिलक ब्रिज आया तो किशोर ने चारमीनार सुलगा ली। उसके खत्म होते ही के० ई० एम० अस्पताल आ गया। कोस्टा के सिर में और पीठ पर हमले किये गये थे। सिर में फ्रैक्चर हो गया था। अस्पताल पहुँचते ही उसे आपरेशन रूम में ले जाया गया। पुलिस की पूछ-ताछ हुई। पेपर के पत्रकार पूछ-ताछ करने लगे। सुबह दो के करीब डीकोस्टा को आपरेशन थियेटर से बाहर निकाला गया। धागा खत्म हो चुका था।

किशोर और अनिल लाज में अपने-अपने पलंग पर लेटे तो साढ़े तीन बज चुके थे। किशोर चारमीनार का एक पैकिट ज्यादा पी गया था। अनिल को नींद आ गयी। किशोर की आँखों के सामने पैसा चमक रहा था। उसका प्रतिबिंब उसमें उभर रहा था। उसकी नजरों के आगे नीला की टेबिल पर रखा डीकोस्टा का फोटो उभर रहा था। नीला की आँखें कुछ और कह रही थीं। डीकोस्टा का कराहना उसके कानों तक आ रहा था। और दिमाग में खत का वही मजमून बार बार चक्कर काट रहा था— पूज्य पिताजी चरण स्पर्श। खत लिखने की वजह यह कि ।'

अय्यर

ओ नो व्हाट डिड यू से ?"
यस। सेलो इज डेड।"
अय्यर का चेहरा काला स्याह पड़ गया। उसके माथे पर पसीने की बूँदें चमकने लगीं। केबिन के दरवाजे का सहारा लेकर वह अंदर आया और बीच वाली कुर्सी पर बैठ गया। सामने रखी ट्रे से उसने एक कागज उठाया और उससे अपना मुंह पोछ लिया। गले से टाई निकाल दी और ऊपर चलते पंखे की ओर देखता रहा। उसने एक बार फिर मुंह पोछा। कुछ ही देर बाद पाम्पे अंदर आया।
बाद्रा नहीं जायेंगे ?' उसने धीमे से पूछा।
अय्यर ने कुर्सी पर टँगा कोट उठा लिया। पर्स और जेब टटोले तो कुल ढाई सौ के आसपास रुपये निकले। उसने पौम्पे से पूछा तो उसने अपने पास से पचास रुपये उसे दे दिये।
"पंद्रह मिनट में तुम कितने रुपये ला सकते हो, उधार ?' अय्यर ने पौम्पे से पूछा।
'कितने चाहिए ?"
'कितने भी, आठ सौ हज़ार। दो दिन में वापस कर दूंगा।'
पाम्पे चुपचाप बाहर चला गया। पंद्रह मिनट में ही वापिस आकर उसने साढ़े पाँच सौ रुपये अय्यर के हाथ में थमा दिये।
'चल रहे हो बाद्रा ?"
चलो।"
अय्यर ने डायरी खोली। कल की डायरी में कुछ साफ करना रह गया था। फ़ाइल देखकर बेकार के कागज़ उसने निकालकर फेंक दिये। एक कागज़ से मुंह पोछकर उसे पीछे की ओर फेंक दिया। कपड़े से फिर टेबिल पोछी। फाइल बंद की। डायरी बंद करके टेबिल पर ही पटक दी और कुर्सी से टिक गया।
रहने दो। अब नहीं" वह बोला।
"रहने भी दो," पाम्पे ने कहा।
'तुम साफ कर लोगे ? वैसे काम हो ही चुका है। बचा हुआ काम देख लेना ज़रा।"
पौम्पे ने गर्दन हिलायी।

'सचिवालय म आज कुछ है ?

म डाट वरी अबाउट दट। एव रीथिग इज आ के। चलो।

ओ के। चला।

भारी मन से उठत हुए अय्यर न कोट पहन लिया।

इस वक्त अय्यर न अपनी गाडी निकालने की कोशिश नहीं की। टक्सी को इशारा किया। ड्राईवर का पेडर रोड का पता दिया और पीछे की ओर टिक कर और आँखें बद कर वह बैठ गया। पाक्से चुप रहा। सिगरट पीता बठा रहा। कुछ दर बाद अय्यर न ही पूछा—

दली न कितन बज फान किया था ?

यही कोइ पौंच-सवा पाच बजे।

मरी कब ?'

चार बजे।

'यू नो पोक्से मैंने अपनी ओर से जितना बन सकता था मदद की थी। आई काट हैल्प !

'आई ना आई नो।

'आखिर म तो उसकी ओर दखा नही जाता था। इसी वजह से उस के यहा न जाता था। बिलकुल खराब हो चुकी थी।

पाक्से चुप था। फिर अय्यर भी मकान आने तक चुप रहा। कमरे म आन पर उसन कपडे बदले। अलमारी से एक हिस्की की बोतल निकाल ली।

'तुम लोगे ?'

इस वक्त ? नही पर तुम ल ला ! '

'घर पर मैं दूसरी बार ले रहा हूँ। एक बार मम्मी मरी तब और दूसरी बार अब।

बिना पानी मिलाय अय्यर आधा ग्लास पी गया। फिर पोक्से के कधे पर हाथ रखकर बोला चलो।

टक्सी बाद्रा की ओर बढने लगी तो अय्यर ने कहा तुम जानते हो पोंक्से मैं मली स शादी करने वाला था ? मरन क एक दिन पहले ता मम्मी ने भी इजाजत द दी थी।'

फिर क्यो नही की ?

'काफी देर हो चुकी थी। अय्यर कुछ देर चुप रहा। फिर अचानक बोला—

'बट शी वाज ए जम। तुमने तो दखा था उसे ? अमग आल द वीमन आई मट शी वाज द बस्ट। पोंक्से, तुमन कभी अपनी बीवी के अलावा

किसी लडकी को चखा है ? नही न ? यू आर ए फूल । सो कर तो देखा ? फिर समय सकोगे कि तम्हारी बीवी कैसी है । फारस रोड पर कभी गये हो ? नहीं । आई ना । तुम म हिम्मत ही नही है । आई नो आज चलोगे ? चलो मैं तुम्हे ले चलता हूँ । कावर्ड । यू ब्लडी महाराष्ट्रियस यू डोंट नो लाइफ । कम आन नेट मी टीच यू ।

पाण्डे को अय्यर पर दया आयी । लेकिन वह गुस्सा न हुआ । लाइफ के बारे म हरेक के खयाल अलहदा होते हैं अय्यर साहब । उसने इतना ही कहा ।

यू आर राइट यस यस । यू आर राइट । परफैक्टली राइट । आई एम सारी । आज सली मर गयी है न इसीलिए मैं बकझक कर रहा हूँ । सारी मुझे गुस्सा आ रहा है । पर तुम्हारे खयाल एकदम ठीक हैं । बी फथफुल टु युअर वाइफ । सली मेरे साथ फथफुल थी लेकिन मैं खुद नही था । शी वाज ए जम । आई एम ए रास्कल । तुम अपनी बीवी को धोखा न देना । बी ए गुड मैन । यस ए गुड मैन । अरे हां तुम्हारा बेटा कैसा है ?

अब ठीक है ।'

'गुड । टेक केयर आफ हिम । स्माट है । बी हैप्पी । फमिली लाइफ । पर सच कहता हूँ मुझे फमिली लाइफ रास न आती । मैं जैसा हूँ वैसा ही ठीक हूँ । मेरा टपरामेंट फैमिली लाइफ को सूट ही नही करता ।

फिर अय्यर कुछ देर ऐसे ही चुप बैठा रहा । सडक की ओर देखते हुए फिर बोला—

'वह वाकई अच्छी लडकी थी । सुना पाण्डे ? ए रियली आनेस्ट गल । तुमने तो दो-तीन बार उसे देखा था । तुम कुछ भी नही जानते ? वेरी इन्टेलिजेंट वेरी सेंसिटिव । उसी टली ने पैसा के खातिर उससे एसे धंधे करवाये थे । बट शी लव्ड टली टू—साला । बास्टड । वह ध्यान खूब रखती थी अपना । बीमारी कसे लग गयी पता न चला । हम काफी पहले उसके यहां जाना था ? पिछले दो-तीन महीनों से गया ही न था । पैसे जरूर भिजवा दिये थे । लेकिन खुद न जा सका । साला हम भी अजीब डरपोक हैं । वह बेहोशी की हालत मे मेरा नाम रट रही थी । हम इधर मजे किये जा रहे थे । व्हाट डू यू से, पाण्डे ? मैं वहुत क्रूड हूँ न ?'

ना यू आर राइट ।'

फिर ? मैं क्या पजिल हूँ ? नानसेंस । यू आर टाकिंग राइट पाण्डे ।

पाण्डे कुछ न बोला । सडक की ओर देखता रहा । वाहन करीब आया तो अय्यर बोला, मैं पाँच-दस मिनट से ज्यादा वहाँ रहूँगा नही । तुम

मुझे अकेला न छोड़ देना। बाद में हम आफिस नहीं जायेंगे। आज तुम दो ढाई घंटे बैठ जाना। प्लीज।'

एक जगह रुककर उसने फूलों का हार खरीद लिया।

सली का कमरा अंदर से बंद था। बाहर भी कोई न था। यहाँ कोई मरा होगा इसका अंदाज़ तक न हो रहा था। पांचेक बार बेल बजायी तो स्कर्ट पहने एक लड़की बाहर आयी। देखते ही उसने अय्यर को पहचान लिया। आँखों से रूमाल लगाकर बोली 'टली बाहर गया है। आपको बैठने के वास्ते बोला है। वो अब्बी आता होगा।'

वे लोग अंदर के कमरे में चले गये। एक पुराने ढर्रे के पलंग पर सली का दुबला पतला शरीर पड़ा हुआ था। गले तक चादर ढँकी हुई थी। सिर पर शालनुमा एक कपड़ा बँधा हुआ था। सली की आँखें बंद थीं। होंठ सफेद नज़र आ रहे थे। नाक में कपड़ा ठुंसा हुआ था। कमरे की खिड़की बंद थी। छत ऊंची थी और कमरे का फर्नीचर पुराने ढर्रे का था। अंदर अजीब सी गंध आ रही थी। सली के पलंग के करीब स्टूल डालकर वह लड़की बैठ गयी। एक छोटे से रूमाल से उसने अपनी आँखें पोंछीं और सली की ओर देखने लगी। बीच-बीच में वह रूमाल से अपनी आँखें पोंछ लेती थी। आँखों में आंसू नज़र नहीं आ रहे थे। बीच-बीच में वह ऊपर खिसक आने वाले अपने स्कर्ट को नीचे की ओर खिसका लेती थी।

आते ही अय्यर ने फूलों की माला पलंग के पैतान रख दी। कुछ देर उसने सली की ओर देखा। वह इसी पशोपेश में था कि ऐसे वक्त क्या किया जाय? मम्मी के वक्त बात दूसरी थी। उसने मम्मी के पाँव छूकर नमस्कार किया था। लेकिन इस वक्त क्या किया जाये? सच पूछा जाये तो मम्मी के वक्त बुरा ज़रूर लग रहा था लेकिन उससे छुटकारा मिलने पर तसल्ली भी हुई थी। मम्मी अड़सठ साल की होकर मरी थी। इसने तो अभी अठाईस साल भी पूरे नहीं किये थे। इससे मेरा प्रेम था क्या? इससे कभी हम शादी करने के लिए तैयार थे। लेकिन क्या वाकई इससे मुझे प्रेम था? फिर ऐसा क्यों? मम्मी के समय तो ऐसा न लग रहा था। सिर बुरी तरह भिन्ना रहा है। लग रहा है खून का हर कतरा बाहर आ जायेगा। आखिर यह सब क्या है? मरते वक्त सली को मेरे बारे में क्या महसूस हुआ होगा। मैंने उसे धोखा दिया यही सोच रही होगी? पर मैं भी क्या करता? मम्मी के बाद शादी करने की हालत ही न रही। वह मरेगी यह तय था। लेकिन अब—यही सवाल बचा था। पर मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। कितने दिन से टली फोन कर रहा था। एक बार आ जाना चाहिए था। सली बीमार थी। वह मर रही थी और हम मिसेज़ खान के

पास पड़े हुए थ । मुझम अपराध भाव क्यो जाग रहा है ? जिन्दगी म कभी एसा महसूस न हुआ था ।

फिर अय्यर और पोम क़रीब की एक कुर्सी पर बैठ गय । अय्यर को जम्हाई आ गयी । उसने दबाने की कोशिश की है लेकिन कोशिश सफल नहीं हुई । फिर एक के बाद एक तीन चार जम्हाईया उसन ली । सली क मुह की ओर दमन की हिम्मत न हो रही थी । इसी वजह से उसके मुह की ओर न देखते हुए वह कुर्सी से पीठ टिकाय बठा हुआ था । जब न रहा गया तो उसने उस लड़की स पूछा टली कब आने वाला है ?

उसन तो कहा था अब्बी आता है । उसन फिर आखें पाछ ली । इसी तरह कुछ वक्त गुजर गया । अय्यर बचन था । उससे बठा न जा रहा था । पाँच छह मिनट बाद वह उठा । उसने पूछा—

फ्यूनरल कब तय किया है ? '

'शायद कल सुबह ।"

अय्यर कुछ देर तक ऐसे ही पासे की ओर देखता रहा । फिर उसने जब म हाथ डालकर पाँच सौ रुपय निकाल और उस लड़की की ओर बढ़ात हुए बोला ' दिस इज फार फ्यूनरल । '

उस लड़की ने पसे लेने के बजाय हथेलिया से अपना मुह ढाप लिया और बुरी तरह रोने लगी । अभी तक लग रहा था कि उसकी आँखा म आँसू नहीं है । लेकिन अब उसका सारा चेहरा आसुआ से भीग गया था । उसका सारा बदन काँप रहा था । आते समय पोम्र को अजीब लगा था । मकअप किया काला-स्याह चेहरा, छोटा स्कट मोटा बदन तग ब्लाउज । उसे देखत ही अजीब घृणा उसके मन म भर गयी थी । लकिन उसका रोना देखकर पोम्र का गला भी भर आया । उससे न रहा गया । उसकी आखो स भी आँसू बहने लगे । उसने जेब से रूमाल निकाला और आँखें और नाक पाछ ली ।

अय्यर को गुस्सा आ गया । वह तश म बोला "डाट क्राई । ये लो पस, लो । टली को दे देना ।

उस लड़की का रोना और भी तज हो गया । जसे छोटे बच्च पर हाथ उठाया जाये तो वह और भी तेज रोने लगता है उसी तरह वह लड़की जार जार से रोने लगी ।

'कम आन टेक इट । मुझ जाना है । टली को बताना कि मैं आ गया था । कल सुबह फिर आऊँगा । फ्यूनरल पर । कम आन टक इट । '

जब अय्यर न देखा कि वह लड़की पसा नहीं ले रही है तो बोला डाट बी ए फूल । मैं टली को दे रहा हू पस । फ्यूनरल के लिए । ' उसन

उसका हाथ हटाया और उसके ब्लाउज में रुपये ठूँस दिये।

वे दोनों बाहर आये तो पाश्र्वे ने कहा, 'और कुछ देर रुक जाना था। बाहर निकलने की इतनी जल्दी क्यों की?'

अय्यर चुप ही रहा। उसने टक्सी को इशारा किया। पाश्र्वे को अंदर बिठाया और टक्सी आफिस की ओर चलने लगी तो बोला—

'तुम्हें आफिस छोड़ देता हूँ। घंटे भर बैठना, फिर घर चले जाना। आज मैं आफिस में न बैठ पाऊँगा।'

अय्यर इसके बाद कुछ न बोला। माहीम काजवे आने पर समंदर की ओर देखने लगा। बीच में ही पाश्र्वे ने पूछा, 'वह सली की बहन थी?'

'नानसेंस। वह तो दूसरी बिल्डिंग की घरवाली थी।'

पाश्र्वे ने सिगरेट सुलगा ली। आफिस आने तक वह तीन सिगरेट पी गया।

पाश्र्वे को आफिस में छोड़कर अय्यर ने टैक्सी नरीमन पाइंट की ओर मुड़वायी। दस का वक्त हो रहा था। आखिरी पानी पूरी वाला अपनी गाड़ी लिये जा रहा था। अय्यर ने पानी-पूरी ली। दूसरी तरफ तेज प्रकाश में एक बिल्डिंग की नींव डाली जा रही थी।

अय्यर कुछ देर उधर देखता रहा। समंदर की लहरें लहरा रही थीं। हवा तेज हो गयी थी और किनारे से टकराती लहरों की आवाज एक खास लय के साथ आ रही थी।

'प्रिंसिपल्स आफ लाइफ,' अय्यर बुदबुदाया, 'जहाँ देखो वहाँ यही प्रिंसिपल। इससे बच नहीं सकते।'

जेब में हाथ डाले हुए वह मरीन ड्राइव के किनारे-किनारे चलने लगा।

उसे खुद होश न था कि वह कहाँ जा रहा है और क्या कर रहा है। जानना भी किसलिए? जानकर हम कौन से काम करते रहते हैं? कौन करता है? दुनिया की हर बात आखिर एक छोटी सी चीज के इर्द-गिर्द केंद्रित रहती है न? प्रिंसिपल आफ लाइफ। हम सली की ओर क्यों खिंचे? मिसेज खान के लिए हम अपने काम की परवाह नहीं करते। प्रिंसिपल आफ लाइफ। जिन्दगी का मूल तत्व। पुनरचना? हुह। अपना रिश्ता ही क्या है? फिर हम इतनी रंडीबाजी क्यों करते हैं? पाश्र्वे की तरह शादी कर ली होती। फिर कहाँ रहा प्रिंसिपल? नानसेंस। इफ़र इज़ नो प्रिंसिपल आफ लाइफ। इन फैक्ट देयर इज़ नो लाइफ एट आल।

लाइफ इज एन एक्सपेरिमेंट। बस! हमने मम्मी की ओर ध्यान क्या नहीं दिया। शादी क्यों नहीं कर ली? जस्ट सो। रंडीबाजी क्या की?

जान समझकर हम कौन-सी बातें करते हैं ? हम इस धंधे म आये ही क्यो ? एक्सीडेंट ? जान समझकर तो इधर आये नहीं। भंडारी से झगड़कर नौकरी को लात मारकर निकल आये तो भी क्या ? जस्ट सो। देअर इज नो प्रिंसिपल आफ लाइफ। हम तो प्रिंसिपल के आदमी ही नही हैं। पाप हो सकता है। अच्छे-बुरे प्रिंसिपल हो सकते हैं। भंडारी के भी हो सकते हैं। कोस्टा के हो सकते हैं। चीफ मिनिस्टर के भी हो सकते हैं। लेकिन उनका उद्देश्य है। कुछ अच्छे सिद्धांत होंगे कुछ बुरे। सच पूछा जाये तो हम बिलकुल ही बेतरतीब हैं। इसीलिए काम म जी लगायें यही अच्छा है। काम न हो तो खूब औरतें मिलती हैं जब चाहे तब। बेकार सोच विचार किस काम ? कायदे स सोच विचार हमसे नही हो पाता। हो सकता है हमारी करीने से पढ़ाई लिखाई नही हो पायी इसलिए ऐसा हो। हम म सिर्फ एनिमल इन्स्टिंक्ट है। उसी के बल पर बम्बई म टाइपिस्ट से चीफ रिपोर्टर बन गये। कायदे से सोचते विचारते तो प्रधानमंत्री हो सकते थे। रंडीबाजी के चक्कर म न पड़े होते तो सली से शादी कर लेते। कम-से-कम मम्मी द्वारा बतायी कनटिकी लड़कियो म से किसी एक से ही कर लेते। पर छोड़ो भी। इन्म आल नॉनसेंस। साली ह्विस्की का यही असर होता है। या कि यह सनी की मौत का असर है ? इसलिए सिर भिन्ना रहा होगा। लेकिन सली की मौत स हमारा वास्ता ही क्या ? हम क्या उससे प्रेम था ? सच पूछा जाय तो वह एक रंडी थी। वसे अब ऐसा नही कहना चाहिए। पर थी जरूर। उसकी क्लास जरूर ऊँचा होगी। फीस ज्यादा होगी। पहली इट्रा डक्शन के वक्त हमने कितने दिये थे ? बस—पैंतालिस रुपये। तो वह रंडी थी मेरे लिए उसन अपना धंधा छोड़ दिया तो क्या हुआ ? पिछले सात साला म वह मेरे अलावा किसी के साथ नही सोयी तो क्या हुआ ? मुझे उससे प्रेम था ? बिलकुल नही। प्रेम कुछ और ही होता है। फारस रोड पर कइयो के साथ सोये तो क्या उन सबसे प्रेम था ? बकवास। लेकिन आज समन्दर अजीब लग रहा है। लहरो की आवाज बदन पर काँटे उभार रही है। चौपाटी की नियोन लाइटें आँखा म बुरी तरह चुभ रही है। कपड़े बदन को चुभ रहे हैं। सिर फूट गया है हाथ-पाँव टूट गये हैं। फिर भी हम कहीं जा रहे हैं। कोई किसी से नही पूछेगा कि हम कहाँ जा रहे हैं ? और हम भी किसी को नही बतायेंगे। गरज कि हम खुद भी कहाँ जानते हैं ?

समन्दर पर लहरा की आवाज और भी तेज हो गयी थी। हवा भी तेज हो गयी था। एक दो के अलावा बाकी नियोन लाइटस अजीब मरियल सी लग रही थी। समदर के करीब वाला रास्ता अब सुनसान नजर आने लगा था। कितने बजे है, इस बात की फिक्र अय्यर को न थी। लेकिन अब

बम्बई नीद म अलसायी हुई सी नजर आ रही थी। तभी पानी बरस पडा। बगर सूचना के ही मशीनगन की तरह बडी बडी बूदें बरसने लगी। अय्यर को कही रुकने का होश न था। चौपाटी पर खडे तिलक के पुतले की तरह वह भी बारिश म खडा रहा। आध पौन मिनट म बौछार उस भिगोकर चली गयी। नीचे की बालू अजीब किचकिची हो गयी थी। रास्त पर गीलेपन की वजह से बत्तियो का प्रतिबिंब साफ-साफ नजर आने लगा था। अय्यर दो-तीन मिनट तक वसे ही खडा रहा। फिर आराम से चलने लगा। चौपाटी का पुल पारकर वह गिरगाँव म आ गया। ऑपेरा हाउस से वह लमिंग्टन रोड की ओर मुड गया। वहाँ स विट्ठलभाई पटेल रोड से होता हुआ फारस रोड पर आ गया। सारा रास्ता उस हाथ की लकीरों की तरह नजर आ रहा था। नीची गदन किये वह चल रहा था। फारस रोड की हृत-भटी की बू उसकी नाक म आयी तो उस एहसास हुआ कि वह फारस रोड पर आ गया है। होटल खुले हुए थे और कहीं-कहीं गाने के रिकाड बज रहे थे। आधे खुले कपडे पहनी औरतो स मकानों की गैलरी भरी हुई थी। उनके इशारों की परवाह न कर वह एक खास कोठी की ओर बढ गया।

आओ साब। माल देखना है ?' उसकी पहचान वाली एक औरत पान खाये दाँत बिचकाते हुए बोली।

नही। मगलाबाई कहाँ है ?

अदर गिराइक के साथ।

'तो मैं बठता हूँ।"

सारा कमरा अजीब सा लग रहा था। उस कमरे म अजीब बू आ रही थी। पहली बार जब अय्यर आया था तो उसे बडी मुश्किल स अपनी मितली रोकनी पडी थी। अब तो आदत हो चुकी थी। फारस रोड की आन्त किसी को भी हो सकती है। उसने बडे-बडे अमीर लोग वहाँ देख थ। उसने सोचा तक न था कि वह भी कभी फारस रोड पर आ सकता है। लकिन इस लाइन की प्रगति बडी तेजी स हुआ करती है। पहले कोलाबा लिकिंग रोड बाद म एकदम इधर। वह एक सहज यात्रा थी। जस बहता पानी ढलान की ओर बहता है। जो कोलाबा से शुरू करता है वह अत म इधर ही आ जाता है।

अदर के कमर से एक पढा लिखा भद्र महाराष्ट्रियन बाहर आया और अय्यर से नजरें मिलाये बगर ही बाहर चला गया। कुछ देर बाद वाल सँवारती हुई मगलाबाई बाहर आयी। काले रग की मोटे बदन की वह औरत करीबन चालीस की रही होगी। उसक दाँत पान की वजह स खराब हो चुक थे। बाल भी कुछ कुछ सफेद हो चुके थे। मेकअप के बीच चेहरे

की गुरिया नजर आ रही थी। वह थकी हुई दिख रही थी। लेकिन अय्यर को देखते ही खुश हो गयी।

"अरे ये तो साब है! कब आया, साब?"

'अभी आया।'

"काफ़ी दिनों बाद मेहरबानी की, साब।"

'यूँ ही आया था।'

अपने खास ग्राहक को देने वाली लौंग उसने लाकर अय्यर को दे दी।

'अंदर आओ।'

"नहीं। आज दिल नहीं है।'

"आओ। बहुत दिन म आया साब।"

तुम्हारे काम खत्म हो गये?'

'अब कैसा काम साब। बड़ी मुश्किल से एक गिराइक मिला था साब। बूढ़ी हो गयी हूँ न अब" मंगलाबाई निराश होकर बोली।

अय्यर चुप रहा। उसके दिमाग मे कोई भी खयाल न था। दिमाग अजीब खाली-खाली-सा था। लेकिन बीच म ही जैसे पानी के बीच मछली उछल पड़े वैसे ही उसके मुंह से शब्द निकले। 'प्रिंसिपल आफ लाइफ।" यह शब्द कहाँ से आये थे? शायद उस जापानी पेंटर का असर होगा। अय्यर मंगलाबाई की ओर देखता रहा। उसका इस तरह देखना अजीब लगा तो मंगलाबाई ने पूछा—

'साब की तबियत ठीक नहीं। कपड़े गील हो गये, साब?

'ठीक है।

फिर चलो न अंदर।'

'नहीं बस। हम भी बूढ़े हुए आज।

'ना आप तो । चलो न अंदर।' मंगलाबाई ने उठते हुए कहा।"

नहीं नहीं। आज नहीं। आज तो यों ही आया था।

मंगलाबाई का चेहरा मुरझा गया तो अय्यर ने जेब से पस निकाला "र दस-दस के चार नोट निकालकर उसके आगे कर दिये। आज सिर्फ इसके लिए आया था।

नहीं-नहीं साब। पैसे के बगैर आपसे कभी पैसा नहीं लिया साब।

'लो। कह रहा हूँ न आज मैं इसीलिए आया था।"

मंगलाबाई ने अय्यर के हाथ से नोट ले लिये और आँचल आँखों से लगा लिया।

'बुरे हाल हैं साब। गिराइक मिलता नहीं। बूढ़ी हो गयी हूँ साब अब। जैसे-तैसे दिन गुजारती हूँ, साब। बीमारी नहीं अभी, साब। आप

भी नहीं आता साब।

उसने नाक छिनककर आंखें पोंछ ली। तब तक अय्यर बस ही बैठा हुआ था।

धंधा छोड़कर गांव चली जाओ। अब कौन रोकेगा ?

मंगलाबाई ने आंखों को बड़ा किया।

गांव ! दस मील से ही पत्थर मारेंगे साब। यहां भी आया था लोग, साब। आप जैसा कम होना है साब।

अय्यर कुछ देर रेलिंग की ओर देखता रहा। फिर उठा।

फिर आऊंगा कभी। महीने में एकाध बार। और पैसे चाहिए तो कहो।

नहीं साब। बहुत मेहरबानी साब।

बिना कुछ बोले और उसकी तरफ देखे अय्यर वहां से बाहर आ गया। मंगला के बारे में सोचकर उसके पेट में अजीब सा गोला उठा। किसी समय बात करने के लिए उसके पास वक्त न रहता था। अय्यर को बुरा लगा। कहां है प्रिंसिपल ? साला नो प्रिंसिपल ! ए इर्रेशनल जंगल ! जिन्दगी में न्याय तो है ही नहीं। अजीब उलझन है। पोर्क्स टली सली सली की दोस्त न्यूज एडीटर जनरल मैनेजर भंडारी शहाणे चीफ मिनिस्टर, डीकोस्टा मम्मी खबरें मिसेज़ खान के साथ आज का खाना मुकामुरा उसके चित्र स्मगलिंग की स्टोरी कल की कोस्टा के साथ एपाइंटमेंट अजीब उलझन ! गहराई में उतरना ठीक नहीं।

फिर अय्यर कुछ समय तक बेकार ही भटकता रहा। दो-तीन पहचान की कोठियों में गया। वहां दो-ढाई सौ रुपये उसने बांट दिये। एस ही। कर्तव्य की खातिर, हम सली के लिए पैसे बांट रहे हैं ? पर सली को तो खयाल तक नहीं है। दिमाग में मशीन की तरह खटपट हो रही है। सली के पास पहुंचना ही जाना था। जानते हुए भी नहीं गये और वह बेहोशी की हालत में भी मेरा नाम ले रही थी।

एक जगह काफी मिन्नत की गयी तो उसने थोड़ी सी हतभट्टी ले ली। आंखों के आगे अंधेरा सा छाने लगा। उसको अपने पर नियंत्रण रखना की आदत थी। उसे एकदम याद आया कि कल का पर्सनल कालम लिखना है। मतलब अब सोना लाज़मी है। लेकिन इलाज न था। काम तो करना ही चाहिए। टैक्सी करके वह उसी हालत में आफिस आ गया। वह लड़खड़ा रहा था। अपनी सेफ से उसने टॉवेल निकाला और बाथरूम में चला गया। शर्ट निकालकर मुंह पर ठंडे पानी के छींटे मारे। पांच मिनट में नार्मल होने पर वह वापिस केबिन में आ गया। उसने घड़ी में देखा तो एक बज रहा था।

टलीफोन के करीव नाइट रिपोटर बठा हुआ था। वह
नज़र आ रहा था।

ह्वाट हैपड ? ह्वाई डाट यू स्नाप ? अय्यर का मूड एक
हुआ था।

'कोस्टा हैज वीन अटकड। हास्पिटल ल जाया गया है
माई गाड ! देन ह्वाई आर यू हीयर ? पामल एडिशन के
भेजा या नहा ? कापी कहा है ? फोटोग्राफर को उठाया या नह
गाड ! यू आर एन इनकपिटेंट फूल। कम आन टेल मी क्या
वक़ ।'

अय्यर की आवाज ऊँची हो गयी तो नाइट रिपोटर और
गया। यू शुड हैव रश्ड देअर कहते हुए उसने फोन हाथ म ल
कट्रोल रूम स दो मिनट म डिटेल्स लकर उसन मजमून तयार कि
दे दिया। कमरा निकालकर आफिस की गाडी बाहर निकाली।
के० ई० एम० पहुच गया। फोटो का आज उपयोग न था। लकि
काम म आयेंगे, इस इरादे से उसने उन दो लडको के फोटो खीच
उनस मुलाकात की। कोस्टा आपरेशन रूम म था।

अय्यर वापस आया तो नाइट रिपोटर बता रहा था—
'अरेस्ट होने की खबर जरूर है। पर पुलिस कफम नहीं कर रही
'कही कुछ गडबड जरूर है चीफ सब कह रहा था इस
कनक्शन विद स्मगलस ? उसने पूछा।
'इट इज !' अय्यर ने कहा 'एड आई एम गोइग टु से इन
मनी षड स। तुम सिटी एडिशन रोक लो। ऐसी स्टोरी देता हूँ कि भड
परेशान हो जाय। टु हैल विद ऑल !'
इस तरह चीखकर अय्यर टाइपराइटर खटखटाने लगा।

जीवाजीराव शिदे

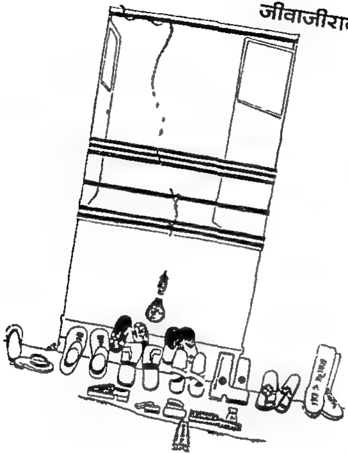

मुख्यमंत्री जब कबिनेट मीटिंग के लिए कमरे में आये तो सारे ही मंत्री एकत्रित हो चुके थे। कुर्सियों पर बैठ हुए गप्पें लगा रहे थे। मुख्यमंत्री के आते ही सभी सम्हलकर बैठ गये। चर्चा बन्द हो गयी। चपरासी फाइलों को उनके करीब वाली टेबिल पर रख गया और कबिनेट रूम का दरवाजा बंद करके चला गया।

जीवाजीराव ने चश्मा लगाकर ऐजेंडा पढ़ा। फिर हँसते हुए वित्त-मंत्री से कहा—

'कहिये अण्णा साहब आज इफॉर्मल डिस्कशन है कुछ ?"

मुझे मालूम नहीं।

वित्त-मंत्री जरा अपने ही रौब में थे। लेकिन जीवाजीराव हार मानने वाले में से नहीं थे। मंत्रिमंडल की बैठक हो या विधानसभा का हॉल माहौल को खुशनुमा रखना उन्हें बतई पसंद न था। वित्त मंत्री के तेवर चढ़े हो तो कुछ बनता बिगड़ता नहीं। हम भी उनके खिलाफ काफी कुछ कर सकते हैं। लेकिन सामने तो खुशगवार माहौल जरूरी है।

नहीं क्यों ? अगले महीने पहले इतवार को हमारे यहाँ सबका खाना है। मीनू बताइये ?

ए ? कुछ समझ में नहीं आता।'

अजी उस दिन अण्णा साहब का पचपनवाँ जन्मदिन है।

अरे हाँ हम तो भूल ही चुके थे वाह वाह। साहब ने खूब याद रखा। कॉग्रेच्युलेशंस अण्णा साहब। किसी को भी ध्यान न था ? पब्लिक सत्कार किया जाना चाहिए। कॉग्रेटस।'

खुद अण्णा साहब भी इस बात से हड़बड़ा गये। मतलब उन्हें खुद तो याद था कि बम्बई और दूसरी जगहों पर उनका खासा सत्कार होने वाला है लेकिन मुख्यमंत्री एकदम इफॉर्मल होकर कैबिनेट में ही यह बात सबके सामने कह देंगे इस बात का अंदाज उन्हें न था। इसी वजह से वे सकपकाये।

मुख्यमंत्री उनकी ओर देखकर मुस्कराये। यह बात उन्होंने पहले से तय नहीं की थी। सच बात तो यह थी कि वित्त मंत्री से आज मिलने से पहले तक उनके जन्म दिन की याद तक उन्हें न थी। पर कैबिनेट रूम में घुसते ही उन्हें एकदम याद हो आयी। वैसे मुख्यमंत्री को कई बातें याद

रहती हैं। लेकिन वित्त मत्री का ज म दिन उन्होने अपनी पसनल डायरी म नोट कर रखा है। ऐन वक्त पर याददाश्त काम आ गयी। उन्ह बडी तसल्ली का एहसास हुआ। महनत की वजह से काम क बीच थकान भल ही महसूस होती हो लकिन उनका दिमाग और याददाश्त जवानी की तरह ताजा रहत हैं। इस बात म उन्ह बडा दिलासा मिला और वे हँस दिय। इस म वित्त मत्री के खिलाफ पहला मोर्चा जीतने की खुशी भी शामिल थी।

चलिय तो तय रहा ' मुख्यमत्री ने कहा वसे भी बहुत दिनो से हम लोग इकट्ठे नही हो पाये थे। फिर कुछ सोचकर बोले मेरा एक सुझाव है। देखें आप लोगो को पसद आता है या नहीं? उड़ीसा के लोगों की मदद करने का एक मुद्दा अपने ऐजेंडा पर है। हम लोगो को व्यक्तिगत रूप स भी कुछ देना चाहिए। हम लोग अपनी एक दिन की पगार दे दें तो कोई हज नहीं। अपनी राय बताइये। और असल बात तो यह है कि अण्णा साहब के पचपनवें जन्मदिन समारोह पर हमे इसकी घोषणा कर देनी चाहिए। उनकी सोशल सर्विस ध्यान मे रखकर ।'

नही नही। मुझे इतना मान क्या दे रह हैं'' अण्णा साहब ऐस बोले जसे उनका दम घुटा जा रहा हो। वसे वे इतने सीधे नहीं थे।

लकिन मत्रिमडल म अण्णासाहब के चहेता ने इस बात को हाथो हाथ उठा लिया। व विशेष रूप से खुश हो उठे थे।

अण्णा साहब कुछ कह इससे पहल ही जीवाजीराव बोल पड़े ' यह नही चलेगा। इस मामल म हम अण्णासाहब की एक न सुनेंगे। हम लोगा के बीच असली समाजसेवक तो वही हैं। हम लोग तो यो ही हैं। कुर्सी छूट जाये तो हमार पास रह ही क्या जाता है ? लेकिन अण्णासाहब की बात और ही है। उनका जन्म दिन तो इसी तरह मनाया जाना चाहिए। बस तय हो गया। किसी को कोई उज्र तो नही है न ?''

उज्र तो किसी का भी न था। उज्र था तो केवल वित्त-मत्री को। इन सभी बातो का प्रचार के लिए कसा उपयोग हो सकता है, इसका खाका उनके सामने आ गया। उनका चेहरा मुरझा गया। जीवाजीराव दूसर राजनीतिज्ञो स भिन्न थे इस बात को वे अच्छी तरह समझ चुके थ। पहले बड़प्पन देना फिर पीछे से वार करना! वित्त मत्री को और भी निश्चय हो गया। वे मुख्यमत्री की ओर देखकर कृतज्ञता से हस दिये। मुख्यमत्री भी हस दिये। वित्त मत्री मुख्यमत्री क बारे म क्या सोचते हैं इस जीवाजीराव अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने घटी दबा दी और बोले, 'चलिये, अब ऐजेंडा पर विचार हो जाय।'

मंत्रिमंडल की बैठक शुरू होते ही उस विभाग के सेक्रटरी अदर आय फाइलें खोली गयी। आज कोई खास मसला न था। एक-दो गाँवों म पानी और नालियो की योजना पाँच छह कच्चे रास्ते इडस्ट्रियल डिस्प्यूटस के कानून म कुछ परिवतन और इसी तरह की कुछ और बातें। जल्द ही निणय हो गये। कोई भी किसी विषय पर खास नहीबोला। वित्त-मत्री तो चुप ही बैठ थे। काम की बात हो तो मुह खोलते थे। बठक डेढ घट मे ही खत्म हो गयी। एक दो मत्री उकता गय थे। अपने-अपने डिपाटमट म कुछ खास मामल उन्होने मुख्यमत्री को बताय और इसके बाद मुख्यमत्री अपने केबिन म चल गये।

चले जाते ही पत्रकार अन्दर आ गये। फाइल पर नजर डालने से पहले ही वे लोग मुख्यमत्री की टेबिल के चारो ओर कुर्सिया पर जम गये। जीवाजीराव न नजर ऊपर की तो सामने पत्रकार मौजूद थे। उन्होंने अचरज स देखा। अरे आप लोग आ गय।

पत्रकार हम लिए आना पडता है। वी मस्ट कम। इटस अवर डयूटी। आज की बैठक म कोई खास बात साहब ?

पत्रकारो के आने की बात का पता जीवाजीराव को पहल से था। उन लोगों को क्या बताना है यह भी वे मीटिंग के दौरान ही तय कर चुके थे। लेकिन अब व फाइलें देखने का नाटक कर रहे थे। बोल—

आज तो आपको देने लायक कुछ भी नही है। हमेशा होना जरूरी है क्या ?

उन्होंने दो-बार फाइलें देखी। शहाण मदद के लिए थे ही। 'हाँ यह देखिये तीस लाख की नल योजना है और यह नाली योजना। अरे भाई चाय दो न इन लोगो को।'

पत्रकारों की कलम कागजों पर चल पडी।

बाद मे किसी ने कहा बस। और कुछ नहा ?'

अरे आप लोगों को तो जितना दें, उतना ही कम लगता है।

सब हस दिये।

हाँ। एक बात और है। लेकिन उसे केबिनेट के नाम पर मत डालिय हम लोगो म इनफामल रूप से यह तय हुआ है। वित्त मत्री अण्णासाहब का अगले महीने जन्मदिन है पहल इतवार को। वे हमारे महान नेता हैं और श्रेष्ठ समाज-सेवक की हैसियत से एक अलग किस्म का सत्कार करने की बात हम लोगो ने तय की है। हम सभी मत्री उनके जन्म दिन पर एक दिन की पगार उडीसा की मदद के लिए देंगे। अण्णासाहब की सेवा के प्रतीक रूप मे। देखिये, इसे फ्लश कर सकें तो।'

पत्रकारों की कलम तेजी से चल रही थी। यह फ्रंट पेज की खबर है जीवाजीराव जानते थे। इस बात को भी वे जानते थे कि कल सभी अखबारों में इसे बड़े अक्षरों में दिया जायगा।

"वाह! बहुत बढ़िया खबर है!'

'हम में से ही किसी ने यह प्रस्ताव रखा था और सब लोगों ने इसे तय किया है।'

'किसने रखा था?'

यह क्या बताना जरूरी है?'

हाँ, साहब।'

'अरे छोड़िये भी।'

ब्रीफिंग चल रहा था कि इसी बीच उद्योगमंत्री नानासाहब देशमुख अंदर आये। पास ही एक कुर्सी पर बैठ गये। ऊँची आवाज में बोले 'वाह! यह कैसे हो सकता है! खुद साहब ने ही यह बात कही थी। हम सबने टीम स्पिरिट से तय किया।'

इस बात का विश्वास उन्हें था कि यह खबर धाँसू होगी।

कुछ और सवालों के बाद साने ने पूछा—

आज कोस्टा से बातें हुई। कोई खास बात?"

बातें? नहीं तो।

नहीं। आज डीकोस्टा मिले ही नहीं?

हाँ हाँ। यूँ कहिये चर्चा। हाँ हाँ मिले थे, आये थे। वे तो हमारे दोस्त हैं।

कुछ खास?"

नहीं जी। अपनी शिकायत लेकर आये थे। वे खुद आप लोगों को बतायेंगे। चाय हो चुकी थी और बाहर मिलने वालों की संख्या भी बढ़ रही थी।

अच्छा तो ठीक है।" मुख्यमंत्री ने ही बात खत्म की। तब पत्रकार उठ खड़े हुए।

उनके जाने के बाद मुख्यमंत्री को अचानक थकान-सी महसूस हुई। नानासाहब देशमुख की बातें जैसे-तैसे सुनकर उन्हें विदा किया। फिर चपरासी से मंगवाकर दो गोलियाँ खायीं। आधा गिलास पानी पीया। पास रखी आरामकुर्सी पर पाँच मिनट तक बैठे रहे और दिमाग की मशीन पाँच मिनट के लिए बंद कर दी। कुछ देर लंबी लंबी साँस ली। तत्काल उन्हें ताजगी महसूस होने लगी। एक तसल्ली मन में थी। अभी तक आज का दिन अच्छा बीता था। सभी चीजों पर काबू था। मन को परेशान

करने वाली कोई बात न थी हमेशा की तरह। लेकिन आज जिन जिन चीज़ों पर क़ाबू पाना था, वे क़ाबू म आती जा रही थीं। कुछ ऐसी बातें थीं जिनम उनकी जीत हो चुकी थी। सुबह की दो बठकें कोस्टा स मुलाक़ात वित्त मत्री का मसला पत्रकार-परिषद—सभी कुछ उनके मन के मुताबिक हुआ था। वसतराव के मामले बापूसाहब जोशी की आलोचना मिलिंद का लफड़ा और अय्यर की रिपोर्ट—यह बातें उनके हाथ म न थी। ऐसी बातो पर हौल हौल क़ाबू पाना या कोई रास्ता ढूढ निकालना और अपने हाथ की बातों पर फौरन काबू पा लेना—यही उनका जीवन दशन रहा था। उनका अनुभव था कि ऐसा करने स दुख कम होता है। हर बात को मन म बिठाते रहते तो अभी तक वे जल कर खाक हो चुके होते।

मुख्यमत्री ताज़ा होकर कुर्सी पर बठ गय और उन्होंने महाणे को बुलवा लिया।

बाहर काफ़ी लोग हैं?

दो शिष्टमडल हैं। एक विदेश जाने वाला सास्कृतिक मडल है फोटोग्राफरो के साथ ।

अच्छा वे बठे हैं अभी?

बैठे हैं।'

'ठीक है। सुनो ' अपने हाथ के कागज़ की ओर देखते हुए उन्होंने कहा। उन्होंने कुछ नोटस खुद तैयार किये थ। एक म उनके भतीज का नाम था, दूसरे पर वसतराव जाधव का। रेवेन्यू और इडस्ट्रीज के दो मामल हैं। उनकी फ़ाइलें सेक्रेटरी के रिमार्क के साथ कल आ जानी चाहिए। ज़रा देखना है।'

यस सर।

और कोई बात? कोई मसज?"

'बँगले स फोन था। बापूसाहब जोशी सात बज आने वाले हैं।

अच्छा मिलाइये ज़रा।

फोन मिलने पर मुख्यमत्री ने रिसीवर हाथ म लिया और कहा हूँ।'

'अजी, बापूसाहब का फ़ोन आया था। सात बज आने वाले हैं वे। उनसे खाने की बात कही तो बोले, देखेंगे।"

हूँ। अच्छा।' कुछ देर वे कुछ न बोले। फिर सोचकर बोले, 'आठ बजे मीटिंग है सुन्दरबाई हॉल म। अ हूँ ठीक है। आधा पौना घटा देर स भी चला जाऊँगा। ठीक है तो मैं सात-साढ़े सात तक आ जाऊँगा।

'अरे पर आपको उनके साथ खाना खाना है न ?'

हाँ तो ऐसा करो। बापूसाहब कितने बजे तक रहेंगे? कब तक आयेंगे? साढ़े सात तक न? उनसे कहना मैं आता हूँ साढ़े आठ तक। नौ तक तो आ ही जाऊँगा मीटिंग खत्म कर के।

कह दूंगी उनसे।

कुछ देर खामोशी। फिर सुधाजी ही बोलीं 'पेरिस से कुछ खबर मिली?

'इतनी जल्दी कैसे मिल सकती है? मैंने व्यवस्था कर दी है। कल-परसों तक कुछ मालूम पड़ेगा। तुम ज्यादा परेशान न हो।"

फिर खामोशी।

हाँ—तुम सिनेमा जाने वाली थी न?

'अरे कैसे जा पाऊँगी, बापूसाहब आने वाले हैं न?"

'हाँ हां। कमल नाराज तो नहीं हुई न?

वह यहीं बैठी है। बातें करेंगे?

और जीवाजीराव कुछ कह उससे पहले ही रिसीवर से कमला स्वर आने लगा। इस कमल को कहाँ देखा है यह मुख्यमंत्री को याद न आ पा रहा था।

हू—सफर तो ठीक रहा न? आपकी बहन आपकी बड़ी फिक्र करती हैं क्यों?' इसी तरह की कुछ औपचारिक बातें उन्होंने की और फोन बंद कर दिया।

साढ़े छह बज रहे थे। फिर मिलने वालों की कतार शुरू हो गयी। शिष्टमंडल फोटो चाय बातें। हरेक मुख्यमंत्री से बातें करना चाहता था। सवा सात तक मिलने वाले खत्म हुए तो गृह विभाग के उपमंत्री का फोन आ गया।

'साहब लातूर में जरा गड़बड़ हो गयी है।

"क्या हुआ?

हिंदू मुस्लिम दंगा नजर आता है। आगजनी हो रही है और चार लोगों के मरने का भी समाचार है।

घंटे भर में मामला रफा-दफा हो जाना चाहिए।

अच्छा साब।'

पांच छह मर भी जायें तो हर्ज नहीं लेकिन स्थिति कंट्रोल में आ जानी चाहिए। नौ बजे तक मैं घर पर हूँ। वहां फ़ोन आना चाहिए।"

जी साब।

'और आपका कल का प्रोग्राम क्या है?

नासिक में एक ट्रेनिंग स्कूल का उद्घाटन है। वहाँ जाना है।'

वहाँ का कार्यक्रम रद्द कर दीजिये और जितना जल्दी हो सके आज ही रात को लातूर चले जाइये।'

अच्छा साहब पर जरा।'

सुनिये कम्यूनल फिसाद है न ? कल अगर कुछ ज्यादा बढ़ गया तो दिल्ली को जवाब देना मुश्किल हो जायेगा। वहाँ जल्दी जाना जरूरी है।"

'हाँ साहब।

बस खुद मुझे जाना चाहिए लेकिन मैं जरा इधर बिज़ी हूँ। इसलिए आपको भेज रहा हूँ। काम ठीक हो जाना चाहिए। अधिकारियों के साथ कुछ दिक्कत आयें तो मुझे फ़ोन कीजिये।

ठीक है साहब। नौ बजे आपको फ़ोन करूंगा और अभी निकलता हूँ।'

मुख्यमंत्री ने फ़ोन रख दिया। गृह विभाग के उपमंत्री की बात अभी पूरी तौर पर साफ नहीं हो पायी थी। उपमंत्री महत्त्वाकांक्षी थे और होशियार भी। इसी वजह से उनके साथ ठीक से पेश आना लाज़मी था। लातूर के मामले से उनका झुकाव मेरी ओर ही होगा यह सोचकर जीवाजी राव ने दूसरा ख़याल दिमाग से निकाल दिया। दोपहर आई० जी० के साथ हुई बातचीत फिर उभर कर ऊपर आ गयी। वे कुछ परेशान से हुए। उपमंत्री वैसे साफ दिल के आदमी थे कम-से-कम उस नोट में उनका उल्लेख न था। उनकी फ़ाइल ज़रा ध्यान से देखनी होगी। नानासाहब और बसंतराव के घनिष्ठ संबंध हैं। बसंतराव का ख़याल आते ही जीवाजीराव का माथा एकदम गरम हो गया। लेकिन उन्होंने खुद पर काबू रखा। बसंतराव एक दिन गले में ज़हर फाँसी लगवायेंगे यह डर उन पर सवार हुआ। इस बात को वे जानते थे कि आजकल बसंतराव ऐश कर रहे हैं और उनका मन खुद उन्हें ही खाये जा रहा था। अण्णासाहब कहीं पकड़ाई में नहीं आ पाते इसी बात का अचरज उन्हें था। हो सकता है कि उनके रास्ते कुछ अलहदा हों। कोस्टा जैसा आदमी अपनी कैबिनेट में होना चाहिए। तभी सब गन्दगी दूर हो सकती है। कोस्टा के लिए उनके मन में आदर भाव पनपने लगा था।

अचानक जीवाजीराव के दिमाग़ में एक बात और उभरी। बसंतराव मिलिन्द को पैसे भेजते हैं ? इतने पैसे कि मिलिन्द वहाँ सफ़ेद किया करता है। पहले एक बार मिलिन्द के पास चरस पकड़ी गयी थी। उस बात को दबाने के लिए कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था।

जीवाजीराव ने फ़ोन उठा लिया।

वसंतराव जाधव के घर से मिलाइए।"

कुछ देर घंटी बजती रही। फिर नौकर की आवाज आयी, 'जाधव साब घर पर नहीं हैं।'

कहाँ गये हैं ?'

'कौन बोल रहा है ?'

'मुख्यमंत्री शिंदे।

'साहब तो मेथा सेठ के यहाँ गये हैं साहब।"

जीवाजीराव ने फोन नीचे रखा और फिर उठा लिया। 'यस सर!' उनके ऑपरेटर की आवाज आयी।

ये मेथा सेठ कौन है ?'

'सर वे जय एक्सपोर्ट कार्पोरेशन के मेथा। आपके पास काफी बार आ चुके है।

उनसे फोन मिलाइये जरा।

यस सर।"

फोन नीचे रखकर मुख्यमंत्री ने फाइलें देखना शुरू की। अब तक सारा सचिवालय खाली हो चुका था। उनका पर्सनल स्टाफ जरूर मौजूद था। चारों ओर खामोशी थी। ऐसे समय सारे राज्य की जिम्मेदारी कैसे सिर पर मँडराती रहती है! पाँच करोड़ जनता की जिम्मेदारी उन पर थी। रत्नागिरी से लेकर डहाणू घोले तक और उधर गाढ़िया चांदा तक। हर छोटी-मोटी बात पर ध्यान देना पड़ता था। जिम्मेदारी परेशान कर देने वाली थी और ऊपर से राजनीति! तिस पर इस तरह की गड़बड़ी!

फोन की घंटी बजते ही मुख्यमंत्री ने रिसीवर उठा लिया।

साब मिस्टर मेथा के लिए चारों जगहों पर फोन किया लेकिन वे मिल नहीं पा रहे।

अच्छा ठीक है। तुम्हारी ड्यूटी कब तक है ?

दस तक साहब।

'जाते वक्त वसंतराव जाधव के यहाँ फोन कीजिये और उनसे तत्काल मुझे फोन करने के लिए कहिए।

'यस सर।

मुख्यमंत्री ने कुछ खास खास फाइलें देखीं। जिन कागजों पर दस्तखत करने थे उन पर सही किये और फिर वे चल दिये।

सुन्दरबाई हाल की सभा उन्होंने अपने खास ढंग से निपटायी। इस तरह की सभाओं के निमंत्रण वे खास तौर पर स्वीकार करते थे कभी अपने जूनियरों पर नहीं टालते थे। इसी वजह से सारे ही राजनीतिक दलों

मे उनकी खास साख थी।

बँगले पर पहुचते-पहुचते साढे नौ बज गये। उन्हे चिता थी कि बापू साहब राह देख रहे होगे। लकिन सभा म अपने जमने की तसल्ली भी थी। दिन भर की थकान धीरे धीरे बदन म उतर रही थी। शरीर भारी मा हुआ जा रहा था। अब और गोलियो से काम न चलने वाला था। कम-स कम दो पग ब्रांडी पीनी पडगी खाने से पहले गरम पानी म। लेकिन आज तो बापूसाहब आने वाले हैं। उनके सामने कुछ भी पीना मुश्किल है।

जीवाजीराव को बापूसाहब और उनसे दबने की अपनी आदत स खुद पर भी गुस्सा आन लगा। हम बापूसाहब से इतने घबराते क्या हैं ? बापू साहब को क्या दिन भर इसी तरह खटना पडता है ? वे तो रोजाना सुबह व्यायाम भी कर लेते हैं। मालिश करवा लते हैं। चाय-बाय लेते नही। दोपहर म उनका सोना भी कभी नही चूकता। मेरी तरह सुबह साढे छह से व परेशान नही रहत। व ज्ञानी हैं क्योकि रोजाना उन्हे पुस्तकें पढन के लिए वक्त मिल जाता है। मेहनत की थकान क्या वे कभी समझ सकत हैं? और इस तरह थकने पर ब्रांडी ने बढकर दूसरी दवा क्या हो सकती है ? क्या कभी वे इस बात को समझ सकेंगे ?

दूसरे ही पल मुख्यमंत्री को कुछ शम भी महसूस हुई। राजनीति से बाहर के जो लोग जीवाजीराव को मानत थे उनमे से बापूसाहब जोशी भी थे। जीवाजीराव क समकालीन। कालेज म तीन चार साल आगे होग। बयालीस के आदोलन म कालेज छोडने को लकर दोनो के बीच काफी कहा-सुनी हुई थी। दोनो अपने-अपने मन पर अडे हुए थे। दोनो ने एक दूसरे को अच्छी तरह पहचान लिया था। साथ ही दोनों के मन म एक-दूसरे क लिए आदर भाव भी था।

बापूसाहब ने कालेज छोडकर आदोलन म भाग लिया जेल गये, पुलिस क डडे खाये चक्कियाँ पीसी। वे राष्ट्रीय मच पर चमक गये। दो बार उन्होने खुद ही खडे होने स इकार कर दिया। यहाँ तक कि विधान सभा की सदस्यता स भी इकार कर दिया। सत्ता का लोभ जानबूझकर छोड दिया। अगर वे चाहते तो राज्य का सर्वोच्च पद उन्हे मिल सकता था सहज ही। लकिन वे खुद न चाहते थे। चुनाव की राजनीति से हटते ही उन्होने समाजसेवा का काय हाथ म लिया था। गाँव म आश्रम तथा स्कूल चलाना वण भेद दूर करने के लिए आन्दोलन छेडना—यही सब वे करने लगे थे। इधर राजनीति पर व ज्यादातर बोलते ही न थे। अचानक उनक भाषण की कटिंग की याद आते ही जीवाजीराव परेशान हो उठे। एकबार भी बापूसाहब एसा क्यो कर रहे हैं ? सीधे-साधे मुझे भ्रष्ट कह

रहे हैं ? और तो और सत्ता से मुझे खाच निकालने की धमकी भी दे रहे है ! कुछ न-कुछ जरूर है। बापूसाहब अकारण ऐसा नही बोले होग। कोई गलत समाचार मिल गया होगा उन्हें शायद या उन्हें गलतफहमी हो गयी होगी।

गाडी पोच म पहुँचते ही दरवाजा खोलने वाले नौकर स उन्होने पूछा बापूसाहब जोशी आये हुए हैं ?'

जी, साब !" उसने जवाब दिया।

लेकिन गाडी से उतरते ही मिलने आये और पहले से मौजूद लोगों ने उन्हें घेर लिया। उन्हें छोडना भी ठीक न था।

अरे आप लोग कब आये ? अच्छा आप भी ? कब आये ! सब ठीक है न ? दादा क्या कहते हैं ? अरे मैंन तो आपको देखा ही न था। वाह ! आपकी पीछे-पीछे रहने की आदत अभी छूट नही पायी है।'

इसके पीठ पर हाथ रख उसकी पीठ थपथपा, इसका हाथ पकड उसको नमस्कार कर—इस तरह का सकस करते हुए वे बँगले की सीढियाँ चढ गये। बीच म ही एक पत्रकार का चेहरा भी नजर आया। 'अरे आप यहा कैसे ? आप हमारा पीछा नही छोडेंगे क्या ? कहते हुए जोर से हँस दिये। साथ म सभी हँस पड।

'ऐसे ही आपसे मिलने चला आया था' कहते हुए पत्रकार वहाँ से खिसक लिया। जीवाजीराव न लोगो के आवेदन ले लिये।

जब रहा न गया तो बाल अच्छा भाइ अब काफी थक चुका हूँ। अदर जरा मीटिंग है। बाद म हम लोग मिलेंगे ही कहते हुए वे अदर खिसक लिये। कुछ लोग अभी बरामदे म खडे थे। लेकिन जीवाजीराव ने उनकी फिक्र न की।

अदर आते ही सुधाजी बोलीं कब स बापूसाहब को रोके बठी हूँ।

अच्छा हुआ। अच्छा हुआ चलो अब बठते हो हैं।

अजी पर एक मिनट।

'हूँ क्या ?

वह मरा एक रिपोटर आ गया था मिलिंद के बार म पूछ रहा था। मालूम नहीं उसे कहाँ से पता चल गया ?'

फिर ? तुमने क्या कहा उससे ?

उसे भगा दिया। धक्के मारना ही बचा था।'

जीवाजीराव चलते चलते रुक गये। बोले 'बस हो गया कबाडा। अब वह काफी कुछ मसाला छाप देगा। तुमको हजार बार कह चुका हूँ कि इन प्रेम के भूतों को न सताया करो। बडे हरामी होते हैं वे लोग।"

"अजी पर मैं भी क्या करती ? इतना पीछे पड़ा हुआ था कि बस ! जो चाहे जो पूछे चला जा रहा था। मुझे तश आ गया।" सुधाजी की आवाज रुआँसी-सी हो गयी थी।

ठीक है। अब आगे से ध्यान रखना।

आगे बढ़ते हुए वे फिर रुक गये।

आपके भाई साहब का कहीं पता चला ?'

वह तो आज ही दोपहर आया था।"

वह मुझसे तो मिलता ही नहीं ?'

क्यों, क्या हुआ ?

कुछ नहीं। वह जरूर एक दिन मुझे फाँसी लगवायेगा।"

बापूसाहब उधर बठे हैं। नहीं तो मैं भी बोलना जानती हूँ। क्या किया है उसने ?

जीवाजीराव कुछ न बोले। कोट के बटन खोलते हुए उन्होंने ड्राइंग रूम म प्रवेश किया। सोफे पर बैठे बापूसाहब एक पत्रिका पढने म मशगूल थ। जीवाजीराव को आया देखकर वे हँसकर खड़े हो गये।

माफ कीजिये बापूजी, उन्हें हाथ पकड़कर सोफ़ा पर बिठाते हुए जीवाजीराव बोले। काम इतना ज्यादा होता है कि कहीं भी समय पर पहुँचना मुश्किल हो जाता है।

भई जीवाजीराव बापूसाहब हँसते हुए बोले, आप तो बेहद कामल हुए जा रहे हैं।

नहीं सच कह रहा हूँ। मैंने खुद आपको रोका है और।'

इट्स आल राइट बापूसाहब बोले।

सुधाजी आकर बैठ गयीं। इस बीच जीवाजीराव भी मुँह हाथ धो और कपड़े बदलकर आ गये।

तीनों खाना खाने बैठे तो बापू साहब बोले आपको मिनिन के बारे म बतलाया सुधा ने।

हाँ। अजीब लफड़ा किये बैठा है वह।'

अजी लफड़ा क्या, जवानी का दौर है। फैशन बहू है आपका तो उसका स्वागत करना चाहिए।

जीवाजीराव कुछ न बोले सिर्फ हँसते रहे।

मिनी क्या कहती है ? महाबलेश्वर म ही है न ?

हाँ। मज म है,' सुधाजी ने कहा। मिनी दूसरी लड़की थी।

जीवाजीराव को सूझ न रहा था कि क्या बातें की जायें। सुधाजी के सामने तो राजनीति पर बात करना बेकार था। तभी सुधाजी ने कहा—

वसंतराव अगले महीने पेरिस जाने वाले हैं। वह शायद मिलिंद को यहाँ ले आयेंगे।"

क्या ?' जीवाजीराव ने चौंककर देखा। बापूसाहब हँस दिये।

खाने के दौरान बाहर के कमरे में फोन खनखनाया।

नौकर ने आकर बताया साहब डेप्युटी होम लाइन पर हैं। कुछ देर बाद फोन करने के लिए कहूँ ?'

नहीं। फौरन इधर लाओ।' नौकर ने डाइनिंग रूम के प्लग से फोन जोड़कर रिसीवर साहब के हाथ में दे दिया।

'हूँ !

दो बार फायरिंग हुआ साहब। अब हालत ठीक है।

हूँ। कितने लोग मर गये ?'

ग्यारह ?

गड़बड़ काफी थी साहब ! छुरेबाजी भी शुरू हो गयी थी। मैं वहाँ से टच में था।

ठीक है। आप कब पहुँच रहे हैं वहाँ ?'

'बस निकल ही रहा हूँ। आपको रिपोर्ट देने के लिए ही रुका हुआ था। आई० जी० भी साथ में हैं।'

गुड ! ठीक है। बाद में खबर दीजिये।

फोन नीचे रखकर जीवाजीराव ने फिर खाना शुरू कर दिया।

दंगा हुआ है कहीं ? कहाँ पर ?" बापूसाहब ने पूछा।

लातूर में जीवाजीराव ने सख्त चेहरे से कहा। बापूसाहब ने गर्दन हिला दी। पता नहीं हम लोग कब सुधर पायेंगे' वे फुसफुसाये।

बड़ा मुश्किल है जीवाजीराव ने कहा हम लोग इतना कुछ करते हैं तो भी लोग हैं कि सब पर पानी फेर देते हैं। अब आप ही बतायें बापूसाहब क्या किया जाये ? इन बातों को कैसे टाल सकते हैं हम ?

सच है। कभी-कभी तो लगता है कि हम लोग प्रजातंत्र के काबिल ही नहीं हैं।

'अब बापूसाहब आप जैसे लोग ऐसा कहेंगे तो हम लोग क्या करेंगे आखिर ?'

हम जैसे ही तो बोल सकते हैं। आप लोग तो सत्ताधारी हैं इसलिए बोल नहीं पाते।

नहीं वह बात नहीं। मेरा तो विश्वास है कि प्रजातंत्र की गति धीमी जरूर है लेकिन गति है।'

ठीक है, लेकिन कुछ चक्र इतने तेजी से घूमते हैं कि असली बात छिप

जाया करती है। भ्रष्टाचार आर्थिक असमानता की भी तो गति तेज है। फिर रफ्तार धीमी न हो तो क्या हो? लगता नहीं कि दोनों मुक़ाबले में ठहर सकेंगे।'

मुझे आपकी बातें जँचती नहीं। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि हम लोग न बातों को दबा रहे हैं। गति जरूर धीमी है। पर हम आगे जरूर बढ़ रहे हैं।'

जीवाजीराव चुप हो गये। वे कुछ खिन्न भी थे। बापूसाहब की राय तबदीली हुई है — इसका एहसास हो रहा था। फिर बापूसाहब उन लोगों में से न थे जो बिना आधार के अपनी धारणाओं को बदल लेते हैं।

आप सत्ताधारी हैं इसलिए आपको समझ वैसी है। मैं ऐसा नहीं समझता। आदमी को कभी भी चिराग तले का अंधेरा नजर नहीं आता।'

बापूसाहब ने यह वाक्य इतनी सहजता से कहा कि उसका व्यंग्य समझने में जीवाजीराव को जरा देर लगी। उनका सिर भिन्ना गया। खाली में रत्ती कमजोरी को उन्होंने सरका दिया। फिर बोले—

कभी-कभी तो लगता है हम बेकार ही मरे जा रहे हैं। लोग हमें समझ न सकेंगे खासकर आप जैसे लोग। आपको नहीं लगता कि आप लोग हम पर अन्याय कर रहे हैं?'

बापूसाहब जोरों से हँस दिये। जीवाजीराव और भी परेशान हो गये। बापूसाहब की हँसी कुछ और ही थी। बालों की सफेदी से इस हँसी में और भी तीखापन आ गया था। सिर्फ अपनी इसी हँसी के बल पर उन्होंने कई लाखों को जीत लिया था। उस हँसी में अभी भी ताजगी और ताकत थी।

मैं आपकी आलोचना नहीं कर रहा हूँ जीवाजीराव, बापूसाहब हँसते हुए बोले, सिर्फ हालात का एहसास करवा रहा हूँ और अपनी राय भी जाहिर किये दे रहा हूँ। दरअसल बात यह है कि मेरा प्रजातंत्र पर से विश्वास ही उठ गया है।'

सुना है कि आप चुनाव लड़ रहे हैं?'

बिलकुल झूठ। मैं तो अपने आश्रम को भी छोड़कर बाहर जा रहा हूँ। शायद आपको पता होगा?

जीवाजीराव ने गर्दन हिलायी और अनजाने में ही एक खयाल उनके दिमाग में तैर गया। बापूसाहब की हरकतों पर फाइल तैयार करने के लिए कहना चाहिए। उसी पल इस निर्णय पर उन्हें शर्म भी महसूस हुई। लेकिन इलाज न था। वे एक राज्य के मुख्यमंत्री थे। राज्य में कानून और व्यवस्था बनाये रखना उनका पहला कर्तव्य था। बापूसाहब के विचार किस दिशा

म जा रहे हैं, उन्हें इस बात का पता था और यह भी वह अच्छी तरह से जानते थे कि सिर्फ सोचकर ही खामोश रह जाने वालों में से बापूसाहब नहीं थे। बापूसाहब कर्मशील थे। विधानसभा से वे अलग हुए थे तो स्कूल और आश्रम चलाने की भावना को लेकर ही।

जीवाजीराव ने विषय बदल दिया। उनका मन कुछ हलका हो गया था। भाषण के बारे में पूछताछ करना इस समय ठीक न रहेगा। तभी उन्हें एक बात याद आ गयी और अजीब अपराधी स्वर में उन्होंने सुधाजी से पूछा—

अरे कमल आयी हुई है न?

सुधाजी हँस दी। खाने के बाद उन्होंने पानी पीया। फिर बोली सो गयी वह तो। काफी थकी हुई थी। काफी राह देखी उसने।

जीवाजीराव को तसल्ली सी हुई। यह कौन कमल है बूढ़ी है या जवान यह सवाल उनके होठों पर आया था। लेकिन इसे उन्होंने वहीं दबा लिया। उनका खाना हलका था। मुर्गी का सूप, चार उबली सब्जियाँ, ज्वार की रोटी और मक्खन। यह खाना डाक्टरों ने तय कर रखा था। अंत में फलों का रस।

बापूसाहब को विदा करते वक्त जीवाजीराव कुछ उदास हो गये। बापूसाहब ने उनकी पूना की जिन्दगी देखी थी। इसी वजह से वे भी जीवाजीराव को मानते थे। पूना में एक साथ बिताये हुए दिन—यही जोड़ने वाला धागा था। बापू साहब को शालन केलकर का मामला भी मालूम था। वैसे जीवाजीराव भी बापूसाहब की जिन्दगी के कई पहलू अच्छी तरह से जानते थे। बापूसाहब का ब्रह्मचारी बने रहना भी वे अच्छी तरह से जानते थे। लेकिन जीवाजीराव के हिसाब से यह सब बेकार हुआ जा रहा था। कालेज में अलग-अलग धारणाओं की वजह से अलग हो जाने के बावजूद विधान सभा में वे एक दूसरे के करीब आये थे। लेकिन उस वक्त भी वे बहुत करीब नहीं आ सके। कुछ दूरी बनी रही थी। वह दूरी कभी भी कम न हो पायी। अब तो दोनों के रास्ते ही अलग थे। अब तो सामना होने की भी गुंजाइश थी। इसका एहसास बापूसाहब को भी था। विदा होते समय बापूसाहब का चेहरा भी अजीब सा हो गया था। जीवाजीराव ने उनका हाथ पकड़कर अपनी गाड़ी तक पहुँचाया था। पाँच छह सेकिंड दोनों एक दूसरे की ओर देखते हुए खड़े रहे थे। फिर जीवाजीराव बोले—

मिलते रहियेगा। संबंध तोड़ लेना ठीक नहीं।"

"अवश्य! बापूसाहब ने कहा। सुधाजी की ओर देखकर उन्होंने हाथ हिलाया और गाड़ी में बैठ गये।

खिन्नता स मुख्यमत्री अदर आये तो पार्टी के अध्यक्ष का फोन आया हुआ था। दस मिनट तक उनसे बातें करनी पडी। अगली कायकारिणी की बठक के बारे म बातें की थी। कल का वक्त देकर उन्होने फोन बद कर दिया।

'अब और कितना काम है?' सुधाजी ने पूछा।

'कम-से-कम एक घटा तो लग ही जायगा' बाहर बैठे स्टेनो की ओर इशारा कर जीवाजीराव ने कहा। 'कुछ अर्जेंट मैसेज देने हैं।'

एक घटा मतलब ढाई घटा—इस समीकरण को सुधाजी अच्छी तरह से जानती थी। पौने बारह बज चुके थे और उनकी आंखो म नींद तर रही थी। व नाराज़-सी होकर वहाँ स चल दी।

जीवाजीराव स्टेनो लेकर अपने आफिस के कमरे म चले गये। उन्होने एक गिलास गरम पानी मगवाया और उसम ब्रांडी डालकर नीबू निचोड लिया। उसे पीते हुए उन्होने फाइलें देखना शुरू किया। उनकी आदत थी कि प्रधानमत्री और उनके विभाग को वे स्वय लिखते थे वसे उनके विभाग के सेक्रेटरी खत का मजमून लिख देते थ। लेकिन उनकी जिद थी कि पत्र उनके दस्तखत से ही जाना चाहिए। दो खत डिक्टेट कराये थे कि तभी फोन की घटी बजी। स्टेनो ने फोन लिया 'यस।' बोला 'कमिश्नर साहब का फोन है। पूछ रहे हैं कि मि साहब जाग रहे है क्या?'

'हाँ। मिलाओ।' कहते हुए उन्होने रिसीवर अपने हाथ म लिया।

'गुड मार्निंग, सर।' पौन बज रहा था। 'सारी टू डिस्टर्ब यू सर।'

'इट्स आल राइट।' मुख्यमत्री थक चुके थे।

'मेरा खयाल था कि आप जाग रह हो तो यह खबर आप तक पहुचा दूँ।' पुलिस-कमिश्नर ने कहा।

'यस?'

'अभी कुछ देर पहले ही किसी ने डीकोस्टा पर हमला किया है, शिवाजी पार्क के करीब।'

'माई गाड।'

'ही इज एट के० ई० एम०। ऑपरेशन रूम म है। सिर म लोहे के सरियो की चोट है। पर, ही विल लिव। ही वाज इमिडीएट्ली पिक्ड अप। इन फैक्ट दो लडको ने हमला होते देखा और वे दौडकर आ गये। नहीं तो हमलावर मार देते।'

'दिस इज सीरियस। यस वेरी मच।'

पुलिस कमिश्नर चुप रहे। मुख्यमत्री की गुस्सैल साँस उन्हे सुनायी दे रही थी। मुख्यमत्री ने कहा 'देखिये यह पता लगाने के लिए मैंने सुबह

हा कहा था कि उसे ट्रक करने वाले लोग कौन हैं फिर भी आप लोग सोते रहे।

मर, हम लोगों ने इमिजीएट ट्रकिंग गुरू कर दी थी। लेकिन वह बीच में ही एक बस में चढ़ गया था। तभी गड़बड़ हो गयी।

नानसेंस अब ऐसी गड़बड़ नहीं होनी चाहिए। कुछ भी हो हमलावर पकड़े जाने चाहिए।'

यस सर। वी आर आलरेडी आन द जाब।

यू बेटर बी आर यू विल लूज़ यूअस।

आई अम सारी सर।

इटस आल राइट।'

फोन रखकर जीवाजीराव ने आंख बंद कर लीं। मामला जरा गंभीर नज़र आ रहा था। कोस्टा पर किसने हमला किया है? वह बच गया नहीं तो मेरी इज्जत चली जाती। कोस्टा छोटा मोटा आदमी नहीं है। उन दो लड़कों को इनाम दिया जाना चाहिए। कोस्टा मर जाता तो कितना बड़ा तूफान खड़ा हो जाता! उनके सीने की धड़कन कुछ बढ़ गयी। कौन हो सकते हैं वे लोग? दोपहर जिन लोगों पर नोट पढ़ा था क्या वे ऐसा कर सकते हैं? किसकी टाँग किसके साथ उलझी है पता ही नहीं चलता। पुलिस भी ठीक तरह से पता नहीं लगा पा रही। इसका कस्टम से जरूर संबंध है। बापूसाहब क्यों परेशान हैं? वे भी इन बातों से परेशान हो चुके हैं? लेकिन इस तरह हार मानने से कैसे चलेगा? कस्टम सेंटल इंटलिजेंस स्टेट पुलिस सबको एक साथ लगाकर इस मामले को सुलझाना होगा। जीवाजीराव ने निश्चय कर लिया और आंख खोल ली। स्टेनो जम्हाई ले रहा था।

बस अब आखिरी दो खत, कहते हुए उन्होंने दो खत और डिक्टेट करवाये और स्टेनो को छुट्टी दे दी। टेबिल ठीक की और नींद की गोलियां लेने से पहले ठंडी हवा खाने के लिए बालकनी में आ खड़े हुए।

पूरब की इस बालकनी से बम्बई शहर का कुछ हिस्सा नज़र आता है। दूर कुछ बत्तियाँ भी नज़र आती थीं। बम्बई सो रही थी। शायद बारिश हुई थी। हवा में एक अजीब सी ठंडक थी एक खुमारी थी। मलाबार हिल से बम्बई ऐसे नज़र आ रही थी जैसे कोई प्रौढ़ा अस्तव्यस्त लेटी हुई हो। बंगले के सामने वाले रास्ते पर एक आदमी चलता हुआ उन्हें नज़र आया। इस समय यहां से कौन आदमी जा रहा है? चलते चलते उस आदमी ने सहज ही ऊपर की ओर देखा। रात न होती तो उनकी नज़रें आपस में मिल जातीं। हाथ पीछे किये वह आदमी धीरे धीरे कदम बढ़ाता

हुआ अँधेरे म खो गया। शायद यह आदमी नही जानता कि हम इतने बडे राज्य के मुख्यमत्री हैं नही तो वह उन्हे ऐसे नजरअदाज करके न जाता। यह जिम्मेदारी परेशान कर देने वाली जिम्मेदारी है। ईमानदारी से निभाया जाय तो एक शरीर से यह जिम्मेदारी निभाना कठिन है। इस आदमी को क्या पता? और इस जिम्मेदारी को झेलन म हमारा काई सायी भी नही है। ऐसी जिम्मेदारी लनी ही नही चाहिए। हम न लें तो बहुत-से इस जिम्मेदारी को लेन के लिए आगे बढ़ आयेंगे।

टेबिल पर रखी गोलियाँ खाकर जीवाजीराव कमरे में आ गये। आज उनके कायक्रम के अनुसार तीन चार फाइलें और देखना शेष था। समाचार-पत्र पढ़ने थे। लेकिन आज थकान काफी थी। बीच-बीच मे सीन म दद और चक्कर भी आ रहे थे। और वक्त होता तो वह इस तरफ ध्यान ही नहा देत लकिन आज उन्हें यह पीडाएँ महसूस हो रही थी। इसम खतरा था। उन्हे खुद पर काबू रखना होगा। आज घटे भर पहले ही सोना तय किया। सुधाजी के कमरे म वे एक बार चक्कर लगा आये। व बचन मी सो रही थीं।

पास क सोने के कमरे म आकर उन्होने गोलियाँ खायीं और पानी पी लिया। हलकी-सी चादर पाँवो पर लेकर टेबिल लैप के उजाले म उन्होने समाचारपत्रो की हैडलाइस पढ़नी शुरू की।

तभी टेलीफोन की घटी ऐसे बजी जसे घबराया बच्चा दरवाजे की घण्टी बजा दे। जीवाजीराव ने उधर ध्यान नही दिया। उनके बडरूम की बत्ती रिसप्शन रूम के ऑपरेटर को नजर आती है। खास बात हुए बिना वह घटी नही देगा, इसे वे जानते थे। लेकिन फिर भी उन्होने नजरअदाज कर दिया।

पद्रह-बीस सकिड क बाद फिर वसी ही घटी बजी। उ होने इरादा बदला। कोई जरूरी काम ही होगा वर्ना दूसरी बार घटी बजान की हिम्मत आपरेटर म नही हो सकती। जीवाजीराव ने लेटे-लेटे ही रिसीवर उठा लिया।

यस ?

एक्सट्रीमली सारी सर टु डिस्टब फोन पर पुलिस कमिश्नर थे और उनकी आवाज घबरायी हुई लग रही थी।

गो अहैड गो अहैड।"

सर हमलावर पकड लिये गये हैं।' अभी भी उनका स्वर परेशान था।

'गुड जाव! बहुत अच्छे! कुल तीन घटो मे ही पकड लिया?

ही कहा था कि उसे ट्रैक करने वाले लोग कौन हैं फिर भी आप लोग साते रह।'

सर, हम लोगो ने इमिजीएट ट्रैकिंग शुरू कर दी थी। लेकिन वह बीच म ही एक बस म चढ गया था। तभी गडबड हो गयी।

नासेंस अब ऐसी गडबड नही होनी चाहिए। कुछ भी हो हमलावर पकडे जाने चाहिए।'

यस सर। वी आर आलरेडी आन द जाब।

यू बटर बी आर यू विल लूज यूअर।

आइ अम सारी सर।

इटस आल राइट।'

फोन रखकर जीवाजीराव ने आँखें बद कर ली। मामला जरा गभीर नजर आ रहा था। कोस्टा पर किसने हमला किया है ? वह बच गया नही तो मेरी इज्जत चली जाती। कोस्टा छोटा मोटा आदमी नही है। उन दो लडकों को इनाम दिया जाना चाहिए। कोस्टा मर जाता तो कितना बडा तूफान खडा हो जाता। उनके सीने की धडकन कुछ बढ गयी। कौन हो सकते है व लोग ? दोपहर जिन लोगो पर नोट पडा था क्या वे ऐसा कर सकते हैं ? किसकी टाँग किसके साथ उलझी है पता ही नही चलता। पुलिस भी ठीक तरह से पता नही लगा पा रही। इसका कस्टम से जरूर सबध है। बापूसाहब क्यो परेशान है ? वे भी इन बातो से परेशान हो चुके हैं ? लेकिन इस तरह हार मानने से कैसे चलेगा ? कस्टम सेंट्रल इटलिजेंस स्टेट पुलिस सबको एक साथ लगाकर इस मामले को सुलझाना होगा। जीवाजीराव ने निश्चय कर लिया और आँखें खोल ली। स्टेनो जम्हाई ले रहा था।

बस अब आखिरी दो खत' कहते हुए उन्होंने दो खत और डिक्टेट करवाये और स्टेनो को छुट्टी दे दी। टेबिल ठीक की और नीद की गोलियाँ लेने म पहले ठडी हवा खाने के लिए बालकनी मे आ खडे हुए।

पूरब की इस बालकनी स बम्बई शहर का कुछ हिस्सा नजर आता है। दूर कुछ बत्तियाँ भी नजर आती थी। बम्बई सो रही थी। शायद बारिश हुई थी। हवा मे एक अजीब सी ठडक थी एक खुमारी थी। मलाबार हिल से बम्बई ऐसे नजर आ रही थी जैसे कोई प्रौढा अस्तव्यस्त लेटी हुई हो। बगल के सामने वाले रास्ते पर एक आदमी चलता हुआ उन्हे नजर आया। इस समय यहा से कौन आदमी जा रहा है ? चलते चलते उस आदमी ने सहज ही ऊपर की ओर देखा। रात न होती तो उनकी नजरें आपस म मिल जाती। हाथ पीछे किये वह आदमी धीरे धीरे कदम बढाता

हुआ अँधेरे में खो गया। शायद यह आदमी नहीं जानता कि हम इतने बड़े राज्य के मुख्यमंत्री हैं नहीं तो वह उन्हें ऐसे नज़रअंदाज करके न जाता। यह ज़िम्मेदारी परेशान कर देने वाली ज़िम्मेदारी है। ईमानदारी से निभाया जाये तो एक शरीर से यह ज़िम्मेदारी निभाना कठिन है। इस आदमी को क्या पता? और इस ज़िम्मेदारी को झेलने में हमारा कोई साथी भी नहीं है। ऐसी ज़िम्मेदारी लेनी ही नहीं चाहिए। हम न लें तो बहुत-से इस ज़िम्मेदारी को लेने के लिए आगे बढ़ आयेंगे।

टेबिल पर रखी गोलियाँ खाकर जीवाजीराव कमरे में आ गये। आज उनके कार्यक्रम के अनुसार तीन चार फाइलें और देखना शेष था। समाचार-पत्र पढ़ने थे। लेकिन आज थकान काफी थी। बीच-बीच में सीने में दर्द और चक्कर भी आ रहे थे। और वक्त होता तो वह इस तरफ ध्यान ही नहीं देते लेकिन आज उन्हें यह पीड़ाएँ महसूस हो रही थीं। इसमें खतरा था। उन्हें खुद पर काबू रखना होगा। आज घंटे भर पहले ही सोना तय किया। सुधाजी के कमरे में वे एक बार चक्कर लगा आये। वे बेचैन सी सो रही थीं।

पास के सोने के कमरे में आकर उन्होंने गोलियाँ खायीं और पानी पी लिया। हलकी-सी चादर पावों पर लेकर टेबिल लैंप के उजाले में उन्होंने समाचारपत्रों की हैडलाइंस पढ़नी शुरू की।

तभी टेलीफोन की घंटी ऐसे बजी जैसे घबराया बच्चा दरवाज़े की घंटी बजा दे। जीवाजीराव ने उधर ध्यान नहीं दिया। उनके बेडरूम की बत्ती रिसैप्शन रूम के ऑपरेटर को नज़र आती है। खास बात हुए बिना वह घंटी नहीं देगा इसे वे जानते थे। लेकिन फिर भी उन्होंने नज़रअंदाज़ कर दिया।

पंद्रह-बीस सैकिंड के बाद फिर वैसी ही घंटी बजी। उन्होंने इरादा बदला। कोई ज़रूरी काम ही होगा वर्ना दूसरी बार घंटी बजाने की हिम्मत आपरेटर में नहीं हो सकती। जीवाजीराव ने लेटे-लेटे ही रिसीवर उठा लिया।

यस?'

एक्सट्रीमली सारी सर टू डिस्टर्ब फोन पर पुलिस कमिश्नर थे और उनकी आवाज़ घबरायी हुई सग रही थी।

गो अहैड गो अहैड।'

सर हमलावर पकड़ लिये गये हैं।' अभी भी उनका स्वर परेशान था।

"गुड जाब! बहुत अच्छे! कुल तीन घंटों में ही पकड़ लिया?"

'सच पूछा जाये तो उन्हें घंटे भर म ही पकड लिया था। सर, हमारे ट्रैवस हमला होने के दौरान ही वहाँ पहुच चुके थे और तभी वे भाग खडे हुए थे। हमने पीछा किया पर ।"

गुड ! हमले की खबर अखबार वालो को मिल चुकी होगी ? अब इस खबर को भी दे दीजिये। अभी तक हैड लाइन नही गयी होगी। दो ढाई बज रहा है।'

पर पर साहब कुछ दिक्कतें हैं।"

कहिये।'

कमिश्नर परेशान नजर आये तो वे फिर बोले—

यस ?'

सर हमारे लोगो ने जय एक्सपाट कारपोरेशन वाले मेथा के जुहू वाले बगले पर उन लोगो को पकडा सर।'

अच्छा ?'

यस सर। रेड की तो एक इसपेक्टर को एक अलमारी म नोटों के बडल नजर आये। काफी सोना भी था।'

अच्छा कस्टम को खबर दीजिये। रेवेन्यू इटैलीजेंस को बुलवाइये। सीज इट।

सर हम वही करने वाले थे लेकिन मेथा आन्सट्रक्टेड। अभी सर मुझे बसतराव जाधव ने फोन किया था। वे भी वहाँ पहुचे हुए हैं। उन्होंने कहा कि अलमारी म से डाक्यूमेंटस लिये तो बहुत बुरा होगा।'

माई गाड ! हाऊ डेअर ही हाऊ हाऊ ' जीवाजीराव का खून गर्मा गया। साँस तेज हो गयी। सीने की धडकन बढ गयी। पकडो उसे। अरस्ट हिम। उसे पाठ पढाना ही होगा।

सर !'

'यस यस अरस्ट हिम जीवाजीराव इतने जोर से चिल्लाये कि पास के कमरे म सोयी सुधाजी की नीद टूट गयी। वे उनके कमरे म आ गयी।

मुझे जरा शक है सर पुलिस-कमिश्नर घबराते हुए बोले। उनकी आवाज म थकान और कँपकँपी महसूस हो रही थी।

"डोंट यू डेअर डिसओबे मी मैं कह रहा हूँ। आई आडर। पकडो उसे।

आई थिंक सर ।

अरस्ट हिम,' जीवाजीराव जोर से चिल्लाये और उन्होंने रिसीवर रख दिया।

सुधाजी घबरा गयी थी। वे कुछ समझ न पा रही थी। परेशान होकर
बोली 'अजी क्या हो गया? किसी को बुलवाऊँ क्या? जीवाजाराव
को इतने गुस्से म उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।
मुख्यमंत्री चुप रहे। अभी भी वे बिस्तर पर तकिये से टिके हुए थे।
उनके कंधे और पेट मे दर्द शुरू हो गया था। बदन में कँपकँपी थी। पसीना
आ रहा था।

अजी क्या हुआ बताइये न? आपकी तबियत ठीक नहीं है। किस
पकड़ने के लिए कहा है?' सुधाजी उनके माथे पर हाथ रखते हुए बोली।
जीवाजीराव ने हाथ परे कर लिया। आँखें बन्द कर ली और दबी
आवाज में बोले बसंतराव को ब्लैक मनी चोरी का सोना हमलावर
... से आगे कुछ न बोल सके। सुधाजी भी परेशान हो गयी। पल भर
के लिए उनकी साँस रुक गयी। वे जीवाजीराव की ओर आँखें फाड़कर
देखती रही। होश में आयी तो उन्होंने गर्दन नीची कर ली। हथेलियों से
चेहरा ढाँप लिया। अच्छा तो मेरा यह धंधे करता है। वे केवल इतना
ही बुदबुदा सकीं।

जीवाजीराव का सिर भिन्ना गया था। दायें हाथ से वे अपनी भौंह
मसल रहे थे। बीच-बीच में बालों पर हाथ फेरते जा रहे थे। उनके कान
बुरी तरह गर्मा गये थे। कुछ देर बाद उनके पेट में अजीब-सा गोला उठा।
बसंतराव बसंतराव ।' वे खुद भी बुदबुदाये। वे समझ गये थे कि
पुलिस कमिश्नर क्या कहना चाहता था। बसंतराव ने क्या नहीं किया
होगा! अखबारों में यह खबर कितनी जोर शोर से छापी जायगी। बसंत
राव ने मिलिंद को काफी बार पैसे भेजे हैं इतना तो तय है। और क्या
होगा? बापू साहब ने कहा था। चिराग तले अँधेरा ।
जीवाजीराव काँप उठे। उनका माथा भन्ना गया। उन्हें लगा कि
उन्हें चक्कर आ रहा है। सीने की धड़कन तेज हो गयी है। उन्होंने माथे
से हाथ हटा लिया और वे बिस्तर पर लेट गये। टेलीफोन उठाने के लिए
उन्होंने हाथ लंबा किया। वे रिसीवर उठाने ही वाले थे कि घंटी बज
उठी।

जीवाजीराव ने रिसीवर कान से लगा लिया। दूसरी ओर से उन्हें
पुलिस-कमिश्नर की भारी साँस सुनायी दे रही थी। वे चुप रहे।
एक्सक्यूज मी, सर, पुलिस-कमिश्नर की आवाज उभरी। मुख्य
मंत्री चुप रहे। कमिश्नर ने कहा—
हमने अभी किसी को भी अरेस्ट नहीं किया है सर ।' फिर
खामोशी।

इज दट आके सर ?"

आल राइट।"

थक्यू सर।"

हमलावर का क्या हुआ ? '

"उन्हे तो पकड ही रहे हैं सर। उनके स्टेटमेंटस जरा ध्यान से लेने होंगे।'

आई सीय इट टु यू।'

'कस्टम रेवन्यू को भी खबर देनी है। लेकिन हम ध्यान रखेंगे सर।

जीवाजीराव को बहुत ज्यादा पसीना आ गया था। वे बिस्तर पर पसर गये। उन्होंने बदन पर चादर ओढ ली। उनके मुह से शब्द न निकल रहा था। अस्पष्ट स्वर में उन्होंने सुधाजी से कहा—

डाक्टर को बुलवा लो।

पानिटकर
भेलपूडी

'अभी ढाई-तीन घंटे तो हैं ही साहब !'

दयानंद ने कोट की जेब में हाथ डाला। अन्दर रखे पिस्तौल का ठंडा सा स्पर्श हुआ तो कुछ जान में जान आयी।

'उसकी जरूरत नहीं होगी साहब। बिलकुल सेफ काम है।" सामने वाला आदमी अपने पीले दाँत दिखाते हुए बोला। दयानंद कुछ चौंक गया। फिर खुद को सम्हालते हुए बोला—

ठीक है। ठीक है। क्या नाम बताया तुमने अपना ?'

जी हुसन।

'मेथा सेठ का काम कब से कर रहे हो ?

काफी साल हो गये। अब ठीक से याद नहीं।'

ट्रक और आदमी बराबर हैं न ?'

'पक्का काम हो चुका है साब। अँधेरा होते ही जगह पकड़ लेंगे।

कुछ देर तक खामोशी रही।

गाँव में तो कुछ गड़बड़ नहीं है न ?

'आप जरा भी फिक्र न करें साहब। हमने अब तक मेथा सेठ के सौ से भी ज्यादा काम किये होंगे। और बिना किसी गड़बड़ी के।'

मेथा सेठ का इंतजाम बहुत बढ़िया था। दयानंद को पता लगने से पहले ही मेथा ने आदमी काम पर लगा दिये थे। इस हुसैन को दयानंद ने इससे पहले कभी नहीं देखा था। मेथा का जाल बहुत दूर तक बड़ी मजबूती से फैला हुआ था। दयानंद ने फिर से जेब में हाथ डालकर पिस्तौल को छुआ। जरूरत नहीं पड़ेगी लेकिन पास रखना जरूरी है। मेथा ने उसे दो-तीन बार पहले भी पिस्तौल दिया था।। लेकिन कभी जरूरत न पड़ी थी। आज भी न पड़ेगी। लेकिन यह हुसैन कहाँ से आ गया मेथा कभी भी किसी एक को काम नहीं सौंपता है। एक-दूसरे पर निगरानी रखने के लिए दो आदमी होते हैं। हुसन के पाजामे में पिस्तौल है यह भी सच है।

सूरज तेजी से नीचे उतर रहा था। दयानंद ने हुसन के पीछे की ओर जाती हुई ठिगनी-सी आकृति की ओर देखा। झाड़ियों के बीच से होता हुआ वह समन्दर की ओर बढ़ रहा था। हुसन का चेहरा पिसा पिटा-सा था, उसके दाँत निकले हुए थे। उसने जरूर दो-तीन खून किये होंगे

दयानंद को पक्का विश्वास था हम आदमी को दरअसल ही पहचान जाते हैं। आदमी के मन में क्या चल रहा है यह भी जान सकते हैं। नजरों से काफी कुछ जाना जा सकता है। अब यह बात और है कि सुनंदा के बारे में अंदाज नहीं लगा पाते। लेकिन दूसरे लोगों को हम चट से पहचान सकते हैं। हुसन जरूर दो-तीन खून कर चुका होगा। पप पर काम करने वाले नूर का असिस्टेंट अजाब बिलकुल बाक्सर लगता है लेकिन मक्खी मारने की नौबत आ जाये तो परेशानी में पड़ जाता है। उसकी आंखों से ही यह बात समझ में आ जाती है। मेथा का घबराना भी उसकी आंखों को देखकर जाना जा सकता है। हुसन ने दो-तीन खून तो किये ही होंगे।

रास्ते के दूसरी तरफ झाड़ियाँ, उसके परे ढलान फिर बालू और बाद में समंदर। सूरज अब समंदर पर टिक गया था। धीरे धीरे नीचे उतर रहा था। आसमान खामोश था। गहरा सुर्ख रंग चारों ओर छाया हुआ था। कुछ पक्षी इधर उधर उड़ रहे थे। बम्बई यहाँ से काफी दूर है। सुनंदा और जया दूर हैं। मेथा भी दूर है। यहाँ है सिर्फ हम। बियाबान कच्चा रास्ता। नारियल के पेड़ों के उस पार गांव नजर आता है। झाड़ियों के उस पार फैला हुआ समंदर। यहाँ से नजर नहीं आता पर लहरों की आवाज जरूर सुनायी देती है। अब कुछ ही देर बाद समंदर में ज्वार आयेगा। सूरज डूब रहा है। अंधेरा छा जायेगा। आसमान ज्यादा कठोर होता जा रहा है। खामोशी गहरा रही है। खामोशी के किनारे पर लहरें जरूर टकरा रही हैं। खामोशी को एकदम चीरने वाली आवाज किसकी है? बम्बई की ओर एक बोइंग जा रही है। खामोशी गहरा रही है। लेकिन जंगल के पत्तों की सरसराहट जैसी लहरों की आवाज इस खामोशी को और भी गहरा कर रही है। आसमान का लाल रंग खत्म हो रहा है। अंधेरा जमीन पर पसर रहा है। घाटकोपर की कालोनी में जो सुबह शुरू होती है वह यहाँ समंदर पर आकर खत्म हो जाती है। अब सुनंदा जया को लेकर घूमने निकली होगी। मेथा जुहू के बंगले पर फोन के करीब बैठा होगा। बम्बई में नियान बत्तियां अपना उजाला फैला रही होंगी। रास्ते मोटरों की बत्तियों में चमक रहे होंगे। दुकानों के शो केस शान से चमक रहे होंगे। लेकिन यहाँ स्याह अंधेरा चारों ओर से घिरता आ रहा है। आसमान में अब चांदनी नजर आने लगी है। नीचे एकदम अंधेरा। दूसरी तरफ समंदर की खास आवाज। ऊपर चांदनी और नीचे मेरा शरीर एक अजीब-सा एहसास! दुनिया होने की यही पहचान शेष है। बम्बई में दिन धक्के देने पर भी खत्म नहीं होता। या बम्बई में यह जान ही नहीं पड़ता कि दिन खत्म हुआ है। दिन ढलने से पहले ही बत्तियां जल जाती हैं। और

यहाँ दिन खतम होने स पहले ही शरीर पर अँधेरा झुकने लगता है।

दयानंद के बदन म कपकँपी छा गयी। बम्बई मे अँधेरे स कभी-कभी मुकाबला हो पाता है। यहाँ का सा अँधेरा बम्बई म देखने को नही मिलता। अँधेरे म एक छोटी सी बत्ती कही-न-कही चमकती ही रहती है। यहाँ का अँधेरा पुरातन सा लगता है। लेकिन इससे बदन म कपकँपी क्यो छाने लगती है? सीने की धडकन क्यो तेज हो जाती है? अँधेरे की हर लहर के साथ यादों के चिनार क्यो सामने खडे हो जाते हैं। दिन के उजाले या तेज बत्तियो के प्रकाश म इन यादो की आगे आने की हिम्मत तक नही होती। अब जरूर अँधेरे की ढाल हाथ म लेकर आगे बढ रही है। बूनी माँ सुनदा का दुख पाप का घड़ा—ऐसी स्मृतियों की इस विशाल अंधेरे म कोई जगह नही होनी चाहिए। इस पल तो बिलकुल ही नही।

और सुबह स मन के कोने म दबी कोस्टा स मुलाकात की बात फन फैलाये दिल पर कैसे सवार हो रही है? मामूली-सी बात। कोस्टा को हमने सिर्फ लिफ्ट दी थी और किसी ने देखा भी नही। मेया तो बडी मीठी बातें किये जा रहा था। खुश था। कल-परसो हम खुद ही उसे बता देंगे कि कोस्टा मिला था। मेया मजाक म बात को उड़ा देगा। अब तो उसका हम पर पूरा-पूरा विश्वास है। हम अब उसके अपने आदमी बन चुके हैं। बेकार ही डरते हैं। आज भी मेया की आँखें याद आने पर डर लगता है। सुबह कोस्टा से मुलाकात की बात बदन पर काँटे खड़े कर देती है। कोई मतलब ही नहीं इन सबका। हम अभी तक इन स्थितियो मे रम नही पाये हैं। आश्चर्य है।

अब अँधेरा और गहरा गया है।

दयानन्द ने लंबी साँस ली। पता नहीं इस तरह कितनी देर बैठना पड़ेगा? सुबह तीन-साढे तीन के करीब चन्द्रमा ऊपर आयगा। उससे पहले माल उतारकर भर लिया जाना चाहिए। ट्रांस शाम होने से पहले ही दस-पन्द्रह मील की दूरी पर आ चुके होंगे। काफी अँधेरा छाने पर वे आगे आयेंगे। समंदर म ही दुमन की नावें उन्हें मिल जायेंगी। माल नीचे उतर जाये तो हमारी जिम्मेदारी खत्म। ट्रक म बालू भरकर ठीक तरह से जगह बनायी है। वैसे काम बिलकुल सेफ है। लेकिन हमेशा की तरह ही दयानंद के सीने की धड़कन तेज हो रही है। इस बार माल ज्यादा है। कस्टम वालो के चक्कर म न फँसे तो बस जीत गये। लेकिन मेया होशियार है। वह सब व्यवस्था कर देता है। उसने कहा है कि इस पर भी यदि कुछ गडबड हो जाये तो जान बचाकर भाग लेना। पिस्तौल का उपयोग जहाँ तक हो सके नहीं करना।

दयानंद झाड़ी से बाहर आ गया। रास्ते पर आकर उसने अँगड़ाई ली। जेब में रखी पिस्तौल टटोली। उसने कोट और पैंट की जेबों में सौ सौ के नोट भरे हुए थे। नाव और माल उतारने वालों को उस दिन की तनखाह सौ के नोटों में दी जानी थी। हुसन और ड्राइवर का भुगतान मेथा बाद में करता है। हमेशा ऐसा ही होता है। दयानंद की जब में बाकी रुपये इमरजेंसी के लिए हैं। बस मेथा उन रुपयों का हिसाब कभी नहीं पूछता। वह दयानंद की ऊपरी आमदनी है। लेकिन रकम बहुत नहीं थी। इतने बड़े मामले में डेढ़-दो हजार रुपये कुछ भी नहीं होते।

टालर वालों का हिसाब कैसे होता है यह बात अभी भी दयानंद के लिए रहस्य थी। इतने साल धंधे में गुजारने के बाद भी दयानंद को बहुत-सी बातें मालूम ही न थीं। इस रहस्य के बारे में उत्सुकता दिखाना मेथा सेठ को पसंद न था। यदि कभी तिरछा सवाल कर लिया जाता तो मेथा सेठ का चेहरा पत्थर की तरह सख्त हो जाया करता था। वह अपने काम के लोगों को उतनी ही बातें बताता था जितनी उनके लिए जानना जरूरी होता।

इसी वजह से दयानंद को कई बातों पर अचरज होता था। मेथा सेठ के पास माल आने के संदेश कहाँ से आते हैं? माल का पमट किस तरह होता है? उसके कुल मकान कितने हैं? उसके फोन करते ही लाकअप में बंद लोग कैसे छूट जाते हैं? बीच-बीच में मंत्रियों के साथ उसके फोटो कैसे छप जाते हैं? कई बातें ऐसी थीं जिनके बारे में वह कुछ भी नहीं जान पाया था। शुरू में दयानंद इस तरह के सवाल पूछ लिया करता था लेकिन बाद में जब वह मेथा के स्वभाव से वाकिफ हो गया तो उसने पूछना बंद कर दिया। जो सामने है इतना ही जानना काफी है—उसने यही तय कर लिया था। वैसे जो कुछ उसके सामने था वह भी कम न था। मेथा सेठ को फँसाना तो वह बखूबी फँसा सकता है। लेकिन फँसाना इतना सरल नहीं है यह वह भी अच्छी तरह जानता था। उसे मेथा का सख्त चेहरा याद हो आया इससे बाहर नहीं निकल सकते।

खैर जो कुछ मिल रहा है वह भी कम नहीं है' बुदबुदाकर दयानंद ने हाथ झटक दिये। सुबह की घबराहट गायब हो चुकी थी। वह अब काम के लिए तैयार था। जेब में रकम की गर्मी का एहसास उसे हो रहा था तभी ही उसे याद आया कि वह किस तरह भूखे पेट बम्बई में घूमा करता था। उस दौर के साथ आज की स्थिति की तुलना करके वह उत्तेजित हो उठा। बस पैसा कमाना चाहिए। पैसा असल बात है। पैसे पर दुनिया मरती है।

एक अजीब आज़ादी-सी उसे महसूस होने लगी। धंधे से बाहर निकलने

को सोचता ही कौन है ? मैया के पेट पर बैठकर पसा कमाना और बस । दयानद हँस पड़ा । इद गिद अधेरे पर उसने नजर डाली । वह अपने काम म तेजी से जुट गया ।

वह जिस जगह पर खड़ा था वह रास्त का मोड था । कुल मिलाकर सौ मीटर का दोनों तरफ़ का रास्ता उसे नजर आ रहा था । नीच का ढलान और समदर नजर न आ रहा था । रास्ते हर हमेशा की तरह ही बलगाड़ियाँ और ट्रक आ जा रहे थ । किसी म रेत भरी रहती है तो किसी म पत्थर । जगह कम जोखिम की थी । दयानद न एक ऊँची-सी जगह देखी और उस पर चढ़कर वह चारों ओर देखन लगा । दूर जल रही छोटा-सी बत्ती दूर बस गाँव का पता दे रही थी । बाकी चारा ओर अँधेरा था और ऊपर तारे । क्षितिज रेखा बिलकुल धूमिल-सी नजर आती थी । तज हवा और लहरों की आवाज समदर का एहसास करा रही थी । लेकिन साफ साफ कुछ भी नजर न आ रहा था । समदर पर एक भी बत्ती न थी ।

वहाँ से उतरकर दयानद नीचे आ गया । मोड़ के क़रीब ही बलगाड़ी क पहियो स एक रास्ता बन चुका था । ढलान उतरने क बाद कुछ दूर पर उस ट्रक दिखायी दिया । ट्रक का बोनट खुला हुआ था । सामन क पहिए के पास जक पड़ा था । पीछ रत और पत्थर थ । ड्राइवर स्टीयरिंग पर बठा हुआ खुर्राटे ले रहा था । सब कुछ ठीक था । माल खत्म ही ट्रक भाग खड़ा होगा ।

दयानद ने ड्राइवर को नहीं जगाया । वह कुछ और आग बढ़ गया । देखा तो अँधरे म हुसैन सामन स आ रहा था । उसकी आकृति और सफेद पाजामे की वजह से दयानद ने उसे फौरन पहचान लिया । बस उसका चेहरा नजर न आ रहा था ।

साहब पहला सदेश मिल चुका है उन लोगा को । अब घट भर म माल उतारा जायगा ।'

अच्छा ट्रक म माल चढ़ाने म कितना वक्त लगेगा ?'

'सीमेन्ट की खपच्चियाँ तैयार हैं । माल उनम भर दिया जाय तो सीधे ट्रक म ।

चाँद ऊपर आने से पहल ट्रक रवाना हो जाना चाहिए ।

कोई फ़िक नहीं । बिलकुल सेफ काम है ।"

दोनों ढलान से ऊपर की ओर आये तो हुसैन ने पूछा साहब पेमट के लिए पैसा है न ?"

दयानद ने गदन हिलायी और जेब म रखी अपनी पिस्तौल को छुआ ।'

"मछुआरे बड़े परेशान करते हैं साब । माल खपच्चियों म भरन बहुत

अगर कोई कुछ रख ले तो नजरअदाज कर देना साब वर्ना डेंजरस रहेगा। दयानद इस बात को अच्छी तरह से जान चुका था। हर जगह यही होता था। एक ही जगह पर तो हर बार माल उतारा नहीं जा सकता। इसी वजह से हर बार जगह तब्दील कर देनी पडती थी। हर बार काम पर दूसरे लोग होते थे।

समदर म ज्वार आ रहा है अब महसूस होने लगा था। टकराती हुई लहरो की आवाज यही बता रही थी।

दोनो ढलान की ओर लगभग आधे फर्लांग तक चलते रहे। अब छने नारियल के पेड थे। रास्ता काफी पीछे रह गया। था। इस जगह पर समदर जैसे अदर की ओर घस गया था। दस-पद्रह फट ऊचाई पर रेतीली सतह थी और चारो तरफ नारियल क पेड थे। यह जगह माल उतारने के लिए एकदम फिट थी।

साब आप अब तकलीफ न करें। यहाँ बैठ जाइये। माल कम्मो पर आ जायेगा।'

दयानद चट्टान पर बठ गया। पास की एक चट्टान पर खडे होकर हुसन न मशाल जलायी और अपने इद गिर्द तीन बार घुमायी। तभी समदर म एक जगह पर छोटी सी बत्ती जली और एकदम बुझ गयी।

बस अब माल आ ही रहा है' कहते हुए हुसैन नीचे बैठ गया। बटरी उसन समदर की ओर ही कर रखी थी। बीच-बीच म वह खडे होकर समदर की ओर बटरी चमकाता और वापस नीचे बैठ जाता था।

ज्वार तजी पर था। दयानद के कदमों से कुछ ही दूरी पर लहरें आकर टकरा रही थी। ठडी हवा बदन का चूम रही थी। हवा की आवाज कान म अजीब-सी लग रही थी जिस तरह समदर क किनारे अकेले बठकर लहरो की आवाज सुनी जाये। अनजाने ही दयानद के सीने की धडकन तेज हो गयी थी।

नावा म कितने आदमी हैं ?

दस।

लाँच वाल यहाँ तक आने वाले थे न ?'

नहीं साब। सदेश था कि मील भर अदर रहकर ही माल उतारना है।"

'वसे भी वे हमेशा किनार तक नहीं आते है। किनारे पर भले ही न आते हो लेकिन काफी करीब आ जाते हैं।'

हुसन चुप रहा।

कस्टम क लोग इधर आते हैं ? '

"सप्ताह में एकाध बार गाँव की ओर आते हैं । पर हमारा गाँव अच्छा है । इस जगह को तो वह बिलकुल ही जानता नहीं है ।'

कुछ वक्त ऐसे ही गुजर गया । दोनों समन्दर की ओर मुंह किये हुए थे । हुसैन बीच-बीच में जगह बताने के लिए बैटरी का उजाला डाल देता था । समन्दर से अब कोई जवाब नहीं आ रहा था लेकिन अब उसकी कोई जरूरत भी न थी ।

दयानंद ने अभी तक कई बार माल उतारा था । लेकिन फिर भी उसमें बेफिक्री का भाव न आ पाया था । बस उस खास डर भी न लग रहा था । लेकिन कुछ घबराहट जरूर थी । एक बार माल किनारे से लग जाये तो वह घबराहट भी खत्म हो जाय । फिर तो काम में और बातें सोचने के लिए वक्त ही नहीं रहता । ट्रक रवाना हो जाय तो काम खत्म । बी ।

कुछ ही देर में समन्दर के किनारे पर दो नावों की आकृतियाँ नजर आने लगीं । तभी दयानंद और हुसैन खड़े हो गये । आगे की ओर बढ़ने लगे । पानी जूतों से लगा तो रुक गये । कोई कोई लहर पैंट गीला कर जाती थी । नावें करीब आ रही थीं । कुछ ही देर बाद नाव के आदमियों की आवाजें सुनायी देने लगीं ।

दुल्या ऽ ऽ र ऽ ! ' कहकर हुसैन ने आवाज दी ।

'हाँ हाँ हम आय ।' समन्दर से आवाज आयी । नावें काफी करीब आ चुकी थीं ।

फिर नाव के लोग उतर पड़े और उन्होंने हाथ से नाव किनारे की ओर खींचना शुरू कर दिया । हुसैन और दयानंद भी आगे की ओर बढ़ आये । उन्होंने नावों को हाथ लगाया । हुसैन ने चार आदमी साथ लिये और चट्टान के पीछे रखी सायकिलें निकालना शुरू कर दी ।

इधर दुल्या के लोगों ने नावों से थैलियाँ निकालना शुरू कीं । दयानंद ने थैली में हाथ डालकर देखा कि उसमें रखी चीज पीली ही है न । उस स्पर्श में नयापन कुछ न था । लेकिन फिर भी उसमें एक जादू जरूर था । बीच-बीच में पीली चमक अचानक कौंध जाती थी तो दयानंद के सीने में धड़कन तेज हो जाती थी । आखिर सोना तो सोना ही है । वर्ना दुनिया का सारा हिसाब इसी पर क्यों चलता । खून हो जाते हैं डाका पड़ जाता है और छोटे आदमी अचानक बड़े हो जाते हैं ।

थैलियाँ लाकर रेत पर रख दी गयीं । सारे काम बड़ी तेजी और करीने से हो रहे थे । थैलियाँ गिनने की जरूरत न थी । और उतना वक्त भी न था । धंधे के लोग ईमानदारी से काम करते हैं । अपनी बात के बड़े पक्के होते हैं । इसी वजह से लेन देन सिर्फ मुंह जबानी हो जाता है । इसके

बगैर धंधा चल ही नहीं सकता। कोई रसीद नहीं और न ही कोई ि चीज़। इसी वजह से मेथा बचे रुपयों का हिसाब नहीं लेता। पैट्रोल पर हर माह तनख्वाह देते समय वह ज़रूर दस्तखत करवाता था।

दयानंद आदमियों पर बराबर नज़र रखे हुए था। लेकिन जैसा ने कहा था उसने किसी आदमी को भी कोई चीज़ निकालते हुए देखा। रेत और सीमेंट की बोरियों में थैलियाँ भर दी गयीं और उनके सीये जाने लगे।

साहब पेमेंट कर डालिये' दुल्या ने कहा।

दयानंद ने हुसन की ओर देखा। हुसन ने गर्दन हिला दी। अब बोरियाँ ट्रक में चढ़ाने की देर थी। पेमेंट हो जाने पर वही एक बचता था।

दयानंद ने कोट और पतलून की जेब से नोट के बंडल निकाले। आदमियों को बीस नोट और दुल्या को बीस नोट के अलावा ऊपर से नोट और। तेज़ी से पच्चीस नोट गिनकर उसने दुल्या के हाथ में दिये। उसने पच्चीस नोट पहले ही अलग निकालकर रख लिये थे।

दुल्या ने नोट गिने। उसने नोट वापिस दयानंद की तरफ बढ़ाये बोला साहब लीजिये।"

क्या क्या हुआ?"

लीजिये साहब। हम नहीं चाहिए।

दयानंद परेशान हो उठा। उसने हुसन की ओर देखा। हुसन बी पी रहा था। कुछ करीब आकर बोला क्या हुआ साहब?'

क्या हुआ यह तो मैं खुद पूछ रहा हूँ।'

साहब, हम तो कुछ भी नहीं कहते। हम पैसे नहीं चाहिए। अ जाइये।'

दुल्या ज़रा तैश में बोल पड़ा।

हरेक के लिये दो सौ और तुम्हारे लिए पाँच ज़्यादा।'

हर आदमी को तीन सौ देने थे साहब।'

पर हमेशा का रेट तो दो सौ का है।'

आज का काम ज़रा जोखिम का था साहब।

'पर पहले तो बताया नहीं?'

काम बड़ा है यह तो सभी जानते हैं साहब।

वक्त तेज़ी से गुज़र रहा था। दयानंद परेशानी में पड़ गया। हु आराम से बीड़ी पी रहा था। धीरे से बोला, जल्दी करो साहब। व हो रहा है।"

इस वक्त तक नाव वाले दयानंद को घेर चुके थे। उनके चेहरे उस नहीं दिखायी दे रहे थे लेकिन सिर नजर आ रहे थे। काले स्याह वस्त्र। दयानंद की गर्दन पर पसीना आ गया। उसके पास रुपये थे लेकिन यह भी तो जरूरी थी। दुल्या की और मैया की आपस में पहचान है। हुसन बीच का आदमी है। फिर भी यह बात? दयानंद तश में आ गया। अगर उनके मन में आ जाये तो दयानंद का नामोनिशान नजर न आता।

दयानंद ने चट-से जेब से और नोट निकाले। गिनकर देखे तो बारह थे। उसने वे दुल्या के हाथ पर रख दिये। गिनकर दुल्या ने सलाम किया 'चलो रे अब।' कहते हुए साथियों को पुकारा। हरेक ने एक एक-एक बोरा कंधे पर उठा लिया और सभी ट्रक की ओर बढ़ने लगे।

दयानंद का दिमाग तेजी से काम कर रहा था। स्थिति पर वह बराबर नजर रखे हुए था। उसे खतरे की गंध आ रही थी। अब तेजी से सब कुछ करना जरूरी था। लेकिन दुल्या और उसके आदमी खुश नजर आ रहे थे। हुसन भी इस तरह खड़ा था जैसे काम से निबट गया हो। फिर यह हरकत किसलिए? सारा धंधा विश्वास पर चलता है। फिर दुल्या ने आज ऐसा क्यों किया? और हुसन चुप क्यों रहा? तभी उसने पिस्तौल को छुआ।

हो सकता है कि काम वाकई बड़ा और जोखिम वाला हो और दुल्या ने ज्यादा पैसों की मांग की हो। लेकिन उसके मांगने का अंदाज कुछ दूसरा ही था। उसने सीधे कह दिया होता तो बात दूसरी थी। उसकी आवाज में धोखे की गंध थी और उसके साथियों के व्यवहार में भी। फिर हुसन भी चुप था।

दयानंद ने होंठ चबाये। धोखा! उसके दिमाग में एक ही बात थी। पहले से जो डर था वह इसी धोखे की वजह से था। लेकिन उस तरह से उसने सोचा न था। उसका दिमाग मशीन की तरह काम कर रहा था। मैया की आँखें कोस्टा से मुलाकात तेजी से चलती कार झटके से लगाया गया ब्रेक। धोखा! धोखा!

ट्रक बिलकुल अंधेरे में खड़ा था। दुल्या और उसके साथी चुपचाप बोरियाँ उठाये ट्रक की ओर बढ़ रहे थे। किसी का भी दयानंद की ओर ध्यान न था। कहीं वाकई धोखा है? होगा कैसे? मेरे पास पिस्तौल है। लेकिन हुसैन के पास भी तो है। या शायद धोखा न भी हो। लेकिन दिमाग में परेशानी जरूर है।

ड्राइवर तैयारी में जुट गया था। दुल्या के साथियों ने तेजी से बोरियाँ ट्रक में चढ़ानी शुरू कर दी थीं। फिर उस पर रेत डालकर पत्थर रख

बगर धधा चल ही नही सकता । कोद रसीद नही और न ही कोई लिखित चीज । इसी वजह से मेथा अब रुपयों का हिसाब नहीं लता । पट्टोल पप पर हर माह तनखाह देते समय वह जरूर दस्तखत करवाता था ।

दयान्द आ‍‍दमियो पर बराबर नजर रखे हुए था । लेकिन जसा हुसन ने कहा था उसने किसी आदमी को भी कोई चीज निकालते हुए नही देखा । रत और सीमट की बोरियो म थलियाँ भर दी गयीं और उनके मुह सीये जान लग ।

साहब पेमट कर डालिये दुल्या ने कह ।

दयानद ने हुसन की ओर देखा । हुसन ने गदन हिला दी । अब सिफ बोरिया ट्रक म चढ़ाने की देर थी । पेमेट हो जाने पर वही एक काम बचता था ।

दयान्द न कोट और पतलून की जेब से नोट के बडल निकाल । दस आदमिया को बीस नोट और दुल्या को बीस नोट के अलावा ऊपर से पाँच नोट और । तजी स पच्चीस नोट गिनकर उसने दुल्या क हाथ म थमा दिये । उसने पच्चीस नोट पहले ही अलग निकालकर रख लिये थे ।

दुल्या ने नोट गिने । उसने नोट वापिस दयानद की तरफ बढाये और बोला ' साहब लीजिय ।

' क्यो क्या हुआ ?

लाजिये साहब । हम नहीं चाहिए ।

दयानद परेशान हो उठा । उसने हुसन की ओर देखा । हुसन बीडी पी रहा था । कुछ करीब आकर बोला, ' क्या हुआ साहब ?'

क्या हुआ यह तो मैं खुद पूछ रहा हूँ ।

साहब हम तो कुछ भी नही कहते । हम पैसे नही चाहिए । आप जाइय ।

दुल्या जरा त श म बोल पडा ।

हरेक के लिये दो सौ और तुम्हारे लिए पाँच ज्यादा ।"

हर आदमी को तीन सौ देने थे साहब ।'

' पर हमेशा का रेट तो दो सौ का है ।

आज का काम जरा जोखिम का था साहब ।'

' पर पहले तो बताया नहीं ?'

काम बडा है यह तो सभी जानते है साहब ।

वक्त तजी से गुजर रहा था । दयान्द परशानी म पड गया । हुसन आराम से बीडी पी रहा था । धीरे से बोला ' जल्दी करो, साहब । वक्त हो रहा है ।

इस वक्त तक नाव वाले दयानंद को घर चुके थे। उनके चेहरे उसे नहीं दिखायी दे रहे थे लेकिन सिर नजर आ रहे थे। काले स्याह बदन। दयानन्द की गर्दन पर पसीना आ गया। उसके पास रुपये थे लेकिन यह माँग गैरजरूरी थी। दुल्या की और मैथा की आपस में पहचान है। हुसन बीच का आदमी है। फिर भी यह बात? दयानंद तैश में आ गया। अगर उनके मन में आ जाये तो दयानंद का नामोनिशान नजर न आता।

दयानन्द ने चट-से जेब से और नोट निकाले। गिनकर देखे तो बारह थे। उसने वे दुल्या के हाथ पर रख दिये। गिनकर दुल्या ने सलाम किया "चलो रे अब।" कहते हुए साथियों को पुकारा। हरेक ने एक एक-एक बोरा कंधे पर उठा लिया और सभी ट्रक की ओर बढ़ने लगे।

दयानन्द का दिमाग तेजी से काम कर रहा था। स्थिति पर वह बराबर नजर रखे हुए था। उसे खतरे की गंध आ रही थी। अब तेजी से सब कुछ करना जरूरी था। लेकिन दुल्या और उसके आदमी खुश नजर आ रहे थे। हुसैन भी इस तरह खड़ा था जैसे काम से निबट गया हो। फिर यह हरकत किसलिए? सारा धंधा विश्वास पर चलता है। फिर दुल्या ने आज ऐसा क्यों किया? और हुसन चुप क्या रहा? तभी उसने पिस्तौल को छुआ।

हो सकता है कि काम वाकई बड़ा और जोखिम वाला हो और दुल्या ने ज्यादा पैसों की माँग की हो। लेकिन उसके माँगने का अंदाज कुछ दूसरा ही था। उसने सीधे कह दिया होता तो बात दूसरी थी। उसकी आवाज में धोखे की गंध थी और उसके साथियों के व्यवहार में भी। फिर हुसन भी चुप था।

दयानंद ने होंठ चबाये। धोखा! उसके दिमाग में एक ही बात थी। पहले से जो डर था वह इसी धोखे की वजह से था। लेकिन उस तरह से उसने सोचा न था। उसका दिमाग मशीन की तरह काम कर रहा था। मैथा की आँखें कोस्टा से मुलाकात तेजी से चलती कार झटके से लगाया गया ब्रेक। धोखा! धोखा!

ट्रक बिलकुल अँधेरे में खड़ा था। दुल्या और उसके साथी चुपचाप बोरियाँ उठाये ट्रक की ओर बढ़ रहे थे। किसी का भी दयानंद की ओर ध्यान न था। कहीं वाकई धोखा है? होगा कैसे? मेरे पास पिस्तौल है। लेकिन हुसन के पास भी तो है। या शायद धोखा न भी हो। लेकिन दिमाग में परेशानी जरूर है।

ड्राइवर तैयारी में जुट गया था। दुल्या के साथियों ने तेजी से बोरियाँ ट्रक में चढ़ानी शुरू कर दी थीं। फिर उस पर रेत डालकर पत्थर रख

दिय। फिर ट्रक को धक्का देकर ढलान से रास्ते पर ला खडा किया। ट्रक का बानट अभी भी खुला था। सारे काम इस तरह खामोशी से हो गये जैसे पहले से रिहर्सल हो चुकी हो।

ट्रक रास्ते पर खडा था और दुल्या के साथी काम पूरा करके अलग खडे हो गये। दुल्या ने दयानन्द को सलाम किया जाते हैं साहब। और वह अपने साथियो के साथ झाडियो से ढलान की ओर चल दिया। फिर अधेरे म गायब हो गया। दयानद ने अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

अब ट्रक के करीब दयानद ड्राइवर और हुसैन खडे हुए थे।

दयानद ने कहा मेघा सेठ से सारी बातें कही जायेंगी।

'साहब इसमे मेरा क्या वास्ता ?' हुसैन ने कहा पेमेंट के बारे म मैं कुछ नही जानता। मैं तो सिर्फ दुल्या को मिला देता हूँ।'

आज दुल्या ऐसे क्यो अकड रहा था ?'

'क्या पता! उसके और सेठ के बीच कमीशन के सबध हैं। यह तो उसका ऊपरी काम है।"

'अच्छा!

मैंने तो पहले ही कहा था, साहब। यह लोग बेहद परेशान करते हैं।'

डेंजरस है। वह तो गनीमत है कि मेरे पास इस वक्त पसे थे।'

अजीब झमेला है। मेघा का लफडा समझ म ही नहीं आता।

ड्राइवर ने कहा चलना साब। देरी नही होना।'

हाँ अभी चलते हैं।'

चारो ओर सन्नाटा। दयानद को ट्रक के साथ स्टेशन तक जाना था। स्टेशन गाव से चार मील की दूरी पर था।

'ठीक है' कहते हुए दयानद ट्रक पर चढने लगा तो हुसन ने उसका हाथ पकड लिया।

ठहरो साहब!

'क्या हुआ अब ?"

जरा ठीक से सुनिये। जीप की आवाज आ रही है।'

दयानद कुछ देर चुप रहा। उसने चुपचाप सुनने की कोशिश की। लेकिन समदर की आवाज के अलावा दूसरी आवाज सुनायी न दे रही थी।

कुछ भी नही है।"

ठीक स सुनिय साहब।

हुसन की पकड कडी हो गयी। दयानद ने उसके हाथ को झटका दिया। लेकिन हुसन की पकड कडी थी। दयानद ने दाया हाथ घुमाकर

दुश्मन पर हमला कर दिया। पकड़ ढीली हुई तो शत्रु को छोड़कर दयानन्द झाड़ी की ओर भागने लगा। सामने से एक-दो परछाइयाँ आती नज़र आयीं। वे लोग दुल्या के साथी होने चाहिए। दयानन्द ने झटके के साथ जेब से पिस्तौल निकाल ली।

सामने से हट जाओ हरामी। पिस्तौल है मेरे पास।'

परछाइयाँ पर हट गयीं। लेकिन तभी पिस्तौल की एक गोली उसके कान के करीब से निकल गयी। वह दुश्मन होना चाहिए। छाँट बचाते हुए दयानन्द झाड़ी के पीछे कूद गया। किनारे किनारे भागने लगा। दूसरी ओर से और लोगों के भागने की आवाज़ भी आने लगी। वह सबों पास में छिप कर बैठ गया। चारों ओर सन्नाटा था।

पाँच छह सेकिंड में ही यह सब कुछ हो गया था। मशीन की तरह। यह ज़रूर मेया की हरकत होगा। कोस्टा। कोस्टा। आज वह क्यों मेरी गाड़ी में आ गया था! गुस्से से दयानन्द का बदन काँपने लगा। उसे इस तरह मरना न था। सुनन्दा और जया घाटकोपर का बंगला और अधूरा! कान के करीब से गुज़रने वाली दुश्मन की गोली। मेरा पागल है। वह आदमी की परख नहीं जानता। हम तो उसी के आदमी थे। मेरे साथ दगा करने की ज़रूरत न थी।

खामोशी। अँधेरे में कुछ नज़र ही न आ रहा था। कौन कहाँ है इस का अंदाज़ हरकत करने पर हो सकता था। दयानंद ने पिस्तौल मज़बूती के साथ पकड़ रखी थी। साँस रोक रखी थी। कोई हरकत नज़र न आ रही थी। आँखें फाड़कर देखने पर भी रास्ता नज़र न आ रहा था। ऊपर बादल छा गये हैं शायद? सुनन्दा और जया इस वक्त सो रही होंगी। नींद में भी सुनन्दा के होंठों पर वही मुस्कराहट होगी। मेरे चारों ओर तो घना अधेरा है। पास में पिस्तौल और छह गोलियाँ। उधर कितने लोग हैं, पता नहीं। इस वक्त कोस्टा सामने आ जाता तो वह उस गोला मार देता।

अभी कोई भी हलचल नहीं है। सब खामोश। वही अँधेरा और समुन्दर की लहरों की आवाज़। कल सुनन्दा उठेगी तो किस मनस्थिति में होगी? कितना वक्त गुज़र गया?

दायीं तरफ से कैसी आवाज़ आ रही है? कोई आगे बढ़ रहा है। दयानंद ने साँस रोक ली। होंठ चबाये और दुबारा आवाज़ आते ही गोली दाग दी। ढुशुंग यह गोली कोस्टा के पेट में। फिर खामोशी।

वे यह जगह जान गये हैं। दयानंद झाड़ी के पीछे से भाग खड़ा हुआ। दो गोलियों की आवाज़ आयी। यह पिस्तौल दूसरी ही थी। दुश्मन की नहीं थी। ड्राइवर की या दुल्या की? दयानन्द फिर एक जगह औंधा लेट गया।

फिर खामोशी। कितना वक्त गुजर गया है। कोई हलचल नहीं है। ऐसा कब तक चलता रहेगा? सुबह कब होगी? गोलियों की आवाज गाँव तक नहीं पहुँची होगी क्या?

दयानंद ने सामने की ओर देखा। एक सफेद सी चीज हिल रही थी। दूरी पर। वह हुसैन का पाजामा होना चाहिए। दयानंद ने निशाना लगाया और गोली दाग दी। चीज हिलना बंद हो गयी। फिर एक आवाज हुई। दयानंद के कानों के करीब से एक और गोली निकल गयी। आवाज की दिशा में हाथ चलाते हुए उसने फिर एक गोली छोड़ी। यह गोली मेधा के लिए। दयानंद क्रूरता में हँस दिया।

उसका सिर चक्कर खा रहा है। और कुछ नहीं उसकी सारी ताकत पिस्तौल वाले हाथ में है। सांस रोक रखी है। नजर तेज। खोजती हुई। कौन कहाँ पर है? जरा हिल डुलकर देखें? वे लोग चले गये क्या?

एक और आवाज—ढुशुग! दर्द की एक तीखी लकीर। जैसे चीरती हुई निकल गयी आरपार। सुनंदा और जया की पल भर याद! बुढ़िया की याद। फिर इस दुनिया में चारों ओर फैले अंधेरे की याद। अब होश नहीं। सिर्फ हर दिशा को चीरती तेज आवाज करती हुई भयानक आग। पिस्तौल में अभी तीन गोलियाँ बाकी हैं।

दयानंद गिरते पड़ते खड़ा होता है। सामने नजर आती परछाइयों पर तेजी से गोलियाँ दागता है—ढुशुग। यह गोली अपने धंधे पर। दूसरी ओर से भी गोलियाँ चलीं। लेकिन अब क्या? ढुशुग—यह मेधा की लड़की के लिए। और यह एक और—अब तक की गलतियों के लिए। एक और गोली की जरूरत थी। होती तो सारी दुनिया पर दाग दी होती।

अब दर्द कहाँ है? अब तो चारों ओर तेज रोशनियों का तीखा अंधेरा है। इतना स्याह अंधेरा कभी देखा न था। वही मजेदार अंधेरा, जिसमें चाँदनी के भी पैबन्द नहीं लगे हुए हैं।